8

Hindi

(2) Manuscript.

Name :- BHASHA - NIDDAN
& Lolam Raj page 206

by :- Ganga Ram si

Date 1915 Bik page 205

Page :- 244

लेखक :- बेरा राम - चनैया राम

From :- Harbhajan Singh Harcharan Singh
BOOK SELLERS
Bazar Mai Sewan, AMRITSAR.

1210

Hindi MS.
616

B 575

1210

भाषानिदान ॥ बन्ना राम बनैमा राम द्वारा लि० हिन्दी भाषा
१८९५ वि०
२८४ पत्रक ॥ १२ पं० प्र० पृ०

हिन्दी ( ) ह०लि०.

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरवे नमः ॥ श्री सरस्वती नमः ॥
अथ भाषा निहाल लिख्यते ॥ दोहा ॥ प्रणवति श्री प्रभु जैन पातं वि
वभ नाथ अरहंत ॥ केवल ग्यान प्रकास नित मंगल करन महंत ॥
१ ॥ पद्मावत वंदत चरन परन सब केहि ॥ प्रभ पारस पारस क
रोस जल नील कवि केह ॥ २ ॥ दुक्करदन गजवदन गौरी पुत्र जग
लेश ॥ गणधीस मंगलकरन विघ्न हरन प्रणमे स ॥ ३ ॥ प्रणवो
शारद माता के निजगुरस रतन नम ॥ तम जु जा चूर्नक है सबै सु
धा है कास ॥ ४ ॥ सगल रोगतम धिदि दुको रवि जिम कर तम विना
स ॥ श्री आदि धन्वंतर कोन मो कासी राजु दिव हास ॥ ५ ॥ संकर जग
उतपति करै शक्ति पतक रत संधार ॥ तीन लोक सन्नागत सुर्ग
मो बकोदार ॥ ६ ॥ सर्वतंत्र दघमपन कुहिमा घवरततन निरान ॥

नि॰
१

ताकेमनवचकिरमेरचओपेजीनिदानप्रधान॥७॥जोमेंसकनतिनप
ठनकीसंतसांक्रितनकेग्रंथ॥जानरहितजभाषारचोसंदेहसगमसपं
थ॥८॥नगरमगरादावादकोवासीद्विजजसवंत॥नगरमधारस
रसारकरिश्रीसेवचनकहेंजा॥९॥गंगजतीकविविदित्तरूपमा
धवकठननिदान॥ताकोग्रंथभाषारचोसमझेजंजानअजान॥१०॥
गंगयतीकविसुनतहींचितनअनुरूपाधारि॥थोडेमैवहुमति
धरीभाषाकरीसुधारि॥११॥निदानसुपूरवरूपहीरूपजुउप
सयजान॥संप्रापतिमेएवचसवरोगविधानवखान॥१२॥नमि
तिहेतुआसुतनतेप्रत्योध्यानंसुधारि॥कारननामनिदानके
ऐवटमीनविचार॥१३॥उतपतजजईछाजथेग्रल्पव्याध
तनहोत॥अव्यकतिलिंगतातामाथियेप्रवमनरूपकविगोत॥१४॥

॥ सोप्रगटतजबरूपकहलछनलिंस्थांन ॥ अरुक्रतग्यंजनचिंनताऐंजग
नामबषांन ॥ १५ ॥ दो० ॥ औषधअंनविहारकोहेतुव्याधविप्रीत ॥ [illegible]स
तिसमसतविधानप्रुनअर्थवाच्ययुतमीत ॥ १६ ॥ जानव्याधउपसेति
सेषानतमह्तजोनाम ॥ सोविपरीतिअनुपस्यः व्याधअषानतमजाम ॥ १७ ॥
हेमकालतेसेलषोउपस्सानमव्याध ॥ सोविपरीतअनुपस्यंअसा
तमकहतेसाध ॥ १८ ॥ वातादिकदुष्टतनवेअवतनसनकोहोति ॥ संप्रा
पतितासोंकहतअगमभीकविगोत ॥ १९ ॥ सकलरोगसामान्यतेपं
चप्रकारविधान ॥ अबविस्तारताकरतवोंसुनोवेदकविमान ॥
२० ॥ रोगनिदानसबरोगकोंहेषकुपतसुनमेव ॥ तासप्रकोपविधा
नविधविविधिअहितकोसेव ॥ २१ ॥ यथा ॥ विषमासनजलपान
बहुरोकेविछामत ॥ दिनसोवेराजीजगेषटप्रकारजनकहत ॥ २२ ॥
इत्यादि ॥ कहुंरोगसेरोगप्रतिहोतननिदानविधान ॥ यथादिवससव

पनादिकतैप्रतीसायकरजजान ॥२३॥ प्रतीसाय तेहोत है कासरोगत न
होय ॥ कासरोगतेक्षईहोवै छईरोगजेसोष ॥२४॥ यथा तापवसंजो
गतेरक्तपित्ततनमास ॥ रक्तपित्तजुरकोकरै दवनतेउपजैस्वास ॥
२५ ॥ दुर्बलकेवलरोगतै पाछेकरैनिदान ॥ उभ्यारथकवाचकहु
तेकेपिकारथकजान ॥२६॥ केचितनरतगप्रतिरोगहीकारणकुरमि
टजाइ ॥ केपिसमननहिहोतनजहोवैनिदानदुषदाय ॥२७॥ स
वैया ॥ रोगअनेकविवेकसुनोकविअप्रापुकपोजगकालसुबीने ॥
तासविषैवसरोगमहावलिकारमिलावत्तहेहसुबीने ॥ जोप्रता
पप्रतापवलीसुनकारनकोसिवस्वासजबीने ॥ अष्टप्रकारस
मीरिवभावतगंगगयतीकहिहैतपुबीने ॥२८॥ दो० ॥ प्रथकहुट
सवअगागमीअष्टप्रकारविवेक ॥ केचितसवरविंसतकहैपिरच
रभेदअनेक ॥२९॥ अथजुरकेतरूपकोसिरानमताने ॥ दो० ॥

तीनवाद ज्वुरखेलषोनवलोचनसिरतीन॥रुपभानकषटभुजा
नरकोकरतग्रधीन॥३१॥वातपित्तकफचरनगैनवहुवननव
नैन॥अतीसारषटषटभुजाग्रैगुणगैसिरग्रैन॥३१॥अथका
लग्यानमत्ताते॥दो०॥पाहतीन हशासीसलषिभुजाअष्ठवलि
वान॥रुपभानकनैनत्रैग्नसैजीवकोग्यान॥३२॥वात्तपित्तकफव
रनत्रिक हसोउपद्रवसीस॥तीनकालग्रैनैनलषिअष्ठमेदभुजहि
स॥३३॥मिथ्याहारविहारतैहोअग्नमासससंत॥कोष्ठहुतासनवहि
रकरिज्वुरहारकरसगेति॥३४॥मिथ्याहारविहारपथ्या॥सवैया॥
कालकमीअतिमात्रअसातमभोजनकोसुनजोनरखावै॥फेरक
रैविषमासनताकाविरोगयतीमिथ्याहारवतावै॥हीनजिसेनि
जहेतवउफिरकामवलीप्रतिजोकरिवावै॥मिथ्यानामविहारक
हावतताहसहानरत्यागकरावै॥३५॥दो०॥स्वेहरोधसंतापअति

त्रि० ३

सर्वअंगनगमहजात॥ युगपजिहिहजिसरोगमैसोजुरकहिकवितात॥३६॥
कमलधातुव्रतिरेककहैजासैसोजुरवान॥उसमगातइहनिसरहैहवे
हसर्वधाहान॥३७॥अथपर्वरूप॥सवैया॥नैनभरेजलगातवि
रूपश्रमोरतिस्वादविनामुषहोवै॥इछतवेषसुवारहीवारजु
सीतसमीरतपादिकजोवै॥जिंभगजतनरोमउठेहलतागरुजी
तमसीतसमोवै॥चिंतअनेकभिटैजुरपर्वरूपसमान्यविसेषसु
नोवै॥३८॥दो०॥वातजुरिंभअधिकगहदाघपित्तकफजुरस्यअन्नअरोच॥द्व
द्वजमैहैलषनासर्वलिंगत्रिकहोच॥३९॥कवित्त॥सोषकरैकैकंठ
होठकंपतसरीरसबजुरकोविषमवेगनीदकोविनासहै॥पेटकोअ
फारस्रातपीडासिरह्यिहै गातस्त्रावतजउवासीप्रायविटगढजा
सहै॥वहनाविरसतामुषजविटनैनस्पामछिकाकोविनासकरै
मलकोनिवासहै॥कनसरीरदेषोगातकीरुषाईपेषोऐसी

जाकौ रीतज्वरवातको प्रकास है ॥ ५० ॥ वमनकरत पीतहरतलषा
वे मीतननाडिचलेती ब्रवेग अ्रतिसारनानीये ॥ कंठहोठमुषनास
तापकै प्रभावपकै त्रिषामहहोतजाके स्वहगातठानीये ॥ पीतविट
मतनैन वोलतनठीकवैन ॥ मर्छाकी मदोरताकै अंगगहाप्रभानी
ये ॥ वहनकडुकहोततापकेप्रभावजाको थोडेहीमें गगयतीपित्त
ज्वरजानीये ॥ ५१ ॥ वलेमंदवेग नारज्ञालसतरीचधारदोमको
उठावववउसीतको विसषीये ॥ विटमतस्वेतनैन वमनकरतकै
नअंगकोअंगइकासअ्रतिनीहदेषीये ॥ मुषकीमधुरताई नैनकी
निकाई जाको पीनसअरुचगुरपेटमेरेपषीये ॥ जैसेजनकोउपट
घोइकै मदोरदेत तैसेही सुभावतनकफज्वरलेषीये ॥ ५२ ॥ मर्छा
कीमदोरभ्रमहाघत्रिटहोततमवमथअरुचसोषलषोकंठ
स्वासको ॥ उठितरुमांचसंधिभेदसं।सपीरडिंभस्वपनविनास

ज्वुरवातपित्ततासके॥ स्विमितसंत्तापमछ्वेगनीसंघमेहगौरवस
रीरजोतप्रतीसाप्रकासके॥ स्वेदकोलगबावत्तनसीसगरहहोत्तस्तन
गैसोहीस्वरूपकफवातज्वुरजासके॥ ६३॥ दो०॥ ग्रत्तचकासतंतन्द्रा
ग्राधिकत्रिबालिपत्तमुखमोह॥ वारबारत्तनदाघहिमकफौपित्तज्वु
रहोह॥ ६४॥ कवित्त॥ वात्तकेउठाववलौपित्तकोप्रभावकफकोव
तस्तौनहोवभत्तकोप्रकारहै॥ दाहसीतहेत्तछनसंघसीसपीड
मनवकतप्रलापमुखमात्ततात्तगैरहै॥ मघनलगत्तकासस्वा
सकोप्रकासत्तमनींदकोविनासनींदनैनघुंघकारहै॥ देहमैस्र
चेतभ्रमचेतवेदनाज्वुरसंनकोप्रभाववारवारवारहै॥ ६५॥
दो०॥ केठसककुजानिसत्तत्तग्रल्पमत्रावेटस्वेत॥ चिरकन्हस
तकोठवपुमंदवच नफ्रिहैबेह॥ ६६॥ ग्रतिसपाज्वुरात्रिकहोवके
देवतपंचप्रकार। संन्यपात्तकरिजोभ्योत्तिहत्रिहेवज्वुरधार॥

४७ ॥ दोषबढ़घटतनग्रग्निहतपर्नैलछनसंपन्न ॥ सोग्रसाधज्वरजानी
ये क्रिछसाधतपमेन ॥ ४८ ॥ ग्रनिलपित्तकफबढ़घटिनमुनिहिकहइ
हसमान ॥ मलपाकतमंछुतपुरवधातपाकतनहान ॥ ४९ ॥ सप्तदि
वसमनवसिवढिगुणऐत्रिहेषज्वररीति ॥ तज्ञतहनतहरीतम
तगेगज्ञजोसनिमोत ॥ ५० ॥

सवैया ॥

पर्ईवहीज्वरकेमधग्रंत्तरसो
यवलीस्रुतिमलज्ञनावै ॥ जानग्रसाधकहीक्रिछसाधकसाधस
धेनसबैहवत्तावै ॥ दोषत्रिकेउरम्रोत्रचितेगतिवुधिसपरस
नसवहसुनावै ॥ रूपनगंधलषेसिरलोठतकूजततुहतंग्रत्र
नभावै ॥ ५१ ॥

दो० ॥

किंचितवोलतवचनमुखकष्टभिन्नासज्वरवंत ॥
बहुजनमैसिंजतकोउसनहुजवरजसवंत ॥ ५२ ॥

ग्रथपुरसंगतेत्रियोदससंन्निपातनिदान ॥

सवैया ॥

संधिकग्रंत्रतकततेनग्दाह
कचितभ्रमीत्तनसोतसुनावै ॥ तंद्रकरुकंठकुवीकर्णोनकजमंगाद्रिगी

रघराजनपुकावै॥ नामप्रलापकझिहवकतेअभिन्यासधन्वैत्तरञ्जा
भुवनावै॥ हाथनसोतहसेहिनअंतेकनामहिनेजगहाहलघावै॥
५३॥ हाथनतीनलखोविनहीभ्रमपधहिमांगहिनेपचवीसा॥
तेहकहेषगतेकुवजाहिनविसरगनेअतिमासअिकीसा॥ आठहि
नेहिगभंगहसेहिनअब्रजुपषप्रलापगगीसा॥ झिहवकके हिन
षोडसलेअभिन्यासलखोपथग्रापुकहीसा॥५४॥ दो०॥ वाघुहे
ननननसुसकताउनसलककहांन॥ तापमहाझिसपुष्यकोसघ
कतासवधान॥५५॥ सवैया॥ अंतरवाहरहाघव्यापनव्याकुलता
सिरकंपनस्वासा॥ कासजुरीहिचकीलषकैहिनतीनविषैनजअं
तकश्वासा॥ हाघमहांभ्रमनैहुतासनस्वासप्रलापकसलपिपा
सा॥ अंगनकंठविषैनजहोवतगंगयतीजगहाहकमासा॥५६॥
पीठनअंगभ्रमेउनमाहिकनापप्रलापद्रिगीविकटा॥ व्याकुल

सीसदुखेनिगावततहासखितीभ्रमकीजुरुछटे॥ सीतस्लेषमछुटुकवि
नातपश्वालसधंगपिपासरट॥ स्वासनिकासनिछुर्दिकैरेलांषिसं
न्निसीतांगजुग्ग्रापुघट॥५७॥ प्रहा॥ त्रियमतापजिसहोतनदेखै
नैनतें॥ तंद्रामैलैलीनसधेषतनैनतें॥ ग्रतीसारकफछुर्दिस्वास
विटफिरिदिषो॥ कंठुरस्वासस्यामकठनतेंटकलषो॥५८॥ कवित॥
सीसकंठपीरवहुकंपतप्रलापतापमनछाकीमरोरसोपहनूस्थ
भजानिये॥ जंपतननैनचैननींदहूनहोतपलस्वेदकोलषावकं
ठकुवजबषानीये॥ बकैबकवायअंगसूननजाप्रलापमोहस्वास
कासकानपीरश्रुतिगंन्यमानीये॥ कर्णकपछानवेदसंन्नपात
भेदग्रैनलहनसमानकफतापकेप्रमानीये॥५८॥ प्रहा॥ भग्नहि
ष्टभ्रममोहकेचेतनजासका॥ ज्वरजतोनिहानविलापश्रवेतन
स्वासका॥ कंठसोजरनजहोतरैसीविधदेषीये॥ भग्नाडिदसंन्निपा

तप्रलापहसीविधपेषीपे॥६१॥ग्रहा॥सर्वेरक्तमुषनाकछूटिमे
टजापहै॥अतीसारतजपेटअंतचप्रलापहै॥हिचकीरस्नास्काम
मोहभ्रमस्वासहै॥ऐलक्षनलषवेदरक्तसर्वतासहै॥६२॥स्वेद्रा॥
ग्रंतरबाहरदाघप्रलापककंठविषैनजकंपत्तहेहो॥भतद्रिमे
वकवाहवकेमुषसोग्रप्रलापकसंत्रकहेहो॥तालुवकंठविषैर
स्वालगिकंटकठेरनकानसुनेहो॥नीदबिनास्वसनेकसनेवुर
भकनबोलततजिहवकहेहो॥६२॥होग॥वातपित्तकफनींदवो
हवहनचिकनविकलाव॥वचनकठोरपक्कानषिनअभिस्वास
लषभाव॥६३॥सांनिपातकलक्काविषैइनकोकहेयेप्रसंग॥कासि
नात्रमतिमेलिषेतेनाअवरकुसंग॥६४॥ग्रंथववधन्वचितभैकरी
सोनहिकहैविधान॥वातापितकफऔधिरगतिअधिकसुतेराजा
न॥६५॥अथअगंतकभेद॥अभिघातकअभचारतेअभरंव

गरुग्रभिस्राव॥ यथा हेवकम्रागेज वरु मेद म्रगट्टसन नताप॥६६॥ दाघ
स्रस्व मुख स्याम ताजिषा ता द ग्रतिसार॥ विषभिंत ज्वर मछ ग्रधि
कल ह्रन वै दस धार॥६७॥ मेघ जंगं घसी सनजन छ वम पृछीक॥
कामजरत भ्रम ग्रालसीते न्हाको चवक ठीक॥ ६८॥ हिदे वैदना मुखस
सकतन मै प्रज्वर सोक प्रलाप॥ कोप ज वेपथु तन्न चित ग्रभिचारक
ग्रभि साप॥ ६९॥ मोह त्रिषा भता भि ज्वर उद्वेग ज दन हस्वेप॥ काम
जेसोक ज भ्व विषेवायु को पापि ज्वंप॥ ७०॥ त्रिक मल कोप त भन ज्व
र ग्रभिघात क ब्ल रुप॥ पंच विषम सुनक हत ग्रब गगजती क विम
प॥ ७१॥ ग्रथ विषम ज्वर भेद॥ दोहा॥ विगत तजाप त न ग्रल म त सेव
ग्रहित संभत॥ ग्रत्रन्न धात न माग्रि ग्रधिक षिम विषम ज्वर हत॥ ७२॥ ज्वो
ज्वर काल विना चडे सीत उस्रति म होत॥ वेग विषम है जासको कहित
विषम कवि गोत॥ ७३॥ संतत सतत ग्रनेहिव सति जीया चतुर्थक पंच॥

६

धातुरसाष्टकमास॥ मधमेदईज जगतिसंचव॥७४॥ सततपवनविताडि
तौषण्मेंगम्नमोहिकुकफप्राप॥ लाघिगिहोवजतनअधिकताचातुर्थिकक
विभाग॥७५॥ चतुर्थकहानत्याविभ्रमाभिसततनकर्तप्रकास॥ सर्वधातु
सोषनकरेबर्नअग्निबलनास॥७६॥ कवित॥ संततप्रमानहिनसौत
हिगसरमितमारततजतचापसततसुनीजीये॥ हिनमेंद्वेवारवेग
अन्येदुहिप्रमानहिनमेंएकवाररामहिनतौसनेगनीजीये॥ हेदुद्दिन
त्यागवेगचावथेकेहोततनवागमटवैनविपरीतपंचहीजीये॥ के
वितमतामिवेगविभ्रमसंगअगमनवीजजेमधातुहेषतेमसी
जीये॥७७॥ ककपितगिकग्राहीअधिकप्रिषग्रहेककवात॥ वातपि
तसिरमगचडेत्रिजीशानापडैजान॥७८॥ सो०॥ चातुर्थिकज्वरकी
रीतप्रथमसीसवातजग्रसे॥ अधोकायककमीतमध्यग्रसेतनअ
धिकवित॥७९॥ कवित॥ हादुरमिसाकेरगहोतहेसरीरमततनाम

सोहशि कृतापवंभ्रनकविषानिये ॥ नासामुखमुतिनैनजघरचलतकहुं
साध्यसंन्निपातत्तापरक्तस्त्रावनानिये ॥ उठतबलातकारपराधीनबो
लैबेनचलतहुंकावैपघस्यागवेदमानिये ॥ नित्यमंदतापस्मनजब
कफवातप्रापभंगकेभ्रेडइनरात्रिकछुसंधभानिवे ॥ ८० ॥ दोहा ॥ गौर
बगरनीसंगहीलिपजिमलेभ्योगातत ॥ मंदबलेपीसीततननतापत्र
लेपकजात ॥ ८१ ॥ विह्नघस्त्रमरसततनाविबैपितथानकफजात ॥
तातिग्रर्धसरीरहिमउग्रर्धउस्महोइजात ॥ ८२ ॥ रक्तपितउर्धचडे
मध्यवातकफहोत ॥ उर्धतअतनहेठहिमनरहरतनकाविगोत ॥
८३ ॥ सवैया ॥ हूबतदेहविबोपितहोकफभ्रतविषस्यितहोतजिनै ॥ ताविपरीत
तासरीरलषेजपताकरिपाइहिमहितपजातजिने ॥ ताविपरीत
लबोइसहीविघसीतवउतपकंभ्रनरनै ॥ वातकफीसमहीनलबोपि
तरैनत्रुरीकफहीनहिनै ॥ ८४ ॥ सवैया ॥ जासतुचामघवातमिलैकफ

श्रहिविधेमधसीतजुनतावै॥ संातमयेककवातजवैतवस्त्र तविधेपित
तायलकावै॥ तेनत्वचापितताघककैस्त्र तिवातस्लेषमसीतलगावै॥
तापहिमादिकंइहजपेजुरताघडुवीहिमसाघकहावै॥ ८५॥ समध्या
नुविचजुरमहं॥ हो॰॥ हिकलेहगउरतासहनकुद्दिश्रेरोचकहीन॥
लहनमेरसधातमैजुरकेवैहप्रवीन॥ ८६॥ नक्रविषजुरताघम्रमछ
हिनमोहप्रलाप॥ रक्तपुकेपिडकाक्रमडहलहनकविखाप॥ ८७॥
धफडमतपुरीषगतिश्रेतरताघविहेप॥ त्रिमाहितगिलानता
भाकमासगतमेप॥ ८८॥ त्रिधामहिस्वेदवहुछर्दिप्रलापकुगंय॥
तासश्रुरोत्वसहनतागलानमेदगतसंध॥ ८९॥ गातविधेपुन
स्वासमुखक्षहिविरेचनकुज॥ अस्यमेदजुरत्रस्थिगजकहत
गगकाविपजु॥ ९०॥ तमप्रवेसहिक्कावमीस्वासकासतनसीत॥ हि
ताभंजननजुरमजगतश्रेतरताघसमीत॥ ९१॥ मरनहोतजुरशुक्र

गतत्रै सेलहन मान ॥ से कड़ मडे जो अकी रहे वीजै वलत पहान ॥ ८२ ॥
साध्य घातुरसरकडुरमा सने ह रस छीव ॥ मज्याग नडु वसाध्यत
१ सुकन जीव नु जीव ॥ ८३ ॥ चौ० ॥ त्रर त दघत्रि ट से दप्रलाप ॥ कु
न बिट तीघन वेग सडु जाप ॥ उतसक निसजा ग नसुन वात ॥ सो त्र
साध्य तुरपा के घात ॥ ८४ ॥ वर वा सदै व संत मेवा जाहि कन्तुर साध्य ॥
मा किंतग्र घबिप्रीत मन वैकिंत ताप दु साध्य ॥ ८५ ॥ स्वै० पा ॥ ग्रंत
रहघप्रलाप जिवाम्न मग्न स्या निसघ ब्रि बैन जहो वै ॥ स्वेह विना वि
ट हो बबि निग्र हस्वा सत वा तुर लहन सो वै ॥ ग्रंतर वेग त्र साधप
क त्वो ग्रयवा हरताप जि बाहि क जो वै ॥ मार हव वा हर वेग लवो इन
लहन सों सु व साध्य गिनो वै ॥ ८६ ॥ ला लव लैमुव नै कि हे ला सग्र स
घ कि हे तनग्र ल सग्रा वै ॥ स्वा ह बि नामु ब गा तगुन छ तना सग्र सेच
कु ग्र ग भरा वै ॥ ग्रा घ मिले कि ग पाक न हो व त मत चले त्रा ति ग्रं न ना

भावै॥ आमसूतावकै लहन नरोलघ वै दन भेषज जाहपुलावै॥९७॥ दो॰॥
आमनहे षजुर वैवै विषै सोघ नवमन नकरेइ॥ घटे रहित जरछिवीह
विषम होत सम न लेइ॥९८॥ सन्निहिवस लौ आमजुर मधचनु ईसजा
न॥ ताते उर्ध वैदक विताप जु रात न माव॥९९॥ अधिक त्रिषा जुर
वेग अति मलप्रविरत उतके ह॥ स्वास प्रलाप न भ्रम मलशोपचतल
कनावे स॥१००॥ दोषप्रकित वेकितस मल पुजुर देहीजान॥ ईछा हि
मल पाक मललहत नवै दपकजान॥१०१॥ क्षुधा षाम तालघुजवै कोम
लजुर तन होइ॥ देषप्रकित उतसाहलघ आमर हत जुर तोइ॥१०२॥
अंगभंग अतिपीडा अति दाघ सोफ प्रलाप॥ इन लक्षन कर जुरजो
सोजानो मलताप॥१०३॥ स्वास मर्छा जुर त्रिषा छर्दि हिका स अति सा
र॥ विटग्रह हिचकी अंगभिद जुर हि गपद्रव धार॥१०४॥ विंस्ति
कल मत जनासिका अंगाति सोषअववलत॥ उपद्रव स्वासादिक होवे अ

तिलें घनसुनसम ॥ १५ ॥ नाफि उपर्ह वतन वलीं होष ग्र ल्पनुरसा
ध ॥ क्वार्नलह्नन वौं ह ततन वलविनत्ता पञ्च साध्व ॥ १६ ॥ केसजान
सीमंतजिह भ्निकुटी भ्नुफ स्क्वाड ॥ नैनपषमालोलञ्च तिभ्रसले
वतम्हतषाड ॥ १७ ॥ स्वेहनरेंजर पिछुवतसर्वहेह प्रतिहोड ॥ सी
तगानजेकोरहेसोनरजीवेकोड ॥ १८ ॥ ञ्राहविक्षजाकोचडेही
र्धरात्वनुरजाव ॥ क्वौनपुर्बञ्चतिक्तवत्तागेभीञीतनहांन ॥ १९ ॥
स्वासरषाञ्चतिसारहीमजक्रक्रञ्चगपान ॥ विक्षउपर्हजानस्ह
पेचञ्चसाध्ववषान ॥ २० ॥ प्रथमपैंहरनुरहोंजाञिसहारुणस
कोक्वास ॥ फिरवलमासविहोनताजुमघरकुयेनिवास ॥ २१ ॥ त्रि
ह्मामर्छ्वलघटेसहसानुरसंताप ॥ संघपीडतनस्पामताज्ञ
मषावेजिसञ्चाप ॥ २२ ॥ सोनुरचडेप्रानवहुहारनकफजुनका

नि०
१०

स॥ नरवलमासविहीनसोजमघरकरेनिवास॥१३॥ चेतनविन
निंद्राविषेजनममैरहेविनाज॥ सीतलगेजनउस्नतातासभषे
जमराज॥१४॥ सवैया॥ स्वेदलिलाटचलेजिसकोहिमपिंडलरू
पलगै। किरसीना॥ कंठविषैथितहोवेकरसकतकछुविषेबल
नातनमीता॥ सोनरहैजमकेघरमोञ्चरोमउठेछिगलालसु
पीना॥ श्रमलहोवेहिहेस्वासवढेजुरंगगयतीजुअसाध्यकीनी
ता॥१५॥ सवैया॥ स्वासतिग्राहिचकीछिगभ्रामकचेतनमंडतमे
स्वसकीनें॥ तानरकोजमराजमषेञ्चपईहप्रभाहतरोचकही
नें॥ नीठनवेगनपीडतजोजुरक्षामगंभीरततजोकविजीने॥ मा
सविषेनरमित्रतकहोवेजलतैतलविषेसिरहेषतहीनें॥१५॥ हाथ
त्रिषाभ्रमस्वेदग्रसंगतकंपतहैविटग्राहसुनावै॥ कूजनगे

राम
१

धातुहोषज्वधातुज्जंभ्रतजवेगनलंछलखावै॥ मोह्लसमोतिकहीज्वर
कोलखहोरसभीतपस्वेदलखावै॥ गगज्वतीभ्रमहोतहृपाज्वरसाध
ग्रसाध्यतवैमिटजावै॥२१६॥ स्वेदलघुमत्रहोठपकेसिरकेंदुस्रवोंछ
तश्लेष्मग्रतो॥ छीकतचिंतभ्रसेन्वपकैंश्रुतलेहनताबामिटैकीगतो
भ्रयरुकंहुहसभीविष्मागहधातुप्पित्तीप्रक्रितीविक्रती॥सामनिराम
सुबहवसाध्यग्रसाध्यकुपेसुनिहानपती॥२१७॥ इतिश्रीपरजपंडत
सुततरोंमततसिछकविगंगारोंमजतीविरचतेजतीनिदान
सर्वज्वरदिनिदानत्रयोदससंन्निपाततनिदानप्रिथमोप्रकासः॥
१॥दो०॥ खुस्तनरपमसुवेदतचरनजीतेजैतेच्यजेदश्रविजितनाथमगल
कथैविघनहरैसुखहेद॥१॥अथग्रतीसारनिदानं॥ स्वेया॥ स्निगधगु
रुद्रव्यरुखमैखग्रतिसीतलस्थलविरुधग्रहारा॥जीर्णतेविश्माध
सपर्कमदराविषसोकभयादकधारा॥ वेगाविघाततरमैजलमेविपरी

तचितीकिमहेखअघाश। घोरअतीसरररोगहोवेतिसरोगपतीखर
देखप्रकारा॥२॥दोहा॥ विविधअहिं तसेवनकरीसमननहुतासनहो
ता॥ वटेघृततजलविटअघोअतीसारतकविरोगन॥३॥ ग्रंथकहेख
गैहेघतेसोकजस्रामजमान॥ कासिताजमतिनवलिखेइहजमैंते
कजान॥४॥ग्रहा॥ गुहानाभिफ्रिद्कुंछउदमैतोहहै॥ गातसाहविट
संगस्रानिलसुनिरोहहै॥ पचेनहीतिसअंग्रभ्रअफारामानीये॥ स्रमी
सारकोरूपजुपूर्वजानीये॥५॥दोहा॥ वारवारविष्टाअल्पसुसक
अरतनस्रोकेन॥ स्रामस्रूलतरुवजुज्रअतिअतिसारपवनहुवदेव॥
६॥ सवैया॥ पीतजसारविवेविट लोहतनीलमपीतहहैरंगस्रा
वे॥ दाघत्रिषागुदपाकतमूर्छितलहनतोकफकेजुसुनावे॥ स्वे
तघनाककजुक्तवहेविटविस्टतिसीततरोमउठावे॥ इहजमैहे
गभेदलवोकविरोगगजतीत्रिकनेषमसुनावे॥७॥दोहा॥ सकरखर

वीमांसजलतासमविष्ठ होत॥ अतीसार कि ढ साध्य ताकहु तस
कलकवि गोत ॥ ८ ॥ स्वैया ॥ मानववैद्युविनासग्यो धनसोककै देहि
गवेदनकै है॥ भाकहु तासनकोहतकै गतकुष्टवि बैरघरंग्रघगे
है॥ सारककै नरकोविटभिग्नतंगधविनाग्रजिंग घसटै रः॥ सोक
जसारमाहादुखहापक्कवैहकोउकजताससनिवेरः॥ ८ ॥ दोहा ॥ मकुत
मीनेअंनबोभवाजाहिकहो वै॥ धातुमेलाकितसेगको छगतिसरजुग्रते
है॥ नानावरनसजलपहे॥ षक्रितसेकनजानो॥ ग्रामजुषछमसारवै हति
सकछपकानो॥ १॥ दो०॥ सर्वरोगदुष्टतजवैविछमंजतवाहि॥ सत
तगेधविटपिछवतकाचालघग्रजिसार॥ २॥ चौ०॥ जामनफलप्रप
कसमान॥ यक्रितपिंडवतसछमजान॥ वसातेलघृतमेहाकही॥ वे
सवारपमहधकोलही॥ २॥ स्निगधमासधोवनवनजान॥ मेचककक
रवुरकालामान॥ अजननीलविष्टतस्निसगंध॥ केकीपीछचेदका

संध॥३३॥कुणपगंधसमरहतपुरीष॥सिरमेंजासमकुयनवसीख॥
घनअग्निनरकोअसासरे॥महतउद्रवसुनिविनघरे॥३४॥पसवलीअ
लहोतनमस्वास॥हिचकीहाबढरघाअतिकास॥अश्रतमोहमर्छाजुत
लीन॥गुह्पाकतनबलापअधीन॥३५॥दो॰॥अतीसारनरजुक्तरह
तक्रनबैद्रपकान॥गंगजतीसाचीकहेजमपुरकुदेप्रान॥३६॥निकस
तंचफिरनवडेभालअफाराजोइ॥सीतगातगुदपाकमरछीनरहेह
मनहोइ॥३७॥स्वासभ्रलजुरछीननतनत्रिखाबढघनरहेख॥अतीसार
पीडाहोवेसोनरमनजविसेख॥३८॥स्वासकासहिचकीअरुचत्रिखासोथ
जुरभ्रल॥मर्छाडाकीवैहलविअतीसारमनकूल॥३९॥करपहअंगु
लसंधिमैपाकमजावित्वंघ॥जाकेगरमपुरीषलषअतीसारमनसे
ध॥४०॥गर्भभेवझीसेवअतिहषतपितसरीर॥तवमानवकोहातहै
रक्तअतीसारमीर॥४१॥वालरक्तनरछीनवाविषाहोतसुगंध॥स

कैउपद्रवजंत्रवासोनरहनमकेफंद॥२२॥सवैया॥बातकुपथ्यसमीर
वधेकफमेलग्यघोगततगेरततसोई॥वाहततैहैविटभिद्यतिसोवहुवा
रवहेमलकिंचततवोई॥नामनिवाहककहेतिसकोअघवाततकरीपुत
अतलखोई॥पेततजहायमहोककफतैककफश्रोणतभिश्रतसोणतजो
ई॥२३॥दोहा॥अतीसारसमजासकोपंडतकहतसरूप॥ललतनग्राम
विपकताकहततंगंगकविभूप॥२४॥क्रियालेयनाहिककहीपाच
नहीपवनजोग॥समनप्रवाहकहोतनहिसोअसाध्यलखरोग॥२५॥
ताकोविष्टाम्रतविननिरमलअम्बवेवाइ॥दीपतअग्निलघुकोउ
तिसअतीसारामिटजाइ॥२६॥अवगाहनमंजनमलनभारीचिक
नअहार॥छेदअग्नमंसंतापअतित्यागेजुतअतिसार॥२७॥भिंनाभिं
नअतिसारततपकबोनिहानसुरीत॥तातैभिद्यतकरअठैकहैवान
हीकवमीत॥२८॥इतिश्रीपंडतपजनतनसिपककविगंगाराम

इतीविरचतेअतिसारानिदानाधिकारःनामदुतीयोध्याय॥२॥
दोहा॥ जनमजरामरनादिभय महादुषसंसार॥ सेभवनाथजनेसजू
हमरीकीजैसार॥१॥ अतीसारकेमिटतहीमंदहुतासनत्रास॥ वि
विधअहितसेवतवहुतदूषतग्रहणीतास॥२॥ अग्निघटैवषटीक
लाअपकअंनअधार॥ थाननामध्रतासअपथ्यपकसवैकरजचार॥
३॥ इनसेअतिदूषततजैआमपकवाअंन॥ वारवारद्रिववधाव
टसपीरदुगंधीमेंन॥४॥ इसविधजगगरहनीकहततपंडतजेक
विमय॥ विरचितकविअववैदसुननताकोपरवंरूप॥५॥ त्रिदमाआ
लसहीनवलअंनाविदाहीहोत॥ चिरकरपाकतजासततनगोरव
लथिकविगोत॥६॥ सोरठा॥ जषकवाइकदुत्तिक्षाअतितीनलभो
जनवाप्रमतासी॥ रोकतवेगकरेअतिमेथुनमारतकोपतवंवनि
विनासी॥ रोगग्रहणीदुषपाकतअंनषरंगगतआमलकंठमुषासी॥

स्रुघतभष्ठविनात्रिस्मात्नगवंछनग्रीवविवेत्तिमरासे॥७॥कानस्तुनी

ह्रिदयीरप्यिसत्तचग्रभीछनस्याहविनामुष्जाके॥ षेढतचितरसा

हिककोकतनेतनत्रेमिकनाजनुवाको॥त्रीजेतग्रनमपोत्स्यधिमा

नकघावतस्वस्थलषेतननताके॥संकतचितविबेगुलमीपधमा

नपलीहह्रिहैनगसाके॥८॥होण॥चिरकरस्तुसकनवेदुष्ठीग्र

त्स्यग्रामरवफेन॥वारवारमेचेवरचसासकामत्रनिलेन॥९॥क

टकपुरातननाघक्रितभषेग्रमलक्षराहि॥वठेपितग्रहनीदु

षेकोष्ठग्रग्निव्रतिछाद॥१०॥पंकतछैद॥तन्नस्तुपानीत्र्यागवु

जानी॥सेविघज्ञानेपंडतमाने॥११॥होण॥सोनरन्दवेग्रपकताषे

लानीलासाग॥पत्तगंघह्रिदेकेठत्रिटदाघग्रत्नचवउनहारा॥१२॥

ग्रष्यगुरचिकनहिमाहित्र्यतिभोजनक्रितत्र्यतिभोर॥भोजनक्रि

नहिनसैनकफकुवतग्रग्निहतवेग॥१३॥खेपा॥कारकेग्रनप

चेहुयसोगनिसरुहुहिंडलासनअरोचकदेखे॥ माधुरत्तामुखथुकत
पीनसकासरहि देघनपूरतवेखे॥ दुष्टमिठासडिकारहुवेजनही
नगुनचितटभारविसेवे॥ अ्रामस्लेषअजुत्तवहेतनअ्रालसयल
क्रिसीकफलेषे॥२४॥ दो०॥ वात्तपित्तकफकेकहेकारनसंजनअ्रा
न॥ अ्रवत्रिदोषग्रहनीसुनेमलतनकहत्तवषान॥२५॥ वसंतति
लका॥ पासेदुषेजुगमअंग्रगप्रसुतियदेषे॥ बोलेजिमेजलयदीघु
नवेटवेषे॥ त्रिदोषदीकहततताप्रतसिधुश्रावे॥ सोग्रहनीलषत
रोगअ्रासाधभावे॥२६॥ अ्रनाहअ्रोदनप्रतिकूजनपीरा॥ हावे
दर्नविकनपांडुकटीदुषीरा॥ अ्रामेवहुनेरथवेहनमेदजाते॥
सारंसपिछवत्तग्रहनिसंनपाते॥२७॥ दो०॥ इसदाइसत्तिपमा
सलगग्रहमेचेमलभार॥ इनकोपत्तनिससमनहोवेदुरगेया
चितधाया॥२८॥ दुषनिवारचिरकाललगनिसअ्रनुबंधपछान॥

ग्रामवात्तसैंहोत्तहैसोसंग्रहनीजान॥१८॥ग्रहणीआमविपकतात्र
तीसारवतभाइ॥करौचिकित्सासमकैंनजहैंपर्वंवाइ॥२०॥त्रि
नलहनसारीमरेसोअजनसुनमीत॥नजग्रहणीतजवेहन्व
भिघविवेरोहरीन॥२१॥वौहतउपद्रवजिसविवेघोरमाघृतनजो
इ॥प्रतिलोमीग्रहणीजिसेमासविवेम्रतहोइ॥२२॥ग्रहनीमेवल
आग्निकोमेदहुतासनहेत॥नवहुघतग्रहनीहोवेकहतसर्वकवि
गोत॥२३॥इतिश्रीपंडतपजनसनतरामतनसिष्यकविगंगारा
मजतीविरचेयंजीनिदानेग्रहण्याधिकारःत्रिंसीयोप्रकासः॥
३०॥दोहा॥मिथ्यामतिअंउनसहासमोसर्वजुतसाज॥विघ्नहरन
मंगलकरनंआभिनंदनजिनराज॥१॥अथअर्शनिदान॥अथच
कहोवत्रिकहोवतेअअजसहजविचार॥षटप्रकाररनजअर्शके
गुदत्रिकवलमैधार॥२॥होवततुचापलमेदमैहृवतविविघस

रूप॥ मांसांकुर गुह्य आदिक रक्त अर्श कहत कवि भूप ॥३॥ दोहा ॥ रूख
कषाइ कटु तिक्त लघु तीक्ष्न सीतल भोजन घोर ॥ मैथुनमंद्रपवि
केअति तेल घन सोक समीर रजु अनातप जोर ॥ सीत समै देस हि काल वि
वै वौह कारन वात बवासिर घोर ॥ चाथ कटु अम्ल लवनो सनि
षेद दहन तास न घपरु खोरा ॥४॥ देस हि काल मनुष्य लतीक्षुन दाहक
उष्न समभी क्षित भोजी ॥ संपत्त देष वि वेम हकोव वसी र बधो । पित्त हेत
लषो जी ॥ चाय गुरु मधुर चिकना लवना मल हेत अति सीतल भोजी ॥
सैन दिने सुख आसन बैठन पूर्व वात भजै न र उन्नो जी ॥५॥ दोहा ॥ देस
काल सीतल लषो चिंता विन न र उन्नो इ ॥ इन कारन ते वेद वर क की
अर्श तन होइ ॥६॥ दै कार्न लह न मिलत दुहु जन्य अर्श पहिचान ॥ त्रिक
कारण तै होय की लक्षुन सहज समान ॥७॥ दुहुजकारणियथा ॥ मि
लषवहाइ द्य लवन तैल संग वातूप ॥ दुह जन्य अर्श निदान रहे हअव

सत्न पर्वरूप॥८॥ सवैया॥ सज्जि बिना तनचंभ नहीं विट कुछ ग्गुठाग्रुड
होत अूफाटे॥ स्याम डिकारवहूत न पीडत किंचित हीं विट चित्त वि
चारे॥ ग्राहम्या हे घक्कि धोउ हरी रतजपाउ भ्योइत संकत भावे॥ पर्व
रूप ववासिर कोल बिगंग गजती फिरवंम चित्तारे॥ २॥ कवित॥ वा
तज पछान मीत ग्राव तै विहीन दीना चमना चिमत सुबमल न पछानी
ये॥ स्यामना ग्रस्न नरेग कठनकठोर ग्रंग विषसुभाव वरस हूसन
मानीये॥ कुटल सुभाववां के ग्रान न फुटत जाके विंवक वजूरवे रत्न
ई फल जानीये॥ केचित कदंव फूलके चितसरै कोतुलछुव वूडिका
रस चविट भंग हानीये॥१॥ स्वासहि देपी वहोत पावक विषजा
कीकांनन मैं नाद भ्रम सोक विट वहेहे॥ पीजके समेत तंग्र चवाह
तसफे नरव पिंछके समेत विट ग्रुटिका ज्योवहेहे॥ स्याम विट मत
नैनन नव तुचा मंद हवै नटे ढत्ताई होत जामै गोला किहीं रहेहे॥ मास

षिंऽजानजाकेलछनपछानवाकेबाजतववासीररीतगेंगजनी
कहेहै॥१॥पित्तत्रसनीलपीतलालस्यामजाकेमुखसूखनरुधि
रस्त्रावस्नामगंधदेषीपे॥कोमललिसचलथोरीपक्तितकेखुरसरू
जीभकेसमानजेउजोकमुमलेषीपे॥स्यग्रुदपाकजुरस्वेदत्रि
टमोहदेतमरछीकीमरोरआफदूवनीलपोषीपे॥लालपीतता
तीविटमध्यजोहरितपीततुचानबविटस्त्रादिहहरिद्रविसेषीपे॥
।२।कफत्रसमहअमलघनस्वेतमेदमालउतपनपाकखतदेषवि
कनाईको॥चूचलनमेतविनगुरुधिरपिछसमयपनसकरीरहाऽ
लषोकंडुताईको॥गोचनसमानजानवेछनग्रफारागुरुकषनस
नाभवसुलालस्रावताईको॥पीनसहुलासरुचिस्वासकासमेहहृ
छसीसजाअसोजन्तुरपावकमिटाईको॥३॥दो०॥नपुंसकस्वगाकी
होवेकतेंस्त्रामक्रितरोग॥चरवीसमकफप्रचुरस्त्रजिवाहतविटजु

तसोग ॥ १४ ॥ अवजनभिदयजसोकहासनिगायपंडुलबुभ्रेन
विष्टाकुष्वतुचमूजनपलषोदेदसितनैन ॥ १५ ॥ भिश्रजतलछन
जासके ह्द्द्जग्रर्श्रीपछान ॥ सर्वालिंगतेहोषकीसाहिजालिंगसम
न ॥ १६ ॥ सवैया ॥ अश्वजकीलगुदापितश्रीकितविद्रूमगुंजवटांकु
रजैसे ॥ दुषत्तजछअग्रतीउअंभविटगाढप्रपीडनिश्चावततैसे ॥ अ
श्वधरतिषईअतिहोवैतनभेकसमानदुषीफिरजैसे ॥ रूपधुसी
वलहीनभयोहतओजसाईद्रमलीनमजैसे ॥ १७ ॥ स्यामकठोरस
जछलषोविटवातअघोरतहोतनमैया ॥ सवमलालसरंगस
फेनलग्रसुअवेउरलंकगुहैया ॥ पीडजछीनभफेअधिकेसन
वातनुवंधसजछवतैया ॥ वायसनोकफकोअनुबंधकसीतल
सेतगुरुसिपहैया ॥ १८ ॥ पीतविटीद्विकनाघनहैववासीरजग्र
सुजतंतलषावै ॥ पिछलपांडुगुदापिछकेसमनिश्चलजेचिकना

नि०
११

गुरतावै॥ कार्नएककफअम्लकककेअ यतीनगुदावलनामसुनावै॥
प्रवाहणीजुविसरजनताकिसंचरनीकविंगगवतावै॥१९॥
दो०॥ पंचात्मकोपनिपवनपिजकफौजिमरीत॥ गुदत्रिकव
लमैसर्वमिलिगुदजाकर्तसुमीत॥२०॥ पवनपंचात्मयथा॥ दो०
प्रानअपानसमानजिण उद्यानव्यानक्रमपंच॥ हिदैगुदहायुनीवि
वेकंठसर्वतनसंच॥२१॥ पंचात्मपित्तयथा॥ आलोचकरंजक
गिनेसाधकपाचकभ्राज॥ नेगपुगलशाक्निनहिदैपक्वासयतुचसा
ज॥२२॥ पंचात्मककफयथा॥ दो०॥ अवलंबीसुकलेदकोवोधक
तरपकवंध॥ स्लेष्माहिदैआमासगनजिकासिरक्रमसंध॥२३॥ इस
कार्नवहुअर्शहुवसवजननतापनमाध॥ सर्वरोगक्रितकहतकवि
सततनक्रिछतमआधि॥२४॥ ववासीरगुदवाहिरवलमैकहैववलवमी
त॥ जाकोचिरवीसोनहीसवसाधकईसरीत॥२५॥ द्वंदजजाकोअ

शीहै गुरदुती सैवलदेष॥ एकवर्ष जिस प्रभ.वो कि छुसाध्य कावि ले
ष॥२६॥ शाषजन्म गै हैष कीगुद अंजन रवलिवीच॥ गुदामूलस
वलछुना शोअसाध्य किजमीज॥२७॥ वारपाद मेवजमिलै जा
प रोग वहु दिय॥ सेषआगुजन अग्न वलिइ तरहे जन हि सिध॥
२४॥ हस्त पाद मुष नाभि गुद वृषण शोथ हि है शूल॥ जिस रोगी प्र
ति होज इह सो असाध्य दुष कूल॥२८॥ हि हैप सुली पीडजत्रिषा छर्दि
मोह गुद पाक॥ अगन कै जुर नास को गुद जाक ते विपाक॥३०॥ अरु
नअतिश्रव न त्रिषा होवे सूल अरोचिक जास॥ अर्श शोफ अतिसार
जुत अवले वजि भिन्न तास॥३१॥ सिस्ना दिक अवअरस को नाम जथा
वषान॥ गेंडु पद मुष रूप लषि पिछल कोमल जान॥३२॥ वाष्य आ
नक कको ग्रहीव हिर लु चाकि जमीज॥ अर्शी की समधिर कर्न चर्म
कील विदुरीत॥३३॥ वात अधिक पीडजक ठनापिज किसअजिला

ता॥ कफ क्षित त्रिकनी ग्रंथ लघ तुवावर्णसम भारा॥३४॥ कहत
रसौली तासत्रय अर्श हैं होवी रुप॥ संसरगी घट विध कही वे
दक मतिकाविभध॥३५॥ देघ कुपतन बने दमध पल श्रोनतक
र संग॥ तव हि दुष कें इक रैकें दु सैंनन मेग॥३६॥ जिसछतपल
श्रंकुर उठे त्रधि रश्राव काविगैरत॥ नास लिंग ताको भयो चपल
नपुंसक होत॥३७॥ तथा ज्यौन मै दुष्ट होवे गेंड पदमुष जेम॥ दुर्गं
धी को मलसर्वे पिछल समलघ सेम॥३८॥ श्रोऊ होव ऊचो चडे
कर्णअर्शरु जथाइ॥ कर्णफल वधर यत्नासतन ज्युक्त श्रवाइ॥
३९॥ नेगस जलश्रस अश्र वेल बो छिगन नमै पीर॥ पछमारो घंपछा
नलै नैन अर्श सुनधीर॥४०॥ घ्राणज मै प्रतिसाय लषि छिकै छस्वास
सिर पीर॥ छवषमुमवदुर्गंधता वर्नननासक कीर॥४१॥ केठ अर्श
मषता लमधगदगद बोले वैन॥ स्वाद बिनामष रोग किन कह

तनं गकफ पितृस्त्रेन ॥ ४७ ॥ सवैया ॥ आदि स्रवात पित्तीकफ दुंद जहे बत्रि

केस हठ जाति विषानी ॥ अश्रु जहे त्तस त्रपकरी चित्त शोक जे कीग्रहनीन

बलानी ॥ घ्रान जुके ठमर्ष को अथ री ल षिसाध्य अस्ताध्य जु वंडित मानी ॥

भेष जु बैद करै विध सो हु जको करहा नत्त वेरजु हानी ॥ ४८ ॥ इति श्रीपं

डत पजूस्तरत राम तत्त सिष्य कवि गंगाराम जती विरचिते जतीनि

दाने षट प्रकारादि बहु भेद अशीनि दानाधिकारः चतुरथोऽ

कासः ॥ ४ ॥ दो० ॥ पाप पटल चूर्न करै तीछन बुध कर रेत ॥ हम प्रति नं

गलक तंत्र भ स्तुम तनना य भगवेन ॥ १ ॥ अथ अजीर्ण निदान माह ॥

दो० ॥ विषम ठ तीछन मंद सम पावक चार प्रकार ॥ वात पित कफ अ

धिकता सम नलुक सम धार ॥ २ ॥ विषम वात त्रि म रज करै तीछन पि

त्तन भित ॥ मंद अग्नि तन मो करै कफ सेभ वरज मित्त ॥ ३ ॥ समन अग

नो की ल षो भोजन प वेल री त ॥ अलप न पाचक हो त जिस मंद अग्नि

निं॰
१२

लक्षमोतत॥४॥कछूपचेकछुविनहिपचेपावककोविषमपछान॥अधिकमध्य
गुरुमात्रसबपचेसतीछनजान॥५॥समनअग्रजाकीसदासमसुताको
नाम॥सुनोवैदजसवंतदुजकहतसुगंगाराम॥६॥स्लोक॥छीनमं
दजिसकैतननमैकफकोपतनपितसुमारेतलै॥पावककेतेजकरैअति
हितसदरोगभयेभसमकतवै॥स्वासत्रिषातननदाघसमूरछतपा
वकसंभवरोगकरै॥आमविपाचकअंनुभयोतनधातुमलादिकछी
नसभै॥७॥दो॥भोजनक्रितछिनहोतहवैजीरनमुहजतहोत॥स्वास
कासत्रिटमोहयुततेभस्मकविजोत॥८॥अथअजीर्णनिदान
चौ०॥आमविदगधविस्टबधपछान॥कफपितानलक्रमत्रिकुठान॥
कईअजीर्णरसैलेत॥चौथाहारसेबकहदेत॥९॥अजीर्णपंचमकेवि
तकहें॥नितदोसौदिनपाकचलतहै॥छठेअजीर्णरहेलेखो॥प्रक्रितरू
पप्रतिवासरदेखो॥१०॥मधरअंनसंगसलखआम॥अमलविदगधल

षोक विलाम ॥ तो दसू लक हु पकै जात ॥ विष्ठवधश्रमुक्रिमकेजुतवा
त ॥ २१ ॥ दोहा ॥ होत अजीर्ण केलुन कारन पांन कहै जल को जु अती ॥
धारन मूत पुरीष कै विषमासन बैठत मंद मती ॥ कैलक्रमी विकाना
गुरु हीलछु भोजन हीक्रित गंगजती ॥ रैन जगै दिन सोवत जो तिसगं
ननपाचक होत रती ॥ २२ ॥ मात्र प्रमान भषै श्रय थकापथ जो अरु एहोतन
कृपन गते ॥ चिंतन सोक करै दुष श्रासन क्रोध प्रजागन इ हु भए ते ॥
लोभविषै हक दैन पनै तन पीडुन सेवत है षयुते ते ॥ हास विनोद जो
त सुने रतीं अंन पचे सुषसे जसिते ते ॥ २३ ॥ अथ श्रामाजीर्णलक्षन
दो ॥ सोपस्सीडु दृग कूटगहु उदगारसि उकलैद ॥ आंमअजीरन मुक तप
रस्त्रवध गधील षबैद ॥ २४ ॥ विदग्धजथा ॥ विदग्ध अजीरन भ्रमत्रिषा
पित पीरा बहु भेद ॥ धूम अम्ल उदगार जुत मूरछा मुह जति स्वेद ॥ २५ ॥
विष्टवधयथा ॥ विसटवधी अध्मान रुज विविधि वात की पीर ॥ संभमो

हतनपीडअतिहकेपवनमलधीर॥१६॥रसमेबजथ॥अंनविदे
षीमेसरसमरद्धावमुपूप्रलाप॥हिर्देग्रेसधगौरवसदनभ्रमप्रवे
दकविवाप॥१७॥जौलगहि[illegible]तनअंनरसदुसटहिर्देकैवीच॥तौ
लगभेदनमरमप्रातिविषपीवत्तजिममीत॥१८॥निजतनसुषजो
चहतनहिपसवतभोजनकार॥विनप्रमानहजमलहजलहत
अजीरनुभार॥१९॥स्वलपदोषजवअंमबधलीनतेजपथरोक
भूषअजीरनमैभषैहीनबुधिविषजोग॥२०॥बहुतहारवैषमय
तेहोतअजीरनजान॥सर्वरोगतिसतेउठैतासमिटैहजलान॥
॥२१॥आमविसटधविदगधइहभेदअजीरनतीन॥विसूचीअलसि
कानामकरवेलंवकक्रमकीन॥२२॥अथविसूचीनिरुक्रयथ॥
जासअजीरणकैविषैसूईजिमतनभास॥रोगपवनतिसटतकहै
कहितविसूचीतास॥२३॥अथविसूचीनिदान॥दो०॥क्दितागम

परमितभषनहोतविसूचीरोग॥ग्रसनलोलपीमरुडनमलहत
अजीरणजोग॥२४॥सैया॥मरछुतदाघपिपासभ्रमीतननहुष्टनि
जंभलरोगअतिसार॥कंपतपीरहिरदेवमएमुषरंगविनाततनस
लविचार॥मेदासिरोअथमुहयतकूजतरोकतकुक्षिजुदेषअफ
र॥ऊपरहेठसरोकतमारतकुक्षिजुगेमधकीनविहार॥२५॥
वायुप्रसंगप्रकंपअनाहतुसाथहिमादिकरोगकरैया॥पितविषै
जुरसंभ्रमदाघअतीसरस्वेदनिपयुम्हलषैया॥संगंककीयुरता
तनछुरदतभंगवचीमुषपूकपूकैया॥हैदजमैद्विकलछुनको
लषिसंनविषैत्रिकप्रानहनैया॥२६॥दो॥वातवरचजाकीरहकै
श्रातसैकनिसुनमीत॥गंगजतीकविकहतइमअलहकरोसीर
त॥२७॥त्रिहासेउदगरजिसछुभहिरदेकैमाहि॥अलसकलछु
नसाधयलषअतीसारवमनजाहि॥२८॥सलादिकजाकोकठनश्रा

तहकेसुननतेम॥ अंतमनिमयकननसकलपंभनदंडेजेम॥२८॥
कहतदंडुअलसकतिसैअविलंबतनननास॥ तजोवैदताकोस
ततजोईहतस्यावास॥३०॥ ऊरधअधोगंछतनहोउदनप
चतनजास॥ तिसअलहककोवैदतजितुरतकहैतनुनास
३१॥ अथविलंबका॥ दोहा॥ हेतविलंबसुनेक्रितभोजनदुष
करेकुपमारतदेनो॥ सोनचलातअधोगत्तऊरधरोगविलं
बककीविधिहोनो॥ रोगमहाबलवंतकह्योसततमेषजहेक्रित
सिधननेनो॥ वैदपुरातनविसाठदभाषतआयुवडीजिसहो
वतउनो॥३२॥ दोहरा॥ जहाअसाध्यिहजयामनसवढविसेषवि
कार॥ तबतनवयपतदोषततलछनआमविचार॥३३॥ तत
लछनयथा॥ दो॥ जिसकरवातादिकदुषेवयापैसकलसरी
र॥ तिनलछनकमयुकततननततपदलछनधीर॥३४॥ अंमरस

दृष्टा॰ भाष्यबलगमीअनलपबलमंदधातुविनपाच॥ आमासयगु
तदुष्टरसग्रामकहितकविपांच॥३५॥ आमासयलछन॥ अधरदं
तनषस्यामजिसबमनकरतगतिनैन॥ सिथलसंधसरहीनविनु
सेज्यानरमितुरैन॥३६॥ अथक्रम॥ मत्रघातनिंद्रनसैसंज्याव
नत नुकंप॥ अरत ऊपद्रवपंचईहरोगाविलचीजंप॥३७॥ गौर
व्रतनविटभेदमलवातविवंधविकार॥ आकाछ्तउदगारसुधए
षटजीरणधार॥३८॥ भूषपियासलघुजासकीसुसचितसधडिका
र॥ वेगसरगइछुतिलषोलछनजीरनधार॥३९॥ अनभषैकदुरू
छनरमारूतकफतनहीन॥ पितवढेअतिपवनअतिअग्निवढेर
सहीन॥४०॥ सर्वज्वरादिकरोगकोअग्निमंदलषहेतु॥ ताहितस
मपावककरोगंगजलीकाहिदेत॥४१॥ चौ॰ अग्निचारषडजीरन
सात॥ तिसतेभईविसूचीजासा॥ अलसकनामविलंवीतीन॥ साध्य

ग्रसाध्यभेदकहिदीन॥४२॥इतिश्रीपंडितमूजसूखरनसंमततनशि
षयकविगंगरूसंमयुतीविरचतेज्ञतीनिदानेग्रग्रिसंदादिग्रजी
रनविसूचकाम्रलसंकनामविलंवीनिदानपंचमोप्रकाशः
५ दो॥ पदमासनचलपदमपरपदमप्रभाननरूप॥ विघनहर
नमंगलकरनपदमप्रभूजिनभूप॥१॥ ग्रग्रिभेदप्रतिपादकाठिसाध्य
ग्रजीरनयोग॥ तिसतेउतपतिहोतहैभाषोक्रिमकोरोग॥२॥ वाह
रग्रंतरभेदकठिक्रिमहैदोइप्रकार॥ वाहरमलकफरुधमविटज
नमभेदलषचार॥३॥ नामवीसग्रंतमक्रिमवहिरततहोंमलका
र॥ तिलप्रमाननसिरक्रिमकछुविपटंकचिमैकविधार॥४॥ वहुपद
तनसूषमतिमैयकालेम्रपसनाम॥ दोइभेदक्रितपुरकागठपि
डकागंठसनाम॥५॥ सैया॥ कारनम्रादिसनोक्रिमग्रंतगम्रामि
षुभषेग्रतिषाम्रिषदाई॥ प्रिष्टभषेदिवधीतकेगुडभोजनव्याम

तजैदिनसाई॥ फेरविहधकरेनरभोजनरोगक्रिमीत्तिसहवैद
षदइ॥ लछनतीनप्रकारनकेविधंगजनीकविदेनवताई॥ ६॥
दो०॥ माषपिष्टगुडलवनकोअमचसाकनरषातन॥ पकासपुग
त्तिहोतहैविष्टाक्रिमकविताल॥ ७॥ मासमलसगुडषीरदधिहु
क्रिपानक्रितजोइ॥ तांकोकफक्रिमहोतहैसनोकवीजानलोइ
८॥ समकधानचरवणकरैविहधग्रजीरणाहार॥ साकादिकभ
छनकेरैश्रोणतक्रिमतवधार॥ ९॥ रंगहीनज्वुरसूलभ्रमहिर्द
रोगलषिछरद॥ भकतिहेषग्रतिसारयुतक्रिमलछनलषम
रद॥ १०॥ कफक्रितग्रामासैविषैत्रिधफैलसवभूल॥ केचितव
रमलतासमाकोरेडपदतेल॥ ११॥ स्रठधानग्रंकुरजिमेलंवे
सुषमजान॥ स्वेततामूभस्तलषोनामसपतविधमान॥ १२॥
दो०॥ ग्रंत्रादातउदराविटमान॥ हिर्दपादामहकुहापछान॥ दरम

कुसमउर्बील षमीत॥ सातम नाम सुगंध करीस॥१३॥ जिसके ल
ल णसुनो जो आवे॥ सैन विषे लालं मुष सवैं॥ अंगन्यास जो विक पाकु
न होवे॥ मर्छभुडंहिं स नाहत जोइ॥१४॥ छव पूपीन सउर किसरे
ह॥ कमहकमल दन भावे रह॥ सब कंधि रज कमल दल नकहे॥ सि
रार तव हघान कहे॥१५॥ सषमर जन नाम बषान॥ स्रा
पादक वन मुसकसुजान॥ केवित मुष्मद रस न हीन॥ के सा
वित तबो प्रवीन॥१६॥ लोम हीप विधं सी लोभ॥ उदंभ्रर हषट
विषकोम॥ कुष कर्म इन का पहिचान॥ सहसा रस मातर कवि
जान॥१७॥ पकास गति ग्रघ सुन मोन॥ कमपुरी वजकी पहरी
त॥ अधो विसर प प्रात स्रति वहु भए॥ स्नामा स्पकोउन मुषन पे॥
१८॥ वैटनस्वास सकार हुगंध॥ तन सकल ले वेवहु संध॥ स्याम पी
त सित काले रंग॥ पंच नाम तिस केइस टंग॥१९॥ चौ॰॥ कह

तककेरसमकेरुकतामा॥ कैरसराहिसलूंनोनाम॥ पंचमननामलै
लहंजोंन॥ विष्टभीविटभेदकरान॥ २१॥ अलविंसीवधुपारुषपं
डु॥ योमनहर्षहोवेगुरकेंडु॥ होइविमारगपावकमंद॥ स्ताहिकसु
मदुधनकुंद॥ २१॥ होरसनेकवनेसभत॥ स्वाथुकसमनताकोत
घसत॥ होनविनाहिकमैसमनजात॥ कीडेकहतलोकपलघात॥ ११
दो०॥ अतरवाहरिमेदहैवायकहेक्रमरोग॥ अथसुनिकिमतेजे
मपांपांडुरोगसंजोग॥ २३॥ बाहरक्रमहेविधिकहैगुकालीयमली
न॥ अतरकफविटनघरकीकहेमेहकवितीन॥ २४॥ इतिश्रीज
तीनिहननेक्रमनिहाननेकिमनिहननसंग्रहनो॥ अथपांडुनिदान
निरूपते॥ दो०॥ पांडुरोगगनपंचविधिवातपितकफतीन॥ चौ
थाविकसंजोगमिलमृद्भषननसरलीन॥ २५॥ सवैया॥ पानकरै
मधुराम्लरसमेपुनतीक्षनसेवतलूनखटाई॥ सैनदिनेमृदभक्ष

तजो मिलकै रुधिर रोसमन होय कुराई ॥ पांडु कै तनु चको नुचमे र
तपीउतत गाततनु यकक पकाई ॥ पांडु नमितक हिए विषसों अय व
वे रुपसतु नोचितलाई ॥ २६ ॥ दो ॥ सोफ द्रिग नकी कूट मै पीली वि
धा मत ॥ अन पाक त्रिस होन न हिलत्तन पांडु हन्न ॥ २७ ॥ वमन पां
डुकं पै सुनत तजो हम अनाह अमाद्रि ॥ अस्त एन रुक्क कालीव आनु चा
मतनै नादि ॥ २८ ॥ पैतनक विट द्रिग पीत तलमुदाघ पर रवा कुर संग
मे हितविट अति पीतता मरुअ तुचा कोरंग ॥ २९ ॥ कफी स्वेत द्रिग नी
रगुर तं हा आलस जान ॥ सुकल तनु चा मुखमत्त द्रिग लस्न न पांडु
पछान ॥ ३० ॥ है कार्न के सेवन ने हुं दजे उपजै रोग ॥ हैदज पांडु पछा
नक वि द्रिग लस्न न से योग ॥ ३१ ॥ सर्व हेत सेवन करे हुवत होय
सतीन ॥ पांडु त्रिहेबीतन विबै त्रिकलस्न न नजकीन ॥ ३२ ॥ कंठ
वमन न्हर रतं च विना भेद गिषा बामि हेप ॥ पांडु त्रिहेबीवननविना

इंद्रीहतततजेहेसा॥३३॥माटीमेजनकर्ततेनितकोपततश्रमततहे
ष॥पवनकसेतामधुरकफऊपरवित्तक्षितततोष॥३४॥महम
छनगुणरुछतापुस्करसात्विकघातु॥कर्ततपचवृतविनपूरहे
नसाछिकविताततन॥३५॥उजतेजवीजेहनेवलंइंद्रीतिमजान
सजतनकरैतनपांडुरजश्रमगवर्णेरसहान॥३६॥भूपहधुनीलि
गमैसोफक्रूटद्विगडु॥कोहक्रिमीगमतिसारजुतमलजधिरीक
फपंडु॥३७॥पांडुरोगसिऊततनहोषरीभततविरकाल॥मततवि
रविननननसपुनमधलषेपीतद्विगजाल॥३८॥षरीभततपथ्य॥
दो॥सर्वरसात्विकधातुवलजिमेसुसमक्रमततहोत॥षरीभततताको
कहतकालततपकविगोत॥३९॥मधसतनपथ्य॥अडकोसमध
रषनमेउरलिंगमेठान॥सोपसवेतनमैलषोमध्यसतनदहजा
न॥४०॥स्वेद॥साकसतपवहुककमिछनजोवटकेश्रतिसा

नि॰
२५

रकवै॥ पांडु असाधक सोजिसका अपथ बोलतजवे बज हीन नरे॥ खे
तसा पिछल हैं तन कौ छवि मछं तछ हिं तपास मरे॥ पांडु असा
ध्यक थैक विभ पति हीन लहू तन सेवत मरे॥४१॥ दो॰॥ पांडु
हं तन घज्जा सके पांडु नैन तुचे जास॥ पांडु संघ हे बत सजनवां
डु कुरे तनना स॥४२॥ सवैया॥ अंत विवे जु तसो धम भयो वल मध्य
संगी रल बो ज्ञिस छीनं॥ वा जल टीग तिसो ध भई मधु के तन मो
ल घअंत वहीन॥ चेतन ते विन मोह तजे दुख लिंग गृह मधसो
कवतीन॥ जे निज के तन के सम वाहत वेद तजो लखिवे पांडु रजी
ने॥४३॥ अंतसंग्रा पद्या॥ दो॰॥ मुजानु गल जंघा जुगल पंच
मतीम गिनेंत॥ अंत अंग तिन को कहित वैद्यक मत जसवेत॥४४॥
अतिसार कारे जु जजो चडे ताप विकराल॥ मेह अग्र मजु तपांडु
नर तिसे नछोडे काल॥४५॥ पांडु माध कर जु ता न र अति पित

दुस्तरीका षाहित तस्तुन रह्रकाह तकामला

लवहृघाए॥ रुधिरमासपित्तह्गयकरयोगकामलाप्याइ॥ ४६॥
मुवाङ्गिगत्तुचाविटमूतनषलालपीतनिसरोग॥ ईदीहततन
भेकसमनिसङ्गिगमूतलरोग॥ ४७॥ नेत्रहपित्तसमः विटमूत्र
रक्तवर्न॥ अमत्तमेहवर्नइत्यर्थः॥ हो०॥ विनापाकक्रिसदाघ
तनसदनयहचवहुपित्त॥ करतकामलारोगईककोष्टकाम
लामित॥ ४८॥ होरकामलारोमप्रतिजगभाखापनरोह॥ ४९॥
कालान्तरहजक्रिछ्छवहुषरोभूतहवैताम॥ कोष्टकामलाप्र
तिकहतकुंभकामलानाम॥ ५०॥ अथ असाध्यलक्षनसूनो
जुगलकामलापीरा॥ क्रिसपीतनरमूतविटमूततसोथ
कविधी॥ ५१॥ करतनैनमुषछर्दविटमूत्रकर्नतममाह॥
दघम्रहचतंद्रात्रिषमोहजुक्रम्रनाह॥ ५२॥ नछग्रसंगण
विनासततकामलावान॥ सेनरमरतनम्रयछर्दजिसहिर्ला

नि॰
२६
१

साज्वरठान॥५३॥स्वासग्रहनचहुंयककासमुतखेदनिबीडनिदे
हांकुंभकामलीमरतननरविटमेदीलखराह॥५४॥निसाथरन
तनैननखकरपदमध्यपहान॥ह्यूकथुकादिकसर्वजिमह
रष्ट्रिकमिलठान॥५५॥यादपांडकनेरतनवरनहरतपीत
लखस्याम॥तंद्रावलउतसाहहतमरतज्वरसदाविरेचम॥५
६॥प्रग्रममेदतनसादतनसादलखत्रिषाग्रहचभ्रमग्रंग॥मो
टनपुंसककोपपितननवैहलीमककहंग॥५७॥जेतापतनतन
मिंनविटग्रेतनरवाहरपीत॥पांडुनैनहजपानिकीकहतक
वीईसकेत॥५८॥प्रिथ्यकसंवमदुभछनैपांडकामलारोग
कुंभहलीमकपांनकीयतीनिदानसंयोग॥५९॥इतिश्रीसूज
पांडनलखरनरोमतनतसिध्याकविगंगारामयतीविरचतेषु
तीनिदानेग्रंतरवाहरदेमेदचारप्रकाररनामविधानमेद

अथ पांडपंचविधि कामला कुंभकामला हलीमक पानिकी
निदान लषण प्रकास : ॥ छ ॥ दो ॥ सर्व जगत ग्याधार प्रभ केवल ग्या
न प्रकास ॥ विघ्न हरन मंगल करन नमो सुषधाम ॥ १ ॥ पांड रोग पि
त पाद पित्त ग्राधिक कामला मान ॥ रक्त पित्त निरनै करि ग्रंथ नमे
कहे बषान ॥ २ ॥ सवैया ॥ सेवत धूप व्यामक कै चित्त सोक चलै भ
गु मैथुन सेव ॥ तीषन छार ग्रतेल लवना मल ऊसन तेक डूका
र न एव ॥ दूषत पित्त करै निज कारन कोप तम्र्यान ते लरचलै व
उरध होठ द्रिमारग होग तिसा ध्मा क्रिछा ध्रिग्रसा ध्यल षेद ॥ ३ ॥
सवैया ॥ जान ग्रमास य ते गत उरध ग्र धो गती पक्का सय मान ॥
मान बिना चलै है द्रिक मारग दूषत पित्त व ढै रुध रोन ॥ रानक
तें त्रक थै मत वैद कहूं द्रज भी गत दो मग ग्यान ॥ ग्यानन घ्रान द्रि
गी स्रुत मारग ऊरध गती क बिलषो सुजान ॥ ४ ॥ दो ॥ लिंग गुदा

नि॰
२७

भमश्वधोगतिस्तु नश्यतिकोपततरैन॥ रोमकूपत्वचमगहधर
सवमभरगलिषमीन॥५॥ सदनसीनूईछावकीकंठ घरमयुत
स्वास॥ लोहगंधूलषिहधरपितहूवरूपप्रकास॥६॥ मघनघा
डईषतचिकनापिछलेकफयुतलेषा॥ सयावग्रैने सूषमुष
सकसफेनथ्याताःयुतदेषा॥७॥ रक्तस्याम वरटकुलकसमपसज
लसेचकमीत॥ ग्रंजन घमफुलिंगसमपैतकलषइस्रैत
॥८॥ हैलछु नहंस जलषोत्रिकेलाछु नसनपात॥ ग्रथयकपयु
तउभरचलै ग्रधोगमनयुतवात॥९॥ जिसननकोकफकातमि
लचलतभजामगलास॥ रक्तपितग्रतिसैकरैकोपतकरै
विनास॥१०॥ चिरविनडकमगनरवलीसीशारहे मद्दितमि
त॥ रहत ऊपद्रववेगविनमरैनरोसीरैन॥११॥ मंदग्रग्निग्र
तिवेगजिसबयाधकरैतनसीन॥ व्रिधपुरुषभोजनाविना

मानबमरैगप्रधीन॥११॥कवित्त॥द्रवलोहसोरस्वासकासज्वुर
दाघमदमूरछाकोमरोरपांडवमथविसेषीये॥भोजनकरत
ग्रतिदाघतनघोरविनग्रसनसदैवृष्णतिहृदैपीरपेषीए॥त्रि
षाकोठभेदसिरताषनिदूरैधपकेभोजनमेंहैसुजाकेपाक
विनदेषीए॥कहेकविगंगज्ञतीफूठनहिरतीयामेहधरसपि
तहूकैउपद्रवेलेषीए॥१३॥छपै॥धोवनमासमानक्राथजे
लकोचसमान॥मेदहूंजससमदेषयुक्तिनवनतेहधरचलान॥
फलजेरसमनोम्लस्यामअग्रिसमिलतविकार॥मासषंडजिमव
हैहधरपितताससविडार॥एसोगततजाकीभईसोग्रहाध्यनर
होइ॥ईंद्रधनषसमहधरलषसोजीवैनहिकोइ॥१४॥दो०॥
सहतऊपद्रवहीनतनहधरपितवडुमान॥घरपटसवलाली
लषेसेनरप्रेतसमान॥१५॥वमनकरततेलोहतवरनलोहित

दरसै जान। लोहितलषे डिकारजिस करत पित मरत ठान॥४॥
रक्तपित बहु भेद करि कहि निदान सुरीत॥ रुधिर धातु को अधिक
ता राजयक्ष्म सुनमीत॥२७॥ इति श्री यत्नो निदाने रक्तपित्त
निदानं समाप्तः॥ अथ राजयक्ष्म निदानं कथ्यते॥ सवैया॥
धारन बेग करै विषमासन साहस तै बहु धातु छई तै॥ दोष त्रि
कै कर है यष मो रज हेत प्रकार सु चार कहीतै॥ सो मह ई रज के
सुन ते त्रिक दोष विषै कफ जो रल हो तै॥ वृध भई अति सै बदि
कै मुष सेकन नाड़ि रसादि वही तै॥२८॥ दो० अथवा अति मैथु
न करै विरजन तन मै छीन॥ तिस तै छय सब धातु को छय रुज
होत प्रवीन॥२॥ सर्व छय यथा॥ दो० वीर जतै मज्जा घटै अस्थि
मेद पल तेम॥ रुधिर धातु रस विषम क्रम सु त धातु छय येम॥३॥
छइन हक्तिय था॥ दो०॥ सर्व धातु छय जास की तव सल कै नर

देह॥ क्रियासर्वद्दुषहोतहैछडइकलहतकाविएह॥ ६॥ राजयषमह्
यमेषईहोनबामिलसुनमीत॥ ईनकोसर्वरूपगयषकहतवे
दईसदेत॥ ५॥ सैया॥ सर्वरूपसुनेईनकोक्रफम्रावबमीमद
कोनससवास॥ सेषतमालदिपीडुहिंग्रगनिमदहृतासननी
दजुकास॥ होवतसेमलषेद्रिगसेतसदाचितवद्धतमछन
मास॥ गंगयूतीश्रुष्यमानसकोचितचाहतेनारसकेभोगविला
स॥ ६॥ सैनकरीसपनेमधपेषतवायससलकनीलगलीको॥ वा
नरंग्रघलबोलकपैक्रितप्रासनवाहतहैक्रिलीको॥ लालनष
सपनेमग्रथवानदिसारसदेषतहोनजलीको॥ कुलयलादिविना
तहदेषतमाहतपावकधमवलीको॥ ७॥ दो॥ तीनरूपययषमी
लषेकरपदमैसत्ताप॥ मोठपसनीतपतजिससस्वयंग
ज्वरवयाप॥ ८॥ स्वासकासज्वरमेदहरहथरदेषकविभप॥ मोन

नि॰
२९

नष्रजिसहेषवहुराजयषमषटरूप॥दो॥ अह चकासज्व रव रविग्र
हिपसलीहजुज्वरभंग॥राजयषमकेरूपषटकहतचरकईस
ठंग॥१०॥कुंवनपसलीमुहजिससलभंश्यम्रवात्त॥अतीसार
ज्वरदाघतनहधरपित्तसेजान॥११॥पुरहरनसिरकफयुकतभो
जनवाछाहिन॥लछनएककफकोपकेकंठकासस्वररुधिर॥१२॥अथय
षमीनिहकतयथा॥दो॰॥वहुतयत्नसैजोटहैसवहजमैवल
वंतीयषमरूपउरमेलषेयसमीतासकहंत॥१३॥राजयषमसी
यथा॥सर्वजगतअधपतिससीयषमकरीयुतकेउ॥सवरोगन
कोप्राजहजाईमजरयषभाषैकोउ॥१४॥सैया॥जोयषमीयुतहैहि
वलछनवाषटलछनरूपपछानो॥कासश्वतीमहरभंगस्वरोपस
लीम्रुजतापसदाहाचिहानो॥वात्रिकलिंगकरीयुतजोज्वरश्व
सवमीरुधरीकफठानो॥एसवलछनजासविषैहजसोयषमसाध्य

सुवैद्यबखाने ॥१५॥ शिवलछनपथ्य ॥ दो० ॥ वातपित्तकफलछ
नतीन्नेएकगिनंत ॥ सोसिवलछनहेतमित्तसुर्ववैदकहंत ॥१६
सर्वलिंगकरियुकत्तजोपलबलजाकेहीन ॥ भेषजताकुंनदी
जेभाइतरनरेहिगहीन ॥१७॥ भेषजलायकजानवो ॥ दो० ॥ मह
ग्रहनत्तनहीनयथयकाहग्रतोसरपीय ॥ त्रिषनउदरमैसोध्यावि
कुराजयपथमत्तजधीर ॥१८॥ प्रगटयग्रिमिक्रिह्याहितनभेषजदी
जैताम ॥ ग्रंनहेंषुताम्हकलद्रिगपीडनउरधस्यास ॥१९॥ दो० ॥ मूत्रबस
मैवहुकवजिसरैसेलछनयोग ॥ तिसमानवकोसतनहीमार
तयपथमियोग ॥२०॥ अथनिदानसोमनचनुरसुनोवैदचित्तला
इ ॥ नामभेदसरविधलखैभिंनभिंनप्रगटाइ ॥२१॥ चौ० ॥ अतिमै
थनचित्तसोकजधार ॥ व्रिधपनेअतिवयामसुचार ॥ अध्वगम
नतेकेषनपंच ॥ व्रनीकेषसंख्याखट्मैच ॥२२॥ उरछनतसंछ्या

नि॰
३०

ताकौ भक हौ॥ सो षनलछन सुनग्य बल हौ॥ अति मैथुन के लछ
न भनो॥ वीरज षीन हो ततनहि तनको॥ २३॥ सुक्रषीन के लछन जो
इ॥ ताके तन मैल षोर सोइ॥ पंडु देषति सो सो तो धातु॥ पूर्व पूर्व
छयनु हौ जान॥ २४॥ दो०॥ सुक्रषीन कौ लछन नाठी रज हथ रस मा
न॥ चिरदर्सन कवित्तो दग्ध तिन्त्रिं षन लिंग धुमान॥ २५॥ चौ०॥
सो अकज सो षन रूप बषान॥ सिथलचंगुट कर कौ सुजान॥ हि
न सुक्र लछन जो कहै॥ सो सब रूप इसौ मेल है॥ २६॥ नरसोषा
लदान॥ सैया॥ सो सुजरा हि स वीरज षीभइ गति बुध सुलेषम
हीन॥ इन्द्र चला चल के पत है तन नरे च विना मुष षष्ठ कपु कीन॥
भंजन के सम हि भिजि म बोलत गौरव तें अति पीडत दीन॥ सूक त
रूष मलीन दवी मुष नाहि नैन विका सत तीन॥ २७॥ छपै॥
मारग रामन जु सो षतासत न लषो ग्रंडाई षोहरे छ वित्तिस

होतलुचाजिमहैजलसाईं॥सकलसंगप्रतयंगग्यानतिसहतै
पेषो॥सुरकपिपासध्यानकेंठंमुषक्रिदैविसेषो॥व्यामसोबनचत
रतिसकेसमलषमीत॥उरकठतरूपसमानतिसकहतगदाधरसो
त॥२८॥दो०॥हधरगयेजिसदेतहैमहाजुपीडाजान॥करेब्रतादि
कगंडुउरताहसमाध्यपछान॥२९॥अथग्रनसोषोकहतयुतप्रि
थमलेदानसरूप॥षेचितजोवलधनषकोकूदतटोवाहूप॥३०॥
चौ०॥भयग्रधकनरजाहिउठयो॥वलीग्रापतैयुधमचायो॥अ
तिउचीजागातेढरहै॥ब्रिषभमग्रस्वषरदोरतफरहै॥३१॥कायू
मिलयाघरकरसंगग॥भुजकेवलसोपैकतभंगग॥वानीउचीप
ढतजुकोऊ॥एकस्वाससमदौरतजोऊ॥३२॥नदीसरजलतरन
स्वभावा॥चौपमिलेनरकोनरजाभ्या॥अथवादेसतसस्वनगाने
कषसरूपविषेनरलागै॥३३॥ऐसेकारनतेउपजावै॥कामतन

नि॰
३१

नप्रगटैदिषलावै॥ वलीपुरुषजोसकहसधारै॥ तिसनस्फोडूरहे
तविकारै॥ ३८॥ कुष्ठ ॥ दाघभेदनरजासकुहि तिहदुषततनिहारै
सूकततदेहितासकेपगिस्रूपविचारै॥ वीरजवलततनवरनअग्र
ग्निहविक्रांतजुहीन॥ ज्वरपीडुाविटभेददैनमततताकोचीन॥ कफ
विसेषचालेउदरस्यामपीततदुरगंध॥ चिकडुसमकफसघनहै
कासमानमरतसंध॥ ३५॥ ग्रघवीरजहृदयउजतेउरहृतउपजैरो
ग॥ तिहसमसर्वरूपतिसकहतप्रगटउपयोग॥ ३६॥ ह्वातोहजडा
कैरुधरकासविसेषनिषीन॥ रुधरमतिकटपिष्टहीपसुलोग्र
हनरदीन॥ ३७॥ ग्रलप लिंगपावकप्रवाटवलततनसाध्यनेवीन
वरसपदेहजयग्मूलषसरवलिंगततनहीन॥ ३८॥ दिनहजारजी
वेपुरुषततहनप्रतेजेहोइ॥ यषमीकरनरयुकतहिमेषजकरक
विगोइ॥ ३९॥ सोससनउरहृतनहृयाविषेविंघनकरेउपाइ॥ कासक्रि

नर देषि कै भेषज सम मन दिवाई ॥४०॥ राज जक्ष्म सो षन सर कौ उर
छत छई सरूप ॥ कारन लछन युत कहे संग्रय तौ कवि भूप ॥४१॥
इति श्री पंडित सूजन सुत रंगमल्ल सिषक विंग्रगा रोमयती
वैरचतेयतौ निदाने रजापि निदान राजक्षमी सोषु उरछे
तछई निदान सम्पूर्न प्रकाश ॥ ७ ॥ अथ चाकूस ॥ कास निदान ॥
दो० ॥ मसि जिम सीत न लब च न हित मेग लकतेथ्र ने द ॥ विघ्रुहर्नें
ग्रहि नि सन मेंच हा जि न मन वेद ॥ १ ॥ सैया ॥ आपक कें ठविषे
रजय मनिषे वतग्र न जुरूषस नई ॥ धावत भोजन होवे विन
मा ठी रो कत वेग भई छुवथाई ॥ प्राप तिहोसु निलै तिसकी ग्रथ
हू षत प्रान मषे पवनाई ॥ वात उहान विषे मिल कै हत भाजन कें
सजि मे सुर जाई ॥ २ ॥ दो० ॥ मुष सैं बाहर निकस कैं गह हग स्व व
न कहत ॥ कास निरंतर जास कों कहत मनी जन संत ॥ ३ ॥ वात पित

कथछुतछेईपेचकासविध मान॥ तयवतजानोनासकोउतरकली
मुजान॥४॥ वैद्य॥ फर्वितपसुनो तिसकोमुखकेटकलेसभरेमु
खकेठा॥ कंठनलूनलखोकिरता प्रतिमेजनमगूासगिलेगलगं
ठा॥ वातनरुपठ्हिदै पसलीसिरसंखनपेटविखेरजसंठा॥ ग्रा
ननउजसरीवलछोननिदैनरवेगाजिराककफठठा॥५॥ वेत
कहाघलखोउरमैजुरसोखमुखीमुखनीखनजाको॥ हायतरखा
वमपीनकरेतनकंपाठकुटमुखकासतबाको॥ प्रानजोककफकीमु
खलेपतमेहतनगूगासिरोनजजाको॥ दोचविनाकफदेहमसै
हिहपीरककफीघनगोरवहाको॥ घाकासछुतीसनकानेग्रा
दिकरैग्रतिमे धूनमारउठावे॥ मानिवेगवलेनरउयतवा
जकरीग्रतिवेगहमावै॥ भोजननरछुकरैरनकानेहेवेउरमै
कतवातसमावै॥ कासप्रकासभलेनरकोकविगंगजमेतिति

सत्रूपवनताबै ॥ ७ ॥ सकलनकासनलबोव्रिथयेनतिसयकततहैकिरस्त्रो
नतसंगा ॥ केठविषेनजहैग्रंतिसैतिसवाकसमेतलबोउरमेंगा ॥
तीषनस्राविज्रिमेउरतुधतिपीडतमेंहतनतापजनंत्रगा ॥ हाथल
गातसुहातननहीग्रुरसासगिवासुरभासतमेंगा ॥ ८ ॥ हो० ॥ त्रिम
कबूतरगुटकहैतिमननरकुतनसास ॥ पर्वमेहतिसवेगग्रतिछ
तज्ञावलीसुकास ॥ ९ ॥ विषम्रसातमरसानितेग्रतिमेयुनकेस
ग ॥ वेगरोकचिंताकर्नेछपजकासतनमेंग ॥ १० ॥ तनमेपावकम
हकरगैमलकोवतमीत ॥ छपजकासतवहोतहैतनछैकारीत ॥
११ ॥ हाथमोहतवक्षलतनव्रानतजेयुतकास ॥ रुधिरवमेहुगंध
ग्रतिससकषीनवलनास ॥ १२ ॥ सर्वलछनायुक्तनरतजोमेवजी
तास ॥ गगयतीकविराजसुनिछपजकरेतननास ॥ १३ ॥ छपजय
पया ॥ हो० ॥ सातधातछपजासकोतीनहोयमिलजात ॥ मेहुतास

नकासयुनजछमीत्रिमननघात॥१४॥स्वासकासछयकेज्वरनेहरतेनी
लबास्याम॥पीनरुधिरदुगंधजुतसोरोगीजमधाम॥१५॥बारबा
रज्ञाकोमिलेमाननवरोगनवीन॥छतजधातुछैकासभुजतवैहे
तहैहीन॥१६॥कासहोतनररुधकोजराकासवाहेत॥आवरोगता
लधनजुकलाविपंडतवैरसुजान॥नवभेबजज्वनुचरमत्तचार
पाहनजेहान॥१८॥कासत्तीनपहलेलिखेजानसाध्यरजसोइ॥प
घसहानरवलविषेसाध्यलखोफिनहेइ॥१९॥बौ॰॥पंचकासछि
नपंजतमावै॥साध्यग्रसाध्यपावविघरावै॥छतीसारयुतक्षीन
ग्रसाधा॥निरवलयापुबलवेतहुसाधा॥२०॥इतिश्रीजतीनिहा
लकासनिदानाधिकारः॥अथहिचकीनिरूपते॥दो॰॥हिच
कीस्वासजुकासत्रिकरेकहेतकविमप॥इसत्तेकासवषानकर
कोसहकहतमुनीकाविगोन॥१७॥वारपाहययया॥दो॰॥रोगीवै

हिचकीकहेसरूप॥१॥दोहा॥भोजनरूखगुरुअन्नमबंदकग्राहक
कारनखातविदाही॥सीतलभोजनपानअतिइस्नानकरैमुखध
ममुखाही॥आतपधूर्वमारुतसेवतव्यामधनूअतिभारउठाई॥
मार्गवेगविघातकरैअन्नस्नाहिअशुष्कजोनरखाई॥२॥दो०॥
इनकारनतेउपजतहैहिचकीकासजुस्वास॥छिनमेसज्जनरजो
रहेअंतकरैतननास॥३॥बारबारमुखसैंनिकसपवनइकार
वसंग॥झीहकलेजाअगमुखसोकतलघुतनभंग॥४॥प्रानप
वनअतिकोपकरवायुउद्यानजुसंग॥कफअनुगतकैकरक
रेहिचकीसरविधिअंग॥५॥चौ०॥सोकअन्नजापुमलोहोइ॥
छुद्रानामअगंभीराजोइ॥महतीनामपंचमीकही॥पूर्वरूपसुनो
चितलही॥६॥छातीकंठविखेगुरुमोन॥वदनकसेलाकिरति
सजान॥कुक्षिअफारागुडगुडकरै॥प्रियमरूपयौसेचितधरै॥७॥

नि०
३८

सुनेअंग न जात लहत न वीरन॥ श्रवन पान भोजन दल गोरन॥ पवन नि
रंतर पीडत नता ही॥ गति ऊची हिय की लषि जाही॥८॥ पमलाल
छन वैद वताबै॥ विरह बिन मद बेग मुगम्य बै॥ सिर ग्रीवा कंपत
मोदेषो॥ नम लपट पर मक विलेषो॥८॥ कुद मद पवि षमल षका
ल॥ वे गमं दद्रिग त्रिक विधि लाल॥ सो समुजा मोठ कोसंध॥
ताकी कंप निधावत कंध॥१०॥ कहत गंभीर ... तनाम॥ धुने
मैन कमैद्र घधाम॥ कामादि कहत नकु हैम नैका॥ सोय मम ग्रील
कोविवेक॥११॥ महनौल हनरे सेधमै॥ सकल मरम तन न पीड
न करै॥ जुग त्रिक चनु वालिडघे हेत॥ सवतन कंपेय मपुरद
त॥१२॥ हिज कौ समै अंग विसता नैं॥ भ्रमत द्रिष्ट नित ऊपर नि
हारै॥ अंग नहे सतन षीन छिकावै॥ श्रंत युगम ग्रनिवे गति ज्ञावै
१३॥ वालादिक ग्रतिसंचे न देष॥ भकत नहै सक्रि सतनन लषसोष

तितव्याधलखदेहछीन॥ व्रिधपुरुषप्रानहैवलहीन॥१४॥ अति
मैथुनकरनिवलदेष॥ ताप्रतिहिचकीमध्यापेष॥ अप्रथ्यबायम
लाहिचकीकास॥ धर्मेकरुतपुरुकहैविलास॥१५॥ कहिअन्नजाकु
हूदेइ॥ यमलातीजीजानोहेइ॥ त्रिषाकष्टचलैमेहहमेत॥ यै
मनगहैमैताकोषेत॥१६॥ वलीपुरुषचितरहैप्रसंन॥ निरधा
नुइंद्रीचैतंन॥ ऐसेलछनहिचकीटरै॥ होनअन्नपाहोनमरै
॥१७॥ हिचकीपंचवायुतेजान॥ षीनपुरुषप्रतिकरतीहान॥ व
लीपुरुषप्रतिसाध्यवषानो॥ हीनमेसतजदीजैज्यानो॥१८॥
इतिश्रीयतीनिदानेपंचहिचकीनिदानाधिकारः॥ अथस्वास
निदाननिरूपते॥ निजकारनहिचहुवैतिनतेउपजैस्वास॥
जातेहिचकीकथनकरस्वासनिदानविकास॥१॥ चौ०॥ महास्वा
सइकऊरधस्वास॥ छिनकतमकछुद्रसरभास॥ महाव्याधस्वा

की ३

नि॰
३५

सइकजान॥ भेदनिदंतरपंचवषान॥४॥ सूर्द्धरूपसनोहिंदपी
र॥सलग्रकाराजानेधीर॥स्वादविनमुषहोतप्रनाह॥सइ
ग्रांचुभैपुडपुडीभाहि॥३॥ संप्रापतिताकीप्रवभनो कफपूर्व
माहतगनो॥नसाछिद्रकेकरकोप॥स्वासनिदेनरनोतन
रोप॥४॥ महास्वासकेलछनकहो॥माधवमैजैहीविधलहो
स्वासवेगतनउठलैवाइ॥सवदसहतडुषततनरथाइ॥५॥
सद्वनिदंतरउचैसहै॥मतवैलहिमहुंऔनरहै॥ज्यानविंगण
ननछतिसमान॥फिरताकेद्रिगचंचलजान॥६॥द्रिगग्लान
नविकसैनिसजाका॥वंधमतविरतूटैनाका॥रैसेलछनक
हैसमान॥ग्रथग्रमाधवमैकहेसबान॥७॥दीर्घस्वासलेन
मुषफार॥मेदवचनजानोनिरधार॥ग्यानदूरतमदेषेज्वा
ल॥महास्वासनरसंगीकाल॥८॥ अथसुनउरधस्वासविष

यता॥ दीर्घवेगहेठनहिंजात॥ कफरोकेमुषनाईतनो॥ उचेपव
नवेगडुषघनो॥८॥ ऊचैदेषैभ्रमयुतनैन॥ मुहानितनमुषवि
क्लितवैन॥ सूकामुषाकिरहेवैपीर॥ महावेदनलषोसरै॥९॥
लछनताम्रसाध्यवताव॥ कुपतिस्वासहेठलकजावे॥ मुस्व
तितामतिऊचोस्वास॥ देरविनातनकरहैनास॥१२॥ छिनस्वा
सलछनसुनमीत॥ सासविछेदकरपीरैत॥ पवनप्रानपीड
नसवकरै॥ हकेसासतनवहुदुषभरै॥ मरमछेदहगपीड
नतत॥ स्वेदमरछाजोदग्रनाह॥ दस्यातिवसितनैनजलर
॥ ष्षीनस्वाससहितगलम्लपंडुर॥१३॥ **ष्षय्याग्रसाध्यचेतनवि
नहोइ॥** वरनहीनमुषसूकोजोइ॥ तनछेदकनमकरेप्रलाप
तानरकैयमषाम्वैग्राप॥१४॥ तमकस्वासप्रथसुनोनिदान॥
पवनहोतप्रतिलोमसजान॥ नसोंग्रसधकरेनिवास॥ गर्दन

सीस्मगलैकयकास॥५॥पीनसकरैकंठस्कवाइ॥वलगमसुरसु
रसरूकराइ॥भ्रांतिसैवेगसासकोहोइ॥प्रानपवनछिदकोडनजो
इ॥२क्ष॥मंदभ्रंतिनमविषैप्रवेस॥मुरुयनरेकनसमसहनेस॥
मोरगेविषैचलतभ्रांतिभाम॥कासहेनतिहवारंवार॥२७॥ज
वरुफमुंचेत्रतसेदुषी॥पीछैहोतघटीजुगसुषी॥कंठधंसकर
वर्नछेन॥कष्टकरीमुबभावेवैन॥२८॥विमाताकीजावेनास
सैनविषेदुबत्रावेसात॥नीदसमेननरकहेवाइ॥देनेनाकासेग्रसे
वनाइ॥२९॥जवमानवउठवैठैमीन॥नवतनमेकछुसुषीयारी
त॥तमकष्ठिसेकफवानसमेत॥उष्मविषैविनहोतसचेत॥२०॥
छिगकूटनिमैसोथलपावै॥मस्तकाविषैसेवहभिसग्रावे॥श्व
तीपीजनुवमकाहोइ॥वक्रीजिमम्रमेतनजोइ॥२१॥दुहिनहि
मवापर्ववाइ॥वलगमवढैवोहतदषथाइ॥क्रिठस्वासलव

तमकश्वहीन॥साध्यलषोजोहोइनहीन॥२२॥क्षुद्रस्मर्छीमेजोगि
रथरै॥तमकस्वासछिन्नरोगीमरै॥अवचितपुत्तमैकछोवषान॥
उहावर्तिनुरबिह्वाहान॥२३॥श्रातसैंवटैश्रधेराछिसै॥सीतव्र
योगविषेसुषजितसै॥फिरनरचितमैंवहतजाय॥इसविधभेद
कहैकविराय॥२४॥गंगजतीकविकरैंविषान॥क्षुद्रस्वासकोस
नोनिदान॥रूषाषातषेदवहुकरै॥कोष्टपवनसोंग्रावैगरे॥२५॥
क्षुद्रस्वासकोकरेप्रसंग॥सोंग्रतिसैंदुषहेवेंग्रग॥मानवको
नहीमारैसोइ॥औरजथाक्रमदुषनहिहोइ॥२६॥भोजनपान
विषेरुकजाइ॥फिरचितमेकछुरुचभीपाइ॥ईंद्रीसर्वंपी
डनहीजोइ॥माथेकछुपीडाभीहोइ॥२७॥सोवहुनहिदुषद
यकव्याध॥वलीपुर्षवनतसगरैसाध॥जाकेलछनप्रगटनग्रा
वे॥गंगजतीवहुसाधवषानै॥२८॥पंचस्वासमैछुद्रकस्वास॥

साध्य रोग नर जीवन श्वास॥ जो नो स्वास सिंघना हि होत॥ महा उर्ध्व
छिनाक विगोत॥ २८॥ तनक स्वास दुर्बल को हनै॥ बलीउ छ्वे प्रति
जो रन नने॥ मार्ने को वोह रोग कठोर॥ हिचकी स्वास जे मन नहि हो
२॥ ३०॥ पंच भेद स्वास के कहे॥ वात कफी अनुबंध कलहे॥ साध्य
असाध्य भेद इत ज्ञान॥ गंगजती काविजती निदान॥ ३१॥ पंच भे
द लव कास के॥ हिचकी पंच प्रकास॥ जती निधान प्रधान में पंचो
भाषे स्वास॥ ३२॥ इति श्री पंडत प्रजुम्न गंगारामतनत सिष्यकाविगं
गाराम जती विरचते जती निदाने कास निदान हिचकी निदा
न स्वास निदानाधिकारः अष्टमो प्रकासः॥ ८॥ अथ नवमः॥ दो०॥
पतन पतन तिम वजल नर्त तनक धर्त चित खेन॥ वर्न जुग ल
जग पोत सम सबु धिनाथ पति जैन॥ १॥ सुर भंग निदान॥ चौपा
ई॥ ईधबोल तजो विषम हत चोट लगे जु प्रतिपाठ करै॥ दूषत तेष

तवैववनादिकवैनवहानसमधवगते॥ मेंगसवरीतवहोतनरीष्व
सिवोलकछुनसकेमुषते॥ गंगगजतिषटमेहवषानतंग्रापुरवेह
मनोहधते॥ ४॥ कवित॥ वातकरीनैनस्यामग्यानतसोमतविट
वारवारवोलैवैनषरजिमजानीये॥ येतकसुमतविटनैनमु
षपीतछवबोलततसुकेठमधहाघपुतमानीये॥ कफीकलरोक
तहेवालततसमेंहवैनयातकोदिवसकछुग्यधिकवषानीये॥ ल
छुनसकलजामेसंनपातजानताकोभाषतग्रसाधवेहदिषीवे
नग्यानीये॥ ३॥ स्वैया॥ धमषतवाकुमषोजिसकोछतिवाजिसकी
सवधातछती॥ ऐमुजकार्नमेंगसवरीजिसलागग्रसाध्यतिसेस
मती॥ मेहविहीनग्रलंछपहंमुषवोलतहेगलंमधरती॥ लेपत
केठविषेकफमेंहकसायतपालविगगजति॥ ४॥ दो॥ बीन
हसवधमेहगतविरकोउपजोसंग॥ संनपातमहसवविधि

मिटनततनसुरमंगम्॥८॥ इति श्रीज्ञानीनिहाले सुरमंगनिहालनाधि
कारः॥ अथ पंचमरोचकानिहाल॥ दोहा॥ अधिक अंग सुर के विषे मो
जन तकै न मीत॥ तातें तिस को कष्ट न कर कहो अरोचक रीत॥१॥
भक्त हीय कसमल ठहर जुगल बीच अरोचक तीन॥ तिन के लक्षन कह
त हुं समझो वैद प्रवीन॥२॥ भोजन चिंतन तहि है मधुर देखत सुने
जु कान॥ हृदय करे ज्यो जीवन बिभक्त है पतिस जान॥३॥ कोपक री
चित भेक रोग प्र धवा मन मनिरोध॥ भोजन इच्छा होत न नहि भक्त ठ
हर कहु विसुध॥४॥ मुख में पावत गम्य को लगे स्वाद नहि जास॥ उघ
वैद अैसे कहत तरोग अरोचक तास॥५॥ भेद अरोचक पंच वल ब
वात पित कफ तीन॥ सन पात चौथा गिनो मनताप तसर लीन॥
६॥ सोक लोभ में क्रोध चित वमन अश्रन हिवि गंध॥ यह पिवातादि
कवि वेइन को कह्यो संबंध॥७॥ तह पिकार्न कर अग्नि यकक हो वि

कित्तातास॥ अत्रै गुन्मिकै वचन प्रहि सम जो बैद प्रकास॥८॥ चर्वन
मै बाढे रहन नहर्ष होत किरमीत॥ बदन कसैला जास का बात अरो
चिकरीत॥९॥ खेत तक कटु षाटा बदन उष्म विशे दुर्गंध॥ लवन
रहत मुष जलन चिन पित अरोचक संध॥१०॥ मधुर पिछ गुर
सीत मुष कफ कर लिपत पछान॥ थंभन चिकन दुर्गंध ताकफी
अरोचक जान॥११॥ सेन अरोचक के बिबे एक स्वाद नाहि होत॥ मधु
रक सै लौल वन कटु बिन बिन मै कृ विगोत॥१२॥ पवन मलहि दे
वीउ जतन कफ लालो कफ मेन॥ पित चोष त्रि टहाय युत सकल री
त लष संन॥१३॥ स्वैया॥ औरस नो रज होत अरोचक सो कफ कैये वि
तमै ग्रुति धारै॥ लोभ विबे निस बालु रधावत क्रोध कवै चित चित
विचारै॥ जो चित को सब हेत नहीं छ विगंध स भोजन ग्रा दनि हारै॥
ऐसव कार्न नै उपजै मुष मस धरस भाव अरोचक भारै॥१४॥ दो०॥

हनो रावरे मीतक बिड्नके लछ्छन साय॥ मन व्याकुल ततन हलन्व
ताकहत वैसि रदाय॥१५॥ इति श्री यतीनेदाने श्रुते धूक निदान
धिकारः॥ श्री॥ रदा॥ दो॥ धातश्रये चूकके विषे तुरतहि छर्दकरदेइ॥
ताते ताको कथनकरि कहतेछर्दकोहेत॥१॥ धातपित्त कफ दुष्ट
त्रिक संनपात कीचाय॥ देषत नरूपडरावने पंचोछर्द प्रकाय॥ म
नोहर॥ चिंतन प्रसंन होत भोजन नेकरत रत्ति चीक्कनालवनग्र
तिहु वीभत्स पछावहै॥ कालकेविलाइ अतिमान विनषाइन रहि
ततैविहीनाधिक भोजन करावहै॥ भोजनन चपल अति चिंतमै ऊ
चारसम कामनी जुघेर संगाक्किमो दोष ग्राव है॥ डरतै ग्रपाच
गंधविक्किन सरूपदेषेके रकप्रसंग अति जालवो चधाव है॥२॥
दो॥ इनकारन हुतनयेन हो मुषवाहरनिकसाइ॥ हंप्रापतिसि स
कीम्हनोच तुरवै दछिनलाइ॥७॥ छादनये नजुहोय हुतडषत

दोषजुष्टंगं ॥ मुखमैग्नावनवेगग्रन्थिकुर्दनतोडेंग्रंगं ॥ मूर्छलछन
वमनकेमुखलालाजलस्रावः ॥ ग्रंनहेष नालवनमुखपाके रडिका
रकजातं ॥ छ ॥ चौ० ॥ वातहृदं कीसनोकलतनो ॥ हृदयसलेसिरणी
डुलषाने ॥ कसतोदसहभेदविकारै ॥ मुखसकम्पवप्रबलडिका
रै ॥ ७ ॥ ग्रंनमभेदयकेनयुतपत्तले ॥ दो धवेगमरुडुष दनले ॥ स्वा
दकसैलाषोरेदेष ॥ वातनबमनिडुष बहुतपेष ॥ ८ ॥ पितवमन
गमयसनकविताननं ॥ म्रस्छातिष ससुमुख जानं ॥ नालसोस
तपैदृगनवै ॥ ग्रंघकार भ्रमपीडाहढे ॥ ९ ॥ हरतपितापिरेताती
होतन ॥ तिकुधूमनिकसैकविगोनं ॥ पितवमनहूदघसमेतं ॥ गं
गयतीरसैकहिदेत ॥ १० ॥ कफजालहुनकहेवषान ॥ सनेवैद
स्थितमैहितग्रान ॥ तंद्रानींदमधुरमुखजाके ॥ कफनिकसैगोर
वतनवाके ॥ ११ ॥ त्रिपतिग्रहचिचिकनोघनमीठो ॥ थोडोपीड

नि॰ ६०

सकलकफउरोरोगमहरघुपिररसातलताइ॥ गंगयतोकुविसा
तवताइ॥२४॥ अथत्रिदोषकोवमनसनोजै॥ सलसमूहचविनपा
कलहोजै॥ मुद्यातिसामत्रिसाफिरसम्प॥ सकतिहीनवयुवेग
विलास॥२४॥ लवनग्रमलनोलैरंगहोत॥ सघनलालवमता
तोजोत॥ संनपातकोवमनवषानो॥ ग्रुवग्रुसिद्धलाकेसनगा
नो॥२५॥ विद्यासवेदमतजलवाहि॥ नसाद्धिमरोकै पवनाही॥
सकुलदेषइकठेनवभए॥ उदरथकीवाहरनिकसए॥२६॥ ता
कीगंधमतावितजेम॥ रंगविषेफिरदेसैतेम॥ त्रिषासासहकोम्प
कीपीर॥ होतहरेतरकविजनधीर॥२७॥ दुष्ववमनपातिवेगजु
करै॥ तिसकरयुकतसतनरमरै॥ अथघंरीतजुकहेवषान
सनोवैदकोविदराजसुजान॥२८॥ दो॥ छुरदपंचमोकहततेसोवहु
प्रकाशतिसजान॥ आदिविमहतकतैभई हिरदजागमसजजान॥२८॥

राम
४

क्रिमजाग्यामजग्येनजामछुरवालजसंगा॥भेदसुगंतककेलषेव
ठदोषकविदंगा॥२०॥लहुनलालासुलवहुक्रिमजाविषैविसेष॥स
वकेलछुनएकसमचालुरवैदकविलेष॥२७॥चौ॥छुरदगुसाध्य
कहिकवेरसे॥निवलपुरुषपीडायुमनेसे॥सहतऊपद्रवलोकुग्र
वै॥सयपुकनतनकोतपतावै॥२८॥सततवमनजोअपरकरै॥
मोरहिपिछुचंद्रकापदै॥ग्रैसोवमनग्रसाध्यवषानो॥कहतवैद
सुरजनकावेगयानो॥२९॥दो॥ह्वासकासहिचकीत्रिषातनमकसा
सहिदगंठ॥तापविरसमुषवैदतजछुर्दउपद्रवग्राठ॥३०॥इ
तिश्रीयतीनिदनेछुरदाधिकारः॥अथत्रिषा॥दो०॥कहोउ
पद्रवछुद्रमैत्रिषादेगवलवंत॥यातेपीछैछुर्दकेसुनोत्रिषा
जसवंत॥१॥चौपा॥कारनप्रादसुनोतिसकेग्रबभैपितुमेछम
जोनरधारै॥षीनमयोनरजोग्रवलजैउपवासकरैग्रनिवेनउषा

रै॥भोजनपित्तवढावन वातन स्रोत्रुतिरूषविदाहकपारै॥ दुषत
दोषतवैमधुतालुपिपासहकरैकविगंगपुकारै॥२॥दो॥सतततपी
तनरवारिकेत्रिपतनश्रावैरंच॥पिरषिरनरजलकोचहैत्रिषा
करतककविसच॥३॥सैया॥जोवनतेरसवाहिकनाडिनकेमुषरो
वतदोषदुषै॥तोनरकोरुज होततिषातवपीवतहैश्रुतिबारमु
षै॥सातप्रकाररुनोगिनतोश्रविवातरूपित्तकफैछततै॥श्राम
अतैषरभोजनकैभुनिहर्वैरूपसनोजुमषै॥४॥तात्वकंठजुहो
ठनकैमधहोतनचैमाचिमदामुलषावै॥मुत्यतितापततेभ्रमहो
श्रुतिसोषप्रलापकजोभसकावै॥लछनयेसवहीलषहर्वगंगय
तीकविरूपवतावै॥वाततिषामुषहूवलतालषिसंषगलाहि२
तोदकरावै॥५॥दो॥नसाछिदजलरसवहीहकेविरसमुषहेत॥सी
तलभोजनपानितैवढैअधिककविकेत॥६॥सवैया॥मरछतअंन

नवंछुतहैचितदाघविलापकरैअतिहै॥लालछ्रिगीनरहोतनि
रंतरस्रोषलषोमुषतिक्रमहै॥सीतलभोजनपानिसुवंछतहै
धीकसैमुषधूमलहै॥पीवतवारहिवारहि॥त्रिषापित्तकीकवि
गंगकहै॥७॥दो॥जठरअग्निकौभाफकेवलगमछुदंतग्रान॥
कफत्रिसमानवहोतहैवारवारजलपान॥८॥सवैया॥नींदगुरूतन
माधुरलामुषपीडत्रिषाअतिसकतदेहै॥लछनएककफजाकवि
भाषतरूपविसेषहनेभूवतेहै॥कंठविषैमुषपिछलताजुसो
तन्मकेचवकभारवमेहै॥एमवलछनसैतनपीडतसोनरवंछु
तनातिजलेहै॥९॥हैजिसकैतननचोटलगैछुतसोएनहैअ
तिछीनभयो॥वैदकहैछतजात्रिसमातिसमलसोजिनवेदल
यो॥औरसनेभसग्रदिकधातुसवैजिसकौअतिहैनछयो॥होत
हुईहजवात्रिसमादिनरातनविषैअतिपीतपयो॥१०॥रेचकमा+

तनव्यामिटैतननमैसुखपैरलखैनरनी॥केचितवैदग्धचाम्रजमाष
तसात्रसनालखसंनपनी॥जोसबरूपकहेडसकेसमग्रंमत्रि
षालखगंगयतौ॥कीरक्रिदैतनकंपतिसोखतसोषलखेकवि
विधमतौ॥१९॥दो॥कंचनभ्रमचकुटलवेनतैलेपतग्रेनसुह
षाइ॥त्रिषामुगनजातास्रप्रतितनविनहिउपजाई॥११॥स्वैया॥
हीनसखैतमवीचडवैनरवेलतदीनसमेरमलोना॥सोरूप
सरगजेहैत्रिसत्राजिसतालुगुलक्रिदस्मलचितौना॥सुख्यतला
सभ्रतीसरकामछुईतपमैनरदेममलौना॥लहनरासबहिगु
तजेनरसोषमुखिवामितैतनहीना॥१३॥दोधा॥इतयादिकत्रिस्मा
तनेकहेग्रदिसटवचित्र॥धातुसोषनीजामकेसोनरधमकोमि
त्र॥१४॥स्वामकासभ्रमसोहृदयवाधिरजौअनेकसंत॥त्रिषाउप
द्रवसातराकेचितलापटीनेन॥१५॥वचनभंगघटपंचविधलखो

अरोचनिदान॥ छर्द पंचमु लिष्यागननवमैयतीनिदान॥५॥इ
तिश्रीपंडितसुजससरतरांमतनसिषककविगंगारांमयतीविरचि
तेयतीनिदानेस्वरभेदनिदानअरोचकनभरनछर्दमक्रहेषअरोच वि
निदानछर्दनिदानत्रिस्नानिदानाधिकार॥ नवमोप्रकाश॥९॥
अथदशमा॥दो॥ घ्रमहीनलसीतलजलधक्रोधअनलकरि जेर
॥निर्मलसघिनतपतेजरविनिसवलचितजिममेर॥१॥ आधिक
त्रिषानरकैलगैहेडमर्दनीरोग॥ त्रिरपाछेकविकहतहैयातेमू
र्छारोग॥२॥ मूर्छानिदान॥ सवैया॥ आदिनिदानहुकेनतिसकेअव
जानरकोवलहोतवहीनं॥ दोषवहुजिमकेतननगाढतसेवनह
रविहंधसदीनं॥ सेकृतमूतमलादिकजोतनचोटलगैलकुरा
दिकषीनं॥ हेल्लदिलीसवकारनएमिलिमानवकोहजमूर्छतन
कीनं॥३॥ विहधअहरयथा॥ ज्वरपसम्बतपिवैसंगदसागुल्म

डुध ॥ गंगयती मीठाल वनन्य हिस्रहा रविहध ॥४॥ छ्वै ॥ संप्रापति
कहिदेत रीतिरे सीसंदे ॥ मन युतडं द्रोदोइ भेद वाहमसरग्रे लग ॥ चे
तनवाहकनसाम घाबकुदोषवसीक ॥ हृदे ब्रिषैतनममगन हे
धमुलेतननरवर ॥ मर्छा तासेकहत है गंगपतेम्कावि व्रिंद ॥ तिर
तम्मे परकाछवतसघडु बलषैन जिंद ॥ दो ॥ बात पित्त कफ ह
धरविषमदमर्छाषटलेत ॥ सर्व विषे प्रभवितहै सकल तत्रम
तहेत ॥ ६ ॥ सवैया ॥ सर्वरूपसदातननपीड तचेतनहीनगिलान उ
दासी ॥ यरलषैतनहवललाम्रघ्यरूपप्रकासत गंगविलासी ॥
बातलस्याममसुनीलललषैनभलाललषैतमकोचगताती ॥ तर
सचेतहवैतनकंपतगंगदलैकि दपीरभतासे ॥ ७ ॥ दो ॥ ग्रहनस्या
मकालीप्रभहुाादेषैनैन ॥ भूतप्रेतनहिंजानीएबातमर्छा
रोन ॥ ८ ॥ सवैया ॥ पैतकपीतहरीछविलालललषीनभकोतमचोच

समकावै॥स्वेदमसंगप्रबुधघेतजोनसप्यामलगेग्रतिदहतपावै॥
पोतमगंगसमरूपलक्षीकठुममतिमेलघचेतनग्रावै॥गेगय
तोविस्मेदमईच्छाविपीतलेषोपितमर्छतसावै॥२॥मेघसमान
लषैनमकेग्रषवाघनविंदमरैनमदेषै॥देषतहोतमवीवध
सैनस्हेतसचेतनबहुचितलेषै॥भीजतचामलपेटतहोगुह
ग्रेगलषैमुषमेलवपषै॥ग्रंगप्रमेकगईतनभषजमूर्छतये
कपुजानिविसेषे॥२॥दो॥संनपातकेचस्कमैकहेमछमोत
मर्कलछनातमसमैग्रपसमम्डथकेत॥१॥चपलविनासहत
जीवनेवमनयेलनहिहेत॥विनदेषतडरपकेचरकवेन
कवितोत॥२॥जलप्रियविंहुमतमिलतमगुनस्पाधेकागंने
त॥तनमैरकलपछानेएमममरूवैदवुधवंत॥३॥इसकानेतै
स्नकेगंधलेततमवीच॥मर्छकमीनवगतैभुवपरद्रिगजग

नि॰
४८

मीच ॥१४॥ केवित्त सहज सुभाव है मन्न हीन नरभाल ॥ षेदत हृध
रागमे गुनी मुरत्त सो ललकाल ॥१५॥ रज्जम र्द्धा केव हतलबान
वैद प्रकास ॥ सुबुध ग्रंग द्विग द्विष्ट जि सगरठ स्रा सललषु नास ॥
१६॥ विषम दसा तीषन पुरुसइन को गुन सम जान ॥ विकलमे
हुमर्दा करत लह्हु न भिंन्न बषान ॥१७॥ मदमर्दा विलपत नर
सेनन छ्भ्रम चित ॥ करपद लाडु तधरतत परयो लोमिटै नमित
॥१८॥ विषमर्दा कंपत सवपन त्रिम्मा बहुत म होइ ॥ विषलदनस
वपुत्तन रग्र तिवहु जो वैको इ॥१९॥ म्रषु संगपा सम बकहत हे सनो
वैदवितलाइ ॥ पितमिलै तमगुन अधिक सो मर्दा कहिवाइ ॥
२०॥ पवन पित रज गुन मिलै ताको भ्रम पहिचान ॥ वलगमत
मगुन वात मिलत द्रता सब बषान ॥२१॥ कफ तम गुन दोनो मिल
तनि द्रा हेत नसरेम ॥ निर्मल पित सतो गुनो तीषन बुध सधीर ॥२२

षेचलविनस्यमृदेहमैवदेखासविनचीन॥ कोविदंति सकलम
कहतहैंडंद्रियग्रथीविहीन॥२३॥सुषमपरसंगतकरैलोभहेषदु
षग्यान॥सत्मसहतउतसाहविनस्यालसतासोमेन॥२४॥पवन
प्रानउदानसमविततैउचोग्यान॥नसतसवदनवहेतनमुषह
वपुछेककविगोन॥२५॥वंधनगोलैचर्मसेहेसेमानैगात॥सुति
सैक्रिमनकेरहैसोगोर्वकविताल॥२६॥चाकुमरुभाजनजिमेये
रेदेतकुलाल॥जैसैसवतनदेषौएवैदकहैभ्रमसाल॥२७॥प्रलिप्र
गाधजलकेनिकटकैरैसंन्यासप्रवेद॥प्रासनिवरतनहोतहैदनक
विउपदेस॥२८॥मदमहाकेदोषजिमवेगमिटेमिटजाइ॥ओषधविव
नटरजातहैसोसंन्याससुभाइ॥२९॥प्रतिप्रभतमलकेकतमवहुमर
दोकेहेत॥संन्यासहतसंन्यासतलषिभेषजतासनदेत॥३०॥वचन
देहमनकीक्रियाकरैअंगगुरुदेषी॥वालनादिकसतिवलकरैसुपात

सैलसरीर॥३१॥ ताकोकहैसंन्यासकविकाहभनमिततेम॥ सतान
तप्रानमेचतननरीतनधकीजैनरस्म॥३२॥ सैया॥ मेघजजोततनका
लक्रियाफलदायकतासमैपालनकीजै॥ कोमलअंगमलेदृग
तोषनअंजनतेकटुभमकरीजै॥ अवप्रवेसकरैनषमैविधगो
तषजिंतंत्रचरयमहनीजै॥ लोहतपाइलगावततंगनिमारत
ताहुतवकुडुरदीजै॥३३॥ दो॰॥ कीचवीजसप्रादिकमलेसंगपालहे
नऊप॥ ध्रानरहतसोनरभषेकहतवैदसिरकोप॥३४॥ मुषलाला
गेरतसततनपेटउग्रफारासाज॥ सोमर्छा तजहीजीवेकहतवैदकवि
राज॥३५॥ वटमर्छाभजीष्प्रयमप्रागंजकवैहमेद॥ हैदजसव
प्रभपित्तहैप्रगटैस्वपुरवेद॥३६॥ इतिश्रीयतीनिदानेदसमस्थ
लेमर्छातंत्राद्हिसंन्याससनिदानः॥ दो॰॥ कहोमर्छारोगमेमद
मर्छासकेत॥ विषमदराजनएकसमजुगममोहकोहेत॥१॥ जो

गुनबिबमैंहैवीरबिसोगुननमहरामतत॥जुक्तविनावैकुंठनगकरै
कहतनकवीपुरहूत॥२॥विबमहरात्रिकत्रनमैएकोगुनकविले
ष॥मिथ्याजुतवैकुंठनगक्रतजुक्रतसुधासनहेष॥३॥जैसेहैकोत्रन
कोसकलजगतआधार॥त्रभ्रमानताकोंमषेजोबोहकरेविकार॥
४॥विधिसोंमागाकालमैमहराकरेजुपान॥हर्षवत्रपुहितवलवढे
सुधारसापनजान॥५॥विधिपष्पा०स्वैपा॥हछनहायबिबेमहमें
जनउत्तरगंग्रगविराजतभ्रामा॥मनतजागतमासघरीपुरसेघ
वतेंटकलागतस्यामा॥बीनबजुतेगमंहगावजेहुननाचतगावत
सुन्दरामा॥कामनिलोलपवित्तविषेरतिसोधनपीवतहैमहका
मा॥६॥कोकलकीरमयूररटैंसुरगुंजतहैंभ्रमरोंनिकेपुंजा॥कं
वकेंद्रवसंरमतरुघनवेलमिलीमधमालतिगुंजा॥सीतलमं
दसमीरवहेजलफूलरहीचहुंओरनिकुंजा॥कीनकटीरततकामक

नि०
५६

लारचवीतसुरापलसीकनिभुंजा॥७॥स्यामघटाउमडीचहुंउ
रनिमघनसैचपलाद्दुतभारी॥सीतलवेगसमीरलगेतनसा
थपगैलघवूंदनधारी॥छंदभ्रमहवविचरचेकविसेदनादि
कवितउचारी॥ई दिगकालविषेसुषदापकपीवतहैमहराम
दकारी॥८॥मात्रायथा॥सैषा॥सुधसरीरविषेउठघ्रातहिपान
करैमहरापलहै॥फेरहोजामसमेदुगनीपिवचौकनमांसअ
हारककै॥साजसमेपलञ्जाठपीवेपलभोजनकामनकेसगसौ॥
कैवितहंसपदंमितभाषतमागध्रमानलैषाकविजो॥८॥काल
यथा॥दो०॥ग्रीषमदिनमदरामधुरहाषष्ग्राहिकितपान॥सीत
कालतीषनपिवेगोडकविहदसुजान॥९॥रसायनयथा॥दो०॥
कहतरसापनतासकोकेलततननसबहैन॥जराव्याधतनकोह
रैसारंगधरकैवैन॥१०॥दसविधिजोमदरापिवैसंदसुभ्गसर

पा॥ गंगजुति विधि चर्क मे अधिक है ब्रिक विमप॥ ४॥ अथ मरहरा
की उत्कसतनक हतवैहसिरहर॥ चिकनअनवामोसके ग्रासग्रा
सजुतसार॥ ३॥ स्थूल हो इतननतासको आयुवढै हितकार॥ तेज
वढै बिक्रम वढै वढै कामसवधाय॥ ६॥ मरहराचार प्रकार ग
नसानुकराजसरीत॥ तामसतेवहु रोगनो भिंनाभिंनसुनमी
त॥ ५॥ सात्विक यथा॥ सवैया॥ बुधि प्रकास करै चित्त थिर मित प्रीत
करै अतिसै सुषसोई॥ भोजनपान विभोग विषे सुषहारक नी
हवढै रति होई॥ पाठक गीतन ठावत है सुर आतम उजल विचा
रत जोई॥ आदि सुराहु बहू रक रै कवि गंग जनो लषिसात क
सोई॥ १६॥ राजस यथा॥ सवैया॥ नेत्र बुधि बिना चित्त थिर मित
वैन अहं कितजो मुषभावे॥ सांन बिना मद लालसती लतके
पकरै अपनो करराषै॥ आलस नीद कछु तन आवत वारही

वारनजोगुनसाषै॥ पंछिगलछनजासविषैकविगंगगजतीमद
राजसहाषै॥१७॥ नामसपद्या॥ स्वैया॥ मातपितागुरुतग्यानननमा
नतमोछातहैभग्नीनिसुताको॥ मष्यभमषमछैविनचेतन
सधसरीरनरह्योनहिंवाको॥ गोपअगोपकथ्यौसवहोनरपेम
नजानतबोलतकाको॥ चालकुचालसुतेगकहैहरिगंगगजति
मदनामसजाको॥१८॥ दोहा॥ जोनरचौपाननदपिवेमदछग्यातमा
होइ॥ हूटीकरछौजिमलवोक्रियाहीनातिमजोइ॥१९॥ भलो
बुरोजानेनहीमानवमनतसमान॥ चेतनचितमैहोतनहिसर्व
रोगकीषान॥२०॥ विनासुहाइपीतकेजैसेमदझिनमोन॥ सक
लहेपसुवहाइनोअटवीजावेकोन॥२१॥ बलगमतनवहुपीत
मदपैतकविकनेसंग॥ सोमदरानहिंजोगक्रितरतनरकरेतन
भंग॥२२॥ श्रुहा॥ मदराकरेजुपानवैठउकेतमे॥ मानवकवेन

केरजुभोजनततमै ॥ उपजेवोहलेरोगविकारीहेहमो ॥ हरहोमे
हसकलसरीरमिलावेवेहमो ॥ २३ ॥ सवैया ॥ क्रोधकरेचितसो
कधरेमनमैडरधारजभषतपासा ॥ कामकरेमगमारवहेसि
रसोकतवेगकरेपठश्रासा ॥ श्रामलतुषभषेमितहीविनभोजन
नापतधूपवहुतासा ॥ जोनरकाजकरेइतनेतनरोगश्रनेककरेम
दरासा ॥ २४ ॥ दोहा ॥ मदरापीवेकषमितपलष्ठतभोजनसंग ॥ ग्रे
तोपुररनपहिहसबवठेश्रापुहुषभेग ॥ २५ ॥ चाररोगमदरयाकरं
ताकेसुनगुबनाम ॥ भिनभिनलछनकहतकविजनगंगाराम ॥
रह ॥ पानात्यएपर्मदजुगलपानाजीनेजान ॥ पानाविभ्रमनाम
करचौथालेहपछान ॥ २६ ॥ प्रिथममदात्यकलतहैवातपितकफ
तीन ॥ सेनपातचौथाभिनेहेदजात्रिकमुनिलीन ॥ २७ ॥ सिरकंपत
हिवकीस्वसनपसलीहेवेसूल ॥ नीदनसेवकवारवेहपवनम

त्याकूल ॥ २२ ॥ स्यामदाय त्रिस्माग्राधिक हलेमैं गविटस्मा ॥ मखस
काम्रममोहयुत पितमदत्यधार ॥ ३० ॥ तननगोरखतं द्राखरद चढै
सोतवहुजाम ॥ फूलिलासागुचविन तिमरकफी मदात्यधार ॥ ३१ ॥
द्विकलछन नहूंद जकहै मिले दोषहुं ग्रान ॥ त्रिकलछन नसंयोग
ते सेन मदात्य जान ॥ ३२ ॥ परहा ॥ परमदक रोवषान श्रेगमा फ
कफूलतो वै ॥ तोड वंदविटमन स्वादविनमुषहि जोवे ॥ तंद्रवहु
रयग्रदेव पितत्रिस्मासिरपीर ॥ हरताहजो संधमदवहु होतनता
सपरमदकलधीय ॥ ३३ ॥ पानाजीरनकहतफाभनिकसे तनमा
री ॥ स्वादविनामुषजानेमन विटहु गवि चारो ॥ रोचविनम्रकफ
ग्राधिक पेटकोबाहे स्रफारो ॥ हरतंहाजीडाकी हैं तनदाघलदना
कविनितारो ॥ ३४ ॥ लघनकहत वषांनपान विभ्रमकफ ग्रावै ॥ फि
दै गात मैदेतन मर्दोवमिज्वरतावै ॥ अंनहुषत नलेपहीसपीक

बहुधा बै ॥ हर हां हां जो निकसै धवा कंठ लसना बैदसुना बै ॥ ३५ ॥
दो॥ ग्रधक ग्रेन वा मद पिवे इह गत तां की जान ॥ पठे जव मद रालसे
तौ तन त्याग प्रान ॥ ३६ ॥ सैया ॥ दाघ ग्रतो ग्रति सी तन लगे तन कउ तर
हा ठ भयो जिस हीने ॥ जि हव वकदं तन सु हो ठ निकै छु वि निल षपो त
लषे ग्रसि ती ने ॥ तैल समान दिपै मुख की दुति पान हती मद पी
तन वीने ॥ नैन लहू सम है जिस के ग्रति भेषज वैदन ता प्रति दी
ने ॥ ३७ ॥ दो॥ पल तौ पीराकास भ्रमक पेहिच की ताप ॥ बहु धूकै ह
त पान नतज वक हत सर्व क विवाध ॥ ३८ ॥ इति श्री यतौ निदाने दग्ध
मस्य ले पानात्त्य य परमद पान जीरन पान विभ्रम निदानाधि
कार ॥ दो॥ तंत्त तीषन मद पिवै तौ तन दाघ विकार ॥ याते मद पा
देक हु दाघ रोग अधिकार ॥ १ ॥ दाघ सपत्त पित तह धरइ कर रक्त पि
त त्रिघ रोक ॥ दत तु धा तु दै मम्म हत लवन सनक विगोत ॥ २ ॥

नि॰
४८

कवित्त॥ मदकोपिवाइतनभायहीहकाइअतिहधयमिलाइपितत्व
तामैसमाइकै॥ दाघकोकराइअतिमेद्यजदिवाइसवपित्तकोहरन
हारवैदचितलाइकै॥ केवललक्षकेसंगदाघरोगहोतअगसकल
सरीरगतिलक्षकोउछरकै॥ गेघातेसमीपअगरहतसरीरतैसेना
मेकेसमानतनलोचनसहाइकै॥ ३॥ पैत्तकसोलोहगंधआगवेबसं
गअगरहतजनावैद्रुरपित्तकेसमानहै॥ त्रिषाकेमिरोघसंगदाघ
रोगहोतअंगजलकीसकानीधातुत्तजकोवढानहै॥ अतवरवहरत्तु
वहतसरीरनाकोसकतगलतालूचेतनकीहानहै॥ जीभकोनि
कालेमुखवाहिरालिपावेहोठभेद्यजपिलावेसिनालाजपेरपकानहै॥
४॥ दो॰॥ लगेसस्त्रक्षततनधिरनैजाकोकोठभरा॥ ५॥ छतजदाघत्त
वहोइतनकष्टकहेकविराज॥ ५॥ षीनघातुमैदाघत्तनत्रिषामूर्छा
संग॥ क्रियाहीनजिसमंदसुरपीडतभिसतनभंग॥ ६॥ क्रोधसोक

विंत्ता दिनन करै रहै धकों हेत ॥ सखा हाय गन्नेक विधि चर्क ते नकहि दे
त ॥ ७ ॥ भरम न जन्म नत रह हन ज्ञति गिट मर्छा प्रला पसो गन्नसा ध्यम्माय
वकहे सुनो सर्वक विवात ॥ ८ ॥ सकल हाय ज्ञो मै गिने होवे सी तल गा
त ॥ ताकी ज्ञासन कीजीये कहे वैद्यक वितान ॥ ९ ॥ दस मै जतीनि दान
मैक स्यो मर्छा जोग ॥ मदिरा क्रित न बहु रोग विधि लखो हाय तन रोग ॥
१० ॥ इति श्री पंडित पजस तेरामत नसि धकवि गंगाराम ज्ञ जीवि
रचिते जती निदाने मर्छादि रोग पानात्यय भ्रम दाह मदरा क्रि
त रोग निदानं मदरा पान विघ हाय रोगादि धिकारः निदानं द
समो प्रकासः ॥ १ ॥ अथ चैकादस मो देः ॥ जनम जगत जन नत निहित
मे गलीक अवतंस ॥ वर्नक नल ज्ञ हिनि सन मो विघ्न हर्न अवेस ॥
१ ॥ कस्यो रोग मदरा चतुर हाय रोग अधिकार ॥ इन सै है रउन्मा
द तन नतो उन्माद निदान ॥ २ ॥ अथ उन्माद निदानं ॥ दोहा ॥ मन

नि०
प०

व्याकुलक्रित्तदोषवढिगहतनसामनवास॥ जाकोमानिह्रजैंकहत्त
रिषउनमादजताह॥३॥ वात्तपित्तकफसंनतेंग्रघिकवहैंचितदा
ष॥ मान्तसदुषादिरविषकमोषटप्रकारईसघोस॥४॥ जैसेदेषोग्ने
गप्रतितैसोभेषजदेइ॥ तहनत्रिधसंग्वालहैग्रवनिदानसुनले
ह॥५॥ छप्पै॥ भोजनकरैविरुधदुष्टविनसौचिपकुनो॥ कगडेगुर
द्विजसाधुदेवनिंदाग्रतिठानो॥ मात्तपित्ताबडभैनभाईसोंषोटाभा
षे॥ ग्रतिसेभैवाहोतहरषग्रतिहैचितदाषै॥ ग्रघ्यामनग्रभिषा
तकरवाविषकामनसंग॥ ईनकरहजउनमादहैंगुहपत्नीव्रित
भंग॥६॥ संप्रापतिसुनलेहडुष्टवातादिकहोवै॥ सत्वहीननरप्रते
बुधिमतिह्रिदसमोवै॥ मनवाहकदसनसामधकेंछेकहकवै॥ व्या
कुलचेतनभयोचितमैंसुधनग्रावै॥ मोननिदंनरप्रगटलषकहत
रोगउनमाद॥ सकलवैदरोसेकहैबोलेमुषवकबाद॥७॥ सवैया॥

राम
५

रूप समान लषो तिसको मत विभ्रम डवत्तसत्व विहीनं॥ द्रिष्ट च
ला चल चंचलता जिम धीर्ज त्वचित्त विषै नहि कीनं॥ लज्ज जहान ज
तजी मुष बोल न सन्या हूदै फिर देष अधीनं॥ गंगय तीक विवे
दपु कारत चित्त विषै कर दूरन वीनं॥ ८॥ छप्पै॥ कान जलन्व न कह
न्हरूषहि मग्गन ज थ्थोन॥ ह्वै विरे कछ्छु धान्नक कै उवा सग्ग घोर
चिंतादि कक्रित्त संग ग्रनिलत्तन ग्राघि वढावै॥ हूदै प्रहूषो होत
बुधि सिमरत्त लघु जावै॥ ऐसे लदनन करत सो नाचै गावै गोत
ग्रंग विछेप न हास्य क्रित्त हद्दकरै सुन रीत॥ ९॥ दोहा॥ षोहस्रा तन
वो लै कठन लाल स्याम तन होत॥ घवन करै उनमाद सो जीर्न
वल विनजोत॥ १०॥ सवैया॥ पैत कभोजन जीर्न ग्राम लदाहक
तकटु सेवत तात॥ पित्त उदो मन वेग धरै चित्त रोग करै उनंद वि

मा२

ष्यात॥ मानव धीर्ज हीविन कै हूदै वीच रहे जिम ष्टर्ग वात॥ रूप

नि॰
५१

सुनो अघ्यसेसकरे जनघरनचीवरतासनभगता॥१॥ दो॥ परिस्त्रा
सनभजैसहुपितांकिनलषमित्त॥ सीतसेजलतैश्रेनकोसोनर
चहत्तानित॥२॥ टीका॥ जोनरवैठतहैसषश्राह्मषेचलव्याम
श्रमादिविनाही॥ वृथभईगृत्तिसेकपजोइनकारनतेनसमध्य
पराही॥ सोपित्तभायकफकावतहैबुधेसिंर्त्तनासतचेतनता
ही॥ मोहनचित्तविकारभयोअपरूपसुनाईकहैप्रगटाही॥३॥
हीनक्रियासदवैदउचमनविक्रितरूपग्रदेचकलावै॥ भोजन
कोक्रितकैवमिदेमतिकेचितवैदकिश्रेननषावे॥ नारत्तवैप्र
गटैननपैमुषलेलवहैग्रतिनिंदसवावै॥ स्वेतभयोतनतैन
नषादिकरोगकफेकाविगंगवतावै॥४॥ कोनश्रोंनिमिलैमव
हीजिससोउनमादभयोसंनपाती॥ सहननश्रोनमिलैसमहि
फिरथोरमतहजहेडषदाती॥ भेषजतासनलागतहैकछुश्रे

तकहैनरकोतनघातौ॥ गंगपतीकविराजवखानततरोगमिटेन
प्रभमातौ॥१५॥ दो०॥ अथमानसहूषसूनउनमाद॥राजपुरुष
रूपचोरअन्यादि॥याकेधन्यहरषोमोल्लेन॥अथवाघरमोवहुडु
षदेत॥१६॥जीवघाततनरयातिसोकरै॥कूडलूसकरपरधनहरै
वितथ्यादीमरजावैनादि॥तोमनउपजैषडोविकार॥१७॥अथवा
मनमोउपजैपीर॥कडुवलसैहोतअधीर॥अथवादेषिसरूपाना
दि॥मानसहूषउनमादविचारि॥१८॥अथथलदननतिनकेसुनरे
न॥मनआवैसोवोलैवैन॥चितकीवाततनछानीराषै॥नहिगया
नऐसेमुषभाषै॥१९॥अथवागयानअतंतजनावै॥अथवारोव
डुषपावै॥अथवाहसिहसिगावैगीत॥चतुर्वेदसुनऐसीरीत
॥२०॥विषजालदानकविजनकहै॥स्यामवदूद्रिगलालीगहै॥व
लईद्रीमसषवचनविहीन॥त्रिषावेतसंग्याविनदीन॥२१॥अथ

नि॰
५२

अरिष्ट तासु निमीत॥ नीचा मुष बाउ चीरै नि॥ षीन मंस बल निसदि
न जागै॥ ताके भेषज कछु न लागै॥२४॥ दो॥ पंच भेद उनमाद लषि मा
न सदु षव हु संत॥ साध्य असाध्य अरिष्ट युत कहै वैद बुधिवंत॥२५॥
इति श्री यती निदाने एकादस्याने दोषोनामादि विनस च्या॥ दो॥
कह्यो दोष उनमाद प्रति षट प्रकार सुविचार॥ तातै कहि जन नक हत
अब भूतोनमादि सुधार॥१॥ सैया॥ या नर की नर कै सम है तन भाव
सुभाव सुविक्रम बानी॥ वीर जग्यान बलादिक बुधि विचार सुरूप
विधानी॥ मानुष सुश्री कुश्री रम योचित लदान श्रीरस मोविधि या
नी॥ भूतनमयो उनमादल षोतिस लदान तासु समान बषानी॥२॥ दो
डा छंद॥ संतोष सचरेध दिव्य इछत निमाला॥ द्विगतं स है ति भिन्न सं
स्क्रि नक लत विसाला॥ द्विज भक्ता विरनैन ते जतन बहु बरदता मा॥
देव ग्रसत नर ईसी लदाने जान सहग्यता॥३॥ दैत युसर नर कै देव

द्विज गुरु की निंदा॥ मै विन जिह्वा कुटल उत्तप्रित गारि दिंदा॥ अन
पान जल संगत तोष खित मै नहिं आवै॥ तलै हिमा रगद्रि हेध लमल
तन मै आवै॥ ७॥ जो नर ग्रसपके गंधर्व तोड़ तट वन को सेवै॥ खा घारै
प्रिय गीत गंध माला निल तट वै॥ हसि हसि क्रिया करैं तन हाथु से ताल
बजावै॥ मधुर चारु गल बोच सबद नीकि बुधि निं गावै॥ ला गैय दग्र
हसा सग्रह नद्रि गवो लै थ्योर॥ सुख मलाल दुकूल पीत तन तेज सह
जोर॥ सह न सुसील सुभाव चाल हूत चलत वके वो॥ वोलत रे
सेवै न कहो किसके को देवो॥ ८॥ प्रेत पुरुष के सने ललना कुसावि
छावै॥ कर कर देवै पिंड ग्रात मासांत करावै॥ जं ग्रे उलटा करै देत
जल पितरह सुभक्ता॥ भोजन तिन गुड खीर मो सह गुग इन सो रक्ता॥ ९॥
नाग राज जिस ग्रहे चले भय पर उर सगा॥ महा जु क्रोध सरूप करै स
महि जो संगा॥ कवहु चरत जीभ संग हो ठानि को ग्रेता॥ भोजन मध

नि॰
५३

घृतदुग्धषीरसौपीलकरंता॥८॥राहुसपीवेहधरविविधमदचहैवि
कारा॥ह्यालाजनहैहीनहरस्मृतिक्रोधीभारा॥महाउग्रटवीवीचरा
नकोभ्रमतनहैहारो॥कहैग्रसवनाचालसौचसौवैरहिचारो॥९॥
लहतनहनोपिसाचहाथऊचैक्रिसहोवै॥चिरकारवोलैवेनदु
गंधकसचाविनसोवै॥श्रंनजलादिकविषैलालचीवनवहुजा
वै॥चेष्टाकहैविहधरदनवहुभ्रमनसुहावै॥१०॥ब्रह्मजुराहास
ग्रसेजासहनलहतनताकै॥देवगुरुद्विगवैरसंगवोलनफिर
वोकै॥ग्यानवेदविद्याधकहैवहुहलचग्रचारा॥आत्मपीडासहै
विहिंसामगधारा॥११॥जोनरकहैग्रघोरपापतोकैहनलहन
मुषमैश्रावैमारनैदवहुफलजुग्रछन॥चंचलवहुतीचाल
लिरतमसवतनकंपै॥कुंजरग्रटाग्रसादिगिरिचढिदेवतकंपै
॥१२॥दो॥सोग्रसाध्यकविजनकहैभेषजलगैनकोइ तेसंवहै

वताइकैकष्टसभीग्रहहोई॥३॥ सवैया॥ सूनमकोतनदेवग्रसेष्व
स्नातनसंधविषेवलपावै॥ आठमवीजगंधर्वप्रकासतहू पडवा
यदनूपुलषावै॥ चौदसवीचपिसाचग्रसेवपुर्यंचमकीतिथ्यासा
पलमावै॥ सादसरैनविषैवलपावतप्रेतनकेपषसयामगि
नावै॥४॥ दो॥ दूपनघ्रितजलमैंमध्यजैसेछायाजाइ॥ रविमैजैसे
तापनाससिमैसीतलताई॥५॥ तैसेसकलसरीरमेइहग्रहकर
तप्रवेस॥ इष्टमात्रआवैनहीबहुदुषकरतकलेस॥६॥ सवैया॥
आनग्रसेजिसकोग्रहतापृतिवैदउपाइकहैसुनभाई॥ दानकरै
द्विजकेगनपूजनवेदषडंगसुनोचितलाई॥ नेमकरैव्रितध्या
वतमाधवतौव्रततैतपकंइसुकाई॥ जापजपैलषकोटागिनै
विनगंगयतीप्रभहोतसहाई॥७॥ दो॥ दुर्गाहवनकराइअतिव
हुतीगोकरदान॥ धर्मपषश्रहिनिसधरैतौसवग्रहकीहानि॥८॥

नि॰
५८

हथरव सा पाल षात जो निसा विहारी धार ॥ चामभयान कजान
इह औरन को उपचार ॥ १९ ॥ जैसे अग्नि जलाइकै कहै काठ को छार
जैन रेषीव तज्यै तये सर्व पाप प्र गरार ॥ २० ॥ अथ प्रसिध मृता
चिक्रांतरे ॥ दो ॥ प्रसूत विषै जो कामनी सो मर होत चुरैल ॥ सौ
कनको दुष देत है तजैन ताकी गैल ॥ २१ ॥ भूषन फल पुष्पादि न
व पति देवे कर प्रीत ॥ तुरत ग्रसैत व आइकै मंगे ग्रह्री रीत ॥ २२ ॥
तथा पाव विंगे करै नेवै द दे चौक ॥ सो कन के धौ हृतको जो वन देत
न ठौक ॥ २३ ॥ जिस नारी के तन विषे मी आ करे प्रवेस ॥ अनर फु
ले लल गाइ कै गल मै विचरे केस ॥ २४ ॥ वे हरे लाल डकूलत त
न फूलनके गल हार ॥ कांसी ढोल म्रिदंग घुनि गावे ड्रम न ना
रि ॥ २५ ॥ ऊदक री व छाव ना वे ठम्र मा वे सी स ॥ औ से लछन नै तो
करे व ति के आवे री स ॥ २६ ॥ हूरनू र आहिक परी लाल परीत्ते

साहि॥सोभीवैकीहेतहैपतिकीचलेनबाहार॥२७॥जोनम
डुबतजलविषेअग्निविषैसडजाइ॥अधाकुधाविषेआ
हिकरमरकैभक्तजुथाइ॥२८॥विनामंत्रवनकैविषैगेरविष्ठ
मत्त॥सिवरडपहरमसानमैफिरतजुलागेभक्त॥२९॥मंत्रप
था॥गछगछसुरअसुरसबकिंनरभक्तजुरछ॥मैलभक्तगे
रोअडैगुहयगेधरवीयछ॥३०॥तीनतालीदेकरवैठेईस्ता
रथः॥दो०॥वुधिस्मिर्तिजावेसकलवोलेविकितवैन॥तन
तूटेछिगलालअतिघरमैहेतनचैन॥३१॥भक्तप्रस्त॥नवतन
नारीतपअतिअतिरफुलेतलचगाइ॥वहरमभजातीनिर्घकामी
भक्तलगाइ॥३२॥सो०॥तजीलाजकुलकानलालसैनैनप्रयंकपर॥
वैठीभरेगुमानपतिसोभोगनकर्तहै॥३३॥दो०॥जेयभुजाअस
नगहेमंजावीकतमीत॥भक्तभोगअैसेकरेनजरनआवेरीत॥३४॥

काहू ब्रजा हूकरै तिसकै मन अवबैन ॥ या नहि वसतं कोर हैतिस
बिन होत न चैन ॥ ३५ ॥ बीर जोग न पूजैं नहीं देव बब्री स अनेक
ग्रंथ वध नतै मै करी लिबे न भिंना विसेष ॥ ३६ ॥ इनके लछन ज्ञा
न लै गहु भूतन अनूसार ॥ चतुर वैद जु सवं तहि जु ससम जुक
रै उपचार ॥ ३७ ॥ मंत्र जंत्र जाडा जु पटंतं अनु धनी देत ॥ जा स
हेतु नाडन करे इन सै हो रस चेत ॥ ३८ ॥ जती ग्रंथान निदान मध
के थे भूत उन्माद ॥ ताको नुस्य हो बैबडे जो रसरा खे याद ॥ ३९ ॥
इति श्री जती निदाने टीकादर्सन अस्य लेभूतोन माद्दि विनसंख्याः ॥
हो ॥ ० ॥ भूत होय उन्मादि हलासि भ्रित मोहन होत ॥ या ते इस पाछे
कहे अपसमार संकेत ॥ १ ॥ अथ अपसमार निदान ॥ दो० ॥ भूत ले
ग्यान विग्यान सब सिम्रित बुध विनास ॥ अपस्मार ताहि कहे मत
क्रित भ्रिंगी कहत तक विनास ॥ २ ॥ वहै होय सिम्रित नहने तमव

वेसतनामेन॥ ग्रूपमसमानरगहद्वारविधिवातपितकफसंनि॥३॥
त्रि.प्रा॥ पर्वदरूपसहद्धिहावेंपतसन्पूर्द्देतनसेंदलषावे॥
मद्धितहोइप्रमरूढपवेचितध्यानटकाटकध्यानलगावै॥ नी
दविनासतहैतिसकीग्रथतपमलीविधगंगसतावे॥ वातज
इतघसेतननकेंपतफेनवनेमुखस्वासभरावै॥५॥ दो॰॥ वहुरा
तनकालीप्रभाजैसादेवेरूप॥ वातम्रिगीताकोकहतचतुरवे
दकविभूप॥५॥ मनोहर॥ पैतकजगरपीतआवतसरीरमुख
नैनपीतहोततनहूपीततरूपवेषना॥ ग्रितसोमभिप्रत्रिषाकीम
रोरभरनापतिपवनजगमापतिहिपेषना॥ कफजावषावे
वैनफेनअंगस्वेतनैनसीतगातलागेरोमकेंटकविसेषना॥
गातकीगुराईसवस्वेततादिषावेरूपचिरतेंप्रवोधहोतगं
गजतीलेषना॥६॥ दो॰॥ सर्वदेपजामेमिलेलछनसकलपछा

न॥ संनपातकी सो कहत मरगी असाध्य बषान॥ ७॥ अथपस्मारमनर
षीन अति अथवा चिंकी होइ॥ सो असाध्य पंडित लषो मेघजल
गेन को इ॥ ८॥ जो कोतन कंपै बहुत द्रिग भूवहु फुरकात॥ षीन अं
स बल जात को ताको विनसैं गात॥ ९॥ दस निद वा घट्रा दिवस अ
थवा मास बिताइ॥ अपस्मार तनमै उठै अंतर थोड़ी थाइ॥ १०॥
जैसे वर्षत मैं घन जोको बीज लषावा॥ सई काल विन होत नाहि
तैसे व्याध प्रभाव॥ ११॥ अपस्मार को जानतै निश्रै भगी जविका
र॥ जातै सब वेदन लिषी मेष जव हुन स्वाम्या॥ १२॥ सर्व अरगीके रो
ग मै छ देंदिक ठिन लेत॥ अपस्मार मने कियो साध्य असाध्य
जु हेत॥ १३॥ दोस उनमाद जु भत हीक ह्यो मरगी को रोग॥ जतो
निदान प्रकास सिव गंगयती सम भोग॥ १४॥ इति श्री मूजपंडित
सर्वतराम ततन सिषक वि गंगा स्यंगयती विरच्याते घतो निदाने रो

कादशाख्योनेदोषोनामादिभलोनमादितुरेलादिमरोगरोग
विनसच्च॥१॥अथपद्यादमा॥दो॥विघ्नादिकअघविंदकोहत
प्रभवसुस्वजन॥गिरातेजविक्रमवटतादिनदिनजिमससिद्धिहूज
१॥सर्वनिदानजुरादिहोप्रगरकरेकविभाग॥वातरोगकीनि
त्तनायंतेवातसरूप॥२॥अथवातनिदानलेख्यते॥सीतलरु
षभखेप्रमितासनअंनलघुमतिमैथनकारेजागतरैनदि
नेअतिलंघनदोषलहूनिकसैजललारे॥व्यायामअतिभयसो
उपचारकषेचलतातनमैअतिधारे॥धातुहुइचिंतचिंतन
सोकतिरोगक्रिसिअतिपीवतवारे॥३॥धारनवेगकरेअभिघा
तकभोजनहीविनसागभषैया॥मर्मजाचोटलगेजिस्केतनउ
टतरोगजलरचलैया॥धावतवेगगिरैगिरअश्वादिकवातकका
रनरुमगनैया॥चायसुनोतिसकीसंप्रापतिदेहनलागिकताद्ध

नि॰
५२

कहैया॥ ६॥ दो॥ वातबलीतिनकोभनैकरै रोगाविवधान्न सर्वांगकईकअंग्रगग्रहैमनलैचलतरसज्ञान॥ ५॥ कुछुकवाततनमैबटैसूर्वरूपगिनंत॥ ज्वरवतसूमस्वादिकहैभिन्नन्नहोजसवंत॥ चौ॥ स्वात्मरूपप्रकाश्याकरैजवतापविनालघुतातननेवै॥ कुंचनसंगगनितोटनिशंभतफूटनिहाडुनिसंगस्रडावै॥ रोमघरेवकवादकरैकरकरपीडसिरोग्रहिभेदुखपावै॥ कूवडुषंजकपंगुलतातननसोषानिअंगगनिनींदनसावै॥ ७॥ कोवतगातववकपतहेरजवीजस्वधान्नविनासकरै॥ घ्राणप्रद्रिसरग्रीवचहुंड। निकुंठनिगंध्रसनिमलमरै॥ पोइनभेदतलोदग्रबेपकमोहगग्रासकवीतसरे॥ विप्लतारूपस्रनेकद्विबावतवातस्रदैरजो जोसमभरे॥ ८॥ दो॥ वातस्रायुबलकोकरैधातावायुप्रमान॥ जागतविषैप्रभवायुहैइस्वस्वातपछान॥ ९॥ भेवजतिसेसमान्नतेस्ये

दननस्यविधान॥ हेमहनतेस्रवगाहविधिइत्यादिककविजान॥
॥१०॥ माधवाजरसंरोसेषाहनतग्रसीभ्वातकेरोग॥ केचितचौरासीगुय
तकोंसिरजमतियोग॥ ॥१॥ हेतजुप्यानविशेषतावातजरोगविसे
षाप्रवस्मासताकरिश्रठैसनकविचलुरसमेरा॥ ॥२॥ हेतप्यानप
प्या॥ दो॥ हेतुजुकफसोवाततमिलिहनुथंभककजकीन॥ प्यानवि
शेषनपक्षगततकूजततग्रंत्रमलीन॥ ॥३॥ सर्वांगकपया॥ वात
ग्रमेस्रवअंगमजवभेजनफुरकैगात॥ त्रिभवेदनातननबहुतसंध
निमुसफूटजात॥ ॥४॥ वातिग्रसेजवकोपकहिनरकोंग्रंगगजएक
भिंनाभिंनेताकेसनोलहननामविवेक॥ ॥५॥ वातकुपैजाकोप्र
मधनिग्रहविद्यामत॥ हिदेगुलमाविटवंधक्रिनुपसलीपीराहु
ता॥ ॥६॥ कोष्ठनामयथा॥ ग्रंमम्रग्रिप्रकुरस्पामलनलधरगनले
त॥ हुडकफयरफसवैदइसकोष्ठनामकहिदेत॥ ॥७॥ गुदाविषैह

नि॰
५८

जपीठडुषग्रसैमनतविटवात॥ पसलीत्रिकजंघाउरूग्रसमरे
नग्राधिमान॥१८॥ग्रमासैगतिनाभिहृदपसलीउदरजुको॥
सोषतिगलमुषकस्वतात्रिषाविनुचडकीय॥१९॥पक्कासैक्रिन
मनविनग्रंजनिकृजनसूल॥त्रिकवेदनगुड्डगुडकरैनाकोउद
रसमल॥२०॥जनीदिवर्ड्द्रनिबिषैथितनकोपैवात॥वधस्तदिक
रजोकरनहैईंद्रीसकतिविलान॥२१॥सातधातुथितवातकेग्र
वमैकरैवषान॥तुचाविषैरसधातुहैव्यंजनलषोसमान॥२२॥
सवैया॥कोपतिवायुनचामाधिकूटतिरूषनस्यामक्रिसिक्कुकी
लाली॥नषडजेमनुचालषिसैवनतुदयनतपरवडुछेरजभा
ली॥सूनविषेरजलोब्रनपैतननरोजविनाक्रिसत्ताडुतिकाली॥
गातग्रनरुषभयोक्रिनभोजननेभननोदसभीतनमाली॥२३॥दो॥
दंडस्फटनजेमतनग्राबृंडहोइसरीर॥गंगयतीकविकहत इ

मचाहतसीतलनौर॥२४॥मेदामांसविषैपवनमिलैसलकाम
इ॥ताकेफूलतमासहजठमकैमैज्योजाइ॥२५॥पवनकोपमंजा
विषैथस्थानिविषैसमाइ॥सर्वसंधमेदतसदाहंडीपीडाया इ॥२६॥
मेदनश्रावैसलतननहोइमांसवलछीन॥हकैनिवंतरदेहसव
जानौवैदप्रवीन॥२७॥पवनकोपवीर्जविषैधातुसुसकहोजात
अथवावीर्जवहिचलैतहजिमसकैगात॥२८॥गरभधनंहिनारि
नहिधारैतौगिडजाइ॥अथवाबालकजेजनैविकितरूपतनथा
इ॥२९॥पवनसिराकुधतकनेसलसिरासंकोच॥अंतनरवाहरिअ
यामहजकुवडसरीसोज॥३०॥ह्वांयूनसामेपवनातिसकरैरो
गसवअंग॥यकअंगीहजकोकरैपीडततोसेढंग॥३१॥जोसरीर
कीसंधमैविसवानिलरिसकीन॥संधसलसवसंधिहतसोयकम्रक
राचीन॥३२॥पाचपवनसवदेहमैप्रानउदानसमान॥व्यानअपा

निं
५२

नकलासकेइजेइजेग्रस्थान॥२३॥दिलमैप्रानउदानगलघुंनी
रहेसमान॥अपानगुदाकेवीचमेसकलसरीरव्यान॥२४॥पंच
पवनाजिहिजिहमिलैपैतककफकैसंग॥तेहिअक्रितचलरह
निकहतसूजकविगंग॥२५॥चौ०॥प्रानपवनापितसंगमिलाइ
डाकीदाघतवैउपजाइ॥कफसोमिलतनहोवैषीन॥तंद्रासइला
दमुषहीन॥२६॥पैतकसोभ्रमकरैउदान॥दाघमर्दोषेदपछा
न॥कफसोमिलैमंदाग्निहोइ॥स्वेदनिहर्षमोतनजोइ॥२७॥
समानापितननगर्मीकरै॥स्वेददाघमर्दोमिलधरै॥कफसोवि
घ्रामूतमिलावत॥आनतेमहर्षतपुरकावत॥२८॥दाघहोइमिलि
पितअपान॥मूतलालगर्मीउतठान॥कफसोमिलैगरहसिथ
लसरीर॥अधोकाइकेहिमपीर॥२९॥व्यानपवनापितविर्त
दाह॥गातविथेपनषेदउमाह॥कफसोमिलिदंडकतनसूल॥

घोमतलषोयगेममैहूलल॥४०॥ध्यानकभेदवातलज्ञगने॥वडेरेगग्र
थसुनिकाविजनो॥ध्यमगग्रंषेपककरेवषान॥लक्षनसुनोवैद
समान॥४१॥चारभेदग्राषेपकनाम॥दंडपत्तानकगेलस्याम
वाहिरजामग्रमिघातजलषो॥इनचार्नकेलक्षनग्रषो॥४२॥ग्रप
तानकग्रपतंत्रकजोइ॥भेदसएकनामहैदोइ॥ग्रथमेलक्षनक
रेवषान॥वैदकवचनहृदैमधग्रान॥४३॥कफादिकानिजहैल
कवाइ॥कोपकरैतनजोसधमइ उचेध्यानाकेवरत्नकरै॥
हृदेविषैगातेपीडनधरे॥४४॥पुरपुडीग्रास्तिरपीडाग्रात॥जो
मकमानमावैगात॥मोहतस्वाससमहादुखदेन॥कछुफाटैकछु
मिटैनैन॥४५॥घुरघुरसब्दकंठमैकरै॥विनसंग्याग्रपतंत्रकहै
रै॥केवलवातजलक्षनकहे॥द्विग्रथमसंग्याहतलहे॥४६॥ग
लकूजतहृदिसलजनकइ॥स्वसमोहमधध्वनितसमाइ॥सोदा

दारुन श्रप तानन कहे हे इ॥ अपतंत्रक भाषे अरष कोइ॥४७॥ जौ तामै
पीत वात मिल इ॥ स्वेत ता कौ डा मुष थाइ॥ पीला तन नभ्र मव कै
प्रलाप॥ मर्दा कहुचा विनत्रिषा विलाप॥४८॥ कफ मे मिलै निरंतर
हवाइ॥ धमनी कौ विधै वै ठडु बदाइ॥ लकुडी दंड जि मेल षदेह॥ दं
डपतानक भाष्यो एहु॥४९॥ धनुष समान सरीर न मामि॥ धनुष
वायु भाषै जग स्वामि॥ धनुस्तंभ नता के कह मीत॥ दंडक वायु स
नो स्रवमीत॥५०॥ हाथ जु गल जंघा दोपाइ॥ सीस फेंठ हेवा नी
पे भाइ॥ मारुत कंपत देडे जे म॥ सो अस्याध्यक विभाषत ऐम
ध १॥ मर्म स्थान मध ब्रन की जानि॥ तामध पवन प्रवेस करानि॥
वेगन मावै सकल सरीर॥ प्राण्याम त जो क विधी र॥५२॥ स्र
ध्य हन् प्रंतर यामस रूप॥ गुल्म स्र गुली जठर अनरूप॥ हृदे कु
सहा तो गलमो हि॥ संगाजा लघाली भरतो हि॥५३॥ अनिल

वेगतननरोगकराइ॥ विष्ठानयनहच्छस्त्रकडाइ॥ पसलीभेदव
मनकफकरै॥ धनुषजेमग्रेतमतनुधरै॥ ५४॥ कहतवैदसोश्र
तस्यामम॥ वलीपवनकेरेसेकाम॥ विहरस्यामसनिलेहिष्या
त॥ रेगाजालवाहन्दिभरजात॥ ५५॥ वहरस्यामतनउपजैरोग
इहग्रसाध्यभाषैकविलोग॥ उर्वष्ठीयुगफुटैलंक॥ तजोवैदन
हिलगैकलंक॥ ५६॥ ग्रवरभेदग्राषेपकतनो॥ कफसेभमिलवा
यैतकननो॥ ग्रथ्यवोकेवलवातकराइ॥ फूटेविषेवाप्रिचलषा
इ॥ ५७॥ पीरसहितउचीहोतास॥ कुवजरोगहैताकानाम॥ ग्रव
रग्रषेपकचौथाभेद॥ ग्रमिघातजदुषदाइषेद॥ ५८॥ गर्भपात
नैांकितकजोइ॥ ग्रथवाग्रोलनग्रवनेहोइ॥ चोरलगेजोहैग्र
पतान॥ इहग्रसाध्यलषिवैदसुजान॥ ५९॥ पषयाघातसनो
नपवैद॥ ग्रथग्रगमर्दैजिमकैद॥ ग्रसैपवननतनुसिरसनायु

क४

क्रुधमई सो घनादिवायु ॥ ६० ॥ दवानदलकावामागानत ॥ संघिते
बंधसिफलहेजानत ॥ कर्मरहत चेतनविनवीर ॥ सूर्नेग्राधाल
खोसरैरन ॥ ६१ ॥ कोकविमनडकंग्रैगैरेगा ॥ ग्रवरपंषहूनतपषवि
योग ॥ सर्वग्रेगातिमग्रसेग्रमोर ॥ विनाचेतनासर्वसरैर ॥ ६२ ॥
जोतामैपितमिलेसंतनाण ॥ दाघमर्होसनिकविवाप ॥ कपके
मिलतसेतनतनटंग ॥ चिकनसेजापिरभारैस्नंग ॥ ६३ ॥ कप
पितसेमिलिसाधकतड ॥ केवलवानमहंडुषदाइ ॥ षैधातु
कजैपंषाघातन ॥ भेषजकोरकरैमरजानत ॥ ६४ ॥ नर्मवतोवा
लाप्रसन ॥ ब्रिधपुर्षनरवलविनहुन ॥ षीनलहूग्रधरंगीम
है ॥ पीडरहतनननोनहिरहै ॥ ६५ ॥ ग्रवलकचेकासुनेनिह
न ॥ ग्ररहितकहतवैद्दकविमान ॥ ऊचेसुरग्रतिबोलैवैन ॥
भारउठावेविष्मीसैन ॥ ६६ ॥ कठनद्रव्यषावनमुषहसे ॥ ले

नउवासीमाजतघसे। षीनधातुनरसीतलप्यार॥ तानरकोइ
होतविकार॥६७॥ सिरनासाहोठनकोसंध॥ चिबुकलिलाटनै
गलकंध॥ कुपपवनरहथानप्रवेस॥ अररहितमुषकोकरेह
मेस॥६८॥ ताकोलछनसमझोमीत॥ हरनपावैश्वाबेजीत॥ श्वा
धामुषविंगातिसजोय॥ गईनविंगीसाथेहोय॥६९॥ सिरकंपै
मुषवचननिरोधु॥ गरसैनैनगंडादिकसोधु॥ ग्रीवाचिबुकुदं
तमैपीड॥ जिसवासेडिंगामुषबीड॥७०॥ पूर्वरूपसुनोकाविछै
ल॥ येमहषैवेवथक्तिगमैल॥ ऊप्रलुचजितवाहैतोह॥ हनुग्र
हितलषैनीहकीमोह॥७१॥ रहललछनअरहितकौकेह॥ आघावि
सारहभाषैवैद॥ वातपित्तकफतीनप्रकार॥ प्रथमपवनका
सुनोविचार॥७२॥ वहुकंपतमुषलालास्राव॥ फुरकैषुसकोह
नुग्रहभाव॥ सतलहोठमैसोजापेष॥ लकवावाहीकाइमदेष॥

नि॰
६२

गंडसीसगहिनमैसोष॥ थंभननगुरखिविकिनीककभोज॥७४॥ चर्व
नभोजननमैदुषहैन॥ छिगनहिमिलैनबोलेवैन॥ मिटैनलकवाजै
सेठग॥ तीनवर्षकेपेगैजुग॥७५॥ अथबान्यगतीनन्नहिअवै
छिगनासामुषफुरकनमवे॥ सोरोगीजनमकैघरलाघ॥ वेगमि
टैसबबाहीसाघ॥७६॥ हनुस्थंभहनुग्रहहोरोग॥ कानैनरूपसुनो
काविजोग॥ जोद्रिदृगाकोलेषनकरे॥ सुसकधानुचनकादिकचरै॥
७७॥ भोजननकर्तहोइअभियात॥ जाढमलमध्यवातविसात॥ द
जवबाजीभिंनसरूप॥ मुषनहिमिलैसुनोकविभूप॥७९॥ नसाकवे
लानिमैमरवाइ॥ मिलकैककफनहिदीठकराइ॥ हनुस्थंभहैताको
नाम॥ छिगदेषीकहिंअभिराम॥७८॥ अथबामुषजोमीठाचले॥ ह
नुग्रहिनामृतासुकविकहे॥ षानपीनदुषसेतीहोवे॥ चर्वनभाव
नकबूनजोवे॥८०॥ जोसुपनेहजअभ्रावैजीभ॥ रुधिरकुगवेकहै

नढोल रह जुवनाभीमत्तकेवैन ॥ गंगाजुतीनहियामेंकै न ॥ ८७ ॥
कहेलहूनारीघनवास ॥ वनुरवैरसुनलैविनलाइ ॥ चुतउप्र
थमलंकरतूपीठ ॥ जंघाजानुपेरकूमरइठ ॥ ८८ ॥ सलथंभस
इ जिमखोभ ॥ बारबारपीरावलखोभ ॥ पहिलैचुतरसलकराइ ॥
बीबीसंग्रगुरीलेटुबहाइ ॥ ८९ ॥ दो० ॥ चुतउ ठिग करकतसिरा
बीबीहगधकराइ ॥ वाचुतउहेबीलगेनिजतननलई ग्रनाइ ॥ ९० ॥
रुधिरबातकीपीरहकजनालीमतसाच ॥ जेघविनाचुतउ दूषेन
लघुबताहिनिहार ॥ ९१ ॥ चौ० ॥ जोताकेसमकफमिलजाइ ॥ नस्त्र
गोरवसंग्रननभाइ ॥ स्नुग्धिमेंहचिकनामुखलेस ॥ स्रवसुनकेवलवा
हीभेस ॥ ९२ ॥ सईचुभैबुसकसातिहेह ॥ जानउत्तकटिसंघफुरे
ह ॥ फुरकतसंग्रगस्त्रफाराहेख ॥ स्त्रघविसाचीलछनपेख ॥ ९३ ॥
नलीसंग्रगुलीभजकीपीठ ॥ पवननसाप्रतिपर्नेजीठ ॥ भजाकुमे

निजतैरहिजाइ॥तिसविद्याचीकहिकविनाइ॥८८॥दिवससैन
सुषसंग्रहमठाइ॥अष्टवामार्गसरजससभाइ॥गर्दनमोडोदेषुजो
इ॥रोसारोग तासकोहोइ॥२२॥कफवोदोका आनोरोग॥गर्दूव
लेभाषैइसलोग॥अवहनेनरहत्राथंभकयाम॥वचनवाहनी
सिरविचार॥२०॥क्रंधपवनुधमेतिहठान जीअधेभतौहैत
सुजान॥गुनगुनवचनकहैमुषबैन॥भोजनपानविषैदुष
दैन॥२१॥षंजपंगुकेलदनग्रन्न॥वातकटीमधआहतठान
सेथरकीकुंउरामधथाइ॥षंजककेनरकोकाविभाइ॥२२॥इसवि
धिसथलदोनोहनै॥पंगुरोगताकोकाविभनो॥इहदोनोहजक
ठनवषानो॥राजभेषजीकरिसिधआनो॥२३॥अग्रपसनहधर
वातमिलजात॥ऊर्धसिराकोकरहैघात॥षुलावेद्राकालेजो
जोत॥सोअग्रसाध्यसिरग्रहिहजतोता॥२४॥गाडेविषैहधरजुत

वात ॥ अधिक पीड वह सो ज्ञात ॥ स्याल सी मज्जि मम जो ग्रंग
ना मुज्ञान वात कि कवि गंग ॥ २५ ॥ जो वा मै गोड़ै मै होत ॥ डमरू
कहत ताहि कवि गोत ॥ तुर्न समै सभ देहि के पा ॥ मलता की रमुष
है है जेप ॥ २६ ॥ अधिक नटै तौ ट्स्तान जाइ ॥ स्थिल संधगी लै
वे धाइ ॥ स्तव तन पैले दे षानैन ॥ मंत्रमथ तन होवे चैन ॥ २७ ॥
विषम पैर मार्ग मै परै ॥ पवन गंठ पद पीड़ा करै ॥ कंटक वात
नाम कवि सोच ॥ जगत विषै भाषा है मोच ॥ २८ ॥ एक न के मत
ऐसे जोइ ॥ विषम पैर वाय्ह मते होइ ॥ गुल्फ विषै मिल पवन
करै ॥ वातकंट है ताको नाइ ॥ २९ ॥ गृध्रस चलन है जाहि स
भाव ॥ पवन हृधर मिलन लागे दाव ॥ कौन गर्भ सो पैरजो लाइ
पाद दाघ भाषै कविराइ ॥ ३० ॥ कफ कौ पवन नु सो उपजै रोग ॥
फेन फिन पीर चलन मै होग ॥ हर्ष तत चर्न जस लते जात ॥ पा

नि॰
६४

दहर्षभाषैकवित्तात ॥१०१॥ मोढनिकैटिगपवनसमाइ ॥ सोषनक
रैवंधसमठाइ ॥ सिरकुंवनीजवै सोर ॥ एदोस्रपवोहकेहजोधीर
१०२ मूकरोगकोसुनोकहानी ॥ विस्वानलकफसोमलठानी
सदूवाहनोधमनीजोइ ॥ रहतक्रियानरकीतोहोइ ॥१०३॥ मिनमि
नगदगदवोलेवानि ॥ गुंगरोगनरपवैदपछानो ॥ तेनोलदान
मनिकविलोइ ॥ अधोकाइमधवेदनसोइ ॥१०४॥ विद्यासजासे
तैउठै ॥ गुदालिंगहूहदोनोकुठै ॥ नारेपुहषथानजोगोप ॥ इ
सेग्रसेसोत्तुनोऊप ॥१०५॥ सोपीडागुदलिंगउठाइ ॥ लहरजेम
ऊपरकोधाइ ॥ वारवारपक्कासौवषै ॥ मतत्तनोताकोकविलि
षै ॥१०६॥ सधपवनताकफकेहत ॥ भावूवहनिसतकेविनघेर
तवैकाननेसुनानजाइ ॥ वधररोगकोरेइहवाइ ॥१०७॥ अधो
पवनहतहेवैजवै ॥ तेजरोगवाकफसोतवै ॥ कर्तनिनेतस्व

कुंडलिकारस्य ॥ उर्ध्वा तालभाषैक विस्तार ॥ १ ॥ ५ ॥ वहु तत्तजरोकतिस्र
धोस्फेर ॥ गुडगुडशब्द वोटमै पीर ॥ होइ निरंतर ऽउ फग्रफान
सुधमानकहजनाहि विचार ॥ ६ ॥ जेवहि पवन मिलेजल
संग ॥ कुंदपसलीनाजकरि है भंग ॥ आमाहितै उठि दुष देत ॥ प्र
लयकमान वा कहि कविकेत ॥ ७ ॥ चलनरूप अग्निवापि रूप
धुनी तले होत कवि भूप ॥ गोलस्सकेषंड समान ॥ अग्निलो
घ्नूग्रथवषान ॥ ८ ॥ उपरआवनउनतवेष ॥ मैलसकोरोक
तपेष ॥ जौवहि होवहि पीडसमेत ॥ पवनसतविटरोकै चेत
॥ ९ ॥ पूत्यग्रीला ताकानाम ॥ जठरविषै तिरहोका वितान ॥ पवन
वलसैजोग्रनलोम ॥ सत्वकमतचलैवहुजोम ॥ १० ॥ जो प्रति
लोमहि होवै मौन ॥ विविधविकारकरैइह रीत ॥ सर्वअंग्रगकं पतलि
रसंग ॥ वेपथनाम पवनतिहअंग ॥ ११ ॥ वाद जंघउरस्करकमर

इहहर्वबलीहजहर॥ थानतामग्रनरतपस्मान॥ लिंगशोषकवि
करोवसान॥२५॥ जान्नजंगमोटेउरलेक॥ हाथपैरसवसंधनमें
क वालरोगइनथानकहोइ॥ पित्तादिकसंप्रारगीहोइ॥२६॥ हन्न
स्थंभग्रूरादितग्रखेप॥ पंसाघातग्रतलानकमेप॥ वहुतकाल
सोउपजैजान॥ सिंधजतनवहुतेकठिठान॥२७॥ नवारोगव
लवंतसकोर॥ रहतउपद्रवसाधोधीय॥ सुनोउपद्रवताहिग्रवि
ष॥ वैदराजवैदकमतइष्ट॥२८॥ विसरपदाघमरतविटसंग॥ अ
ग्रिमंदरोचकाविनठंग॥ हिनहोइजाकेवलमास॥ पेषवधादि
कमारैतास॥२९॥ सोपकसुष्टतुचकुटैग्रस्य॥ कंपग्रधमानकपी
डतग्रसय॥ ग्रस्दितपीडवहुजाकेजान॥ वाततयाधताकेग्रतठा
न॥३०॥ दो॥ जाकीगततहतहोततनहिथानकप्राक्रितसुभाइ॥ वा
तरोगतहपुरुषप्रतिमिटैसवसुखसदाइ॥३१॥ चौ॥ साकीहजवात

केकहेजुहेत सरूप ॥ हृदशाज तीप्रकाशमैगंगयतीकाविभप॥
१२२ इतिश्रीपूज्यपंडितस्वर्तरंमततत्सिष्यकविगंगारामयती
विर्चते यतीनिदाने हृदशास्य लेचौतसी वातव्याधनिरूप
न हृदशोप्रकारः १२ अथ त्रयोदशमा ॥ दो ॥ विमलज्ञान त
पविमल जस विमल हेमगढ लीन ॥ विघ्न त्रिदहरविपुलजिन
विमल विमल मतिकीन ॥ १ ॥ कहे वात केरोगमै सेब पकइतग्रा
न ॥ वात व्याध कैकथन करिसे नत वातवषान ॥ २ ॥ हथरवा
त निदान हथरवातदो विधक हो उतान गंभीरै धीयां ॥ उतान
कतुच मांसमध ग्रेतरक्त हत गंभीर ॥ ३ ॥ मनोहरछंद ॥ लवनग्र
मलषार चिकन गर्मधार कटु कूपुरन ग्रेन भोजन करइ कै ॥ ह
स्कक लिंन मासतजष तै अनूपसशाम्ल लकाहमान्य पलिहेल
मैलषाइकै ॥ फलफूलपत्रसाकमटरकुलथमाष ईषुकोविका

रखारनालदधताइकै॥ गैरकासवीहचक्रियासवसुनादिक्रोध
सोवतदिवसघूमरैनकोजगाइकै॥७॥ कतविहधहारध्यसन
सोपकारजाकोरहैसकुमारहारमैप्याहीविलारसै॥ पदलव
पुहोतसकीकोपतहधैरवातपैरसैचलतमगम्रुत्तिसीसभा
रसै॥ वाहतनतुंरगगजउटकैस्वारैसजभोजनवारत्तजान
मोठनकोदारसै॥ दग्याविदाहिस्रतीकरनतिनकाहइतीकुबी
ननहोतवातसोनेनविकारसै॥५॥ दो॥ संप्रापतितताकोसुनोकु
सलवैदचितलाइ॥ इकवादेसवहैतभजाहधरदग्धतौप्याइ
द॥ दुषहधरपदजोसभरपवनमिलैतहत्त्व॥ हधरवाततताको
कहतकविजनवडेसहूर॥७॥ इथमरूपनरपवैदसनिग्रतिन
हिग्रवैसोद॥ कहस्कमषततपोंडग्रतिफरसनजानैभेद॥८॥ ≡
संधेसिथलम्पालसचहुतफुरकतपिरकभास जम्नुजंघउ

रुग्रं स्फटिकस्पदं संधनिपात्म ॥ ८ ॥ इनथ्यानकलइ स्वभै पीड विद
रनजेम ॥ बहुफुरकतगुरताल षैतुचा सत्रकविरेम ॥ १० ॥ सेधपी
रकं डुदहतदाघमिटैइकवेस ॥ वनेहीनमेडलभयोहधरवातह
नटेर ॥ ११ ॥ विरुधाहारभ्यासनयथा ॥ दो ॥ दुग्धमछभोजनक
रैकहतविरुधाहार ॥ भोजनप्रभोजनमषेध्यसननामकविधार ॥
१२ ॥ यथा सुसनुतेवहरीरोगमोह ॥ दो ॥ जानुजंघउरचर्नमैभेद
तसवीतोह ॥ स्वषडषनुवजानेनहीवहरीरोगविमोह ॥ १३ ॥ स
स्वतकैमतमैलिखीसनवहरीइसनाइ ॥ नधिरवातकोसुनिक
थ्याधिपमहापपहठाइ ॥ १४ ॥ नधिरवातगनल्याठविधवात
नधिरपितनीन ॥ कफद्वंद्वजगिहेषग्र्यवमंजननसुभेकविधी
न ॥ १५ ॥ वातनधिरमिलवाजवकुफुरकततनुहपनसल ॥ सो
जषुसककालीप्रभाघटेवधेसिमकूल ॥ १६ ॥ धमनीअंगुल

नि॰
६७

संधछिगकुंचतिग्रहिग्रतिपीर ।१ं भवतवेपथुसन्नतु वसीत
ग्रनुपस्वधीर ॥२७॥ तधिरनाम्रठ विसोघलबद्दिनछिमपीरा
नोद। छिकनतबसमहोतनहिभुरककलेदयमोद ॥११॥ वैन
कमठ्ठानाघत्रिटसहनसकेमदसोजा ॥ मोहभाकनिकसेगर्भ
कोहपाकविनबोज ॥१॥ सुसबनबोलेहाधम्रतिलालसोध
भ्रिदचीस ॥ तधिरपितहोवेग्रधिकचर्नेजुगलकविईस ॥२०॥
कफीग्रधिकगुरतु छिकनतुचसुप्रसीतताठग ॥ गीलेपटवे
धतग्रिमैश्रैसेजानेश्रेग ॥२१॥ ग्रपित्तमंदपीराभुरकंदेदजेल
छनहोइ ॥ सेनपातकेरोगमधिमिर्नेलहनाजोइ ॥२२॥ सोच
तपवनग्रसाधसनपर्वचर्नकेमूल ॥ कफहुंकरकीनसीम
धमसेउजिमपविघहल ॥२३॥ कुधमईग्रतिसेपवनसकलदेह
व्रतिफैला ॥ गोडेपहप्रपंतलोकुटम्रवेजतमेल ॥२४॥ सक

लउपद्रवकूजोषीनमोसबलरीत॥ सोनतपवनयुसाद्यद
हि:यापप्ववर्षूरकवीत॥ २५॥ वैपा॥ वैरगूवैसुनतासउपद्रव
शेचकनीहविनाककसास॥ मोसगलेसिरकेग्रहेमर्छितम
हरुतासनमोषिपासा॥ कंपतपीरजूरीभ्रमफैलतहायसके
टरूपादविनासग्रगुलवंकग्ररीबुरयानकजोवग्रसेकल
मजुशोकाविभासा॥ २६॥ दो॥ इनेउपद्रवजूजेग्रपवाकेवल
मोह॥ रूधिरवातततनकेहनेबरसकोतग्रनिहोह॥ २७॥ कडुक
उपद्रवमापतबरहतउपद्रवसाध॥ नवीनरोगारकहोबवा
सोसबसाधकवाद॥ २८॥ सर्वउपद्रवाजिहविषेवात्रिकलछ
नहोत॥ गगयतीकविकहतहमसोग्रसाधकविगोत॥ २९॥ आम
केपमैयुनतलवननातातूजलाहिनिसेन॥ त्रिषिधंहीगुरुग्रनकेत
जोवैहसबवैन॥ ३०॥ धर्मग्रर्थकौरतकरैसततसेगनतकैमीत॥ दि

नसाधुप्रमकोमन्नेरोगकठेस्फरीत ॥३१॥ इति श्री पत्नीनिदाने
गिर्धारस्यालेमोनन्तवातप्रतीकारः ॥ अथ ऊरुस्थंभनिदा
न ॥ दो॰ ॥ वातश्लेषकैकश्रनकाद्रे सोननवातविकार ॥ श्रैसेपाउँ
कहतहम ऊरुस्थंभअधिकार ॥१॥ चौ॰ ॥ गर्भसीतद्रवसकावार
गुरुचिकिनासेवनमगधार ॥ अजीर्नजोर्नकरहैवेह ॥ दिनसोवे
निसजागेडेह ॥२॥ इनकार्नकफमेदरलाइ ॥ पवनइनैवहुग्रा
मवठाइ ॥ वहुवठग्रंतरपितसुकाइ ॥ ऊरुस्थानमधग्रामसंस
माइ ॥३॥ सधहाडविवेभरपूर ॥ ग्रंतरकफसोहोवेतूर ॥ ता उ
रुकफहिमीवषान ॥ वधसीतचेननविनज्ञान ॥४॥ प्रकीर्याग्नि
मभारेदेष ॥ पीडनिरंतरग्रतिवहुपेष ॥ सपग्राग्रुइकघ्यानटकार
ग्रंगकुटनेद्राज्वरथाइ ॥५॥ पीडावेगवमीरुचहीन ॥ चर्नसद
नगीलेपटतीन ॥ कष्टसहतऊठैसंकोच ॥ सज्ञकंपनोवाहीसोच ॥६॥

उतमसंयमनामनिलहोइ॥७॥ढ१२वात भाषैकविकोइ॥प्रथमसतवता
कालुनसकत॥श्वानिनिंद्रावहुधानीहूत॥७॥मीलेपटजुरशेमउठा
इ॥छहिंस्नुरोद्विकजंघफुटाइ॥उतमसहनताकैलवमीत॥प्रथमसु
नउपद्रैविक्विनरीत॥८॥कोउवैरतहिबातपछान॥करैनस्नेहता
समस्तगपान॥नोताकैपटजावैसोइ॥सहनकसवहुउठजेहोइ॥८॥जे
षउतमवहुहोतमलीन॥श्रापकरश्राकउवेहनतीन॥घनैचवैनभपी
उवेह॥सीतसमग्रसनजानेभेद॥१०॥थिरराखेवाहावेगती॥चल
नवर्नकोसक्विनिहती॥जुगज्ञानुकुटैसैलहे॥उतमपाहनैसेकाथिक
हे॥११॥सुनग्रसाधपीडाग्रतिदाह॥नोहपीरनरकेपनजाहा॥ल
हुसंयमनाकोमरनकोन॥सिधग्रानथाहोहनवीन॥१२॥इतिश्रीयती
निदानेजिकोहससपलेउतमसंयमरोगाविनसमः॥१३॥दोहा॥पव
नसधिरकोकथनकर उतमसंयमसमान॥हसकैपाछेकहततग्रवको

सि॰
६८

मवानतकविमान॥१॥षेचलवनचिकनामबेभोजुनकिनजुलकेल॥
अग्निमेदविनआमकेलारविनधकुवेल॥२॥सवैया॥ रामभकाने
होमिलिखरातिआमप्रतीकफकेधुरजावे॥सोकफसोंमिलिकैअ
तिसैंसडआमनवेघमनोमुखधावे॥आमभईकिलतेसुनिकाने
वानकफीपितमरहिधावै॥अंबनसउरससरंगवहुविधिपिछुलना
मुखसोत्रनकावे॥३॥दो॰॥अग्निषीनफिहेगुरकरैभोजनकरफिर
घात॥वदेअंबनरसतनविषैलमसोनुनिकविनात॥४॥आमना
मलैतासकोकहनवेदबुधिवेत॥पीउकवैसिरगातमैसुनादिजब
जसवेत॥५॥चौ॰॥तांकेलछनसुनोसमान॥त्रिकसेयवननसोजा
जान॥पीडाकोवनिरिदेकोवेर॥अंगमवातभावेकविमेर॥६॥अंगगकु
टआलसतनभारा॥गेवाअरोचिकनापविकावा॥विनापाकसो
जाइदुखदेन॥कहूंनेत्रमतश्रैसेवेन॥७॥गईन्नकेधकटीत्रिकजान॥

सर्वसंधकुचतदुखमान॥ पीडसोजुहोवेदुखगात॥ माधवल
छनकहिविख्यात॥८॥ नराचछंद॥ महोजुकष्टहाथकेंसतुरो
गकोवमैमभवै॥ दुपैरहाथसीसतेकजानसंधमेंकवै॥ सुत्र पी
नसोपधपीडहोतसोअतीकसे॥ विनासतंत्रगतोनजोनमधरे
गज्राधसे॥९॥ सुहेसपीडहेमजेमउंकहेविरुमिकै॥ ध्रुवेचमे
ह्यगलालगुरुत्रगसनको॥ विसाहउतसाहहानिहाघ
मतरासहे॥ सकुबकाठनाइसलनीदकोविनासहे॥१०॥
पुरीबंधजाउजावमो निमर्छिनाभमे॥ अनाहहीपवेहना
जिघाउद्रबागमे॥ सपिदहाघरागचापसलवातसोभिलै॥
नेलाद्रिगूगजेमकेंडुसंगजोकफोभिले॥११॥ सपेकरोषसा
घवपापहोबजुइहनको॥ सरीरसोफस्वलेनपातकष्टहून
को॥ प्रकासजेत्रियाहसोनितीनरोगमेगने॥ क्रिपालगुरुर

त्रि॰
७०

जगराज गेग्र जती प्रेम भने ॥ २२ ॥ इति श्री पंडत पृजस्मुनि याम जतनसि
घक विंग गारां मृ जती विर्चि जे जती नि हाने वा नर ह्क्ष स्तु नवह
री निहान उन्न स्थं भ निहान ग्रा मवान निहान त्रिपो इस प्रका
सः ॥ ३ ॥ अथ चतुर दसः ॥ दो० ॥ ग्रेतन नपा ग्रो जु गग्र कि न ग्रभ जौ
स हा विग्रन ॥ विषु विं द घन स घन द लप वन प्रती चि ग्रनेन ॥
२ ॥ वात न वा धके रोग इह प्रगट के कवि गग ॥ सल खि बे प्रभ वा
ने है पाते मल प्रसंग ॥ २ ॥ अथ मल निहान ॥ दो० ॥ उत्पत होई
मल की प्रथम कौन सी ठाम ॥ हारी न कम न की क या प्रगट न गे
गा नाम ॥ ३ ॥ सैया ॥ भा पंड विवे भुव मंडल मध्य किला सग्र से
नवटा ॥ तुंग सिखा सि व नू क्षि न ग्रा सन जो उपमा भुव मे र उ
टा ॥ तौ न वि मत्त गिने जिन की छिन मो द व ठी क कु जो प्रगटा ॥
किनर जो गन जु छन कै गन भैर व काल क सिंघ वटा ॥ ४ ॥

राम

मजवजालनिर्वीरमहेंवलिमेंदयहेहलहेमकटा॥ग्रहमहे
स्रतुमाहिकसिंघनिनिंघनिकेघरिहैष्ट्रगटा॥संकटतोडस
हासिवकूहूतकेवरनेतनतपछटा॥ग्रंगविभतचठीसुतमे
द्रग्रेवरषोलपतीम्रिगटा॥५॥मालससीगलमधहलाहलपा
वकनैननिगेजटा॥संउकोमालखिसालगहेरिषवाहनके
कनागलटा॥भोजनखाकधत्तूरमबैठमत्तकरपीवतमे
गघुटा॥मांगतसेवरदेतसहासिवई सागिरीभजसोकक
टा॥६॥एकसमेसिवसाजसिंगारभरेग्रसवारजुसंगमटा॥
ग्रेकउमाउपमाउगमोघनसेतविषेजिमविजछटा॥कोउ
तेहषभ्रनेगतवैसिवकेपभरैचितजधपयटा॥वानम्रनेक
चलेनमरैमहतोसिवहावग्रिसलछुटा॥७॥देषत्रिसलउ
रीउमकरीधुजजधकेछोरचलकोभजितूरन॥श्रीपतिजोग

उत्तातक्रिपाकदिमयधस्पोतनवीचवसमर्न॥ देखत्तहीभगवा
ननदेतमउयशेकुमकारकवेद्विगघ्रनं॥ मलविमोहत्तमात
महैभवमंडलवीचगिरघ्नोवकचूर्न॥ ५॥ दोहा॥ पच्चमनूकेवी
चमोरत्वोत्रिअलसमाइ॥ पंचभतततनजासतेअलवडोइख
दाइ॥ २॥ गगयजीजोइहकथापढैसनेधरचीत्त॥ सोनवा
रपडजलधिवेसलमिटेदसरीत॥ १॥ सर्वअलमेवातपभ
ग्रहयकारपवीन॥ वातपित्तककसनितेअंगमहं दजीतीन॥ ११॥
भिनभिंनताकेलुनोकानवाप्निरूप॥ देसकालउपसपसर्वक
हनबेहकविमप॥ २२॥ सवैया॥ व्यामससवारकरेत्रतिमैघुनजा
गतवारविवेहिमरासी॥ मैगनिकोरमथैमटरीत्रतहरजु
तघत्रतीध्वसनासी॥ नितकुबाटनबानवलूरकसकत
साककरेउपवासी॥ शोकतवेगलगेतनचोटविरधजसो

कफ्रटाज्ञरहासी ॥ १३ ॥ कार्निवंदेसमभाभिलिकैजनवातवढैत
जसलकरावै ॥ ब्रिष्टकटीगिकवस्तुविषेपसलीफ्रिहेथानक
मरकरावै ॥ भोजनकैरजनीमुखमैघनक्नागमसीतफंडेदुष
हावे ॥ वारमवारहिमलउठैसमहोतहसेविटवातनकावै ॥
१४ ॥ हि॰ ॥ तोहमेहहोवेअधिकस्वेहानिजैतलमिलाइ ॥ जगमेविक
नभोजनमषेवातमलतोजाइ ॥ १५ ॥ सै॰ ॥ तो घनघारक
हुग्रमलीघलषुषकुलपविहाहकषावै ॥ भोजनतैलमषै
गरमीनिसपावमसकरसुरारवतावै ॥ मैथुनकोपरूपासदु
तासनसेकतमीनमषेहयतावै ॥ हेतमहैरतनेनरकेपितको
पवटैलघुसलउठावै ॥ १६ ॥ पीरतनाभिविषेभ्रमसळित्तखेद
निसावनहाघग्रती ॥ कोपतमघहिनेनिसकेहलस्रासनका
नकहाघरिती ॥ सीतलभोजनकालविषेहिममिष्टमषेसब

रंगायती ॥ घोटसत्ताभ्रपीनसिताजुत्तपेत्तकम्मलरहेनरत्ती ॥ १७ ॥
दो॰ ॥ पारसपीठीमठोग्रंथविचडीईबविकार ॥ साकाकिलाडीति
लभवैजंतअनुपजपार ॥ १८ ॥ जलचरदहीपनीरकोसेवतनग्र
तिसैप्रीत ॥ औरहेतजुवलगमीकुपत्तकफदसरीत ॥ १९ ॥ अग्रत
विकासलालासवैजिनतकोछहिलास ॥ आमासैच्यितसीसगु
रभोजनसहाविलास ॥ २० ॥ प्रातकालहोवेसततद्विजहैसिसवे
सत ॥ कफीसलउपजतमभोजीबनचरचरखेति ॥ २१ ॥ जुगम
होवजोमेमिलैद्वंदजउपजेसल ॥ होबमिलेत्रिकजासमैत्रिक
लछनसमतल ॥ २२ ॥ सलत्रिहेघीकछलबविषवतनवजूसमा
न ॥ भेबजतासनहीजीपेग्रंतकरेननहान ॥ २३ ॥ सवैया ॥ आम
जुसलसुनोग्रवलछनवेटगुडगुडहोतग्रफारा ॥ लालसवे
गबतेकफजाबनितैमितगौरवछहिंनिहारा ॥ सलकफीसम

लछन है जिह गंग पती कब विराजु विचारा ॥ दीपन पाचन मे
षज के मषमो जन दीपन तें सुषधारा ॥२४॥ दो० ॥ पसु लोह्नि
हे गल वत्त मे कफी वात कास ल ॥ कुष नाम ह्नि हे मघ जो सो क
फ पैत्त कहू ल ॥२५॥ हाघ घोर जुग ग्नय क क्रित्त सल वात्त क्रित
ज्ञान ॥ साघ वेग प क देघ क्रित्तहं दक्रिछ वषान ॥२६॥ संतन पा
न के सल कोल ष ग्न साघ्य क विगेग ॥ प्रभक्रि पा विनु जात नहि
सर्व उपद्रव संग ॥२७॥ वात्त सल ल षिव सु गत्ति धुं नी पैत्त क
ज्ञान ॥ कफ कह्नि दे पसु ली कुष गत्ति संनि सर्व गत तमान ॥२८॥ त्रिमा
म छि वेदना स्वास कास ग्रनाह ॥ हि च की गोरव मंद जु व सल
उपद्रव हाह ॥२९॥ ग्न छमे दरह सल के कहे निदान समेत
श्रय प्रनाम क अलका कहत मे दक विके त ॥३०॥ चौ० ॥
कफी पित्त के निकुट जु वा ॥ निज निदान सों गुसा षार ॥ पित्त

नि०
७३

कफकोप्रकुपितकरै॥ रोगअतलकावैदाधरै॥ ३१॥ अथसमानलछ
नतहपेष॥ भोजनपचनसमैइषदेष॥ ताकानामसमूलपरना
म॥ व्यंजनसानिकहिगंगारम॥ ३२॥ अधिकवातजोताकैमाहि॥
गुडगुडपेटकरैअधमाह॥ वेपधाविसरामत्तवंधाइ॥ गर्भविि
कनषावैमिरजाइ॥ ३३॥ कफीदर्दहिलमहामोड॥ थोडीपीड
नुचिरलोहोइ॥ कौडातीषनभोजनकरै॥ कफोप्रनामकदूरहि
टरै॥ ३४॥ कौडाअग्रम्लसलरणवाइ॥ पेतकसलदाघुकरखाइ
आदितसेवदृतिभाकाविगेतु॥ सीतलषानपानसुषहोत॥ ३५॥
आक्रितजाकोहैहंमिसटा॥ हृदजरसलकहैकविइष्टा॥ तीनोत्ल
तनजहमिलजात॥ सोअसाध्यजानोसंनपात॥ ३६॥ भोजनपच
तअपचितिजिलोइ॥ असाध्यसूलभाषैकविलोइ॥ त्रितसूलडष
दाइवङीन॥ अंनद्रवासकमुनअवमीन॥ ३७॥ पथ्यअपथ्यक

रै प्रयोग ॥ अषै भोजन मिटैं न रोग ॥ समन होत नहिं जा को सूल ॥
अंन द्रवाषक है कविभूप ॥ ३८ ॥ त्रिसा ताप दर्द अनाह ॥ भ्रमी
अरोचक गौरवं जाह ॥ बडी वेदना क्रिस बल हीन ॥ दिगं पं द्रव प
रनाम जान ॥ ३९ ॥ दो० ॥ अष्ट भेद प्रकट कहै कहो प्र नामक सूल ॥
जतीनिदान प्रकाश मै अंन द्रवाष समूल ॥ ४० ॥ इति श्री जतीनि
दानि चतुरदशा प्रकाशे सूल प्रनामक सूल रोग विसच्या: ॥ १४ ॥
अथ उदावरत निदान ॥ सवैया ॥ रोकत वात पुरीष मता वन थं
भ तजृंभ हकैं द्रिगवाष्प ॥ ढीक डकार वमी प्रतिरोकत वीरज भूष
त्रिसा अतिश्रम के ॥ सास हरु कावत नींद गने बिसकार नरो गउदा
व्रतकारे ॥ होत सुभाव परस्पर को इन्ह जावत तातो तें न भीमकदा होत
विकारे ॥ ४१ ॥ दो० ॥ भिंन भिंन इस रोग प्रति कहत वैद कवि ईस ॥ भेष
ज दीजे समझ कै काटै रोग गिरीस ॥ ४२ ॥ अधोवायु को कत मिलै वा

नि॰
७८

तष्ठरीषजुमरत॥ अथ मानककलमउदरडसवातरोगवहुहूता॥३॥
दिसारोगगुडगुडकरैपेटकुरकुरेतास॥ अतित्रिकामहोवैककवज
अषवावहुप्रकार॥४॥ सलवसिलसिरलिंगमेमूत्रचक्रितनतिहहूत
रलैकरषनककवजताजोमरकेमूत॥५॥ सिरनसाद्रिगकानमु
षपवनरोगइहठाइ॥ गर्दनगलथंभतनमोजोर्जिभाहकजाइ॥
॥६॥ सवैया॥ सोप्रसेनविषेद्रिगमेजलआवतजोनहिगेरतजाको॥
सोसगुरुद्रिगरोगउठैवहुजेपकैअतिपीनसताको॥ जोनरदे
षततीकप्रतेतिसअरदितभेदअधासिरवाको॥ थंभतग्रीवजुस
लउठैसिरईसमलीनविनाबलजाको॥७॥ सोकतजोउदगम्यतिसे
गुलतैमुषकेअतिद्रूनदेषै॥ भजततोद्नेवातसैतनवातवि
कमरवहुविधिलेषै॥ वेगवमोहतकोठअरोचककंडविसर्पकव्यंग
विसेषै॥ लालहवैतनसोपजुहीफिरगंडुजुकुईइहिविधिवेषै॥८॥

बीर्ज वेग हने गुद को मूत्र न सो कफ चढै अति होवत पीर ॥ मूत्र तहके पथ
री हुज कार कवात कुंडल आदि दुषीर ॥ मा हत अम ज[illegible] गद लै अध
मी लग्रहे चक विभ्रम कीन ॥ सो सुत कंठ मुषी वधनाघत द्रिवह
कै किस हो तस रीर ॥ ८ ॥ सो कत्रिषा फुदि दारा घवठै अति कि सफुदि दे म
न मे भ्रमुत्ता ता इ ॥ स्वास हुकै तन थाक तन रोग फुदि देम न मो हत हैगु
लमाई ॥ नींद कु वेग हने अध मीलक जृंभ द लै तन सौषा दुषाई ॥
मूल समवाय मेवा ह जुम्भा व तपूरन नैन जु हादु घुमाइ ॥ १० ॥
दो० ॥ कैडा तित्त कसैला क्षाकडु ॥ निज निदान लग वात कुपाई ॥
उदावर्त कोसद गाति करै ॥ तांतेमत्त पुरीष न सरै ॥ ११ ॥ कफ कमेदा
वहिनाडी जोइ ॥ उदावर्त मुषला कै होइ ॥ इसका र्नेविटमूत्र तन स
रे ॥ फुदि देव सत मधपीडा करै ॥ १२ ॥ लाल मूत्र वे पीडा तनु होइ ॥ स्वा
स का स्वान जला भी जोइ ॥ त्रिषा मोह ज्वर उपजै दाह ॥ दिसा मूत

नि॰
७५

सो रोग सिंघा हु॥ ३३॥ दो॥ अथ अनाह को कहत है प्रगट निदान बना
इ॥ गंग यती कवि कहत इम सम मत वैद चित लाइ॥ ३४॥ संकृति आ
म क्रम सो मिलै विगुन पवन बंधा इ॥ निज मार्ग आवै न ही हुज
अनाह कै भाइ॥ ३५॥ विष्टा पवन जु मूत्र त्रिक थंभ तिकरै अना
ह॥ उदर अफरै जिमल वैल सन भाखोत्ता हु॥ ३६॥ चौ॥ डाकी हि
च की भ हिर संताप॥ मन विभ्रम रज्ज कहि साप॥ तैसे श्रवन स्रुने वि
परीत॥ वात विकार बहु विध मीत॥ ३७॥ सो अनाह जो आम
निदान॥ त्रिषा दाघ सिर की रुस मान॥ सूल ग्रमा से अथ गुरुग
त॥ थंभ न तहि देडिकार न आत॥ ३८॥ विसूहं चित भयो अनाह॥
करी पिष्ट मध्य से जाता ह॥ विष्टा मूत प्रविछिन होत॥ सूल नि
रंतर है कवि गोत॥ ३९॥ जो बहु पक्का से महि जात॥ मूर्छा डाकी मे
विट आत॥ अधिक स्वास लाके कविमान॥ वात दिक रोके आधिमा

न ॥ २० ॥ दो॰ त्रिषा पीर पसरूष ता दीन होइ बल मास ॥ अनाह व
मन हिर सूल अति उदावर्त तत त्रिगुणास ॥ २१ ॥ धिपाइ चतुर द
समै विषै अष्ट सूल परनाम ॥ उदावर्त अनाह कं विभाषै गंगा
राम ॥ २२ ॥ इति श्री पू जपंडित सुत रामत त सिष व्यावि गंगाराम
यती विरचिते जतीनिदाने अष्टमे दसूलप्रनाम सूलभेद उदा
वर्तभेद अनाह रोगनिरूपा चतुर्दशमो प्रकाश ॥ १४ ॥ अथ
पंचदशः ॥ दो॰ करमद है बल भरम दल धर्म हरम जिन धर्म ॥ ब्र
म्ह रोहित हाथ प्रभ गंगा यती की अरम ॥ १ ॥ अथ गुल्म निदान ॥
चौ॰ ॥ मिथ्या हार विहार के पुष्ट ॥ वातादिक तब होवै दुष्ट ॥ कंचो भेद
गुल्म कै लीन ॥ कोठै मध्य ग्रंथ सी कीन ॥ २ ॥ थानक पंच गुल्म कै ल
ख ॥ पसली हृदै नाभि घरम न ॥ फिंदन्य आसै ग्रंत रग्रंथ ॥ थिर अ
घ वा संचार पंथ ॥ ३ ॥ वर्तुल रूप गोला सा होइ ॥ गुल्म नाम भा

षेद विलाइ ॥ वातपित कफतीं जान ॥ संनपात का चौथा ग्रान ॥ ४ ॥
पांचो गुल्म पुरुष की देह ॥ कामन प्रते होत तन्न हि एह ॥ पंच गुल्म
रुधर का जोइ ॥ पुरुष न भैदानो तन न होइ ॥ ५ ॥ दो ॥ चार गुल्म नारी
तनै होत तन कारन कौन ॥ मास मास रज श्रवन ते गंगए तो सुष
भौन ॥ ६ ॥ चै ॥ बहु विकार विष थंभ जाइ ॥ वात षोभ कूजत श्रेश्रा
इ ॥ त्रिषा पाक विन सांति न होइ ॥ इष्यम रूप मान के मान क जो
इ ॥ श्रय समान लछन विन काह ॥ छिद्र मूत्र विट वात श्रनाह
कूजत श्रोदर उरध वात ॥ सर्व गुल्म लछन इह जात ॥ ७ ॥ छ्पै ॥
षान पान सब विषम रूष भोजन बहु षावै ॥ करै वली से जोर वेग
मल त्रादि रुकावै ॥ लगै चोट चित बीच सोक करे कै प्रति सारि ॥ कर्म
सब मिलकरै वात तन गुल्म विकारि ॥ स्थल दान ता के सुनो
विषम रूप ता जान ॥ पीड विषम ता की लषो गुल्म बसे सब तन मान ॥ ८ ॥

हेज्म विष्टा वातग्रहन कालांतन होवै॥ पसली हृदै नाभ षासि
रा मध पीडा जो वै॥ भोजन जीरन भए कूपजुर सीत चुठा वै॥ भो
जन कमि त्रिन वात गुल्म नहि रूषा षावै॥ तिक तक सैलादी जो
रकौ डा विकल सेव॥ वात गुल्म कौ मुष करै ग्रथ सन पैत क भे
द॥ ॥ रूषा कडु क विदाह गरम तीषन को षेवै॥ षरा भोजन क्रो
ध मत्र ग्रिम मद न्यार विसे वै॥ ग्राम सडै तन बीच चोट लकुटादिक
लागै॥ दुष्ट रुधर तो होइ गुल्म पैत क तन जागै॥ सूल प च
न स मैस दन राग तन न होत॥ दाघ त्रि षा जुर स्वेद लाषि वृन जि
म है क वि गोल॥ २॥ पैक तकं द॥ हाथ लगा वै॥ तौ दुष पा वै॥ सी
तल षावै॥ रोग मिरा वै॥ २॥ छ वै॥ भोजन नहि मगुरु चिकन पद
रथ सव हीं षा वै॥ षेचल विन नर रहै सैन दिन रात जगावै॥
कफ रोग इह हेतु लहनाकरत प्रकास॥ तिमि तिसीत जुर या तस

दालाम्लाम्रुवकास॥ सैल्यम्रुरूवगौरवलषैम्रलपपीडुतहदेष
कठनजुउचपिंनसाकयकोगुल्मसविसेष॥ २३॥ सकलपदारथ
कानखपनदिनकेम्रतिकरता॥ मिलतपदारथमषेगुल्महुंद
जतिह होवै॥ लहनमिलहितासवेदद्रिगदेकैजोवै॥ अपरगुले
मजोरकेतकोपुहसनादिप्रतिहोत॥ अथलतनसेनपातके
लनअसाध्यकविमेन॥ २४॥ महापोरतनदाघगिरैपेपरगुले
मजोमो॥ कठनजुऊजउचाअधिकलरतेहजलनथपषानोम
नसरैरतनुअग्रिजोरताकोव्यकारै॥ गुल्मत्रिदोषीमदैवेद
कवितजोविचारै॥ सकलगुल्मलषिकरनइहसिधनहोइ
त्रिदोष॥ कष्टसाध्यद्वंदजकहो गंगयतीकविघोष॥ २५॥ नव
तनभइमलतअहितभोजनकेषाती॥ कोचागरमगिरुइचा
घअथवादितनानौ॥ पवनदुष्टग्रहहृधररंध्रयतीम्कतसपीस॥

वैतकगुल्मसमान लछनाहायसुधीरा॥ चर्कवैनदित्तकैवि
बैचितमैयभेनारि॥ चिंत्ताहेपनहुकुमग रूषाभोनसार॥७६॥
दोहा॥ वेगरोकमघीरहेघहमीहेतुगिनंत॥ जोमीजिपत्तनहो
तहेगुल्मकेगजसबजंत॥७७॥ छपै॥ ग्रंथिकगुल्मजोबढैलछ
नासुनोविचारी॥ करसोंपीडनकीनकुरकनाताहिनिहारी॥
विरकरकछुजिहोइलखिनागर्भसमाना॥ भुवपीजाहिक
सबकधरकेगुल्मवषाना॥ करपदभीतिसहोतहेनवदसमा
सवताइ॥ सतिहोइवाग्रंथिकचिरतेभेषजसबहार॥७८॥ दोहा॥
कासिराजमततकहततरमपित्तकोकरयत्नस्नान॥ कामनिसुबनि
द्राविषेभोगेनरबलवान॥७९॥ पवनधातुत्रिपरुधिरमिलि
सुप्रगर्भजोहोइ॥ कहतपिताकेगुनसकलमाताकेगुनजोइ॥८०॥
पितामाताकेगुनयथा॥ हाडकेसबीजेत्रिकैकहेपित्तागुनरी

ता॥ ज्यों धिर मांस तनु बत्ती नर हमा ता गुन लषमी त्त॥२१॥ दैव जोग
तै जी पवै हिं न हिं न बढै सु चेत॥ सज्जन भई नव मांस हस्त तो मेषद्र
सब देत॥२२॥ हो षगुल्म संचित भये कर्म सों अधिक बढाइ॥ उ
चा कर्नी सो जज्जि मछै दुन सिराकराइ॥२३॥ वाहा कुलकाछेद॥
गुल्म ग्रसाध्य सुनो काविमाला॥ दुर्बल जा की मुष सर्वे लाला
य र्जि अग्र नो च क त्रि षजुर कासा॥ पीन सतं तंद्रा तो तुज ग्रासा॥
२४॥ ता पकास डा की ज्ञ्रति सारी॥ हृदै नाभि ढिग सो ज निहारो॥
हा यपै रमै सो ज आवै॥ सो गुल्मी जम कै घर जावे॥२५॥ अंग्र मन
षा वे दुर्बल स्वासा॥ ग्रे थम टल षिस ल विपासा॥ हहलक्षन द्रि
स गुल्म विकारा॥ धर्मराज कासो न र प्यारा॥२६॥ दो०॥ पंचगु
ल्म प्रगट कहे वा र पुर्व तन लीन॥ रक्त ठ बि नारी प्रतै स्वष्ट गर्भ
कहहीन॥२७॥ इति श्री पत्री निदाने पंचदस प्रकास गुल्म

रोग चिन लछण ॥ २५ ॥ अथ प्रि हि दे रोग ॥ हे ॥ अमल गर्भ अति ति
त्तो गुरु अति मे थ्यु नधि स्न कषाइ ॥ वेग त्र के सर्म चोट जन मैं चि
ता चिंत धाइ ॥ १ ॥ स्न कार्न तै होत है प्रि हे रोग गण पच ॥ वात कफ
त कत्ती न कफ संनपात क्रिम संच ॥ २ ॥ उलटा रस प्रि हे कोंच ले
हो खर्ड दुष्ट करहीन ॥ कहै पीड प्रि हे कै बिबि प्रि हे नजक हत अबी
न ॥ ३ ॥ यह लछन वाता प्रि हि विषे तो हव ही नैं कंप ॥ निरमे यतपा
ट तस तत प्रि हे सफोट कंजप ॥ ४ ॥ जे बाध मउ दगार मुख सो
ष त मकछो खेद ॥ पैत क प्रि हे नजग र्म त्त नघु षघु षह्य कलेस ॥
५ ॥ कफ की प्रि है कफ स्रावगुरु अंग चि पेम प्रि हे होत ॥ अग्नि मद
मुख मधु रक कफ व्याप त्ति मुख कविगोत ॥ ६ ॥ तीन दोख जामे मि
ले प्रि हे त्रि दोषी रोग ॥ लछन सम पूर्न मधे मेषजक ठनपषे
ग ॥ ७ ॥ अधिक वटे क्रिम उद्र मै प्रि हे रोग जो कीन ॥ पीडव डी

नि॰
७९

सईचुभेबुरकवीहत्तमुषदीन॥८॥ छैया॥ लछनदेजहिदेम
धरलषनुदपतघुकघुकीउकलेद॥ सलउठेमुषलालसवे
तमवीचधसेहतरोचकषेदा॥ सामसलीनमएद्रिगहीमुष
सोषतरोगहिदेकिमभेदा॥ होतचित्तभ्रमसादापिपासकासो
षउपदवभाषतवेदा॥ ८॥ किमी विषेकिमजातिग्रतिकी
हिदेनजदेष॥ घोवताप येमनतबुसकसहनसकेग्रपेष॥ १॥
वीतमजविष्टानकेहिदेगलकुषग्रधमान॥ सलग्रदोचिक
तासकेतनालाषिकविभानं॥ ११॥ चर्कवचनग्रेसेकहत्तहिद
त्रिहेबीबीच॥ दहोबीरनिलग्राहेगुडजोषावेनरनीच॥ १२॥
वढैउदमैग्रयत्तवमेकमरमदिसजात॥ रसहकठादुषदेत
वहुमनेहेतकविताता॥ १३॥ ग्रधिकवढेकिमनासकोतोनिह
होतकलेद॥ मेषजहीजैसमझिकेहिदेरोगसरमेद॥ १४॥ ६

तिश्रीजुत्तीनिहानेपंचदसप्रकासेक्रिदेरोगविनसच्यः॥१५॥
अथहरिचंदमतातेउदोग्रहविहानउपसैलिख्यते॥कवि
त॥भोजनकतिग्रतिग्रभिष्यंहिगुनत्रंनसुसकेदुगंधमास
ग्रामरोघमासको॥पकितझीहलघुरघतामुपैतकफवान
दुष्टकरैकुपउरग्रहिजासको॥रूपथंभतापघोरवुसकरनी
रगुरुकनलगाधोजातमलकैप्रकासको॥स्वाधमानकुबांकु
देसोजग्रधिमीलहोतवातविटमतरोघरोचकविनासको॥
१॥दोहा॥रहतलकुनसवतासमैहमक्विगदेघामीत॥नीलाधोधा
दुधसेंरोगमिटसोरसनीत॥२॥सवैया॥जीवकपत्तसुहांतुन
कौतुवसरमषीजुवलाग्रतिग्रानै॥एकहिएकनकोरसलेक
रकोसमकवै जिहनामठठानै॥वाथमिलैसरलूनमिलैगुड
मनलगुरासवतैलामिलानै॥यामठाढित्रकलेचवकामलवे

तसमारककेरजळ्ळाने॥३॥दो०॥तीनटंकपीवेनरीआरनाल
केसंग॥मिष्ठतैलपस्तमतवाहोतउरोगग्रहमंग॥४॥जैसीक्रि
तकोनरकरैतैसेविधिहुष्टरैन॥तिमहीमेषजवैदकनस्यौं
तनहोइसुचेत॥५॥इतिश्रीजतीनिदानेपंचदसम्प्रकासेउ
रोग्रहविनसवम॥१५॥अथफारसीमतातेजातलजम
लिष्यते॥दो०॥अभिष्यंदीमदरापिवेकुरकटमछलीषा
इ॥पकितजिलीदुष्टभईरजनकुपितहुवनाइ॥१॥दुष्टनधि
रतोअतिवढैसिरानकवाहितास॥पीनसकैपीडाकरैदु
षदायककहुत्रास॥२॥सलहोतमेमेतलैआ[illegible]रोकेदम॥ह
रेषेनदिनातीनमयसोहेजातलजम॥३॥रक्तनिकालन
स्वस्तहेमेषजऔरजुसुस्त॥गेगजतीकनूनमैजनानीमत
चुस्त॥४॥हिंदीजाकोकहतहैसुनोवैदतजवेद॥पसुलीकै

मध होम्नत्ते पार्श्व मल को भेद ॥ ५ ॥ गुल्म पंच प्रगट कहे पंच हि दे
न जरास ॥ उतनग्रह ज्ञानन्नजे मको स्थित मितनजती प्रकास ॥ ६ ॥
इति श्री पं जन पंडित सुत रामनत्तन सिम्पक विरंगगारामजती
विरचिते जती निदाने पंचगुल्म पंच हि दे रोग उतनग्रह नि
दान उपसैं ज्ञानन्न जम रोग निदान पंचदस मो प्रकास: ॥
१५ ॥ अथ षोडसमा हः ॥ दो० ॥ सांति सांति संकट विषे सांति सां
ति घर बार ॥ सांति सांति मंगल करन सांति सांति जिन कार ॥ १ ॥
अथ मदात्यय निदान ॥ चौपा ॥ व्यामक रैम दपी वन नाचन
रुषभ मेघ व्रति मे धुनताइ ॥ अक्षद ग वत विष्ठ चढे नर तीव
न भोजन स वनराई ॥ देस अनूप जजीव भवेघू सने रुषपेन
सजी निताइ ॥ जेठ चले मधतम भवे सब मनगक्ति छौ तन रोग
कराइ ॥ २ ॥ दो० ॥ अष्ट मे दगन वात पित्त कफ संनिपात कनाम ॥

नि॰
८१

सलज्ज होइ पुनि सेष जो सकल जपघरी जान ॥३॥ मिंन मिंन सब रोगा इ
हनिज निज कुपति निदान ॥ वासव कुपति वहुं मग मूत्र तजु पीड त
ग्यान ॥४॥ पितकृछंद ॥ जो निमु तावै ॥ तो नदुषावै ॥ लिंग पइरावै ॥ क
षलषावै ॥५॥ दो॰ ॥ वात कृछ्र तस्रवतां महे थोरा वारं वार ॥ वलो लिंग
नुव सलमग अरत पीड वहु धाम ॥६॥ पैतक पील ज्वाल लषदाघ
कीम्र हतकृछ बारबार मूत्र तेन रेक विछिन सी तल इछत ॥७॥ कफ
कृछ्र पितन ह्वै मंद पीड कवि भए ॥ मूत्र हो गुरु लिंग मध सो ज
व दैह रूप ॥८॥ मूत्र कृछ्र त्रिक दोष मै सब लछन तहि होइ ॥ ताको
भेषज कठन है कह्यो कृछ तनु मसो इ ॥९॥ मूत वलन मग कें टक र
षतु वा पीड न कीन ॥ दाघ लगै तै होत है मूत्र कृछ्र तन हीन ॥१०॥
वात कृछ्र सम देष न रलछन तास विपाक ॥ वनु विंचार न त्वित मै
इह भी भेद सजा क ॥११॥ विटरेके उलटै पवन सूल अफ्र मान कह

त॥ मूत्रक्रिछ्र तौ होत है संगम सद गत मूत्र ता॥१४॥ भजे अश्म समरी है ज
जो पके से लिंग मैं अश्मरी॥ पथरी से क्रिछ्र तौ होत है मूत्रक्रिछ्र कविभ ड़
१३॥ डष मूत्रकृत वेग वा अश्मरी पथरी कै मूत्र त॥ सुक्रम तत वद्ध क्रिछ्र त
श्रव सत मध घ रूत ता॥१६॥ सुस त मैरे से कहत मूत्रक्रिछ्र नव वेद
सुन लै जती निदान मैं नाम सर्करा मे द॥१५॥ कहत सर्करा अश्म समरी
मूत्रक्रिछ्र सम पर॥ तौ भी जाने सर्करा मिं न रूप कविभ प॥१६॥ प
कै अश्म समरी पित तै सोषन वात करा डू॥ रे तरू पक... ते म इष तें मु
श्रोक्रत घा ड्॥१७॥ कुष लल पिड़ाहि देवे पथ पथ अग्रि मिदा डू॥ ड व
ल मर्दी जास मैं मूत्रक्रिछ्र दुषदाइ॥१८॥ इति श्री प्रतीनिदाने भो
डु भाषा प्रकासे मूत्रक्रिछ्र निदान अध्याय:॥ ४६॥ अथ मूत्र घात॥ दो॥
निज निदान मल के पतै मूत्रघात इह वाक॥ यव नानी के मत
विषै ताके भेद तेरह जान॥१॥ चौ॥ मूत्रघात के ... विधि जान॥ बिंन

भिंनतरनामवषान॥कतकुंडलीविययग्रंथीलक॥१॥वातवस्तीतेम्न
त्रातीम्लक॥२॥मूत्रजठरक्षुयमूत्रउतंग॥मूत्रग्रंथ्यष्यरूधातसमगो
ग॥ सष्ठमत्रतेसदवषान॥ उष्मवातबाद्धाराजान॥३॥ वस्तकुं
डलीतेरामीत॥ गनेरोगसादंगधरकेत॥ भिंनभिनस्तनताहिविद
न॥ वातकुंडलीप्रथमवषान॥४॥दो०॥ मूत्रघाततेक्रीतकेमदको
नमूनमीत॥ [illegible] तेरीत॥५॥चौ०॥ रू
षाभोजनवेगरहकाइ॥ यासेमूतकोकुंललिपाइ॥ उलटीफिरैपीडु
वहुहोइ॥ थोडाथोडामूतैसोइ॥६॥ अथवापीडासहतमतोइ॥५॥वा
तकुंडलीवहुदुषदाइ॥ सुनग्रंथीलाकरैकुपथ॥ मैलमूतकरैवैद
हग्रंथ॥७॥ गुदावस्तमधहैग्रंथमान॥ वडीपीडहोवैतिहजान॥
पवनईट्रसीचलनसरूप॥ रोगअष्ठीलोकविभूप॥८॥ वातवस्
तनरोकैवेग॥ मूत्रसहतमानवउद्वेग॥ अनिलरोकमुषवस्ते

समाइ॥ संगमसूतनकरैदुषतइ॥२॥ कुषवूलकेफेडनधारवातव
हलिदुषसिंधुविकार॥ मूतवेगरोकैत्रिरकोइ॥ मूत्रातीतरोगतहि
होइ॥३॥ बलुतेमूतत्वाकेनहिस्रात॥ मंदमंदमूतैअविलात॥ ऐसी
जाकीहोवैरीत॥ ताकेजानोमूत्रातीत॥४॥ उदावरतकैभजैनिदा
न॥ मूतवेगरोकैग्रतियान॥ कोपवनभइसमीमग्रपान॥ उदरनिरं
तरहरैतान॥५॥ मधुनीहेठकरैप्रधमान॥ महावेदनाहोवैजान॥
जठमूतहैताकानाम॥ कग्रधोविवधकरैदुषधाम॥६॥ मूत्राहै
मगएधुनीमाहि॥ मूरकेमूतजुरहधरमूवाह॥ नालेकीचपवनकी
वीय॥ समनैसनैमूतैसोधीम्या॥ ॥ पाकोराष्ठेप्रामूवैजुमूत॥ विनपी
डावापिंडहूत॥७॥ उलटीपवनतनेइहव्याध॥ मूत्रकेतसंगकहत
कविसंध॥८॥ तनकलिनरूषानितचहै॥ वातपितमूत्रासैर
है॥ दाघसहितपीडादुषदेइ॥ ताकनाममममूत्रवहेइ॥९॥ मूत्रा

नि॰
९३

सो मुषग्रंल रहित हू॥ को कवि पीर सपासै दीहू॥ लघु निरंतर स्थिर है जो

इ॥ पीर ग्रंथ पषर सिम होइ॥१७॥ मस्त्र ग्रंथ है ताका नाम॥ ग्रंन कोहु

मतिलठन कविकाम॥ रुधर वालकप डुषजु होइ॥ मस्त्रा सै डुष दाहग

सोइ॥१८॥ कहै ग्रंथ स्मृति क्रिदल षाइ॥ मस्त्र मसै बहुतां डुष पाइ॥

डुषजो नवालधर विकार॥ इन कार्ज है ग्रंथ सधार॥१९॥ मस्त्र बेतमो

गेजो नार॥ पवन चलावै की जै सार॥ रलै मूतसे पादै फिरै॥ सुक्र

जमस्त न रोग तहि धरै॥२०॥ भसम उदक सम मूतै रंग॥ निकसत मस्त

पीर बहु लिंग॥ ठौ मस्त्र पनीत जो रला डू॥ मस्त्र क्रिदल कलिय तहि स

रौ॥२१॥ कुरै व्याग्म मार्ग बहु रूप॥ भजै हुता हलसे कै धूप॥ मस्त्रा सै पि

त वाता मिलाइ॥ मस्त्रा है गुद लिंग सहडाइ॥२२॥ उस्न मस्त्र पिल्ले रंग

म्रान॥ कक कररकल बालधर चलान॥ पुन पुन मूतै डुष से जैव॥

उस्न वातहि जजा निसदीव॥२३॥ कफ पित दोषान सघाटै॥ बडे

कह सो मूत्र जु सदै ॥ पीला लाल स्वेत स्त्रि घन ॥ दाघ सहित मू
त्रै सो भनौ ॥ २४ ॥ लक्षन वरनन संषसमान ॥ सक्र वर्न रे सेक विसम्भन
मूत्र स्वाद है ताकौ नाम ॥ लहन भाषै ऊँगणां कं म ॥ २५ ॥ दुर्बल नर स्वहु
नू घाघाइ ॥ विष्टा पकड़ै वात कुपाइ ॥ मूत्र स्त्रोत मै प्रापति होइ ॥ वि
घा मूत्र तामिल ज्वै सोइ ॥ २६ ॥ मूत्र विषै विष्टा कैसैध ॥ विष्टा कै सम
रूप जु संध ॥ मूत्र क्रिदन का दिन ताके म्रात ॥ कहत क विजन सो विट घा
त ॥ २७ ॥ इन्द्र पथले घन समग्र मिघात ॥ ग्रंति पीड़ तनि ज कनत
जात ॥ मूत्रास उदवृत जु होइ ॥ गर्भ जे मकलू मो राजो इ ॥ २८ ॥ दाघ स
त फरकत बहु पीस ॥ विदु विंदु मूत्र सो धीम ॥ जो दवै तौ धार चलै
होइ है थे भत पीड़ा सलै ॥ २९ ॥ ग्रस्ति कुंडली नाहि बषान ॥ घोर सहा
जे सिंविष मान ॥ पवन ताहमै जो मिल जाइ ॥ मूढ वैद नाहि सकै मि
टाइ ॥ ३० ॥ पित मिलै जौ ताम दाह ॥ लाल जु मूत्र तवै वरनत ताहि ॥ जो

ककमिलेसोफगुनमान॥ चिकनमतजघनस्वेतवषान॥ ३१॥ व
स्तिचिहनुषकफीनकाइ॥ वढतपितततोसिघनथाइ॥ अविम्रम
लकुनकविजनधरे॥ वस्तमतगकीकुंडलिफिरे॥ ३२॥ मोहतस्वा
सतिबाकविमान॥ वस्तकुंडलीतोभीजान॥ मतगवातनेराइह
मीत॥ कहनसुज्ञागजुनानीरीत॥ ३३॥ वस्तसहितमोगेजोना
रि॥ कीकरकीमहस्रावकुप्यार॥ दुष्टजोनिइत्यादिकहेत॥ रोग
सुज्ञागवडेकुषदेत॥ ३४॥ अर्धलिगमघसस्तजुहोइ॥ मतलगे
वहुपीडजोइ॥ ईम्रीकेमषवत्रावेसाघ॥ सीतपचारकरैशमिटेव्या
धा॥ ३५॥ दो०॥ रहेअधकचिरजोमकोकुयाकहतकवितान॥ वी
जलागकपडेलगेतेनामतजुयात॥ ३६॥ इतिश्रीजतीनिदाने
षोडसप्रकासेमूत्रघातनिदानसंपूर्णः॥ १६॥ अथप्रत्रहमरीनि
दान॥ दो०॥ तीनवातपितककफगिनेचौथीसुकजुतेत॥ सबक

कण्वास्कत प्रासलाबि यमसमकाविकहि हेत॥१॥ कुपै॥ संप्रात्र
कहि हेत्त बल्लिगति दीजे मता॥ चित्त पवनक कमिले सो वप
घरीज अहुता॥ कमेसोजिमगोसीसरोचनाकर्नप्रकासा॥ स
वव घरीके वीचहोवनहिएकजु भासा॥ अथ सनपर्वेलक
नामनगासेन्नधमाना॥ अन्नासनकैटिगहेहमधग्यूतिवहपीज
माना॥२॥ दोहा॥ मालीवकुरैकीजिमेगधमजमैहोत॥ मगा
लिकोचककविनानापचढैकाबिगोत॥३॥ कुपै॥ लछनसुनो
समानलिंगधुनीमेपीरा॥ कालेवालोंवीचहोरसीचनमेपी
रा॥ टुकतीघाराश्रवेमत्तकोमागिरोकै॥ वातचेगकहुहटेम
तसुघ निर्मलमोकै॥ गोमेहकसममत्तलवषोभजिततोघिरस
वोई॥ जोनरषेचलकोकरेतोबोहपीडकराई॥४॥ सुश्रुतिवो
लेवचनग्रस्मरीसुनोनिदान॥ दिनकोसोवेनींदधवत्तग्रनि

नि॰
९५

सीतल खान॥ भारी चिकनाखाइ मधुरौ कफ कै धार॥ बालक प्र
तिदृढ होत अस नमनै तीन विचार॥५॥ भेषज तो वहुतै लिखी सुश्रुत
कहत अनंत॥ काढ़ न तें सुख होत है गंग यतो कवि चंद॥५॥ मनो
रस॥ वात कौ वर्णनौ अग्नि मधि कोइ प्रति मानौ मुख दंत तन धमनौ न
रकंपन तन सम पेरजु॥ मेहन कलावे हाथ लिंग लै हलावै ना भि पीड
त पुकारै वैन सकित समीरजु॥ पलमें निकाश जात मृत विंड
विंड आत कौल कौ गिट ककंट पथ रै को न रजु॥ रंग जो ग्रह
न स्याम कहै जतो गंग कहे मम रै पतक रै सदा सदा स्वामी मत्ता
बीरजु॥ २॥ चौ०॥ पैतक मैं मूत्र आस रै॥ पाचत मन उष मा धरै
मल गत कफ अस्य समान॥ लाल पीत स्वेत पथ रै जान॥ ७॥ तो
द होइ मूत्र आसै मीत॥ अश्मूल नवल गम पथ रै न॥ सीतल भाइ
चिन कौ जान॥ कुक्कुट कै अंडे सम मान॥ ८॥ स्वेत वर्ण अस्मथवा

मधुरं ग॥ बालक प्रतिडुल्हहोवैढंग॥ आम्रपउपचाअल्पास
भाव॥ अहन हर्नमधस्थकविराव॥८॥ सक्ष्क जकोपरेकहदेत
वार्जधानैइसकोहेत॥ निजस्थानकछुइवृहीरनआत॥ जुग
कोसनमधमनिलसमात॥९॥ पोषनकर्तएकठाकाम॥ सक्ष
ग्रसमरे ताकानाम॥ अथप्रसूनलतन ताकेधो २॥ मूत्रक्रिदोमू
आसेफीर॥१॥ उतपत्तजाकोकवहोहोइ॥ जुगलमुंडमधसो
जाहोइ॥ कोर्जेस्रवैमूत्रपथसेग॥ जातिहपीडनकीजेअग॥२॥
मस्तपवनसोभेदकराइ॥ पथरीकुटीरेताबाइ॥ मूत्रसाथनि
कसैअनुलोम॥ हकैपार्कराजौप्रतिलोम॥३॥ मूत्रओत्रमधक
र्तजमाइ॥ करैउपद्रवरेताष्इ॥ दुर्वलसद्रक्रिसोकुबसल॥
त्रिधाग्रोचकाक्रिदमेहूल॥४॥ उस्नवातपंडुतनहोइ॥ डाकी
होजाब्रिषनमेहोइ॥ मूत्रवेदम्रनुरवहुपीम॥ रोसोपथरीकहनेस

सीर ॥ ५ ॥ दो ॥ प्रथमसकलगुणी विषेस्रयुवाम तैरत ॥ अथवानि
कसैकाकरी होयदोउ खदेत ॥ ६ ॥ मरत्रकिततप्राठोकहैमरत्रधा
तइकसौम ॥ सुजानकरे पथ्यरीचलुरवोउ शयतीविदंम ॥ १७ ॥ इ
तिश्रीपंडितसुजानसुरतरामतनयविष्णकविगंगारामेनयती
विरच्यामैयती निदानैअष्टमेदमत्रकिदतमत्रधातनैरास
जाकरैगणपरीचारवोगविनसंप्रय ॥ १ ॥ षोडशप्रकाशः ॥ १६ ॥
अथप्रमेहदशमा ॥ दो ॥ कुंथनाथुमहंहंह कोप्रनमेभूजकाजिजो
म ॥ विघ्नविंदतमनखकेप्रभजेभाखतभोर ॥ १ ॥ अथप्रमेह
निदान ॥ कहौमात्रदशाध्याइमैरोगप्रमेहनिदान ॥ सबअसन्न
भोगेत्रियादिनकेनिंद्राठान ॥ २ ॥ चौ ॥ बकरामतीकुरकटमा
स ॥ देशअनपजजलवरसास ॥ दहिदुधषावैनवअंन ॥ गुडकी
वलप्र[illegible]मेहलमेन ॥ ३ ॥ तीनधातुनिर्वलजिहदेह ॥ कफकित

कानेकरै प्रमेह ॥ मेदमें सन्तपित्तनकानोम ॥ जोइनको कफहू षैवी
२०४ ॥ सो कफ मूत्रमासे मधजाइ ॥ करैउदोम पित्त कफ वाइ ॥ तैसेहू ष
तापित्तधसाइ ॥ कफपित्तवादीकोप्रगटाइ ॥ ५ ॥ तीनधातुतिमके
पसमीम ॥ कफपित्तवादीतिन उदीम ॥ मूत्रमाहे दुषकरैप्रमेह ॥ ना
मवीसभाषैकविराह ॥ ६ ॥ कफकैसाध्यकहैदसामीत ॥ षटकहै
षटयैतकरैन ॥ कहतअसाध्यसदागतचार ॥ वैदराजऐसेचित
धार ॥ ७ ॥ दो ॥ कफप्रमेहकीक्रियासमकष्टक्रियाहैपित्त ॥ दुष्टक्रिया
हैवातकीसमजोपंडितनित ॥ ८ ॥ चौ ॥ कफपित्तवादीतीनोंदोष ॥
मेदवीजाजलमूत्रसकफपोष ॥ मज्जाउदरसापलरह ॥ दुष्टनकरै
वीसप्रमेह ॥ ९ ॥ प्रथमरूपबहुत्रिषालगंत ॥ ताल्हतैगलैरहैदंत
त ॥ इतिवहुमैलहाथपगदाह ॥ चिकनातनमुषमीठताहि ॥ १० ॥
मूत्रथलतनमनकहेसमभ्न ॥ प्रतिसैमैलामूतपछान ॥ दोषह

षट दोनो मिलि संग॥ वहै तिमे ल्कक है तन मंगा॥२१॥दो॥ मूत्र वर्न वैसे
द मे हइ सरीत॥ सम्यक भेद विचार कै भेषज दीजै मीत॥२२॥दो॥ दोष
तीन पित वात कफ ग्यानादू षपकान॥ रोग की सकै सम्भरा उत्तर
दहसुजान॥२३॥ पंचर्दग निज निज मिलतन कपलादिक बहु हैत
वीस रोग रसे भरा सन उतरजा सवेत॥२४॥ द्रव्यत्पनाड्यस्त्या॥दो॥
मेद मास मज्जा रुधिर तन कले दस उजं॥ मल सक वीरज मूत्र तइ
ह वसादूष इरु षोज॥२५॥ अथ लिंगज्ञानप्रमेहनाम॥ चौ॰॥ उदक इष
सांद्रिक गन रंभ्र॥ सुराजु पिष्टक सुक्रजनाम॥ सिकत सीत स
नै लाल मेह॥ अंगयती दश कफ के एह॥२६॥ षार नील काल
का सार मित॥ मजीठी रुधिर हरिद्र पित्त॥ चार वात मज्जा दौ दुसधा॥ मह
स्ती चारे पवन विकार॥२७॥दो॥ नाम वीस भाषे प्रगट लक्षन क
हो समनाइ॥ भिंन भिंन इनकी क्रिया करे वैद चित लाइ॥२८॥दो॥

निर्मल बहुता है विनगंध ॥ जलके चे षत हुटै पंथ ॥ सीतल सम
मूतै मूत ॥ पिष्टल साक हु मैला हूत ॥१९॥ मूतै गेंदै कै रस जेम ॥
इक्षमेह कहु मीठा तेम ॥ मातै राष वटोरै मूत ॥ सान्द्रमेह जो घन
बहु हूत ॥२०॥ मेहै सुरा सुरा सम मूत ॥ ऊपर निर्मल अध घन हू
त ॥ हरष रोम मथ पिष्टक मेह ॥ पीठै तंदुल सितवत रेह ॥२१॥
शुक्रमेह वीर्ज सम जान ॥ वीर्ज मेल चिकनता मान ॥ सिकतामेही
गेरै सा जोइ ॥ रेत समान मूत मल होइ ॥२२॥ सीतलमेही सीतल मू
त ॥ मधुर निरंतर का विदुर हूत ॥ सनिमेही मध सनि सनि चाल
मेहं मेह मूतै कबिलाल ॥२३॥ मूतै लाला तंतु समेत ॥ लालमेही
सो कविकेत ॥ षारमेह रस गंध सरूप ॥ फरस षार जल जिम क
बिरूप ॥२४॥ नीलमेह हुत नीले रंग ॥ कालप्रमेही काला रंग ॥
हल्दप्रमेही हलदी जेम ॥ कटुक स्वाद भाषे कवि एम ॥२५॥ मे

नि॰
८८

ग्रिष्टा जलजैम मजीठ ॥ श्याम गंध होवे काषिइ ६ ॥ काची गंध सलू
नालाल ॥ रक्त प्रमेह गर्म कविमाल ॥ २६ ॥ वसामेह चरबी के मे
ल ॥ श्र षबा चरबीमत्ते हेत ॥ मजप्रमेह मज मिलाइ ॥ वा मंजा
मत्ते काविमाइ ॥ २७ ॥ मधु रक्त सैला रूषाजान ॥ क्षुद्रमेह ग्रेसे क
विमान ॥ मदोन मतकुंजर सकुचोल ॥ जरै समद ज्रिम गंध ग्रूडे
ल ॥ २८ ॥ मत्र वेग वर्द्धत लविसेतोइ ॥ श्र लसक सोयन वेघ कजे
इ ॥ हस्त प्रमेही तांको हेष ॥ ग्रवै उपद्रव ताके सेषु ॥ २९ ॥ होप ॥ छर्दि
ग्ररोचक पाकाविन निंद्रा पीनस कास ॥ कफ प्रमेह के जानषट वै
द उपद्रव रास ॥ ३० ॥ तोद वस्ति मेहन विषेम र्छा ग्रमलडिकार ॥
ज्वर बनपीड तरष हाघु जु रचिट भिटपित सुधार ॥ ३१ ॥ उदावर्त तिकृ
देके ठग्रह मल उनीहा सोष ॥ स्वास लोल पीसर वरसकासवा
तके घोष ॥ ३२ ॥ जथा उपद्रव सहत तनर ची जैवो हत्ता जाइ ॥ पिड

कासोपीड तअसाधिकताहिमषेजमयाइ ॥३३॥ छर्द्दिमुर्च्छासासमङ्गु
रखीरविसरपकदेह ॥ साय उपद्रव अग्रगगुन होपे प्रितरूपामीमे
ह ॥३४॥ कितकाल नहि होतहे ननारीप्रमेह ॥ मासमासरजस
वनतेमिटै सर्वदुषदेह ॥३५॥ सवैया ॥ सकलरोगमधजोमधमे
ह सोअसाध्यवीर्जनुतदेह ॥ अथवाकेपितजोकुलरोग ॥ सो
अ साध्यभाषेकविलोग ॥३६॥ सर्वमेहचिरलोतनजोइ ॥ कालपाय
मधुमेहीहोइ ॥ ताकोजानअसाध्य सुभाव ॥ विनप्रभक्तिपालगेन
हाव ॥३७॥ पितकफीपथ्यअवरनहोइ ॥ कुधधातुषेवातलजोइ ॥
ग्वारनहोवलिंगमेहोत ॥ एहनिमितभाषेकविगोत ॥३८॥ मीठा
मतसहतसमनहोइ ॥ कीटीदेहलिपटवोहजोइ ॥ बिनमैपकतेबिन
मैषीन ॥ कष्टसाध्यसवमधुतननहीन ॥३९॥ दोहा ॥ सर्वमेहमधजो
कहतमजावसामिलाइ ॥ सर्वदेहमीठालषेसोअसाध्यनरयाइ ॥४०॥

नि॰
८८

सो॰॥ सर्वमेहकैरोगपिडकाइसविधहोतहै॥मरममसंधगातितरोग
भिंनभिंनकरकहतग्रव॥४१॥ चौ॰॥ अवसुनहसविधिपिडका
नाइ॥ प्रथमसरावकासर्षपकाइ॥ त्रितीकछपचौथीजालनि
विनकापंचपुत्रनीषटगन॥४२॥ अलजीसतममसरकाअठ॥
नवेविदातकविद्रधिठान॥ प्रमेहदेषपिडकाहसभाष॥ मरम
संधिगतिहोवेमास॥४३॥ अतिऊनततु हीतिमजान॥ नीवीमध्य
सरावकमांन॥ गोरीसरसोंकेसमतुल॥ सर्षपनामकहेकविकूल
४४॥ मासजालजालनीहोइ॥ पीडाअधिकदाघतिहहोइ॥ अति
कोलविनीलेरंग॥ विनतानामसुविनताटंग॥ मोटीएकलघुव
हुसंग॥ ताकानामपुत्रीनीअंग॥४५॥ वौहपिड
दषहारकअलजीसोनरी॥ मसरदालकेजेमसतत॥ सोमस॥४६॥ कालीलालफोटकैभरी॥

रकाकहेकाविमच॥५७॥कंहविहारीकेसमगोल॥कलविहारक
ताकोटोल॥जोहैविद्रधिलिंगसमान॥विद्रधिनामकहतकवि
भोनु॥५८॥दो०॥जैसाहोवेमेहतनतैसीपिडकाजोइ॥कद्रोग
प्रमेहविनहुवमेहमैहोइ॥५९॥जोलोतनमेजोरहेतोलोलख
नपीर॥जोनिरमलवुहोतहैतोदुवहेतनसरीर॥५०॥चौ०॥प्र
देगुदासिरमोठ्यान॥पिठमरमाढिगपिडकामान॥सहतउ
पद्रवग्रसरीर॥दुर्वलकोमेघजतजबीर॥५१॥रवामेदउ
रउवलेमास॥हिवकीमेहविसर्पकसास॥मरमथानपीडत
तकजाइ॥पिडकांतनेउपद्रवसाइ॥५२॥दो०॥प्रथमरूपवि
नमेहकैमततरुधिरनिसउप॥मेहरोगताकोनहीरक्तापितके
कोप॥५३॥जिसमेहीकोमेलविनपिढलहोइनमत॥निर्मलके
डात्तिकलवमिसोरोगइहसंत॥५४॥इतिश्रीजनीनिदानेस

नि॰
९०

पतदमाप्रकाशेकोसप्रकरमेहमधुमेहपिडकाकेरोगविनश्यय
१३॥ अथमेद॥ दो॥ दिनसुवैविनव्यामकैसेवनकफकेआहार॥ मधु
रखंननरसप्रसाइलषस्थिनोंमिदवढाइ॥१॥ मेदासोमासमाहकैपुष्ट
ताअवरनधातु॥ मेदनिरंतरवढितसेतितनसकलकर्मरहितजा
त॥२॥ छुद्रस्वासहटमोहतासारहितनिवलसरीर॥ छुदाहेहदुर्गंधत
नमैपवनसकतनवीर॥३॥ सर्वजीवकेमेदहजउदरअस्थिमधहे
त॥ इनकानेमेदीतनोवडैपेटकविगोत॥४॥ मेदापथरोकतवढैको
षपवननविसेष॥ संचारेदीपतअग्निसोषतिहारसेष॥५॥ इसका
रनमेदकनरोचाहततल्परसाहार॥ जोकदकालव्यतीकमेतोक्कितघो
रविकार॥६॥ सकलउपद्रवकर्तइहमाहतअग्निविद्वेष॥ जेसेवन
तहस्विंदमैदावानलकोपेष॥७॥ अतिवढमेदावढततानुदाहनके
गकराइ॥ अनिलादिकतवजीवकेविनविलंवमरतताइ॥८॥ दाहन

रोगयथा॥ स्थूलद्रिष्ट पिडुका अरु सिता पवि सर्षक सारा॥ मेहम
गेद्र कीलपद अग्रपचादिक इहधाम॥ ८॥ मेद व दाव त्ति मास को चुतडु
वेरवट्टाडू॥ उप चा हर्षय यथा विनास्यु ननरोकहवाडू॥ ९॥ वीसमे
हनि रनै करै पिडुका दश। विधि भाषा॥ मेद रोग भाषा प्रगट मुनि द
स पत्ती प्रकाश॥ १०॥ इति श्री पंडित हरजू सुत तेरामनत्त रिष्यक
विं रोगा रोमपती विरच्चते पतीनि दाने सप्तदश प्रकाशे विं
शा तमेह मध मेद दशा पिडुका भेद रोग निदान सप्तदश प्रकाश:
॥ १७॥ अथ अष्टादशमः॥ दो॥ अध्या गकवंदन करो मुक्ति पुक्ति के साथ
सुख संपत में गलकर्ने अरुरे अरु रै अरिनाथ॥ १॥ अथ उदर रोग नि
दान:॥ दो॥ मेद अष्ट त्रिते सर्वह जउदर होइ ततकाल॥ अब रुरा जो
ले मल्लीन तनमलि संचत तदुषहाल॥ २॥ कुं दै॥ पूर्वरूप वषान वने
वलइहानसै॥ बलीजठरकी जाइ नाडी तिह ऊपर कासै॥ जीरन उ

त्रि०
८१

हरीमारग्पाचकोनासकरंता॥मृगासैमैपीरहाघपहसोघबडं
ता॥भुजाङ्घबलहीनलखप्रिघमरपरहमाइ॥ग्रघसमानलछ
नचतुरसुनोवेहचितलाइ॥३॥सै पा॥हेघबढैजलखेहवहानस
श्रोत्रविखेपितरोकतनेवै॥प्रानग्रपानकुतासनहबलतोनर
कोउहनैनजहोवे॥सोफकुतासनमेहमईग्रघमानकिसीतन
हघसमोवे॥पीउतंग्रगनचालसकैविटवानमिलेग्रघमीलस
मोवे॥५॥दो०॥बातपितकफसनितेझीहवघषतवाशि॥ग्रघउद
सुनलछनाभिनभिंनसुविचार॥५॥कुपै॥बातउदलखिसोज
हाघपदउद्रनिहारै॥वसलीकुवसुनाभिप्रिष्टकटिपीउतभा
रै॥पर्वमेहकफंसुसकंग्रगमहितगुनहेवे॥मलग्रहग्रसनजु
स्पामतुचाहिकनखद्रिगपेवे॥ग्रकसमानवढमसकजिमजोह
मेहउदरान॥सिरास्पामसखमलसेसनोहकग्रघमान॥६॥दो॥

कर्मीरत्तयुनिहोत्तहैपवनचर्तसबठाइ॥पीऽसरत्ताकेउदरगु
ड्गुडसब्दकराइ॥७॥कवित्त॥पैनकउदरजुरमहाकीमरोरअ
मह्नयत्रिटकटूमुषअत्तीसारवहेहै॥नैनतुचविटमतपीनत्ता
हयत्तरंगपेटमैंसुलालसिरापीत्तछविलहेहै॥भाफसेदअ्रात्तको
मलफरसजाकेतुरपाकसडेह्निहेघुषघुमोरहेहै॥कफकोउद
त्तनसदनअ्रनत्तविकासगोरवसुनीनअ्रत्तिगंगयजीकहेहै॥८॥
चौ॰॥सुव्रसोजतुचअ्रादिकसेत्त॥उदरविकनसासीवमिहेत॥
विरकरबटैकठनगुरुठाइ॥सीत्तलफरससेत्तनसमाइ॥९॥
मनोहर॥नीचनाभिवसीहेत्तपानिकोंभुलाइ॥देत्तमलमत्तनष
रोमरितजलअ्रंगनमै॥चायपिपहेत्ताविषडुथजलपानकरैअ्रि
त्तमसुषाइ॥विषजीनहोबसनमै॥कुपत्तरधिरदोबउदराग्निलिंग
करैजठरविकारअ्रत्तिवठेडुषत्तेनमै॥सीत्तलसमीरनीरधार

नि०
८२

सेवकनिहोतहितहरषततिविसेषअग्निकुपैदुरीहिनमै॥१०॥दो०॥
आतुरमर्कोसक्तविनत्रिषापांडक्रिसहोइ॥सकातननलक्षनक
हनदुष्मोहकविकोइ॥११॥दोहा॥माषकुलचमषेसरसोंदल
आदिकजोअम्भिष्यंहरषवैद्य॥होतझीहवढैउदरीमिलकैंजधरी
कफहुत्तभरैद्य॥पारसवामषिसेषवढैतनसीहतपावकमंदजु
रैद्य॥बीनभषोजननपांडुउपद्रवपैतकलिंगसमानवतैय॥१२॥
दो०॥ औसेंदननभागमैंपक्तितकोविश्राम॥क्रुधमईतैसेंवढै
पक्तितउदनहिनाम॥१३॥उदरनधीरअन्नाहअ्यमोहहाष
गिटनाप॥कठिनअननचिगैरबलबैदसकमत्रिकमनजाव॥१४॥
चौ०॥ छिपटमलेमकमोजंनवार॥साकसलूकादिकवीषा
र॥अंयवाषावेपयरींवेत॥अंगाद्रावेघमईरसहेज॥१५॥क
मसोमलसंचिननितहोइ॥सनिसनिहेषवढेकविलोइ॥ग

हाथुरीषतपैरकजाइ॥ कछु संग कछु योरा अग्राइ॥१६॥ बैठे नाभि
हिय मध्य सुभाग॥ मारजन जिम गिन धूल सुलाग॥ बैठे रहे मव
नसकै ठाम॥ बघ उदर है जाका नाम॥१७॥ छपै॥ विषम अन्न गति सं
ग अंग को भेद जनावै॥ अथवा कंटक प्रयोग चर्क अरु बवचन सुना
वै॥ अन्न रेत गिन काष्ठ अस्थि कंटक पुन षावै॥ अन्न नाडिं मग जि
म घैं अंग मध्य सल्य करावै॥ पर्व तनो जिह अंग गैं जल जिम बहै प्र
कास॥ उदर बैठे धुनी जन लै गुरु पथ अन्न थस बभास॥१८॥ दोहा॥ उ
दर बिषै सब ची चुभै विष घायो री अग्राइ॥ काहू मत्त बहु उदर सो षत न अग्रा
वकुहि बाइ॥१९॥ कहत तर को दरी तन अन्न बनाम जलोदर जाइ॥ थीव
तैल चरबी पिवै अन्न वास न कबार॥२०॥ वमनि कमै रेचन कर्मक
नै निरूहन जास॥ पान रहत हि मजल पिवै होत जलोदर तास॥२१॥
सोजल हू घ्याति कर्न तै लघुन सकै ठैकर नकाइ॥ अथ बाविगरसनि

गधत्ताचिकननसामुषधाइ॥२२॥वढैदकोद्रवव्रघमजिमनाभिन्न
जीचहुधास॥गोलकजिमचिंकनउनतजलव्रजिपरनैभास॥२३॥
मसकभरीजलकीजिमैबोभत्तकंपत्तजेम॥सबदहकोदकर्तइमगं
गपतीकहऐम॥२४॥होतउदरसवक्रिकजमत्तोभीयहीविसेब॥
वलीपुर्षजेम्रजात्तजलसाधनवोध्यिनभेब॥२५॥इनपंन्होव्रव
घगुद जातउदरसबजान॥प्रांनहनैहितहोतइहछिद्रहकोद्रठान
रह॥नैनसोजविगासिखनुचकलिनत्तनहोइ॥बलश्रोनतपल
श्रग्निबैभेबजलगैनकोइ॥२७॥अनहुबपसुलीभजेसोजपीर
अतिसार॥रुधिरसंगपर्ततउदरसोसागोकविसार॥२८॥इतिश्री
जतीनितनेत्रछादसब्रकातेत्रयभेदउदररोगविनश्वरः॥
१८॥अथसोफाधिकारः॥दो०॥उदरत्रयव्रगटकरेजामैसोफ
अमेज॥पतिपैनिपश्रावेसनत्तदेषतपोठसेज॥१॥अथकहुंदग

कसन्निनै अभिघात्तक विषसेग॥ सर्वविसेषकहेतुलषि रूपभेद
नवअंग॥२॥ प्रथमरूपसंतापबहु सिराकरषनीपीर॥ गौरव
तनतृसवंतड्ड जसेआप्तसुनघीर॥३॥ रुधिरपितकफत्तीनप्रजि
मिलकैपवनड्डषाइ॥ बहिरसिरापातिड्डष्टकढ़ितोन्निहपथन
कजाइ॥४॥ मासतुचाग्रश्रितकठनतनमोटाबहुहोइ॥ सोघ
रोगत्ताकोकहतअग्रनबरस्थितगुरज्ञोइ॥५॥ उतसेधकऊषमा
अधिकसिरालोपताठान॥ रोमहरषवैवर्नत्तासोजुतरूपसमा
न॥६॥ सेकछेद॥ वमनरेचनविनाभोजनरोगाक्रिसबलषीन॥
मषैषाटाषारत्तीबनगर्मगुरुबघहीन॥ दहीसाकविरोधभो
जनडुष्टकाचाग्रन॥ अंग्रनविषसोमेलसेवत्तविनाषेचलमंन॥
७॥ दो॰॥ मरमचोटतनअग्ररसत्तननारीविषमप्रसत॥ भिष्याउ
पचरकर्मसरसोजहेतुनिजसत॥८॥ वातकचर्ततननुचपर्वै

नि॰
२८

रोग स्रहत्तलास्याम पररसम्यानकीन हरखकचिमूर्तपीरडुखघा
म॥ रे॥ स्रतिपीडु तऊपरचडत्तिसनननमितकरतेइ॥ सोजविछादिन
कोवलीपसहजलसंठोहोइ॥१०॥ **पक्वंगमछेद॥** पैतकपीलीलाल
सरैस्थीसफमतत॥ कोमलजवरम्रमखेदाग्रिवामदतामत॥ हाथव
गावतपीरलम्लद्रिगवाकहै॥ पित्तनिदैनरसोजदाघवहुपाकहै॥
११॥ कफेसोजथिरपाडुअरोचकगुरकहै॥ मेदहुतासनचौदवमो
लम्लावहै॥ चिरसोउपन तसमनकठनम्रतिपीनहै॥ पीडुतउन
तन्महलिंगवललीनहै॥१२॥ कार्नरूपसदोइसोपक्वंछेदजकहै॥
वातपित्तकफवातपित्तकफजेलहै॥ संनपातकेसोजकहेस्कवि
भाममै॥ सवयायतनुमिलइरूपसवजासमै॥१४॥ स्रमिघाततकम
यतीनभेदयुतछेदषततमिइराद्रिकभेदहै॥ वर्षश्रग्निसैहोइउद
धिजलवातसै॥ कौचवीजकेसंगतेलभलातसै॥१३॥ लगैलछक

चोटगिरैजोगेहसैं॥ सोजहोतइहरूपजुफैलतदेहतै॥ कायमिंदेत
रुताहजुलोहतरंगहै॥ कहतवैदकविराजपितसमलिंगहै॥१८॥ वि
षजुसोजइहरोतसविषजोप्रानिहै॥ देहिफिरसंचरतिमूतमलठा
निहै॥ विषविनप्रीनेदेतदाढनषघातसैं॥ मलनचीरविषमिल
तमूत्तविटधातुसैं॥१५॥ विषतहमिलतसपरसथलगरचूरसैं॥
कोहरआकधतूरकचालसुरहै॥ केमलचेचलसोषअधोगतेगा
मनौ॥ तूरदाघतनपीरकहतकविग्रामनौ॥१६॥ ग्रामामैगतिसो
षसोषमुषमैपरै॥ पक्वामैगतिदोषसोजमधमैभरै॥ वचैषानुग
तिदोषअधोगतितेलहै॥ सवथानकमलसोषसर्वतनफैलहै॥
१७॥ मध्यमवाढैसोजकफकितजानलै॥ सकलदेहगतिकफऊ
रधतिमठानलै॥ कहिअरिष्टतनआधउभैगतिजानिवो॥ इंद्रकमारै
सोषवैदइहमानवो॥१८॥ पदपयानरकैबढतिअधोगतिनारिको

नि॰
२५

वैरसमुषक्रमदेषहनेनरसारकोः।दुरवलत्तैबाग्नरोचसासजु
रजाकहै॥भेषजमिटैनसोजसदीरविपाकहै॥१०॥कहत्तउपद्रवसा
सतासमृतिसारहै॥डर्वलत्रिटवमलापसकोपविकारहै॥निज्ज
ह्मिजहोवैसोजपुरुषपदमारतीभिनाटेमुषतैगुदाग्न्राधिकडष
धारतो॥२०॥दो॥कहेउपद्रवसोषनवसाध्यासाध्यविभाग॥गग
पतीप्रभुकोभजैघ्टतमितजतोप्रकण॥२१॥इतिश्रीजातिनिदा
नेग्रहणीदशाप्रकारोशोषरोगनिनम्प्रयः॥१८॥अथांडवृध्यनिदा
नारसावल्यंदा॥वातपितकफहधरमेदमेहनगनग्रोदरग्रोडव
धएहसातवेदमायुरसमुतातर मूत्रौदककैवीचयायुकोहेतल
याचलत ग्रयासावधन्धिहैनुवैदइहयुगतवतावत १ सग्रापत
सनरीत ऊरधगतिवायुचढावत करैवेधनाजोमसत्रिषतेहजसो
षकरावत त्रिषनगोलकावाहनसाप्रतिपंडतसोमला तोधमनी

दुखसंगत्रिषनअतिवादत्तकेमला॥४॥वातलदानजेमपक्वनप्रति
पूर्संनाहका॥करसरूपनिजहेतनमिलिवहुललकराहका॥पैतक
निकसेभाफपक्कफलगुलसरूपका॥वाहरभीतरदाघअंत्रपाक
तिदुखरूपका॥३॥कफिचिकनगुरसीतकर्नकंडूतदपीसत॥अथ
जस्यामसफेदपित्तवठचिनसधीरत॥मेदजकफजिमलिंगला॥
लफलसमम्रदुबाधत॥मत्रजत्रिषनिदानधारमेहनकीसाध
त॥७॥इसतेउपजैरोगगलदानोंवत॥मत्राक्रिततिहरोगकोसध
लवाननअटकत॥अधोगामनीसोनजानुलौदेखैलटकत॥५॥
वातलकरेअहारतोपसीनलअवगाहत॥सोकेविष्टामतअ
दिसिरभारउठावत॥वरतनविषजुअंत्रगगमनवैंडेरनकीज
त॥सोभनवधुमननसरीरहेतकविअवरभीलीजत॥६॥अवप
वनसाजुकुसपवनविगुनीकितहोवत॥करपवेसअथधिता

नवंषन सिंघे विगोवन ॥ इस विधर्म्ने त स्त्रिध ग्रंथ जिमसो थ्यल षावत्त
थव नक्रिषन केमध व्रिध तन थंभ दिगाव त ॥७॥ उदर विषैम्र धमोन
तायपीडन करवेलत ॥ वाधन कानि लषहोइ भोजम त्ति रोसे चोलत
ग्रंदर उलरस मीर जीवके चूल निग्रोनत ॥ वेंन न ते चल पीर को
षपकल मध्य सुठानत ॥८॥ भारीस कम्प्रेनयत्ति ग्रभि थ्यंदि कमक ॥
इनकारनै होइ व्रधम रोगे वहुकाम क ॥ त्रिषन ग्रंथ जिमसो पदोष
संघनि मध वंकुन ॥ श्रे गदाङ जरलल व्रधम कै हेलतन ॥९॥ दो ॥ श्रे
दरपताल सोलगेम त्रिषन भरवात ॥ वा तत्रि धसमलतना सें ग्रसा
ध्यकवितान ॥१०॥ ग्रव भेद रुज उदरकै नव विध सेज्जा रोग ॥ श्रे ड त्रि
धमनि व्रधमइ गंगय तम्लषभेग ॥११॥ इति श्री रुज पंडन लतां
मतत सिद्ध्य गंगा रु मयत विर च्यते यता निदाने ग्रव भेद उदर रोग
नव भेद सौ पर रोगला तन भेद अंड त्रिध इकवर धमरोग प्रत्ती कार स्त्रा

द्वादशांशप्रकाशः ॥ १८ ॥ अथैकोनविंशतमः ॥ दो० ॥ प्रभुकिराघन
घाररजद्रुमंतवचनउपल ॥ जैनधर्मअंकुरमुदितकर्तसदाञि
नमल ॥ १ ॥ अथ गंडमालनिदानं ॥ लमकैसेजाविषनवतगल
मैद्रिढजिममाल ॥ दीर्घवाछोटीलषैगंडमालसमसाल ॥ २ ॥ चौपै ॥
वातकफकिमिलदुषगलेमधमेदसमावै ॥ क्रमसेउपजैरोगगंड
गलमालजनावै ॥ पचतनगंडमधमेदकालकरश्रवैपीरगल ॥ सं
प्राप्ततइहरीत्तरूपनिजमिनग्रचलदोनोहंसनकेविषैश्रवैजु गं
डगंभीर ॥ मालाज्योगलमैकहतजबनानेअजी ॥ ३ ॥ दो० ॥ वात
कस्यामसिरालसेअर्नुस्यावद्धविदीस ॥ वढुतिहुविस्फिरग्रिध ता
पाकतइक्षाईस ॥ ४ ॥ पकैकदाचितत्तोदलविस्वादहीनमुषता
स ॥ तालगलसेषतग्रंथिकफुसकीतननमैभास ॥ ५ ॥ कफावर्ने
तनथिरकठनअतिकंडूयुहसीत ॥ वढुतवढैचिरपाइकमिचिवैसे

नि॰
८७

हूवै सीतल ॥ ५ ॥ पीरक फान्वीत मंद लषि मधुर स्वाद मुषजंत ॥ गलता
लूले लेपक लषै ऐसे लषन संत ॥ ७ ॥ मेदज गुल्ल पांडु चिकन वहु ग्रनि
षत्तनगंध ॥ अति कंडपीडा ग्रल्प लूंवी जिम गलैं संध ॥ ८ ॥ अल्प मू
लतन कूप सम दीनै विंध तिम मिंत ॥ चिकन देह त्ताकी लषै ग
लमैं वालै मिनत ॥ ९ ॥ छै ॥ अथ असाध्य गलमाल स्वास रुव से जि
ह्वावत ॥ सिथल सकल जिस देह वर्ष इक ऊपजावत ॥ दीन
अरोचक पीर गंड गल पाक लषावै ॥ भिंन होइ स्वर जास वैद ति
ह हाय न लषै ॥ दीन होइ बल मास मेष जल गैन कोइ ॥ अथ ल
तन मै कहत अव गंडमाल के जोइ ॥ १ ॥ केषक न वेर समान के मल
सम अमल प्रमानो ॥ गर्दन मांह कषर लमै पीड उठानो ॥ कषकमे
दात्ति सठाम पाक चिर मंद लषावै ॥ गंडमाल सो नाम वहुत गंड
नेइस पावै ॥ गंडमाल चिर रहत जिस अपची होवै तास सा ॥ वहुया

कहतकेचितअस्त्रवैकेचित्तग्रंथविभास॥१॥दो॥कह्यौअसाध्यवैदक
विषैकीनसपहलीस्थल॥कासवमनज्वरकफियुक्तसोअसाध्यदु
षस्थल॥२॥चौपाई॥ग्रंथनिदानप्रकाशपालहैत्रिकवातकपित्तकफै
लखिपावत॥मोसलाहूमिलकैदुषदाइमेदसहूसत्तचारमगिना
वत॥पंचमनामसिराडुषहूतप्राप्तलहतनवैदपावत॥गोल
करूपजुसोग्रंथलिएसंगग्रंथहिबाढतज्योंदुखपावत॥३॥छपै॥
दीर्घकीजैजेमघीरविक्रयेजिमतेदयत॥चलतीपाडाहोइफेर
मुगलीजिमहिदयत॥मध्यमधानौजेमरंगकालामडुठानै॥
सत्रासैसमपीडुभेदकअस्त्रवतपहचानै॥सूततंगधकविहधरस्वास
वैसवछजिमनीर॥वातग्रंथताकेकहतजोवैदकमतिधीर॥१०॥
पैतकग्रंथविसेषवहिरतैतातीहोवै॥निकसैधुआत्तासनततजि
मधुरसोवै॥पाकनिरंतरहोइअग्निसमजलनिलभावै॥तालपी

त्रि॰ ९८

ततहिंरंगफिनागिम्राइदुखपावै॥ भेदकरजिजवपितातिसम्रावडजुस
वैअत्रतीव॥ निरमललोहूगर्भअत्रजितोदुखपावैजीव॥ ४॥ ककी
सीतविनरंगपीरधोरीअतिकहु॥ चिरकरवाढतनंग्रयकठ
नपाघरहिमगेडु॥ भेदतसर्ववजुवपस्वेनघनग्रैसेलछुन॥ भेद
जंग्रघववचानवैदग्रजितसुनोविछुन॥ हानवढघलघदेहहिम
चिकनपीरवढहोइ॥ अजिकंडु भेदतसर्ववमेहासीकविलोइ॥
१६॥ दो॥ बलजलतिलकेकलकजिमईदकम्रावपछान॥ भो
जंग्रयमतिजोकहतयतसममेहठान॥ १७॥ मासनधिरकेव
लहुवेम्ररदुल्लेछुनजेम॥ जोकेलछुनजानलैकहतवैदकवि
हेम॥ १८॥ निमलकरैजुव्यामनसामघवाघुसमावै॥ कुंचतपी
डनासिरासकछिनतंग्रयउठावै॥ अचीलघुतरहोइजोलसी
वहुदुखवेवे॥ सिरागंग्रयचलपीडसाध्यकिरकष्टविसेवै॥ अ

चलपीडविनश्यतिवडीउठीमर्मसुषनाम॥ हनुकपोलसंधनिवि
षैमेजवचनतजस्रा ह॥१९॥ दो॥ ग्रथसनम्रहभुचचतुरस्नस्ल
तनकहेसमान॥ ह्वचितदेसतनकैविषेडफ़त्तदोषत्रिकान॥२०॥
रुधरमांसप्रतिडषकफगोलग्रथिरहजमेदा॥ ग्रधिकदाघतुहु
मलतिसचिरथाकतकविनंद॥२१॥ उठतमांसम्रतिव्रिधताता
कोग्ररवुदजान॥ वातपितकफरुधरतेमांसमेदषटमांन॥२२॥
वातपितकफलदानासदाग्रथसमति॥ रुधरमांसमेदाकहतइ
नकीस्राक्रितभिन॥२३॥ सैया॥ दोषदुसावतग्रहेवतइषतुपा
कतग्रकुरमांसवढेलघुसाकं॥ जानग्रसाध्यदिसेहधरत्तमवेद
विसारदबोलतवाकं॥ हीनमयोरुधरेजिसकेमधपीडतसेरवु
दपोडप्रभाकं॥२४॥ दो॥ मांसजग्ररवुदकहतग्रवग्रिथमेतासहनि
दान॥ मुषलषकादिकलगैमर्दतग्रगपदान॥२५॥ सैया॥ डषत

नि॰
९९

सोपलसोफकदै तनदीडविनाखिकनासमरंगं॥ पाथरजेमक
ठोरत्नपाकततनुछु बहुनररहेग ढंग्रगे॥ जानरक्रोरजुहोतसह
दरभोजनमेंतसहक्षिनसंगे॥ जानग्रसाध्वसर्वग्रन्तिजो
मरवामेम्रितसचततढंग॥ २६॥ दो॰॥ उठेग्र घमेग्र घजोदध
सरबुदतिसनाम॥ ग्रर बुद मैग्र र बुद भ्रपोहिर बुदसोदुबधा
म॥ २७॥ युगवत्तिहैनोजोउठेग्र घ बाहमसोंहोइ॥ सोग्र साध्व
सबकहतहै बैदविसारदलोइ॥ २८॥ ग्रधिकलोदकफजास
मधसोनहि पकेसताव॥ मेहदुख तज़ासमैकफत्रिमनाक्रीग्रा
व॥ २९॥ होयमःरोकिरजासमैग्र घरूपसबमीत॥ त्रिधाजानक
फमेदमैग्र र बुदसहिजेरीत॥ ३०॥ इतिश्रीपतीनिनदेरदेग
लगंडमालाग्रघयापचार बुदनिदानवरनि॥ ग्रथश्ली
पद॥ छप्पै॥ जठैपुरातनउदकपीतसवलोकलुकाई॥ जेजे

सीतलरहैससर्वचित्तमैहिमताई॥करैश्लेष्महारकैरभोजनकारि
सोवै॥जाकोकफीसुभावअधिकनिसरहततजहोवै॥चलेश्रावतउन
मत्तअधिकसबलछनमिलजात॥कंडुहोवैकफसहतसोनरजम
कोभ्रात॥१॥ द्वेषः॥ मंचककत्तापविषैअतिसेवतनवछनमैत्तिससो
जउठावै॥पीडसमेततचलेलसैसोपदहोतश्लीपदनामसुनावे॥
कैचितवैदअचारजभाषतनैननिहायनिहोठनिजावै॥चूतड
कानसुनासविषैरततनेजतनअगश्लीपदधावै॥२॥दो०॥मेदमांस
उत्तसोयलषिकहतश्लीपदतास॥वातापितकफतीननधकक
कैअधिकप्रकास॥३॥वातजतरुषीकेरमछविफुटततवैदनाभ
र॥विनविहावपीडाकरैअधिकतापततनचूर॥४॥पैतकपीत
प्रभालषैहायतापमददगूग॥कफीचिकनगुनपांडुथिरसेत
वरनकविगंग॥५॥तीनहोयमिलहोइहैवरमीजेमप्रकास॥उ

प्रकंटकग्राधिक फिर कदोनतें कीग्रास ॥६॥ त्रिकै स्रीपद कफग्र
धिक इसमै कार्न कौन ॥ कफ विन लछन होत न नहि गुरु अरु भारी
होन ॥७॥ नवल प्रिष्ट की मारकर फिर उरै रहि मत्ता क ॥ ताहि स्री
पद होइ तनु जवउ वैद के वाक ॥८॥ इति श्री उत्ती निदाने १८ प्रकासे
स्रीपदः ॥ अथ विद्रधि ॥ रूपः ॥ तुचा तथ रपल मेद अस्थ को सं
गरलावे सनिसा निवाढै सो फ दोष त्रिक हुष्ट जनावे ॥ वढै सो जुदु
ष घोर पीड तनहि होइ निरंतर ॥ महां मल रज वेत्त गोल अग्र ति बालंब
सर ॥ विद्रध तांको कहत है गनत्री षटु विधि सार ॥ वात पित्त कफ सं
नैनै छत न उन अष्ट जु धार ॥९॥ अथ सुन चतुर सु वैद वात विद्रध
के लछन ॥ स्याम वर्न भ्रिस विसम वेदना अधिक विचछन ॥ का ची
पाकी ज्ञान पाक निह चिव्रत षावे ॥ पैत्तक गुलर जे म पाक फल रो
म जनावे ॥ स्याम रंग जुर दाय तन चपल पके सुन मीत ॥ विद्रध ज्ञा

नोपैत्तकीअवसनकफकीरीत॥२॥दो०॥ठुठेज्ञिमसीत्तलचिक
नपाउबेहनातुछ॥चिरपाकत्तसत्रमननसालसैपीत्तिसुछ॥३॥
पंत्तिछंद॥सोछमज्ञानो॥श्रावपछनो॥बैनइतीसं॥गेगजुती
से॥४॥दो०॥सनिपात्तसित्तपीत्ततमत्तोहरहबहुकंदु॥घटाटोप
पाकेविषमबटैविषमत्रित्तठगग॥५॥छपै॥लकुटीपापघरआहिमु
छकालगेप्रहारा॥कुंतीषडगत्रिसलसेलवाचोटदुधारा॥जु
धिरआवनहिहोतपथ्यविनरहतसरोरे॥मिलेपवनसंगपित्तकै
वहुरउदीरे॥त्रिबाहाघनुरहोइत्तननतकैउबनामीत॥विद्रधआ
गेत्तकलघोवेहफउचरीनीत॥६॥दो०॥किसमफोटआवरत्तसत
सामरंगवहुहाह॥पित्तलछनातापरजुरलछविद्रधीआहि॥७॥
रहसबविद्रधकैविधैसंनपात्तजोहेत॥सोअसाध्यजुसबंत्तसु
विगंगजुतीकहहेत॥८॥सवैया॥ग्रंद्रकीकवित्तसुनिविद्रधिआ

नि॰
१०२

दिनिदानकहोतिसको॥ अंनदुगंधविकधअसातमसुसकमषेगु
रभोजनजो॥ रोकततवेगकरेअतिमैथुनसेवततआमविदाहकसे
वाततकपित्तककोत्रिकदुषनहेषत्रिकेफिरसंनिलषो॥ ८॥ दोहा॥
गुल्मरूपवरमीग्रिमेउनततलषोचुकेर॥ दसविधअंद्रविद्रधी
गेगजजीकविहेर॥ १॥ चौपै॥ जोजोअंगगग्रसेजुविसेष॥ सोसोअं
गगनोकविलेष॥ गुदावस्थमुषधुनीमोहा॥ कुषवंक्षनात्तेसेअा
हा॥ २॥ अंडकोस्पकिततकोजान॥ हिदे पद्मीहतिलीमधठान॥ व्र
गटलच्छनानिनकीमीत॥ भिंनभिंनसुनदसविधिरीत॥ ३॥ वि
द्रधिवाहपसमानपछान॥ अंगअंगकोसुनोसुजान॥ गुदापव
नरोकेकविरछ॥ वलुमत्रयोराफिरक्रिछ॥ ४॥ मुषमैविद्रधि
मुषसकजाइ॥ दुगंधअरोचिकबहुदुषदाइ॥ नाभिविषेहिचकी
अाटोप॥ कुषविषेमारुतअतिकोप॥ ५॥ कटीपृष्ठअतिजाको

पीर वढनविद्रधि जिसकाविधीर॥ अंडकोसपसलीसंकोच॥ स्त्री
हसासरतकजावेसोच॥२५॥ असेअंगसवफ्रिहेदुबाई॥ स्वासका
सयक्तितमघष्याइ॥ फ्रिचकीहोइपीत्तवहुनीर॥ विद्रधिजिली
विघेलबधीर॥२६॥ विद्रघनाभिपकीफुटजाता॥ उग्रमुषपत्तघरच
लात॥ हेठफुटेगुदमार्गपेष॥ वलेद्दिमार्गज्ञमषुरपेष॥२७॥ फ्रिहेना
भिवस्तिलिकजान॥ फूटकहांचितबाहिरठान॥ अंथवाजोवस्त्रष
वामरे॥ हारीतकमतअेसेधरे॥२८॥ मरमविद्रधीपकि॥ संनपात
कोअेसेहकै॥ वस्तिविद्रधिपकीजान॥ इहअसाध्यमाधवमतठान॥
२९॥ तुचानाभिषअंधसर्वमान॥ मरमसमीपकसाध्यवषान॥
कच्चीपकीघुनीरीच॥ सोअसाध्यनरकोहैमीच॥३०॥ बाहरवि
द्रघघवहविधमांन॥ पंचैसाध्यसंनविनजान॥ अंमपकजल
सीपचमांन॥ सोफजेमअग्निनहपकग्नान॥३१॥ फुरकैजासक

त्रि०

१०२

बनज्ञथमोन ॥ त्रिषाछुदहिहिचकोकिरिठान ॥ अधिकपीडविदग्ध
मधसास ॥ जिसनरकोकीजेनहिञ्जास ॥ २२ ॥ इति श्री ज्ञतीनिदाने
१८ विदग्धविनस्त्रपः ॥ अथ वर्णा ॥ दो० ॥ प्रथमलछनव्रननतकी
सोफहेकतनदेस ॥ षटविधिगनतीप्रथकतवग्रांगंनककधरे
सा ॥ १ ॥ सो० ॥ बडविधसोपप्रकारपर्वभाषोलछना ॥ सुनिविसेष
अधिकारपकाहिकनिरनेकहत ॥ २ ॥ विप्रपाकजिसवानपेतक
हतकफचिरपके ॥ रुधरञ्जगंतकज्ञातपित्तजेमपाकेचतुर ॥ ३ ॥
छपै ॥ ग्रामलछनाकहतभाफजहिमंदलषावे ॥ अलपसोजसि
हजाननुचासमवर्नदिषावे ॥ होतपीडकछुमेदकठनताकिरति
सदेषे ॥ चतुरवैदलषिहेहलछनाग्रामविसेष ॥ पच्चमानलछ
नसुनोनंहुजवरजसवेत ॥ दहतअग्निजिमछारजिमपंचमान
डषहंत ॥ ४ ॥ डंकपपीसकजेमाछिद्रतशैसोजोवे ॥ मेहसस्त्रजि

मघात्तहेंउजिमनताउतसोवे॥ हस्तपीजाउजिमचीउग्रंन्तसचीउजिम
चूभत॥ हावसोषविनरेंगग्रंगुसीजेमविपहति॥ ग्यासनसेन
विषेतिसेविकुंडकज्योंपीर॥ तुचासकोचवनरहतलाषिचडेव
रमतुटवीर॥ ५॥ दो॰॥ वटैसोफग्रघमानजुतमचासेउजिमज्ञान
त्रिषाग्रतचिज्जुरज्ञासकोपंचमानरहमान॥ ६॥ सोहतदूतउन
तग्रलपसमनवेदनाजास॥ वलीतोदपुषताभयोकंठछिनछि
नतास॥ ७॥ समनउपद्रवहोइफिरनिमनतुचाफुटजात॥ म
सकजेमजलसंचवैसोपग्रंगुलीलात॥ ८॥ चौ॰॥ एकहेसपी
डानिज्योकरे विचविचराघद्रववकुधरै॥ भोजनइस्याहोली
देह॥ सोघपकेकेलछनएह॥ ९॥ कवित्त॥ वाततविनपीडनाह
पित्तविनपकेकाहिकफीविननहोराघग्रंसेकर्मलीजीये॥ तैसे
विधिवैदमानग्रंसेप्रमानग्यानपचनकैसमेमधहोवत्रिकहे

नि॰
१०३

जीव॥ और मत्त देख है न वात कफ मिले जे मपित्त जु निवास करि
श्रौन तत्त्व सी जीव॥ कफ की गं भीर सो जु मोन नत पकावे खोजु सु
तके बैन पक सी तल लखी जीव॥१॥ दो॰॥ रागहा घ अति उ मत्ता
ल छुन प च त प हान॥ क छ न ई ट जो पीड विनज्ञे सेज्ञा मखा
न॥१॥ सकल पीड उपसम भई हाथ लगा रोपी र॥ सीतल है वे
फर स फिर सो सुप कल खवी र॥२॥ सै.प॥ पावक ज्ञे मल गे वन
मै फिर ता स समीर उ ही र ज जला वे॥ सा उ वे मतत कु रे दिस चार
इ सी विधि लछु न वै द बता वे॥ सम प क जो ब र्न पाकत को लखि
जो मति हीन न रा घ च ला वे॥ वात सिरा प ह नाडि नि को फिर हा
उ नि मध्य ध से ढु ब पा वे॥३॥ दो॰॥ आम दगध सम पक पके है
खे बैद नहि जो इ॥ जा को अब जन जानी ये तस कर वज्ञी सो इ॥
१४॥ इति श्री जत्ती निदाने १८ वर्न सो ध नि र न य॥ अथ व र्ने॥

दो० ॥ दोषप्रकारव्रणजातहै तनुआगंतकजांन ॥ प्रथमदोषक्षि
तहोतहै द्वितीससस्त्रघ्रतमान ॥१॥ अथ वलछन त्रियमेकहततसा
शोवर्नेजात ॥ बातपित्तकफरक्तसे द्विकात्रिकषटविवघात
र॥ कठनफरससअकडा तिलषिमेदस्रावबहुपीर ॥ स्यामवर्न
तुदपतफरकमारुततवर्नकाविधीर ॥३॥ पैत्तकजुरदहप्रतत्रि
षाहुषीविदाहनमोह ॥ बहुदुर्गंधसर्वेतीनहे फिरकलेदसाहो
इ ॥४॥ कफचिरपाकततचिकनगुरुतिमत्तिपछवहुमान ॥ मे
डवेदनापांडुदुजिककुकलेदभीजान ॥५॥ रक्तजघरसर्वतप
तलषिपितलछनामीत ॥ द्वंदजदकलछनकहततत्रिकत्रिक
लछनधीर ॥६॥ तुचामांससस्त्रदेसमैतत्नेतुरघप्रतिहोइ ॥ रह
नउपद्रववर्नेतलषोसुषसाधककविलोइ ॥७॥ वैदकविद्या
वनुरनरनौजनवर्नेहिमकाल ॥ सोसषसाधकइनरजोवर्न

नि॰

१०४

कछुकिन्नहालाः॥८॥माहांपीडवर्नअधिकजिसवर्षाग्रीष्मन
धमड्डवैहमेघग्गकरेनाकोज्ञानअसाध॥९॥सुयलछनाइस्त
रलषिरसधरशधवकुष्टाव॥चिरथिनअधिकदुर्गंधत्तासो
वर्नसियनघाव॥१०॥जीमजेमकोमलअधिकनिरमलपीड
नहोइ॥सुचिनवीनविनस्रावत्तासुधदेषिवसोइ॥११॥ध्रुवव
नप्रतिस्थामज्ञात्रतरदहैविलेद॥विरत्नावकलीसमलषोरो
हत्तवर्नकोभेद॥१२॥सोजग्रपपीडानहोतुचावर्नसमज्ञान
समत्तलकंटेज्ञासकेत्ताकोरूढवषान॥१३॥कुष्टीप्रतिवाविब
मबैमेहीप्रतितनसो॥॥जाकेवर्नमेवर्नउठेकिछसिधकावि
धोष॥१४॥जिसवर्नमैचरवीसर्वैमज्याभेदअवाइ॥मगजुमिं
जजैसीसर्वैसोवर्नकष्टकराइ॥१५॥सलछनकरजुक्तजो
गगंनकवर्नासिध॥देषवर्नमैलछनानिश्चैज्ञानिनविद॥१६॥

चौ० ॥ मद्राग्र ग्रगंघघ्रुतश्राव ॥ चंदनचंपककमलसभाव ॥ स
मनपुष्पजिमादिवसुगंध ॥ सोवर्नमित्रितरूरेकविसंध ॥ १ ॥ मरम
देसमधजोवर्नहोइ ॥ अधकवेदनाताकोजोइ ॥ अंत्रतरसडेवहरल
षिसीतत ॥ दुषदायकवर्नअ्रेसीरीत ॥ २ ॥ स्वासकासत्तचाविनश्राति
पीर ॥ रुधिरस्राघवकुसर्वेसधीर ॥ मरमदेसमेजोवर्नहोइ ॥ प्रान
मासहैकारीजोइ ॥ ३ ॥ दो० ॥ सघक्रियासंजोगतेजोवर्नसिधन
होइ ॥ देववैदस्यागेगमिसेअ्रातमजसकावेगोइ ॥ १ ॥ इतिश्रीजती
निदानेदेसरीरवर्ननिरूपः ॥ अथपश्रागंतुक ॥ चौ० ॥ जानस
स्रकैवीहतप्रकार ॥ नानाविधिलछताकोधार ॥ लागतघावरवर्णि
वकुमान ॥ कहतभेदवर्णकेषटजान ॥ १ ॥ छिंनकभिंनकतीजाविं
घ ॥ षतपिंचतक्षिप्रहतषटसिध ॥ भिंनभिंनषटवर्नकात्नप ॥ क
हतप्रगटवैदकविभव ॥ २ ॥ त्रिछाषडगादिकगंभीर ॥ अथवा

नि॰
२१५

जोब्रसलें वाधीर॥ तनकागंगप्रथक हैं जाइ॥ सो दिनकभाषैकविरा
इ॥३३॥ अर्धचंद्रमालैकीचोक॥ वदीतीमखडगकी नोक॥ लागैपष
रअसे चाम॥ भिंनकलदिनकवि[illegible]दास॥७॥ कोष्टमध भिंनव
हिहस्माहि॥ भरे रुधर तन ज्वरस्प्रतिदाहि॥ गुदालिंगमुषचालै ग्रा
न॥ रुधरवहुमर्दीअधमान॥५॥ स्वासत्रिषारचितहोइनटंग॥ विष्ट
मतवालकासंग॥ छिगलालीतनखेलडगंध॥ मुषमैलाषैलोहकी
गंध॥६॥ कृदैसलपसलीमधकीर॥ सनविशेषश्रमासैधीर॥ वर्ति
तर्दहोवैअधमम्न॥ ग्राधिकस्हलभ्रिसदाहस्पज्ञान॥७॥ पक्वासैमै
रुधरसमाइ॥ वहुतपीडुगौर्वतनुथाइ॥ सीतलहोइहेठलैकाइ
इसविधिलदननकहिसमझाइ॥८॥ स्लचैस्लयग्रादिकस्लल॥ हनेसं
गअसैविनहूल॥ करप्रवेसनिर्गतजोपाय॥ याविधिलदननवेद
निहार॥९॥ हीनभिंनदेललदान हीन॥ तिसलदननकहिज्युकतिप्रवी

न ॥ विसमै घाउ तन लागै नास ॥ षत के लदान ऐसे भास ॥ ११ ॥ स्राव सो
घ्या पिडुका जु तजान ॥ सेमन तवा रंवार चलान ॥ कोमल बुदबुद के सम
मास ॥ नाम सु पंच कसल्य कतास ॥ १२ ॥ घरटो आदि वेलना हेत ॥ नर
को दली भर्ग अंगग्र चेत ॥ लगै घाम सो जा आति पीर ॥ घृष्ट लक्षन इह
कहि धीर ॥ १३ ॥ तु चानभु सब भेद कराइ ॥ अंतर को हृ विषै घस जाइ
पूर्व कहे उपद्रव जोर ॥ तिन सै जु क्लिम्न तज सोय ॥ १४ ॥ अंतर लोह
त वाहर फाडु ॥ सीतल करपद होवे अंडु ॥ सीतल सास लाल द्रिग हो
इ ॥ केर अफरा त्याग सो इ ॥ १६ ॥ लहत नेक हत मर्म गति घाउ ॥ भ्रम वि
त मोह वकनत पलाउ ॥ चेष्टा रहत सरीर ढीलान ॥ अथ वात नउन
माद वषान ॥ १५ ॥ सिथल अंग गमर्दो भ्रम धीर ॥ ऊर्ध वात वात क्रित
धीर ॥ मासोदक सम लघ रवलाइ ॥ सर्व अंग लिंद्रीय हे जाइ ॥ १६ ॥ गुदा
वहु हृद नाभि जु सिर शा ॥ महा सन्यलाइन मै देह ॥ यह है मर्म के लक्षन

शीतपशीरा घाउ तें लेसन क विधीस ॥१७॥ चीजव हूटी जिमतिसरंग ॥ व
ढुतह धरनि कसै इसढंग ॥ पवन प्रवेसक रैति समधु ॥ रोग ग्रने वक
रैड सँध ॥१८॥ सनायु घाउ को करै श्वयान ॥ कुवज्ञ करै तन फूटै हजा
न ॥ सकति हीन पीड़ावहु जोइ ॥ चिरकर व्रीणचेसा तनहोइ ॥१९॥
दो॰ ॥ मर्मनगईं प्राइकै निसतन हदे तमभोइ ॥ लहू न निकसै लागसै
तो इह लन तण होइ ॥२०॥ चौ॰ ॥ लगैघाउ से संध चलाइ ॥ वढै सो ज्ञपी
डावहु थाइ ॥ वलन है सो ज सर्व तन ग्यान ॥ सर्व करमं क्रितल हन ठा
न ॥२१॥ जाको लगै ताड मै घाउ ॥ घोर पीड दिन ह नै लाउ ॥ काहू समै
सो तिन हि होइ ॥ इथ मैं कलीपीड़ सवहोइ ॥२२॥ जैसे जैसे लछन देष
तैसै तैसे व्रणको पेष ॥ मर्म घाइ तज दी जै आस ॥ कहूं उपद्रव बोड
प्रभास ॥२३॥ पच्छा घात विसर्पक जान ॥ सिरा थंभ प्रपतानक मान
मोह उनमाद ग्याधिक व्रणधीर ॥ त्रिसा ताप हनुग्रहि लषवीर ॥२४॥

कसक्त ईजानो अतिसार ॥ हिचकी स्वासकं पतनभाह ॥ षोडस
उपद्रवभाषेएह ॥ भ्रमफहजलद्गएजानेजेह ॥ २५ ॥ इतिश्रीयति
निदाने ॥ ॥ २८ ॥ मांडलककृत्वेए वृतिश्ववर ॥ अथभगननिदेक
॥ चौ० ॥ भगननिदानभेददोकहे ॥ कांडसंधइहगनतेोलहे ॥ से
धभगननतहसरविधजाने ॥ उतिहकविसलषकमाने ॥ १ ॥ पि
रविवतनसत्तनतिरयगकला ॥ विषेपक गतिहेठीनता ॥ भिनमि
नश्रवक होसरूप ॥ उतिषकम्रवसुनिकविभप ॥ २ ॥ घसेसंध
दोनोकेलाड ॥ संधनविषैहोइइषजाड ॥ आकुंचनप्रसारनकोन
कीडावकुततउठैहोदिन ॥ ३ ॥ आपसमैदोनोटिगडवे ॥ संधिल
दानकहिकवि मुखे ॥ चौपिरदोसोजाअनान ॥ रातीपीडउतिष
कजान ॥ ४ ॥ वासिषकथोडासाषिसे ॥ दिवसरातिपीडासेदिसे
सदापीरसाजावलजोर ॥ सनेविवर्तननतजदेसोर ॥ ५ ॥ संधि

तोडिदोहाडनिम्रारे॥ दोनोदिगपीडावहुधारे॥ अवतिरयगरु
निलदनऐसा॥ बोलतवैदग्रंथमथनैहा॥६॥ संधिहोडकाठि
हाडनम्रार॥ तितंथैपीडुम्रतिधार॥ लपतलदनवैदउ
वारै॥ विषमजुगमस्थलबहुसारै॥७॥ अधोदेगकोहनोकल
नी॥ पीडाहेठमहंडुवदानी॥ कांडरोगकेमेदहनाको॥ हादषावि
धिगनलदनगाको॥८॥ करकटकर्नविरदैमोषा॥ पिचत अ
स्थपीडुसरदाषा॥ अस्थभगनअस्थिपातनसेटं॥ मेजागोरि
फूटनदिगटेठ॥ छिनदेइविधिआषसनाया॥ नामसर्वदादषा
इहभाया॥ कांडरोगकीपीडाऐसी॥ माधवकहैलिषैकविनैसी॥
९॥ सिथलअंगसोजावहुपीडा॥ दवैसाथवटेददकीडा॥ हाथल
गायासहानजा॥१॥ सूची भैसललफुरकाइ॥११॥ सर्वअवस्था
सर्मनसावै॥ भगनकाढूकैविनूलषावै॥ भगनहंडहैमेदअने

क॥ छादष्यकहेसमासविवेक॥१॥ पथ्यविनाजोनरबुधिहीन॥ अ
स्थभगनिफिरप्रभकरदीन॥ सर्वउपद्रववहैतिसजोवै॥ भग्नक
सिधकष्टसैहोवै॥ १२॥ दो॰ जाकेभिंनकपालकटिसंधिछुटैनिज
थान॥ दलीजातजंघाभजां तजदैचनुरसुजान॥ ४॥ कुटैसंधि
कपालकीचूर्नजासल्लिला॥ ३॥ भग्नजास्थनग्रंत्तनैजमपुरताके
वास॥ ५॥ छुटैकंडराघिसटकीदलीपुटपुटीजाइ॥ ऊपरसिरजाको
धसैतजदैवैदसमझाइ॥ ६॥ अस्थभग्नकेहोनतैवंध्योभलैनजा
त॥ तिसथानकमैव्रण उठैसोत्यागोकविताता॥ ७॥ फेरउतारैअ
स्थकोपुनाचढावैदेख॥ तौतनमैकछुहोतसुखनहितरसिंधन
देख॥ ८॥ नमैअस्थजोतरुनिकनलकादिककेजोग॥ त्रिधअस्थ
हुटैलुर्नानिवैकठनकविलोग॥ ९॥ भग्नअस्थानिनैकहाअपुर्वै
दानिहार॥ २०॥ इतिश्रीयतीनिदानेसेतोभग्नअस्थानिरन्धम॥ अथ

सि॰
१०८

नामु त्रिभंगी ॥ चौ ॥ पकै सो जपि करि लखै न जाइ ॥ सुंदर स्याम वटै प
लखाइ ॥ साध बृत ताजि सकै न हि जोइ ॥ राध प्रवेस न नाही मै तोइ
॥२॥ स्याधि कवटै लो सनिक विभ्रप ॥ लहूमा ऽ स भराधु सरूप ॥ वा
च पित न कफ चौ था सन ॥ छंद जस लास जषट विधि मंन ॥ २ ॥ छै
या ॥ वातकनाडु बूरण मुषलषमहै षद साम्र त्ति स लजनावै ॥ ये
नम्र वै ग्रधि की भ्रनवंध करात समै ग्रथपित वतावै ॥ दाघत्रि भा
षाजुर पीडुत है म्रत्ति पीत म्रवै दिन कै गरमावै ॥ स्याकडु पित्तल
स्वेद घन महवकंडु वधै हजतौ कफधावै ॥३॥ लक्षन तीन त्रिदो
षविषै मुष सोष तं दाघ जुरै वहु स्वासा ॥ मर्दत्त वातक फपित्त
कोपत घोर वटै तन जदै तन स्वासा ॥ छंद जलक्षन स्वानि मिलै जि
सछंद जनाशि वृम्नि प्रतिभासा ॥ देह विना सलषै जग को जिम
गंगय ती निज बूलप्रकासा ॥४॥ सलजनाम त्रिभंगी हनलै म्रव

चौटलसैजिसकैतननमाहीं॥ ऊपरस्वस्थामिदेहललषावति
ग्रंदरदाघवढैअधिकांही॥ येनलग्रंथलहुगमीभ्रवसाथने
तरमेलचलांही॥ पीडुसदातिशाकैतननहैवत्तनाडुब्रणाँ ब्रि
धपंचकलांही॥ ५॥ दो॥ नाडीब्रिणत्रिकदोषजिशांताकोकरै
निश्रास॥ सेषचारब्रणजोकहैजननस्याध्याकिलभाषा॥ ६॥ कं
वर्कुंद॥ गंडमालहजीरग्रंथकुपेरअपचीजान॥ कहयोअरबु
दकीलपदकोबिद्रधीब्रिणमान॥ दोषब्रणअंसंतब्रिणफिरभ
ग्नअस्थिजुभाषा॥ नाडिब्रणद्वादशाबषानेउनशानेप्रकाश
॥ ७॥ इतिश्रीहरजपंडितसुतहेमननतप्रोक्षककविगंगारामय
तीविचर्ये तेयतीनिदानेगंडमाला॥ १॥ हजीर॥ २॥ ग्रंथ॥ ३॥ कंठ
माल॥ ४॥ अपची॥ ५॥ अरबुदा॥ ६॥ सलीपद॥ ७॥ विद्रधि॥ ८॥ ब्रण॥
९॥ दोषब्रण॥ १०॥ अस्थिभग्न॥ ११॥ नाडीब्रण॥ १२॥ शालीतब्रण

नि॰
१०२

॥ अर्शनको भिंन भिंन भेद संयुक्त रोग प्रतिकार एकोनविंशति प्रकरण ॥ १९ ॥ अथ विंशतितमः ॥ दो ॥ अथ भगंदर निदान माह ॥

मुनस्तुत्रित सुत्रितनकर्न हर्न सकल दुषद्वंद ॥ पूर्न ब्रह्म सरूप निज गंगयती आनंद ॥ १ ॥ है अंगुल दुइ दके निकटि पिडका कौ उतपत्र ॥ फुटै भगंदर होत है पंच भेद कवि नर ॥ २ ॥ अथ वा भगंदर के निकट तौ चौंतकी गुद ठान ॥ भगंदरि मद ताहन नाल षे तास भगंदर मान ॥ ३ ॥ दाघ षुरक की डाढि जि सक टिक पाल माहि तोद ॥ पूर्व रूप भगंदरी रोसे कहि कवि मोद ॥ ४ ॥ छपै ॥ बाइ कशैला रूष अन्न बितहि पवन कुपावत्ति ॥ गुदा देश कै निकट पिडुका पिडु काजु उठावन ॥ करै न तिस उपचार पाक दाहन वहु पीर ॥ फुटत वहै जु फाग अहन पानी सा धीर ॥ तिस नाम भगंदर सुत्र परै सत नाविक शाजा तिक विनर ॥ शातपौन क कं कै कहत चौतरकी व्रण भर ॥

॥५॥कवित्त॥ पैतकहात्तग्रतिपित्तविकारजाकोक्रधतत्रसैव
पित्तहधरामिलाइकै॥ गुदकैसुपाप्राघीसऊरकोसोभास्कमसु
पिडकाजपाकैराधमसैतलचलाइकै॥ कफकैप्रसंगस्वेतजानि
लैकठोरग्रूत्तिबुर्केबुर्केहाथरहेहैयकाडकै॥ मेदपीडताकोपि
रसंघनोग्रवैराधात्थिरसोपकावैमोत्तकहयोहैसुनाइकै॥६॥चौ॥
बहुतवरनपिरबहुताग्रवा॥ पिडकासोपनजैसेभावा॥ धुधी
जेमचत्तुरपीनाल॥ सेवुकनामताहीकविलाल॥७॥ लगेचो
टनषगुदकेथान॥ भेषजलगावकरैग्रजान॥ तामैउतपत्त
क्रिमकोरेक॥ मोसषाइमुषकरैअनेक॥८॥ उनमार्गीक्रिएक
हीएसोइ॥ नामभगंदरताकाकोइ॥ मिलैदोषत्रीकजाकैवीच
सोग्रसाध्यमनावकीमेच॥९॥ गमनअगमनकरैनरनारि॥ एहं
दहैकैयमनीप्यार॥ सोउभगंदरदुषकोज्ञात्त॥ कर्मविपाककहेहैइ

हवात॥१०॥घोरकष्टकरिसिधजुहोइ॥सर्वभगंदरगैसेसोइ॥तामै
तीनदोषकोजान॥प्रगटजुभगंदरसिधनठान॥११॥जासभगंदरमे
निकसात॥शुक्रमूत्रविटक्रिमकीजात॥सततनकरैसोतनकोना
स॥गंगजतीकरआतमप्रकास॥१२॥इतिश्रीजतीनिदानेविस
तमेष्टप्रकासेभगंदरनिदानप्रस्तावः॥अथोपदंसनिदानप्रस्तावः॥सवैया॥
हाथकोघातनलग्योनषंदंतनघोतनहौफिरसेवतकामा॥दोषि
कैदोषकरेअतिमैथुनगेरतमूत्रहिमानिकुठामा॥जानरको
नजहोइइसीविधिनासकुसंगकरेदुषधामा॥पंचप्रकारविका
रअनेककरेउपचारजुनो[illegible]हैहामा॥१॥वातकलछनभिंद
प्रततोहकुरीकतस्यामसफोटकहीसे॥पेत्तकदाहकलेदवहु
रुधरीपितकैसमलछरनीसे॥कंडुकफोसितश्लाषघनावहुसो
जवडीपलरंचनवीसे॥लछनतीनमिलेअतिपीडतदोषत्रिके

उपदेसमनरीसै॥२॥मासतुटेक्रिमपरतैजोरूपसेसरहेतजनतास
क्रिग्रासा॥बालसमेतनपोवनधावनमधसमेग्रतिभोगविलासा॥
कोमलमांसघसावतजोनरसोयवदैहमपाकतमासा॥फारतलिं
गमहेसोटुकयेग्रतिहाघवटैतजिजीवनग्रासा॥३॥लिंगनिसंधिन
मैवर्नकेचितकेचितहैवर्नसंधिनिसारे॥केचितवीजकुलघनिके
समकेचितकंजनपातनिहारे॥कोकुनसीदकहोतवहुविकसकेचित
जानचटाकविघारे॥जोनरकामविषेग्रतिसैरतितानरकैतनदह
दुषधारे॥४॥दो०॥हाघपीजग्रारतग्रधिकनरनारीग्रतिजोइ॥पि
छलस्माबीपीउवहजिकमलसिंधनहोइ॥५॥षतमघउठैग्रेकुरर
कउग्रउग्रजुतपीर॥क्रमसोकुरकटजिमसिषालेपक्रिप्रासुष
पीर॥६॥बोलबीचकुनसीग्रधिकग्रवचमपारीसंघ॥ग्रघवाउ
ग्रतिसनतुचगैविघदुषकोधंध॥७॥जोसहाडकैलिंगप्रसवतन

नि॰
१११

करैअवेस॥ फैलतदषफटोसर्वतनस्यामहोरमुषमेस॥ ८॥ जोनिसतध्रि
रनिकालहै गंगजतीकहदेत॥ हमदेषीद्रिगकहतहै पाछेमेषजहेत॥
९॥ लिंगवर्तकेचित्तकहतग्रंधरवैदमानिरोम॥ लिंगअग्रईसोकहतहै
हानपुनवाहवैम॥ १०॥ जिसनरकोइहहोतहैनासेतनकाटंग॥ ताकोउ
गमैकहतरमलोनतरोगफिरंग॥ ११॥ नरमाहाहोमेदकरवाहफिरं
गपकांन॥ उपवैदकेवचनएसमझचतुरबुधिमान॥ १२॥ इतिश्री
जतीनिहानेविसतप्रकासेउपदंशफिरंगरोगविनस्प्रणः॥ २०॥
अथमकअष्टाइस॥ चौ॰॥ सकरोगअष्टादसजान॥ सरवपकां
गषष्टीलवषान॥ ग्रंथकळुभकामलजोदय॥ स्निग्धिकांपिंडकांग्र
वमेंघ॥ १॥ उषकररफरसलानिदसवाक॥ उतमसतपोनकतुव
पाक॥ रक्तारवुदमासासवुदहाल॥ मासपाकविद्रधितिलकाल॥
२॥ अवमैरमकाकहेनिदान॥ जैसेमाधवकरेवषान॥ मधिनर

॰८

जो चाहे ऐसे ॥ विनकर्म लिंग वढावे तेसे ॥ ३ ॥ तीवनमे षजु करे ष्व्र ये
ग ॥ तिसतें उपजे इह छ्रित रोग ॥ भिंन भिंन सुन इन की रीत ॥ मेह कि
रंग तनो इह मीत ॥ ४ ॥ गोरी सर्सव के ग्रकार ॥ सोल वीच पिडका
वहु धार ॥ वात स्लेष्मा तें इह होइ ॥ ष्व्र घमे सरषप काल षसोइ ॥ ५ ॥
कोटी वडी कठन सी मान ॥ पिडका मध स्पारी ठान ॥ वापु हे ततं
कोल षिले हे ॥ दुतीस टीला नाम कहे हैं ॥ ६ ॥ ककु कंग्र घकु न सी चै
केर ॥ ग्रंथ तना मतिस कफ तजे टेर ॥ रुधिर पित्त क्रित इह विकार ॥
जामन गिट ककुंडी कार ॥ ७ ॥ रंग मास त्रिमत्रा के जान ॥ ग्रलजी का
पाचो पहिचान ॥ मह लिंग तो वात विकार ॥ म्रदही का उपजे वढथा
र ॥ ८ ॥ देहा षनि सो मले जु लिंग ॥ मर्दन रष्व्र त्ति पिडका ढंग ॥ वाहर
पिडका वडी जु होइ ॥ क्रुटे मध सो भ्रावत सोइ ॥ ९ ॥ क फी रुधर का रोग
पकान ॥ रोम हरषष्व्र वमे याजानि ॥ १० ॥ रक्त पितसैं उपजे रोग ॥ पि

ठकांमेपिडकांसंजोग॥पदमकर्नेकाजोग्रहिनाम॥उषकरनीन
वनामसजान॥११॥कुनसीसवफीसेकुरलात॥फरसहानडुब
राधिरसिमान्त॥मगमावसमकुनसीलाल॥राधिरपित्तसोइ
सकाष्माल॥१२॥जीर्नेइसकाहेतपछान॥नामउत्तमासिद्धमित्तठा
न॥लिंगछिद्रमुषअवत्तजान॥सलषमुषद्वादसहहमान॥१३॥
राधिरवातसोंउपजेरोग॥सत्तपोनकभाषैकविलोग॥वात्तापि
त्तसेजोदुषपाइ॥हाघत्तापलुचपाककहाइ॥१४॥कफमसफोट
कपिडकाल॥जोपीडनकीजेकरनाल॥मगासेवौहपीडाहोइ॥
सोनत्तअरबुदचौदहिजोइ॥१५॥मासदोषत्तेउपजेजास॥मांसा
अरबुदतिसनामप्रकास॥गलगलपडेजोजांकोमास॥सर्बवेद
नाउपजैत्तास॥१६॥तीनदोषत्तेउपजैरोग॥मांसपाकगनवोड
सजोग॥संनिपात्तक्रितत्तोनसमान॥विद्रधनामत्ताकोठान॥१७॥

क्रस्मवर्नेंग्र यथावहुरंग॥ लगेस्राव जुहितहिदुभढंग॥ पचन
समेंदुषहोवेत्तास॥ लिंग विषेंग्रतिसे प्रत्तिभास॥२८॥ स्यामवर्नेजु
वहोवेमास॥ गलगलपडे देहत्तजिंस्रास॥ संनिपातसैंदसकोज्ञा
न॥ तिलकालकंधित्तनामवषान॥२९॥ होय॥ मांसाग्ररवुदविंद्र
धकहीमासपाकजिसहोत॥ वाकोसिधनहोतरहजिसकालक
कविगोत॥३०॥ इतिश्री जती निहालनेविंसततमेप्रकासेसकरो
गविनस्त्र्रः॥ ३१॥ अथ यास्थान सकुल॥ रसावलछंद॥ भषे
विरोधीअंन पान द्रव चिकनाभारी॥ छर्दिग्राहिसवबेगरोक
हैआमविकारी॥ भोजन विनाप्रमान षार अग्रति पावकतावे॥ लं
घन करेंग्रतीव वेर विनक्रमसोषावे॥१॥ सीतउस्नग्रतिसेवष
रमभरस्त्रमग्रतिपीरा॥ ध्यसत्रंग्र जीर्नेजानतरपिवसीतलनी
रा॥ पंचकर्मग्रपचारग्रनतेनहधिमीना॥ लवनषटाईषात

नि॰
११३

माषमलीअतिलीना॥२॥तिलपीठीगुडषीरबारमैथुनअति
सेवा॥पचैनजाकोअन्नदिवसनिंद्राबहुलेवे॥गुरदिजत्रियापित
मातसाधकेउगडदुषाई॥घोरपापबहुकरेकुष्टइहहेतुकगाइ॥
३॥पंचकर्मपद्या॥दो॥ कहिविरेचननस्याविधिवस्तकर्मछि
देधारा॥रुधिरमोषगनत्तीकहीपंचकर्मअपचार॥५॥वातपि
तकफदुष्टजैत्रधातअंनतुचमास॥सप्तद्रव्यगहकुष्टकिनग
नतिकरैप्रकास॥१॥दो॥ कपाल॥१॥उदंबर॥२॥मंडल॥३॥जान
पंडरीक॥४॥सिधिमा॥५॥सबठान॥काकनीक॥६॥मुनिचरम
भिदान॥७॥कटिम॥८॥विपादकनोमामान॥९॥द॥किलास
१॥दद्रु॥११॥चरमदल॥१२॥देह॥केदु॥१३॥पाम॥१४॥विसफो
ट॥१५॥गिनेह॥सततत्रय॥१६॥फेरविचरचका॥१७॥नाम॥१८॥रे
षजिन्हाअषहाहसमान॥१७॥सप्तहोयकिंतकुष्टलषिप्रियकहं

दत्रिकसंतनि ॥ सर्वकुष्ठगैहोषप्रतितोगिकमलत्तनहंन ॥ ८ ॥ रसाव
लंछद ॥ ब्रथमकपस्तनलेहमि यलश्वातिंश्वगलषावे ॥ बन्दफरस
विनस्वेदत्तनरंगमिटावे ॥ लछनकहत्तवसेमहाघ्रुकंडुतुचसोवे
तोहकोठबर्ननकरहेचिरमलसमोवे ॥ ८ ॥ त्रियगसिराजुजातिमा
सतुचकधिरलसाई ॥ वंघनढीलेजानतुचात्तनवर्नमिटाई ॥ तुछ
बहुपिडकाकोपदेहमुसकीसरमजाना ॥ कघरसामसवदेषरो
महरबतरहश्वाना ॥ ९ ॥ दो० ॥ त्रैसेपर्वकपलाषिकुष्ठहोनकेभा
इ ॥ भिंनभिंनलछनकहत्तसुनोवैदकबिराइ ॥ १ ॥ चौ० ॥ वर्नसा
मलघजेमकपाल ॥ तुचपचलीरूषीपदराल ॥ सचीतुभेकुष्ठव
हुपीर ॥ नामकपालतामहिकविधीर ॥ २ ॥ हावलालकंडुतुचिपीर ॥
रोमावलिऊपरफुटसीर ॥ गलेमासगुलरफलजेम ॥ कुष्ठउंदंब्र
भाषारोम ॥ ३ ॥ स्वेतलालकडुकगनफारा ॥ उनतचिकनसमंडलमा

नि०
११८

र॥ कुष्ठ परस सप्रयुकत सुज्ञान॥ मेडल कुष्ट इसी विधि मान॥१४॥ वि
सहन घरलो नाको देव॥ कोल पत्र जिम मेडल वेष॥ सो घलालक
कुस जल किलेह॥ पुंडरीक कवि इस विध भेद॥१५॥ स्वेत ता म्रमा
सत सारंग॥ तन तु चउर मै दास वंग्रग॥ घसे ग्रग्ली धरउडाई॥
धीग्गा पुव जिम थिम कहाई॥१६॥ विना पाक पीडत नटे र॥ मध स्या
मलाली चौफेर॥ गुंजा सम लछन गिकहे ष॥ कुष्ट काकनी सिध न
होग॥१७॥ विना स्वेद भारी ग्र स्यान॥ दुकने जैसा इह ग्रहि नान॥ हा
थीनु चजिम ज्ञान सरीर॥ चरम कुष्ट जानो कविधीर॥१८॥ स्याम व
र्न षरफ रस ग्रवाज॥ बुसक बहुत किटम क विसाज॥ पैर हाथ फु
टेहु बमंद॥ बैपाह रक भाई जगधंद॥१९॥ मो ठी भुर क लाल हुते हो
इ॥ निकसे गढा किलासक सोइ॥ कंडु ग्रधि कलाल युत स्राव॥ पिड
का मंडल दद्रल षाव॥२०॥ बुरक स्मलज्ञन लाली भास॥ फुटे भोजन

लजैसेमास॥हाथलगाएसहानजात॥कुष्ठचरमदलसाविश्या
त॥२१॥सक्ष्मपिडकावाहरहेस॥बुरकसाहितकेडुकाविसेस॥सोपि
डकांछालेजिमदाह॥केडुश्रावपांमजगश्राह॥२२॥होइसुफोडेमो
वहुदाह॥औसहाथचुतउमेश्राह॥फुटेलालतनलकालश्राव॥स
ष्मनुचविसफोटकभाव॥२३॥लालस्यामदाघवहुपीर॥वहुवर्ण
कुष्ठसतासवपीर॥गलगलपडेतासकोमास॥हाथपैरअंगुरीके
मास॥२४॥भुरकसहितपिडकांलषिस्याम॥सर्ववहुतजलजिसको
नाम॥हैविचरचकालुनलैमीत॥दानपुनसववंउजपरीत॥२५॥क
करकसजानरुधरलोमास॥अंग्रइरस्यामपीडजुतभास॥रिकसो
भजैसेसंठान॥रिषजिह्वानाकोपहछान॥२६॥रसावलकेद॥वा
तकुष्ठषरस्यामअरुनरुषांअरुपीरा॥कोपित्तपित्तसरागदाहग
दसवहैनीरा॥कफकलेदघनश्रावचिकनकंडुगुरसीता॥है दजेह

नि॰
२२५

छ्न होइ संनि ग्नि कलछु न मीत ॥ २७ ॥ सातधा तु गा ति कुष्ट प्रिय
मरसम घ सुनी जै ॥ तु चा वर्न ते हीन सर्व त नफुसरु ग नी जै ॥ रोम
हर षतु चिस नखेद विपाविपत सजाने ॥ धसेतघर कै मघ राधंक
दुग्न तिसरवत ॥ २८ ॥ गले मांस गजि मास जंग्र ग भेद त षत्त सर्वत
सनो मेद गति लिंग वैद पुरव जिम ग्र रपति ॥ ग्र स्थ म जमै जात
नासदु टेढि गलाली ॥ षत मै कि मउत पति घात सर ब्रम है वाते
मटे ॥ वीजै कुष्टसरीर माजपित कुष्टी जाके ॥ करे भोग सेतान सुत
सुत कुष्टी वाके ॥ साधनघर नुचमांस वात कफ जो है अधिकाई ॥
हंदजमेद जा प्यग्र स्य मज जात जमाई ॥ २९ ॥ वहु कि मलगे न
मघ दहलकन संनपाती ॥ टूटत पडे जुंग्र गनै नलाली सरया
ती ॥ पंच कर्म गुन जो न तिन ते हे ब्रि ग्र तीना ॥ द्रद्रिग जाको कुष्ट
ग्रंत त लषि सोज म मीना ॥ ३० ॥ बात कुकुष्ट कपाली पतग्रो हंबर

जानो॥ कफकी मंडलाना मविवरचक्रमैसे ठानो॥ त्रिबलि हृदयिन वा
तवात्तक कफ्लागेगानहै॥ त्वरम कफ्ललसविपादकिटभिसिधमा
सरमनहै॥ ३१॥ दोहा॥ कफपैत्तकद्वंद्वकोजानो॥ सताहसोपुंडरी
कवखानो॥ पामेचर्मदलाकिरविसफोटा॥ संनपात्तइककाकनिउ
टा॥ ३३॥ एपमै तीनदद्रूकोजान॥ काकनेपुंडरीकवखान॥ किब
जिह्वासतोगमलेहा॥ मत्तकुष्ट मछैकविरह॥ ३४॥ कुष्टएकभ
वखिवनकलाह॥ अहएरेगहोवे प्रगाम्॥ बिनाम्नावाङ्गीक धात
सधाम॥ हधरमोदीपलम्रथमलंकेम॥ ३५॥ वात्तकुष्टकफबुग्र
हलाल॥ पैत्तकतामृकमलदलभाल॥ दाघरैमत्तनकरैविहे
डु॥ कफकैस्वेतघनभारीकंडु॥ ३६॥ हधरमांसमेदागतिठान॥ वा
तपित्तकफक्रमकरिजान॥ उत्तरेउत्तरविधिएसीआन॥ कफला
धकविवेदपतान॥ ३७॥ स्वेत्तकेमाजाकेनहिहोइ॥ संधनिठी

नि॰
११६

लेनौतनजोइ॥ अग्रदग्धविनसाधपतान॥ इतरखिओछनहिसि
धवषान॥२५॥ गुदाहलत्तलहोठमकान॥ कहैजोसनवरुजाभी
जान॥ सोकिलासतजिहिजैवैद॥ जेजगमैजसरवहैंनकै॥२६॥
सोरठा॥ संगकरैतनसोतनलागतसमश्रप्रसंगजुभोजनसंग॥
श्राह्लवएकजुसेजविछुेसममालडुकूलसेपनअंग्रग॥ कानेएग
नहैप्राभलाइकहोइकसेनरकोतनभंग॥ कुष्टजुरोह्रिगकोश्राम
स्यंदकशोषविसर्पचलैतनटग॥४०॥ दो॰॥ कुष्टपोहतजोनरम
रैपुनरजननहितताप्रा॥ इप्राकानैकरकुष्टहमश्रवरहेगनहिभ
प्रा॥४१॥ इतिश्रीजतीनिदानेविंशात॥२०॥ प्रकाशेकुष्टश्रष्टादश
विनिश्चयः॥ अथशीतपित्तोदरहृकोठुनिर्णयः॥ दो॰॥ पवनश्री
तश्रतिनरभजैडुष्टतकपत्तहिवाइ॥ मिलैअधिकतोपित्तहैवह
रविसरपपफलाइ॥१॥ त्रिधाअहहचछिलसत्तामोहप्रादतनभार॥

लोचन ताके लाल लखि ए पम रूप कवि सार ॥२॥ डंक धमड़ोजि मल
बो तेस रोष अकार ॥ बहिर नोद कवर्द ज्वर दाह कगतित हा ॥३॥ उद
र रोग ताके लक्षण परकहत न पित्त सीत ॥ बात अंधेका पित्त सीत भन
उदर दकफाधिक रोत ॥४॥ गढ पर गढ लाली बुरक मेडल तु पर पता
न ॥ अधिक होइ कफ जि ह विषै उदर द रोग तिह मान ॥५॥ अथ दवा पा
कौ ॥ चौ ॥ दिक वमन जाके हैं मीत ॥ से बग्ने न पकडै कफ पीन ॥ धप
ड बुर्ष मंडल काम्र ॥ लाल रंग तन बहु दुख सार ॥६॥ दो ॥ जग भगा मे
कहत इम रोग दता पाकी तास ॥ खटमल मदी हेतु इम्रा पित्त कफ कह
ज भग्रा ॥७॥ इति श्री पंडित हरनंदनसुत रामदत्त तनय छिपाक विगंगाराम
मय तो विरचिते तैय तो निदाने भगंदर रोग ॥ ॥ गउ पदं शाकिर्द गा ॥ अथ
दशाकुष्ठ ॥ दो ॥ अथ आदशा लक भेदा फिरंग कफ ॥८॥ सीत पित्त उदर ॥५॥
छ पाके निदान ॥ दो ॥ निर्धपर रति त्रि मिन तविंशा त मो प्रकाशा ॥२॥ अथ

नि॰
१२१

एकविंशत्तमः ॥ दो ॥ श्रीमत्ति श्रीहरियुगलकुं नमो स्तन मिजिनराज
ठः ठः पदस्व हस्मेत तह विमलमंत्र सुषसाज ॥ १ ॥ विंशतितज तीप्रका
शमैं परगटकह्यवषान ॥ एकवीसभाषो शता तू तस्य मलपित्त धुरमा
न ॥ २ ॥ अथ मलपित्त निदानं ॥ चौ ॥ भोजन करै विरुधविदाह ॥ दुष
पित्त क्रित षाटषाह ॥ दग्ध अंनपाने कृत दाघ ॥ पित्तके पहित्तकेप
तस्याघ ॥ ३ ॥ सडे पित्त षाट सा होइ ॥ अमलपित्त भष्ये बैव विसोइ ॥ बढत
अत्रिरसअंनसडाइ ॥ अपर बैद मत्ति ऐसे भाइ ॥ ४ ॥ दो ॥ तिक्त तअमल
उदगार सहित गलतदघअपाक ॥ कलेदअरुह रुचितत नाश्यिल अमलतिअम
लपित्त इहबाक ॥ ५ ॥ चौ ॥ अमलपित्त है युगम प्रकार ॥ चहे हेठ ऊ
परदुषभार ॥ विविधभेद कफ सो दुष होइ ॥ त्रिषा दाघ मूर्छा भ्रम मोह
ह ॥ ६ ॥ कोष्ट अग्नि हत लालासवा ॥ रोमहिरषतन ह्वे दहभाव ॥ अम
लपित्त तन करहै पित्त ॥ बैदकदाचित रोग सो हिन्त ॥ ७ ॥ बात कनीलकि

ला २

अरु मसाम॥ पीतल खराई आम॥ मिलै जु कफ पिछल शान्तो
इ॥ विविध वर्न जष जलजिम जोइ॥ ५॥ भोजन करै दस धजि स
गंध न॥ अथवा बिन भोजन पै मंद॥ बरोति कत जु डाकी ताथा॥ संग
डिकावै कटु जल भास॥ ६॥ विविध स्वाद जाको जा जान॥ चिकन
बाइ चिकन जल आन॥ छिद मल दाह कुषद्विग होन॥ छिमै पी
तु कफ कादिन षीन॥ ७॥ अथ मन कफ पित्तो दिल माहि॥ ता घवर्न
अति उसम जु दाह॥ अरु चत्ता पतन मुर्क कराइ॥ मंडल पिड कात
नु अकुलाइ॥ ८॥ अमल पित जिम होइ नवीन॥ जतन सिंधक
विकहे प्रवीन॥ बहुत समे चिरको जा प्रबषान॥ कष्ट सियके वि
तम तन आन॥ ९॥ अनिल अनिलकफ जनास माइ॥ मन तो कफ र
डाको घाम जाइ॥ दोष लिंग ऐसे लषि वैद॥ सकल वैद की होवै
केद॥ १०॥ अथ कविन॥ कुपत समीर मुष बकवाद देवो लैवे न मर्दा की

मरोरग्रातविमाविमज्ञासको॥ दुटतजुंग्रगसलतनमैंव्रवे
सफूलविभ्रमप्रमेह रवपवनप्रकासको॥ कफकोचुकावे
गरुजउताग्रनाखुडरसीतसाहवमलेपमेहहैहुतासको॥
सनेमहावीरमेरीवेनतीसुधीरवितनामहमदीजेनित
गंगजतीहासको॥४॥दो॰॥ मुरकनीहलछनजिसेग्रमल
पितकफसंग॥ रहद्विकलछनजासमैंपवनसकफरसंग
१५॥ तचविनमछीछहिद्विसंग्रालससिरमैंपीर॥ मुखमीठ
लालांसर्वकफपितरुपसुधीर॥६॥ इतिश्रीजतीनिदा
नेइकविंसतिप्रकासेग्रामलपितनिरनयः॥ अथविस
रपक॥दो॰॥ लवनउसकद्रुग्रमलकोसेवनकोपेहोव॥
१विसर्पसतनकैलेग्रघकसातमेहरुविघोव॥१॥ वातपि
तकफतीनरहसंतपातकाचार॥ द्वंदजकफपित्तवातपित्त

वातकफीमुनिधार॥२॥ छपै॥ वातपितजिहज्वोसनामज्वरगनाव
वषाने॥ कफीवाततृसमिलेगंध कफाकहतसिज्वाने॥ करहमघोर
आधपितकफसंभवजानै॥ त्रघरजुग्रहलसकनुचामांसलग
हूबततामै॥ तीनोमलत्तामेमिलेविसर्पतरोगउतपत॥ सबतन
कैलततहेतदुषसातधातविगडंत॥३॥ वातकजासविसर्पकीऽ
जुरवातसमाना॥ फुरकसोजातोदभेदतनहरषउठना॥ पैत
कहुतनजुहोइ पितजुरलछनन्याली॥ कफकेदुकरजुक्त चिकन
कफजुरसमसाली॥ संनिपातकाजासकोसोविसर्पदुषहोइ॥
सर्वचिंनतामेलषो हूंदजग्रवस्नलेह॥४॥ वातापितजुरछर्दि
मूर्छा जिटज्वतिसार॥ दुटततांकेहाडज्वग्निहततनमकानेहार
भ्रमीज्वरोचकग्रेगसर्वजिससडेग्वेगारी॥ जिसत्रिसतनकेद
सरोगफलेदुषभारी॥ हाडनीलमसज्वोज्वसितउपजमज्वामाला

नि॰
११२

ल॥ अग्रदृग धकेडक शाडैडत पैल नतन सालग॥ ५॥ दो॥ हृदवि
सर्प कहो वै जप स॥ बात नवलो तनहु है ताश॥ जो विन हंगपाविंद्र
मान॥ हिवकी स्वाशाभर इतिमान॥ ६॥ ऐसे नरका हो न नवालु॥
तनमै सुषज्ञा नै वकहूं कुल॥ भमादिकसं दृशे घन॥ संज्ञा करै
सषीवमुमान॥ ७॥ चलै हलपद वहुत कि लेद॥ मनघारै मउ
पजै वहुदेष॥ मनतिमवि ग्राहो वै ताश॥ गुमवि सर्पना मकवि
भाषा॥ ८॥ डषतिकपसै पवन हकाइ॥ कंधपीन कपमेदकरा
इ॥ वधैरत्न मुखहधरफुदइ॥ शीरमें सतु हि अग्रसमाइ॥ ९॥ चा
रैधामतु डष जो होइ॥ दीर्घ मोलफुल श्री जोइ॥ होतग्रेषु षर सर्वभा
मैर॥ ग्रंथ मालतन नज रग्वति पीर॥ १॥ दोपै॥ वटैरोगगु मादहनु
परे सेत्राति सार॥ माषाकास तनसे षता पकि चकी उदगार॥ इक्की
मोह विवर्न मर्लभ गन पाहैर॥ अग्निमंद तिशजान पीडतनर है

धीर ॥ रोस स्वांजननजा शाकेग्रंथाविसर्गजुनाम ॥ रोशवात्तकफको
भक्रोतुचहै गंगारेम ॥१॥ ॥१॥ कोपत्तकफश्रहपित्तत्तापतंद्राशिरवी
र ॥ हुटत्तत्ताकेग्रंथ्री दत्तंभत्तत्तजुशाकेर ॥ भूपरपटकैलाघपैरम
बढ़ैगा काबोलै ॥ हचविनम्रतांजाशास्त्रुग्नि हत्तदेहेडेलै ॥ ताड्हू
रनैत्ताशाकोत्रिषाम्रधिकभ्रमाचित्त ॥ सवइंद्रीग्रहिजातिहैऐ
सेलहनमित ॥ ७ ॥ विगरै जाशास्त्रुलावग्रामस्थशावावढजावै ॥
ग्रंथलमुषरक जातिमधडकदेशाठरावै ॥ ग्रामाहैग्रहपीरहत्तवि
डुकाश्रवकेमन ॥ लोहत्तफोडरूपोत्तस्यामचिकनामलनीतन
मांसधोइगलजेमगुरूसोजगैभीरकुपाक ॥ प्रचुरभाफकाटत
जवैश्रवैकलिंनुजुपाक ॥ ८ ॥ दो ॥ राधश्रुधकमधजाहकैचिकडस
मातिहमकशा ॥ अंगनाडुकुहीरहत्तसवडुगंधप्रकाश ॥ ९ ॥ वढ्इमा
षत्ताकेमकहत्तम्रथसनवहिरथशारव ॥ लगैचोटत्तनजाशाकेसदा

रुधरातिसारनरप॥५॥रुधरपित्तकुधतमिलैपौनुविसर्पकरापु
उपजैवीजकुलंनजिमजमभाषान्दललसाइ॥६॥वटैसोजताकोअ
ध्धिकतापवहुपीर॥स्यामवर्नश्रोनतनअवैअध्धिकदाघअवधी
र॥१७॥चौ॥सनोउपद्रवताकेएम॥जुरअतिसारधुकधुकीतेम
त्रिषाअरेचकमोहअपाक॥पेटकिलनवसगनेगनाक॥१८॥वा
तपित्तकफसाध्यवषान॥सनपातषतमतकरजान पैतकस
रमैजिमतननरंग॥सोअसाध्यभाषैकविगंग॥१९॥दो॥सर्वरोगजु
विसर्पकेउपजैमर्मजुदेश॥सोअसाध्यकेचितकहैकेचितकष्टमि
टेस॥२०॥इतिश्रीयतीनिदानेएकविंशतिप्रकाशेविसर्परोगनिदा
ननिर्नेयः॥२१॥अथविसर्पकोसाछुपै॥बाधेतैघनगर्मन्तरप्राक
डुभ्राअतिषान॥हलाअतिक्रितदाघबारवहुजोरनमान॥भोज
नेकीनेअधिकधरघअथवावहुसेइ॥दितिउलटैजौदोषकोपके

रोलिविरेहौ॥ असैनुचामधमलकुपैमासहाडदुषंत॥ वडेमुको
टकत्ताघानरसजरफाभहूषंत॥ १॥ दो॥ अग्निदग्धजिमत्ताहवपुर
धरसुपैतकजान॥ एकठौरवैसर्वतनकहैवैदसुर्गर्फन॥ २॥ जरं
जयोगत्तमैपडैदत्तनग्रयवावाम॥ लजाजिमपुनसौप्रगटयौ
नपितदुबधाम॥ ३॥ जगभाषाइशरोगकोकहैयानेवैद॥ कल
वेत्रइहनामहैकरैजिदकोकैद॥ ४॥ त्रिधवैदइमभीकहतकोउज
नावरसूत॥ तनऊपरत्थिरजातहै लौकलवेत्रनहूत॥ ५॥ अरु
भेदविसफोटगनप्रियकहूंदसटसैन॥ अष्टमरूधरजजानिलै
कोमतिजेतजभिन॥ ६॥ चौ॥ वातकजिसकोहैविस्फोटा॥ पीमैपि
डुसलवहुषोट॥ पर्वभेदज्वरकालारंग॥ त्रिषाविवनेजानइस
हुग॥ ७॥ पैतकदाहपीडवहुस्राव॥ पाकततरत्रिषाप्रतित्ताव
लोहतवर्नपीत्तसादेष॥ हीतलभेषजकरहुषपेष॥ टा॥ दार्दम

शेचिकत्ताजाहोइ॥ कंडुकठनपांडुताजोइ॥ चिरसैंपाकतपीडन
तास॥ कफविसफोटीऐसेभास॥८॥ कंडुहग्घहोतत्रुरछहिं॥ ककवे
तकत्तिसज्ञानोद्रद॥ अधिकहोइफिरजाकोपीर॥ वातपित्तकितत
सोकविधीर॥१०॥ अबद्रचामजोंवघपछान॥ ऐसेभारीतनकोमा
न॥ बुरकहोइफिरतांकीदेह॥ कफीवातविसफोटीएह॥११॥ निम
निमधकंटनतेऊच॥ कठनअलापपाकेजुतसच॥ तापमरछोडा
कीपीर॥ मोहलालहुतजुईसरीर॥१२॥ बकेवोहतकेपेतनतास॥
तंद्राचिंचत्रिदोषीभास॥ सोअसाध्यअबछानहिंहोत॥ माधवरिष
भाषेकविगोत॥१३॥ उठेरुधरत्तजहोवेजास॥ केचितरक्तमुचाना
भास॥ गुंजावलसमलालसरूप॥ पैत्तकहेतरुधरकाविभप॥१४॥
सैज्ञा॥ जोगअनेकसतानिकरेतनसोतनआवतईद्रिगदोगा॥ वा
तकपित्तककीक्रितजोनतजसाधकहेकविवैदकजोगा॥ छंद्रजकछ

ग्रनेककरैसिध होयधिर्त्ति कैक्रिनगानकसोगा ॥ रोगगऱ्तीत्तऊभर
उपद्रवऊऐन्सचाहत्तसंवतभोगा ॥ १५ ॥ चौपै ॥ स्वासअरोचिकहि
चकीवीर ॥ त्रिषाअग्रमर्द्दिनफ्रिदेपीर ॥ लालांसवैंजुत्तापविसर्प ॥
कहेउपद्रवकविकंदर्प ॥ १६ ॥ त्रिषास्वासजिसउचलेमास ॥ हिचकी
दाघत्तापमरकास ॥ विसर्पमररमदिगहोवेजास ॥ इहभीकहेउपद्रव
भास ॥ १७ ॥ इति श्रीजतीनिहालनेऐककविंसतमेव्रकासेवित्तकोट
कविनिरूपणः ॥ ३ ॥ अथ पसनाप्तु ॥ दोहा ॥ जांगलमरथलदेसमै
पीवेजुहऽकोनीर ॥ ताकोहोवेनारुवाकहेवेदकविधीर ॥ १ ॥ छपै ॥
नाऽमधकुपदोषसोजमधसोथलमावे ॥ विसर्पदोगसमनगनेसो
जुइह भीत्तकरावे ॥ कफसैंमासस्रुकाऽ तात्तसमस्रोगकरंत्ता ॥ छी
कबैोहन्तनरत्ताहि तपवर्णीताव्रहंता ॥ नाऽरूपगंग्रकूरउपजंमदने
दगत्तिवपुथरै ॥ दर्दनिकसतवाहि रमुबहुटततनन वहुडुवधरै ॥ २ ॥

नि०
१२२

दो० ॥ चोनानरकिरमुखकरेत्तनमैंग्रैसारोग॥ काहूकेमत्तइमहि
खेजेत्तूविसेषकजोग॥३॥ अधिकहोइकरचनैमेकिसकिससर्व
सरीर॥ विसर्पजेमताकीकिपाकीजेवैदसुधीर॥४॥ अर्कपत्रबंध
नकरेकुचलेपसमुखलाइ॥ अथवामंत्रप्रयोगघररोगनारवा
जाइ॥५॥ इतिश्रीजतीनिदानेएकविंसतमेप्रकासेसनापुरोग
विनिश्चयः॥६॥ अथमसरका॥ कवित्त॥ कटकलवनवारस्य
मलसोकरेप्पारभोजनाविरुधकेरवारवारषाइत्ते॥ मटरकी
साकनरमोरकेग्रहारभाकडुष्टतग्रहारखात्तडुष्टनीरपाइत्ते॥
भमसूतग्रैनवारथ्यावरनिहारेदेसत्तधिराविगारेतनकरूरग्रह
ग्राइते॥ मसूरीअकारभारपिडकांसुधारसारेनामंजुमसूरीजा
नपजकेवताइजे॥१॥ दो०॥ मातापाकोकहत्तहैवालकवपुबीह
धार॥ पहिउनमानविचारकैहैंकछुगर्भविकार॥२॥ जनमसमेना

लाकपैधुनीदेत्तनिवोर॥ हिकमतजानकिंरंगकोमात्ताकरैननो
र॥३॥ सो०॥ मात्ताहेवेछकप्रवत्नदेसप्रसिधजग॥ तिसतनसुषसो
भागप्रात्तेहेवसंजोगकछु॥४॥ कवित॥ माधवसुनावेरूपपूर्ववदि
षावेजुरषुरककरावेरूचहीनगातभंगना॥ ननमैप्रवेसतनुचसो
नकोग्रवेसतनरंगजैविहीनद्रिगलालदैसेमंगना॥ वातकफको
टस्यामग्रूरूनषुसवत्तामकछनसुपकेविरम्प्रतिपीरग्रंगना॥ मात्त
कोपुजावेहिजहानहीदवावेजुत्तींगगप्रोवतावेहोरमेवजविंटव
ना॥५॥ रसावलछंद॥ पैतकलछनसंघहाउपवनमेमेदा॥ कंपत्त
सर्वसरीरकासपीडातनमेदा॥ गिषाग्ररोम्चकहोछडीभवहुसके
जाल्नू॥ दाघपीडग्रप्रतिस्यामपीतफोटकहुतलालू॥६॥ कोमलपके
सताबमाडमैजिमत्तनकुलसे॥ रक्तजपित्तसमानरूपद्रिगपाकयु
गलसे॥ ग्रंगरुटविटमेदाषत्रिदमारूचहीना॥ ग्ररूनरंगवहुता

पसहामुखपाकतहीना॥ ७॥ कफजुसर्वैमुखलालसंग्रगपटवंधयनगी
ले॥ सीसपीडगुरुगात्तहीनरुचिद्रिगश्रघमीले॥ निंद्राश्चालस
स्वासथूकमुखकचीज्ञावे॥ खेत्तचिकनभ्रिसथूलपीरथोडीपि
डकावे॥ ८॥ भुरकहोत्तचिरपाकमसरीकफीवखाने॥ सर्वदोषदु
तिनीलाचिपटजोंपिडकांमाने॥ मधनिमनवहुपीरपाकचिरसंग्र
तरजावे॥ सर्वैदाघश्रुतिभरमातदुखभ्रिंतलखावे॥ ८॥ दोहा॥ कंठ
रोकतंतश्वाधिकरुचिविनवहुतप्रलाप॥ सोमसरकामरमगति
भेषजदुर्गीजाप॥ ९॥ उनतरोमजुकूपसमलालवर्नककपित्त॥
कासश्रेरोचकत्तापजुतरोमान्तकश्रितमित्त॥ १॥ निदानचंद्र॥
गत्तानिसानुधानुरोगलछनावताइहै॥ रसानमधडेमत्तोइवं
दकाकहाइहै॥ वहूनदोषत्तासमधरंचहूंनश्चानहै॥ भिदंनत्तास
नीरस्रावसाध्यतावषानहै॥ २॥ लहूंनमधत्तासस्यामलावरंगऊ

षमा ॥ असो वहुष्ट पाक है सत्ताव चाम सषमा ॥ किछ नासि ज्ञान भिन
श्राव है ल्ह नको ॥ गनान मास वी वरीत पाक है चनन को ॥ २३ ॥ कठेर
वीकना बह्नि मांस गात्त सलहै ॥ गिषानि कंडु पीर त्ताप अंग्र गन मैंहू
लहै ॥ घसै जमे हत्त पवीच मंडला अकार है ॥ भिन्न दु नित्ताप घोर पीर ष
लत्ता निहार है ॥ २४ ॥ कछु कऊनत्ताम सर वीकना सत्ताप तै ॥ असाध्य
मोह पीडत्ता सुषमा निदेवज्ञा पत्तै ॥ सुनो जु हठ मजम घल छ नासमा
न है ॥ समान गात्तरछ है मसर काल घान सो ॥ २५ ॥ छिदं तकिं चऊनत्ता
सुमेह वे हनाकरे ॥ यलुत्ति जो मरी मधाम आसु प्रान कों हरे ॥ कितानि
अस्थमघ छेक डंक डे मभोर के ॥ सुनो जु सुरू जा मसर रंग पात्त टोर
के ॥ २६ ॥ अत्तो व वे हनाम सर पकत्ता विभास है ॥ न हे तपाक जासमोह
हाघ चीक नाम है ॥ दुकूल आद्रिवंघजे ममान है सरीर कं ॥ मरे वमा
न ज्ञान अंग से पलानि पीर को ॥ २७ ॥ दो० ॥ जैसे लछन द्रिष्ट गति सु

नि॰
१२४

ऋजत्यागे प्रान। सात धात मल मिश्र तातें थक थक कविज्ञान॥१९॥
पैत्तक रस कफ रुधर गात्रिक फपि तो क्लिजपंच॥ भेद जनै संधलेतर
सब साधक कवि शंच॥ टे॥ वात कवात जु पित्त कफ न बात श्लेषम तो
न॥ कष्ट साध्या इह सीत तताय तन संध कवि चीन॥२०॥ चौ॥ संनपा
त की मात्रा जाने॥ दुष्ट दोष लक्षन इह मान॥ के उपजन श्रीजे मध्रवा
त॥ के वितजं कफ लक्षम कालु॥२१॥ लोह जात समदृष्टि है के इ॥ के
के मलसी भून सम जोइ॥ इत्यादिक बहु ज्ञान प्रारूप॥ दोष भेद सम
झौक विभप॥२२॥ जिह्वा वालक ततनरै मूत्र हेत॥ मात्रा जु कमु ये
नीले त॥ हिवकी का श्वास मोह जुर घोर॥ अर्त्त मूर्छा त्रिस्ना रोग॥२३॥
धर्नैर है बहुत बकवाद॥ दाघ ग्राधि कमुष रुधर चलाइ॥ लोहूच
लै घ्राण मुख नैन॥ करे कंठ मध घुरघुर वैन॥२४॥ दाह रूप मूछि
श्री ग्रावै सापा॥ देष वै दल दान इह ताप्रा॥ सांप्रि प्राम षज चाहे ऊज

दानपुंनजपदुर्गपूज॥२५॥रोगसीतलाग्रस्तप्राणै॥पातलतहुंग्रा
वैद्यानस्रीन्ह॥त्रिषाबायुपीडाग्रसितहोइ॥प्रानतिडंतरसकमैसे
इ॥२६॥अतमसूरसेजादेष॥अर्क्कबंधमगेमोटेषेष॥ताकोभे
सजवैदनदेइ॥सर्वांगतिमातताकीलेइ॥२७॥इतिश्रीपत्नीनिदा
न॥२॥प्रकाकोमसरकारोगविनिश्चयः॥५॥अथतीकोनिदानं॥
होयाण वातुकफितुनकोपकरैगलकुषउरउदरकुषपानं॥कै
द्रवनामउठैकुनशीशितसीलग्रनजग्रकारस्मानं॥हृधतहै ज
लासलकज्जैमैतनपाकतसीकछुनाहपकानं॥सातदिनेदिनहोदसा
हृदघास्वप्यावज्येमतिमाधवकुनं॥१॥वैभ अवरसाहुमाविरे
दुजोइ॥नाममधोरत्ताकाहोइ॥स्वेतलालकालेरंगतीन॥साध्य
दुसाध्यअसाध्यक्रमीन॥२॥शीकरछेद॥प्रथमलदननदाघभ्रमत्त
पनीदबहुम्रातिशाप्र॥दंतरस्नाकंठकालारत्नतेमुषभार॥वम

नात्रि सम्मूत वहु पित्त कोप विकल प्रारोग॥ ग्रीव दात्तो वीच स्वर्ष घ
गेध पिड़का धीम॥३॥ दो॰॥ लाल तोर की जा प्राके रुधर पित्त मिल होइ॥
स्वेत पित्त वा वात कफ त्रिक मल का लो जो इ॥४॥ केचित्त वेमत्तियो।
लिषै रोग मधो रा लीन॥ स्वेत पित्त कालो प्रभाव कफ पित्त वात प्रवी
न॥५॥ चौ॰॥ भिन्न भिन्न लछन सुन लीन॥ स्वेत तोर को कफ कि त चीन
होठ जीभ स्वेत गुत ना पा॥ लघु मोती सम फुन घीभा पुा॥६॥ पीत
मधो रा पैत क जान॥ फटत झीभ रेष जर ठांठ॥ फुन पीली लो लज
की ले रंग॥ त्रिधा दाष चाहै सो पहंग॥७॥ वात कस्याम मैन जल
स्वाव॥ दाह दरा बुड़ो त्रित चलाव॥ घ्राण घाका घ्रात्त पनाड़ी जोर॥ चलै
मत्त वहु प्यास घोर॥८॥ रक्त दंत होठ लवि स्याम॥ कालो फुनसी
वहु दुषधाम॥ यहि गुन साध्य वैदत जप्राड़॥ केचित कहै सस्य भी
होइ॥९॥ दो॰॥ गंगधार लिहि गदे बकहि हसुन दिज वर्ज प्रावंत॥ निकस

मिटै पीर तिनिक सहै सन्त सत लव प्रजंत ॥ १ ॥ सित दुकूल छिजा पुष्प
पत्र वकल छिर काइ ॥ मुक्ता फल भव तन कहै रोग नीर की जाइ ॥ ११ ॥
इति श्री वैद्य विनोद जसवंत रमत तत्व विछ्व कवि गंगाराम यती विरचिते
ते यती विनोद नेत्र मल पित्त ॥ १० ॥ विसर्प ॥ २ ॥ विस्फोटक ॥ ३ ॥ नारु
४ ॥ मसूरका ॥ ५ ॥ नोर की मुखो ६ ॥ ७ ॥ रोग निर्णय एकविंसतमो प्रका
शः ॥ २१ ॥ अथ द्वाविंशतमः ॥ दोहा ॥ श्री जिन नेम मसूरिन नेम सुभ नेम सील ल
हत सुध ॥ गंगयती प्रतिबुल तिन्ह सकर लघुत जिम्ह विरुध ॥ १ ॥ एक
कोस कै कहत न कहि सन न न बदल अवसान ॥ तदु रोग इक पाठक इत
स बके रूप निदान ॥ २ ॥ चौ ॥ चिकन सव रन ग्रंथ विन पीर ॥ कंगू गरमा
नवा तनक फधीर ॥ नाम अजगल्ल कल्प्रा विचार ॥ बालक प्रति इह
होत विकार ॥ १ ॥ ३ ॥ जो श रूप पिडका छु कठोर ॥ ग्रथ्म सस्त्रापन
द्वष घोर ॥ यह हि भी वात स्लेसम रोग ॥ यवा नामतराको कवि सो ग ॥ २ ॥

नि॰
१२६

॥४॥ परमंडलघनचकलीजेम॥ पिडकाउचतमुषविनतेम॥ ग्रल
हपककयकातक्रिजान॥ मंत्रालजोनामतिहजान॥३॥५॥ गुलर
फूलजिमपकविभाषा॥ दाघलाडलौगलैजुमाषा॥ दीर्घमुषचकु
लीसंठान॥ त्रिवित्रितनामपितेहकतजान॥४॥६॥ ग्रंथपांचवाहै व
हुफोर॥ कमरकोठजिमउनतधीर॥ ताकोकछुपकाहैनाम॥ या
तककोपिडकाग्यकठाम॥५॥७॥ गर्दनमोटैवदतसुठाम॥ हाथपै
रद्रिगगलसंधान॥ तीनदोषमिलग्रंथकरान॥ मेषुजपषविना
वढजात॥६॥८॥ क्रमसेवढैजेमवलमीक॥ मुषग्रनेकपूस्रवैग्र
नीक॥ विसरपकेगजिमचतेषारौर॥ सूचीचुभैजेमवहुपीर॥७॥
॥९॥ माधवकहतयेगवलमीक॥ निरउपाइजानेस्कविठीक॥ जुग
भाषाइषाकहैनपथ्यार॥ तैसेनवाढिगकहतनसार॥१॥ वलमीक
वि द्रिविधै॥८॥ कमलकर्नकाजेमग्रकार॥ लघुवहुपिडकातिहमध

ध१ जान१

ग २

धार॥ नाम तास्राई द्रव्य बिध जान॥ बात पित्त कफ तें रोग पदान॥ २१॥
मंडल उंचा गोल बिसाल॥ रूप पिडका जू नव हुलाल॥ बात पि-
त्त कफ ते रज बहु पीर॥ गर्धभ नाम कह तका विधीर॥ २२॥ हनु सं-
धि मध भाग्ये सोज॥ पीडा मंद चिकन ऐस्थीर खोज॥ पाषान गर्ध
भ सो कफ बात नु॥ रोग मस्तक जो गवष्या नु॥ ॥ २३॥ कर्ण स्कंध ते-
र पिडका होइ॥ ग्रधि क पीड थिर पाकै सोइ॥ थैंन रूप कै पनशा का
नाम॥ कहै जन तो का बिगे गारोम॥ २४॥ विसर्प जैम सो ज्वा सभ
देह॥ पाकन फूटत बहुत कराह॥ पित्त कफ तें दोष पाप तुरसं ॥ ना
म जाल गरध भइ शठग॥ २५॥ पिडका शिर मै गोल ग्रकास॥ की
डु ग्रधि कला पाशिर भार॥ तीन दोष से उपजै एह॥ नाम इरवेल्लिक
बैद गिने ह॥ २६॥ बाहु कठ म संधि मो टै नले॥ फोट कस्का मे पीड़ा
करै॥ कच्छा नाम पित्त को कोप॥ जग भग्घा वा कच्छ रा ली उप॥ २७॥

नि॰
१२७

नदवतकोपतुचभीतरहोइ।अंधानामकहताकविलोइ॥२६॥व
षिजमतविननरविनइशानान॥वढैकलमधमलकाछिग्यान
कुयेमितनुविउषमानेक॥वगलंगधमाषैकाविलोक॥२७॥दे॥
कतचुतरकीढिगसंधान॥उठैस्केटकुषडुडुषदान॥दाकन
माशदाघजुरघोर॥दोपतग्रमुजिमजालैकठोर॥२०॥ग्रनुहा
मनीलोडुतिभाषा॥दीर्घवुठैमेटैबुलप्यकाषा॥सानदिवशाहुदश
प्रमान॥सोनरजमपुरकरै प्यान॥२८॥ग्रगनिदोहनीत्रिकमल
हेत सोग्रसाधमाधवकहदेत॥चकेधनंतरवालेवैन॥रुधर
मोषइनकोसुषदैन॥२९॥दे॥बीसोनबज्राभ्रितजोमास॥वानवि
तकेषैडुवभास॥वीडायकैहायग्रतिमाव॥चिंपरोगचंद्राजान॥
२३॥दे॥तैसहोवग्रलपडुषहेत॥बहवैस्यामकुटेनवजेत॥ना
मकुनषरसभुसकयसीर॥हेरनामरसकाजेकुलीन॥२४॥२०॥

ग्रलपसोषपदमधरीभीय॥ग्रंजरपाकेउपजेपीर॥ऊपुरहेदे
हसमरंग॥नामग्रनुसरईग्रैसेढंग॥२५॥२१॥पिडकाकंदाबेहा
रीगोला॥कछनिबंकछुसंधदिगकोला॥त्रिकमलरोगचितुसमपी
र॥इहबिहाकाकहिकबिधी२॥२६॥२२॥पवननजुकफमेहात्रिक
मेल॥मासमिरानाडीपूत्तिमेल॥कटैग्रंथजबफुटैसोर॥मधुप्र
नचरबीजिमसर्वजोइ॥२१॥२३॥इतीभेदलडनककोप्रकास॥पीन
बढेपुनसोबेमास॥निकसेजबमबीचपुरेत॥ग्रंथसरकनाकवि
कहिहेत॥२८॥२४॥फिरदुर्गंधतहिबहैकिलेद॥नानावर्नमिरा
दुतबेद॥रुधिरनिरंतरनिकसैतास॥कहेसरकनाखहकविभा
स॥२८॥२५॥सीतउक्मबहुचलनसभाव॥पुसकीपोनगुसैनुच
पाव॥हारीरोगकटैभगजेम॥कहतेमाईकरपदलेम॥३॥२६॥
करपदमधनकरेजोरेत॥कंटकाहिबतग्रैसाहेत॥ग्रंथबेरजि

मउपजतमान॥कदरसुनामरोगपहिचान॥३१॥२७॥गरतनंत्र
गरीअंत्रनरजास॥हाथभुरकतजपदजुगभास॥चिकलदुइक्रित
स्रलसकरोग॥कुरलीकहहेमाऊकेलोग॥३२॥२८॥रोमकूपमय
तधरस्रवात॥मरछितकरैरोमप्रतिघात॥केरस्लेष्मतधिरमिलं
त॥रोमकूपरोकेरसमंत॥३३॥२९॥तहंकेसउतपतिनहीहोइ॥
भुसकयालअैसीदुतजोइ॥ईंद्रलुप्तरोगकहिदेत॥कहतटटरी
जगकविकेत॥३४॥३५॥केसुतपाटनजाकोनेम॥वर्षंद्रमाहेक
रहैएम॥ताकेसिरसवहोवैटाट॥सोनहिरोगकमैकोवाट॥३५॥
हातणपुरकलवकचममि॥कुवैपवनकफकरैविनम॥हारुणना
मसीसजिमरेज॥कहतअरुसीअप्रवागेज॥३६॥३१॥वहुतमनी
वहुमुषजास॥वहुकिलोदफोटकसिरतास॥तधरजुककक्रिम
कोपतकीव॥नामअरुषककविकहिहीन॥३७॥३१॥तधरविवैक्र

मउत्तपतिहोइ॥ चरैकेसभीतरलेसोइ॥ दाढीमछसीसमैथाइ॥
रोगवालचठघारलगाइ॥ ३८॥ ३९॥ क्रोधसोकस्रमकारनती
न॥ पितवात्तकोपेकफलीन॥ तेकहेघकोपेजुवदेह॥ चर्कवैन
समकोपैरहै॥ ३९॥ वषउषमासिरचटेजुमित्त॥ पचतकेसप्रति
भ्राजकपित्त॥ पवनषुसककविकफक्रितसेत॥ पलतरोगकवि
रसविधिहेत॥ ४०॥ ३३॥ सालमलीतरकंटकजेम॥ जोवनपिड
कांमुषव्रतेम॥ रुधरपवनकफत्तीनविकार॥ रोगनामसुषदुष
कधार॥ ४१॥ ३४॥ पोडुरंगमंडलागोल॥ भुरकचुतरफीकंटकटे
ल॥ नामपदमनीकंटकनास॥ रोगपैनकफक्रितरहभास॥ ४२॥
३५॥ कछुकऊचाकिचिंतवाल॥ मंडलरक्तविनस्यामपलाह॥
रुधरजुकफक्रितजनमैसंग॥ जतमणीमतिकोलाघिसंग॥ ४३॥
३६॥ विनापीडस्थिरजिसदेगात॥ माषजेमउनतउपजात॥ क्रि

नि॰
१२८

छमवर्नपवनसैहोत। माषरोगमकुकाकविगोत॥४४॥दु॰॥मास
मेदकफपौनमिलंत॥मासजेमसवतनविषसंत॥मुषकुदेषरत
नसमरंग॥मसारोगककुपीराठग॥४५॥दु॰॥मेदस्मरंगतिलस
मविनपीर॥वातपितकफदुष्टसरीर॥तिलसमसवतनफैलत
जाइ॥तिलकालककहेताकानाइ॥४६॥दु॰॥नद्दवतमेंछलदीर्घहो
इ॥रजविनन्यछकहैकविलोइ॥लालधसरातनसमस्याम॥
लसननामजगगंगगारांम॥४७॥४०॥तिलसमपैलेसकलेच्छग
ध॥म्रवर्नबास्वेतजुरंग॥ककुकछधिककफताकेमाहि॥पीरा
विनासितनतिलकाग्नाहि॥४८॥४१॥करेक्रोधघवेचवत्रतिजोइ
कुपैपवनपितसंगविगोइ॥मुषघ्रधाइनिरंतरकीन॥मंडल
स्यामपीरविनचीन॥४९॥दुहकुपोलघ्रसषममान॥कहतरो
गमुषव्यंगसुनाम॥मैघुनचिंताइसकाहेत॥जगभाबाढाईक

हिहैत॥ ५१॥ ५२॥ जहवतक्षिसमजुनीहैरंग॥ मुखप्रग्नथवासवतन
टंग॥ थोरीवातगुधिकधिनतास॥ रोगनीलकाकाविजनभास॥
५२॥ ५३॥ मरहनपीडनग्नथग्नभिघात॥ लिंगनुचामधविचर
तवात॥ नतेंधवनउपाभ्रिछतचाम॥ ब्रव्रतननकरहैदुबधाम॥
५२॥ सिस्वग्नग्रमणिहैठकुनाइ॥ चर्मगंध्रघघनजोलमकार॥ पी
डासहतनवातज्ञितमान॥ त्रिविधमेदपर्दूरजनजान॥ ५३॥ पैन
कग्रधिकहाघवदुपाक॥ कफव्रवरतनसोनिकविजाक॥ पुरकहै
तकठनाईमर॥ कदोवैदइसमेबजनतू॥ ५४॥ ५६॥ ग्नजिकोटा
जाकोमगहार॥ भुसवितवलकरमोगेनार॥ ग्नथवाग्रहाभोगव
दुकार॥ चोटलाथसोंतगेविचार॥ ५५॥ लिंगचर्मउलटाहोजाइ॥
चोतरफीकिरचर्मफुटाइ॥ सोजुपीडहोवेदुबधाम॥ ग्रवपाटक
रजताकानाम॥ ५६॥ ५७॥ मणीचर्मवठिग्रेसेकीन॥ मत्तछकरो

नि°
३३

ककपितमिलाइ ॥ सो॰ यगंठ घलबढ़दुवढ़ाइ ॥ नामकनेदुताकाज्ञा
न ॥ लगेमदनफलदुवकोहान ॥ ७० ॥ पद ॥ कटमोधारेग्रालाचीर
नुकमयकोदै विनसमीर ॥ उपजैकंडु ह द्रसाम ॥ सर्वनीरकचदद्रु
नाम ॥ ७१ ॥ पद ॥ बाहफिरंगजासमिटजाइ ॥ गरमीसेसरहेठहिराइ ॥
ग्रघवाकोपेसधिरसड पित्त ॥ इनसो उपजै नहमोमित ॥ ७२ ॥ छली
जिमग्रतिपीडकराइ ॥ कठनकरेकफपितसडाइ ॥ जिसवैदुरानज्ञा
वेग्रघ ॥ ग्ररुनसाम नामतिसबंध ॥ ७३ ॥ पद ॥ मिलैपवनकफज्ञाहिसि
रगून ॥ उतरघ्रानमैकरेजलून ॥ बारंबारनस्ततिहहोइ ॥ विकारोग
कहेकविलोइ ॥ ७४ ॥ द० ॥ ग्रीषमदितनुचपितकुपाइ ॥ तनसरूपकु
नसीघलपाइ ॥ गई नमोटेमुजउरपीर ॥ लडैकीटजिमपितनउुडी
र ॥ ७५ ॥ द० ॥ गरमीसीतभवरतिप्यास ॥ चिंतासोकभयादिकस्वा
स ॥ कुद्ररोगकीगननतीनाह ॥ ब्रलाकहतसंघतामाह ॥ ७६ ॥ दो० ॥ इ

कौरेमसूकूपतलसौसौरोगनिरूप॥ प्रगटकरैकविगंगमुनिजेती
सुपनीबुध॥ ७७॥ इतिश्रीपतीविदमेहाहिंदुति २२ प्रकाशेक
ढरोगविनिरूपण॥ १॥ अथमुखरोग॥ दो॰ छुट्यावाधकैकथन
करअबसनमुखभवरोग॥ सत्रविधगिनतीकरोसात्तथानअष्ट
जोग॥ १॥ होठरदनकामसलगनदंतनीभगौतालु॥ गलागलादि
कसर्वहीमुखसेंग्याकविलाल॥ २॥ चौ॰॥ उष्टरोगनवभेदपका
न॥ दंतनमलदिगबोडसजान॥ दंतनविविबेवलजिहापंच॥ नवतन
जतालूमैकविसंच॥ ३॥ कंठसप्तदसअष्टसेजान॥ सवतजकेरजव
टविधमान॥ रहगनतीरजसनरकीन॥ माधवमननवैसठकहिहै
न॥ ४॥ अबसमानलनिप्रसोयान॥ आनूपजजलचरपलबान
चटकाहिकरोहीऊबबाड॥ केसकंडहडीनिकलाइ॥ ५॥ दहीषीर
पीठीकीजात॥ तेअकसैलापापडबात॥ षाटासेवेलोनमिठास॥

भ्रमिष्ट्येदक्षमावादिकभापा॥६॥ इनकार्नशेदोषकुपाड॥ कफउत्तर
मुखरोगकराइ॥ एष्योमैश्लुनेहोठेडषर्धम॥ मिनामिंनवतकेनाम
॥ ७ बालनपित्तकफचोपकासन॥ रक्तजमाहजमेदजमीन॥ भ्रमिघातज
भ्राठोडुषदैन॥ नौमोगुलौजनानोवैन॥ मुस्वकरोरवहुतम्बकडेव
क्रिष्मवर्नयोड्राभ्रधिकेव॥ दलेज्मातकडुफटेजात॥ पौनकेपरतज
सोकविततत॥ टे॥ कुनसोभरहोठपरजान॥ चौतर्फीपीड्राभ्रुत्तिठा
न॥ तापपाकपिडकाकोरंग॥ पीतवर्नपैतकरतजरंग॥ ॥ विदाधे
डुपिडकालबिताशु॥ तुचासमानवर्नवविभाषा॥ मुर्कस्वेतपिठ्ठलगु
रसीत॥ कफकृतदोषइसीविधमीत॥ ११॥ पिडकारंगभ्रलेकपतान॥
स्वेतफितकालीडुतिमंन॥ भ्रथवाफूलतडोडेजैम॥ सेनपानकेपी
डाएम॥ १२॥ रक्तजपिडकापीडनकीन॥ भ्रवैरुधरकविलषोप्रवीन॥ ष
रजरैपलपकस्मान॥ रुधरवर्नाकिरताकाढान॥ १३॥ मांसाडुष्टभारे

श्रस्थूल॥ मांसपित्तजमउत्तनहूल॥ षषवाडेदांतोकेमाहि॥ कीडेचौन
इसौविधगाह॥१४॥ भेदजकेदुभाषीदेष॥ पाकेघ्रितसमरंगविशेष॥ दि
कनफरकसमनिर्मलजोइ॥ ईषतश्वैनिरंतरस्रोइ॥१५॥ लवोचोर
व्रणज्जेमससरूप॥ मडुनाहिहोइबुरषषकाविभप॥ कूदैरिहीरनरूधरस
मान॥ ग्रंथततजेमस्रभिघाततजनाम॥१६॥ ऊपरउषमधसोजादेष॥
गुलीसमानबालडुत्तदेष॥ कछुकदाघकंडुकततचीर॥ गुलीरोगजा
कोकविधीर॥१७॥ इतिश्रीयत्तेनितनेप्रकाशेनवभेदउष्टरोग
निर्णय॥ अथदंतमूलषोडशरोग॥ चौ॥ दंतमूलरुजषोडशजा
नो॥ भिन्नभिन्नतिन्हनामबषानो॥ सीतादैप्रथमेकविमनो॥ दंतपुड
पुडीदुजागनो॥ दंतवेष्टसौषिरमहिसोष॥ परदरउपकुलामुनिघोष
वैदरभःषल्लवरधनजान॥ श्राधिकमांसगनतीदशठान॥२॥ दंतनाडि
पांचोविद्रधीकहि॥ दंतविद्रधीएकोलहि॥ दंतमूलइहषोडशरोग॥

मिंत्रमिंत्र इश्माक्रूपकहोग॥३॥ मैलावलीछंद॥ वालेलहदंतकैवेट
जोमाश॥हेतविनाजाशऐसाकहैभाश॥स्यंमाहातीहैरगेथीकिधों
जान॥मासाकलेदीमरदजोपवैमान॥४॥ग्राहैविवैसोइसीभतेद
षि॥दंतनिमोसंगलेताकवीपेष॥सीतादिनामैसहरैगीकहामान॥
सूनीकचीजौलैमिलहोग्यान॥५॥दंतापुरीहूरनामैलषोएम॥ऐ
सेविचारैसरूपंकुहेतेम॥दंतानिमासंहिगेहैवडेहैरूजन॥भाषा
ग्राठैभीरकेसोमिलैषन॥६॥हूतेग्रवैषनदंताचलेवान॥दंतानि
वेषीजुनामैतजोमान॥यामैविकारैयकेषनकीकैद॥देषोविचा
रैकरैमेषजोवैद॥७॥सोजामहंदंतमलेवडेकेर॥तामैविकारै
कफीवातकीधीर॥केडउठैदंतकैमलमैताम॥लालग्रवैरोगसो
सोषिरोनाम॥८॥जाकैनलैदतहोटेरवकीथान॥कुरैत्रिसैकेरता
लकवीभंन॥दोषोइसैवैदसोदोषमेकौन॥तामैकहावैमहांसोष

चभ्रैन ॥ ९ ॥ चौ ॥ पकै दंत्त कै ढिग जो मास ॥ पकस्धर फिरआवै ताम्रा
स्धर पित्त का रोग पहछान ॥ परदर नाम ताम्रा को जान ॥ १ ॥ दंत्त मूल को
मास पका इ दाघर दनला है दुषदाइ ॥ सेन्नत्त चलै मद त्तिषापीर ॥ होत्त
श्रफा का कवि जन धीर ॥ १ ॥ निकसै रुधर श्यम मुष होइ ॥ दंत्त मूल त्तब
हल का जो इ ॥ उपकुस नाम रोग जान ॥ रुधर पित्त कि त्तपं ड त्तमान ॥
१२ ॥ लगे चोट दंत्त कै सलु ॥ उपजै सोम हाडुषकूल ॥ चंचल दंत्त त्ताम्रा
ते होइ ॥ विदरभ रोग भाषै कवि लोइ ॥ १३ ॥ रदन मूल इक दंत्त उठाइ ॥
पीड़ा अधिक मास मै थाइ ॥ निकसै दंत्त पीड़ मिर ताम ॥ षल वरन है ता
का नाम ॥ १४ ॥ हनु संध्र त्त ढिग जो है दंत्त ॥ सो जा अधिक पीड बहु संत्त ॥ ता
त्तास्न बैध कफ का रोग ॥ अधिक मास भाषै कवि लोग ॥ १५ ॥ दंत्त मूल ना
ड़ी गति रोग ॥ पंचो भेद जान कवि जोग ॥ नाड़ी त्रिष्ट एक ज्ञिम दष निदान ॥
जैसे जानो इहन्यस्यि हि नान ॥ १६ ॥ वात्त पित्त कफ चौथा सैन ॥ सूगंत्त कै नै

मीतकमंन॥ इनकैलतनपांचोमीत॥ नाड़ीद्विलमेजिसविधिरोत॥२१॥
दंतमंसमसरूधरजमाइ॥ बाहरसोजवढैदुषदाइ॥ तापघकेडफूटैपु
छाव॥ दंतविद्रधीइसविधभाव॥१२८॥ दो॥ दंतमूलषोडशप्रगटरोग
कथेइसरीत॥ दंतजग्यांठोलतनमिंनमिंनसुनमीत॥१॥ दे॥ इतिश्री
पतीनिदानेहुंदिशालप्रकाशेदंतमूला॥ रोगनिदाननिरूपणः
३॥ अथदंतजरोगनिदानः॥ चौ॥ दालनप्रथमदंतकमदोइ॥ मं
जनदंतहरषगनसोइ॥ दंतशरकरादंतकपाल॥ स्यामदंतढैर
दंतकराल॥१॥ रदनदंतसोलाचौथीर॥ तोतेवैवहुतेतिहकोर॥ दा
लननामरोगसोजान॥ तातषवनकेप्रत्योपान॥२॥ दंतदाढमेकस्ता
होक॥ उत्पततहिवहुफेडविवेक॥ दंतमूलवहुसोजाहोइ॥ विनाहेतु
वहुफेडुजोइ॥४॥ रुषमकीटदाडकोषाइ॥ भोजनचर्वनकरनजाइ॥
पीप्रसोमुषहेहैवैन॥ दोषनिकालैतीतनचैन॥५॥ स्रघवातताकेदीजै

ठाक ॥ गंगयत्तीकेसाचेवाक ॥ बातहेतुत्तहिरदंनहलाइ ॥ बातनकमी
मायैबकौविराइ ॥ ६ ॥ तेकेतेकरदंनमैहोइ ॥ भरभरपडैदंतफिरजो
इ ॥ बातनकफीकतनरोगपहचान ॥ भंजननामतासकोजान ॥ ७ ॥ सीत
रूक्षगमतिह्रवंबाइ ॥ स्पप्रकनरषाबावहुबाइ ॥ तवैरदंनसोपाह
नजाइ ॥ भोजनचर्वनकछुनपाइ ॥ ८ ॥ बातपित्तकनरोगपछान ॥
दंतहर्षमाधवमतिमान ॥ जगभषाकरिबारदंत ॥ सैधवमर्चीम
लत्तोसत ॥ ९ ॥ दात्तनकुरलीवकछुनकीन ॥ दंतमलग्यातिवठैम
लीन ॥ कफमारुतनकोतामैकोप ॥ सोषितकरैइसीविधितोष ॥ १० ॥
षदरेदंतरेतसमजान ॥ दंतसरकरारोगपछान ॥ सोइसरकरासुधि
कवटान ॥ जेमठीकरोदंतसरजान ॥ ११ ॥ सुधिकमैतसोइहरुजहो
इ ॥ नामकपालकतोकजोइ ॥ सहारेतइहनाशकराइ ॥ भेषडुतकै
जैकविराइ ॥ १२ ॥ दंतनिविषैरुधरमिलपित्त ॥ होवैदग्धरदंनसव

ज २

नि॰
१२५

स्याम ३

मित्त॥स्यामलीलहै ताकभंग॥स्यामदंत मांषै कविगंग॥ अस्थ्रु
वेहलुवे प्रवन प्रवेश॥सब दंतनि मैक है हमेस॥दंत भ्यानक विक
टस रूप॥दंत कराल सिध चहि हूत॥१७॥दो॥माठ दंतनि विषै दोनेप्र
गट वलाइ॥प्रवाजि हूकै कहत होय चोर ज समझाइ॥१५॥इति श्री
युतोनिदाने हाविंशति प्रकाशे दंत रोग विनिश्चयः॥ ओ॥स्वाप
जिह्वा रोग पंचनिर्वचः॥दो॥वात पित्त कफ तीन ए चौथा जान
अलाश॥उपजिह्वक रुजपंच मास्रव सुनभिंन प्रकाश॥१॥चौ॥
वात संगफुरै षरजीभ॥सर कीसा कपत्र दुति इभ॥ स्रधि कवात जोक
रै प्रवेश॥रसना सुकैके टकंटेश॥२॥पैत करसना नीलो लाल॥कंटक
सहै चिमा चिम भाल॥पाकत्त कै मल इह विधि रोग॥जाली कहत
वनारस लोग॥३॥कफ सो भारी होत सेत॥वहुत चुत रस कीक दुः
षदेत॥रसनासिंवलकंटक जेम॥उवडे मसवै दल षिएम॥४॥जि

ह्वानलैसोजजिसइट। अटकत्तरसाइषत्तजरौद॥ कार्न्हइसकोव
लगमलहू॥ नामअलाशाकहैकटिसहू॥४॥सइअलासकंकंडूकं
ग॥ तापघुकपुकोएसेठंग॥ रोगनामउपजिह्वातेम॥ कईअचार्थ
भाषैएम॥६॥ माधवकोमतऐसेदेष॥ जीभमलमधसेजापेष॥ वटै
जीभजिमहोवैवोर॥ अथवारसाभ्रग्रसधैर॥७॥ ककफिरधरकाम्रा
नोरोग॥ लाल्लाश्रवैषुर्कवहुरोग॥ दाघहोतउपजिह्वानाम॥ कहतवै
दकविमेसारंम॥८॥ इतिश्रीयलोनिदानेह्वाविंशतिप्रकाशेपंचमे
दाडिह्वारोगनिर्णयो॥५॥ अथतालूरोगनिदानः॥ चौ॥ तालूरो
गभेदनवजान॥ गलसुंडीकविइथमवषान॥ तुंडकदीअधपातीन
कच्छपतालूअरवुदचीन॥१॥ मांससंघतालूपुरपाट॥ तालूमेवता
लूपकठाट॥ मधवकोमतिसषमचीन॥ गंगपतिभाषाकहिदीन॥
२॥ जातिह्वनीहोया॥ माघ भमैपत्तफोवनपीवनपापडवैगनस

नेहुंडी॥भीनरह्यीपित्ताज्वरबीद्घज्वादिकहेनुकहेकविकुंडी
सोफउठेहैद्विगनालुवकेग्रतिवस्तत्रिमेरुधनैकफमुंडी॥स्वास
त्रिघागलसोवत्तहैजुरकासकनेनजसोगलकुंडी॥३॥दविकानै
जोप्रगटैतिनकारनसोंफिरसोफउठावे॥थूललघोफलजे
मकपासकफ़ोलमकैगलपीरकरावे॥ताघचिमाचिमहोवत
पाकतभेजुनपानविघेदुबपावे॥नुंउसकेरकनामइसेनजभेम
जताप्रतिनूरदिबावे॥४॥केवलम्रोननकोपभक़ोज्ञिसकेगल
कोमलसोजमईजु॥लोहतरंगजुरीज्ञतिपीउतकोगजुनामग्रध
बतईजु॥कूमंजेमउठेद्विगन्तालुवपीरबिनाचिरसंगथईजु॥
कानैजामघलैकफकोग्रतिकठपनैगसुनामकहीजू॥५॥पैत
कफ़कोपकनैनघरीमिलसोथउठेनजुतालुवमल॥कोलकजे
मग्रकारलघोपलग्रंकुरहोरबटैचहकूल॥ग्राक्षितपित्तसम्मा

नप्रकासकनामअग्रीगुदद्रअत्तहोला । कोपकरेकफमांसदुष्टावत्त
तालूवकैमधमांसपिठूला ॥ ६ ॥ मांसकसंघकहेरुगसोनहिपीडहो
वेकाहिवैदकपाठ ॥ मेदककीमितिदुष्टतत्तालूवदेसविवैघनसो
जउठाठी ॥ कौलसमानअग्रकारटिकेथिरहकीथिरहेतुकफीरुगना
ठी ॥ तुंडपउनामुकरोलघुभेदजदेहसर्वीभजअग्रातमकाठी ॥ बातम
रेपित्तसनालूवकैठिगसोफअग्रतीवविहीरनपीरा ॥ तालूवसोपकरै
तिसकोमुखस्वासबठैतजसीतलनीरा ॥ केवलपित्तपकावततालु
वघोरमहादुखहोतसरीरा ॥ तालुवपाककहेतिसको ॥ इनतालुव
रोगगनेनवधीरा ॥ इतिश्रीजतीनिहाने[illegible] ॥ प्रकासेतालुवरो
गा ॥ ८ ॥ विनिस्रुत्रः ॥ अथसप्रदसकंठरोगनिरनः ॥ चौ० ॥ कंठ
रोहनीपंचावभेद ॥ ५ ॥ गलसलूकअग्रघरसनावेद ॥ ७ ॥ फिरवलासअग्र
लासकजान ॥ एककंदृहकविसतनघनेमान ॥ लिंगायुगलविद्रधभ

नि॰
१३२

रोग होय स्वर घन मास जन नगते नाम विदार्यो रोग सत्ताद्रे ॥ भिन
भिनक विक हनावि चारे ॥२॥ विविध अहित पर्व जो कहे ॥ अहि निस
नरतां हूको चहे ॥ जौ गलमें कफ कुपे समीर ॥ ग्राम बनघर विगार
न धीर ॥ कंठ विषे ग्रामि बंअंकुर ॥ बढे अधिक रोकत गल चूर ॥ रो
ग रोहनी अैसे संच ॥ वचन प्रान है विध पंच ॥४॥ कवित्त ॥ बात कि
त जांनि रोग जो हनी पछान भिस जीभ केचु फेर पल अंकुर अन्नेक
जू ॥ कंटक कठोर गल रोकत अघोर पीर बातके जो कीने सब उतुंद्र
बटे कजु ॥ पित कसता वहाघ पाकत अती वजुर पित के नाभ्रित सब
ताहू मैं व वे कजू ॥ कफी मंद पाकचिर ग्राम बंअंकुर विधि नाडि नि
कै रोके मुष बोल तन रोक जू ॥५॥ सनिलै त्रिदोष सो वपाकत गंभीर
रोघ वात पित कफी तीन मिले सब लछना ॥ मिट त्तन सो उ रोग
काल को संजोग जामै छेक छेक कंठ ज्ञान बैद ज्ञानु विचछना ॥ रुधिर

विकारसंगकोटकअतीवलिंगपैत्तकसमानअनकिंचित्तनभछ

ना॥रोगसोअसाध्यधनसाधनकोदीजेहुजवंदकोवुलाइग्रीर

षेउऔरदरकुना॥६॥दोहा॥माधववैदकहेसुनिकोविदनोहन

पंचप्रकारवषानी॥जानअसाध्यसभीरजरोदनवोलततोघर

सोविधिगपानी॥वातकश्रोनहनेदिनसातकपैत्तकपांचदिनेतन

हानी॥जोसनकफीदिनतीनगनेत्रिषदेषहरेवपुठीलनग्रानी

७॥कवित्त॥कौलकेप्रमांनअग्रथनेकतगलांनपथकफकीउ

ठाईव्याधगिटकजोवेरकी॥कंटकविसेषफिरषदरीकसानत्रि

मानिसरलगावनकीकीनीजैनेदेरकी॥होरजोउपारतंताकोपीछे

तैवत्तावैवैदकंठकसालूकनामओरजामेफेरकी॥जीभकेसुग्र

ग्रभागजप्रवाहोत्तसोजकफकोविकारसंगरुधरकोटेरकी॥८॥

उलटीगत्तिपाके

हो॥ग्रधिजिहुताताकोकहत्तनामरोगकविवेद॥

प्रबलकरेंतीमकोकैद॥८॥कवित्त॥कफकोनिदानजहांहकंठ
मोउठावेगंनथउनत्तसीलवीजानगंत्रनकोनमानहै॥तीनहोय
मिलेसत्तमेघजनटलेरोगनामहै बलासग्रंनत्रमकेमकानहै॥
सुननुग्रलामगलरोकतपकासकफमिलकेसमीरसंगस्वासको
बिगारदै॥छि दपीरबढेत्रगछेकत्तमरमंढगवैद्यजोपुकारेरो
गनैत्तनकोटारहै॥१॰॥सैया॥कोपतहेकफसोंरुधिरीमिलउ
नत्तसोजगलेमघगोला॥इवत्तकोमलईबतपाकतकंडउठैगु
हहहपतकोला॥नामपकैवदहेजिसकोमुनिंदहरिचीत्रिकमे
हकहेलाला॥पैतकसोंरुधिरीमिलिकैवत्तउनत्तहाघग्रतीजुर
झोला॥११॥दोहा॥मिलेपवनसोंरुघरजोऐसेरूपकहंत॥खुस
कीगलसचौचुभेघत्तपीवेजुसवत्त॥१२॥कवित्त॥दोपककीवा
टजैसेकंठमेसंवानतैसेरोकतगलानपंथग्रंथकीगुनाइसो॥

अठ तग्र करभर मे सकै विकार से तीन दोष मिले जासै रोग
दुष होई सो ॥ रोग है अनेक भेद लछना अनेक जामै नाम जो सता
नघन वैद्य ने बताई सो ॥ सेल के समान पीर प्रान सैं तगीर जानि
रोम को विसारे मूठ करे हाई हाई सो ॥ २३ ॥ अवले की गिट कसमा
नचिन होत तग्र थकं ठके मकान थिर मेह पीर जास को ॥ सेल कैसी
चोट जिम भोजन करत नर लहू के समेन कफ होई मिले तास को ॥
नाम है गलायु मत्ति के चित्त लिंगायु कहे रुधिरानि कालै वैद्य टील
हनै सास को ॥ रुधिर मिलावे पित्त दाघ पाक होवे नित्त सीतल दवाइ
करै लहू के निकास को ॥ २४ ॥ दोहा ॥ वात मिले कफ सों रुधिरी वि
तथ्वान गले मध चार मिलाने ॥ आपत्ति होइ गले ग्रन्ति रोक तत पीर
तहां जित्त सो जउ ठाने ॥ सोथ चले जित हो जित्त द्रवत विद्रध होवत्रि
कैसम जाने ॥ गंग जती जसवंत सु नो गल विद्रध रोग अ्र साध्य पछाने ॥

१५॥ सोजुमहांगलवीचबढैगलसासरुकैजलभोजुनथोरा॥
दुष्टलहूककफसोंमिलिकैरजुनामगलौघचढैजुरघोरा॥दुष्ट
भईजिसकैगलभीत्तरवात्तहनेसुरकंठकठोरा॥जोनिगलेन
हिंचकग्रासलषैत्तमजालजुनैनिनिभोरा॥१६॥दो॰॥मिलेवा
तककफजासमैअ्रपवाकेवलवाइ॥स्वरघननामइसरोगकेगर्भ
मेषजीहाइ॥१७॥कवित्त॥जीनदोषसंगकंठसजुत्तअगाधअं
घदुषीत्तनहोइक्रमरोकत्तगानिको॥नाममांसतानरोगविंजुनअ
नेकजोगवैदऔवत्तावेअ्रतिकरेदुःषजांनको॥सुनलैविहारीभा
रीदाघकीवुमारीसोजुजंतोवेसमानदुत्तचिमत्तचिमानको॥ग
लकैसुमध्यभागगलनदुर्गंघमासपित्तकीविकारीचितचले
सीतपानको॥१८॥दो॰॥जिसकोपउपोसुभावपहिईकपासे
कीनीद॥दूजेपासेहोतततिसरोगविहारीबीन॥१९॥इतिश्रीजती

निदानं॥२२॥ब्रकासेकंठरोग॥१७॥ चिनस्तापः॥१७॥ अथसर्व
मुषरोगनिरनपः॥ दोहा॥ बात पित्त कफ भिंन मल सारे मुष कै रोग
माधव मत तिरिषत्ती न सेगिक सु नष्ट्र वरषू योग॥१॥ कवित्त चौपारु
धरतै केचित्त त्रिकमल धार॥ गंगजु तीमत पैहि बेषठ मंत्र नविक
२॥२॥ कवित्त॥ फेटकरा पीर तो दंगद रचुपै मुष कूष नाम्र रनडति प
कै मुषवा तकौ॥ पैत कस दाघलाल पिडकास्रेग पीत पाकत सरव मु
षसौत मुष गात कौ॥ कफ कै विकार विन चिड तै मुरष हेत पिडका
पकावै स्वत कै ठलौ पकात कौ॥ डंदज डुलिंग मति के चिनव तावै वै
दलजन सकल मुषप कै संन पात कौ॥४॥३॥ दोहा॥ काहू माति विगरै र
धरत्नौसव मुषप कजात॥ अहत पितस मान लषि गलत मासडष
तात॥४॥ चारवंद दोउत तुरनु अथवास्का हरगहोड॥ कीदैल्लितकुर
लोकरै तुरत मिटै डुषउड॥५॥ अथ सभावक मुषपाक माह॥ दोहा॥ श्वौ

डंडल्नासूंवकाखेतवत्तातुकैर॥स्नर्नम्रान्नागनलगलीइ ह्मुन्नचारसवगै
र॥८॥कुरकटमनललेमासदधलालमिरचवडुम्राइ॥मिष्टसलना
मेलकेग्विभेजननलपत्तकराइ॥७॥कुग्धगरम फीकेवैसलतेइनसोमुखप
कजाइ॥विनभेषजमुखसैनजनैदिनदोतीनवनाइ॥८॥द्वैप्रकारका
जानयहितवमुषपाकनफीर॥भेषजकरैपहानकैजोजसचाहैस
रीर॥९॥इतिश्रीयतोनिदाने॥२२॥मुकारोसुरवमुषरोग॥६॥वि
निश्चय:॥ ८॥अथसाध्यग्रसाध्यनिरनय:॥चौ॥उष्टरोगवरजोक
वितीन॥मासजाकरनजदोसत्रिकीन॥दुतमलकेस्याक्षेदोइ॥म
हिसोषरत्रिकसोभिरजोइ॥१॥दंतनिविषैतीननत्तड़िसंयत्त॥स्यामभे
जलाहालनदंत॥रसनाविषैतजोग्रत्नासा॥नालग्रर्बुदकरोनग्रा
सा॥२॥ग्रथस्तनगलकैरोगग्रसाध्य॥नामत्रयोदसवडीउपाध॥स्वरघ
नविलाघाग्रालसाकजान॥इकवृंदसविदारकमान॥३॥मासतान

गलग्रंथा घसमीत॥ सम घन के हन पांचो दे त॥ एमुख रोग नै ग्रै वो घ्रा
जान ग्रसाध्य वैदक विहूप॥४॥ तो भी भेख जकर सु जान॥ दैवजोग
ते दुष कौ हान॥ रोग मिटै नहि तै कहि दान॥ धर्म नेम मी रष ब्रत दू
न॥५॥ दो॥ तेइ रोग ग्रसाध्य इह सव मुष त्रिक मल पेष॥ सत्व कर्म
इन को भलो कासिराज मत्ति देष॥६॥ दू॥ विंसा तत्र वस नमै छु रोग
इक साठ॥ सेत्त रुज मुष के कहे पांचो होय सम ठा॥७॥ इति श्री पांड
व यज सुर तरंम न नग्ने स्यु का विंगमा के म पत्नो ठि र च्या ते य
तो विदाने क्षुद्र रोग॥ ६॥ भेद उष्ट रोग॥ ८॥ भेद दंत मूल रोग
॥१५॥ भेद दंत रोग॥ ८॥ जीभ रोग॥ ५॥ ताल रोग॥ ८॥ कंठ रोग॥ १७॥
सर्व मुष रोग॥ ३॥ एवं सत तर मुष रोग साध्य ग्रसाध्य भेद निर्द्दि
विंसा तत्र मो प्रकाश॥ २४॥ द नेत्र पत्र ज्यो विंसा ति मः॥ इष धमकु रन
रोग निर्नय ः॥ दो॥ पुन्य प्रसस्त निक वामसु तत उपदेस कयो है ता॥ वि

धनादिकान्नि नचरत्ति श्रीरमो बसखदेत ॥१॥ द्वाविंशत्ति विश्रांम मैसत
रमुषके रोग ॥ मुषसमीप इंद्रीकरन यांत्ते करन प्रयोग ॥२॥ चौ॰ करनरो
गकोगननतोसुनो ॥ ग्राठवीसस संग्याग्रवभलो ॥ करन सूलकाकरनक
नाद ॥ वधरेछेडसुतसुवेश्रवाद ॥३॥ कंडकरनकरनकागूथ ॥ करन
श्रनाहकजंतकनरथ ॥ करनविंद्रधीहै विथमान ॥ करनपकाविसूहू
तिककोन ॥४॥ ग्ररसकानकीचारेभेद ॥ विद्रधी करनसातविधिवे
द ॥ सोथकरनकीचारप्रकार ॥ रोगग्रठाइसविधधार ॥५॥ श्रवसुन
कारनकरनसरूप ॥ भिंनभिंनभाषेकविभूप ॥ रूषाकडवासोतलवा
इ ॥ इनसेकोपनकरनडवाइ ॥६॥ दोहा ॥ वातचलैउलटीइनकारन
कानविषेग्रतिसूलकरै ॥ दोवचुफेरसुघोरतहा तवसूलमहाडव
भरभरै ॥ मेघजकोटकरैनमिटैकृतजतौकविगंगयतीउचरै ॥ सूर्यपल
वपीतमलेघृतपावकसेकतनोश्ररधरै ॥७॥ जोतिससंगलगै त्रिश्माजु

रघोरचढैश्रुतितासघसरीर॥मूर्तंततसघवडेवमसपसवदेहयकीव
न्नफेलननीर॥रोगगश्वसाधधाइसीविधकेलसबवैदप्रुकारकहैसुनगी
रा॥ह्लोडकुटंवभजोप्रभग्रात्मगंगगपतोविततमेधरधीर॥८॥कानक
तेदविवैग्धैनबातकरैसुरभेदगनेकसलने॥भेरमदंगजुसंखनिकी
धुनिसिंगनढोलदमामधुनै॥करनकरनादकहैतिसकेकविघोर
वढैतवसीसधुनै॥रोगनग्रानवदामधरेस्रुतमंदरमैकविगंगगमु
ने॥९॥चौ॥सवदवाहनीकरनकवाइ कफसोमिलैतेकरकजाइ
तैवाहिनरकतसुनेनकान॥तिहतपवनकरैनधरान॥१॥जेवर
पवनमिलेपितनसंग॥करनछेडरुजइसविधिसंग॥२॥वंसवीनसुर
सुनीएकान॥करछेडरुगतिसहिपदोन॥३॥दो॥करननादसु
तछेडकाभेदकवनकहुरोत॥गंगयतेउतरकहतसुनोचतुरदेवि
त॥१०॥करननादवहुभेदसुरसुनेपौनइकतोष॥करनछेडकफ

नि॰
१८२

जनपवनस्वबनवेएगइकघोष॥१३॥ सैया॥ चोटलगैजिसकेसिर
मोअथवाजलमोडुबकोप्राप्तिलेत॥ पाकमयोजिसकोसुतवाजिस
विइधिरूपउठैइषदेत॥ राधचुलैतिसकेसुतमोजलजेमकलेद
समीरसमेत॥ करनकघावकहैइसहोविधिपीरउठैकछुवातकु
देत॥१४॥ सै॥ जाकैकरनमिलैकफवाइ॥ होवेवुरकवहुतइसदइ
रोगकरनकंडुतिसजान॥ कुफवादीकहेतपछान॥१५॥ वहुतकुपथ्य
करैमतिहिन॥ पित्तभफततौकैप्रवीन॥ तवेकरनमैगूथडताइ॥ क
रनगूंथप्रभावैकविग्राइ॥१६॥ जोवहकरनगूथइवहोइ॥ वढैअधिक
नासालैजोइ॥ करनअनाहरोगसोनाम॥ साधाकिसकहैसुत्ताम॥
॥१७॥ करनविषैजोउपजैजीव॥ रहैदिकानकरैसदीव॥ पुत्रपौत्र
उपजैवहुमास॥ चुनचुनषाइमगजकोमास॥१८॥ अथवामखीकरै
प्रवेश॥ रहैकांनमोइकोहमेस॥ जनेपुत्रवहुतेवढजाइ॥ सुनेनवा

त करन भचराइ ॥ १ रे ॥ भुसकी अधिक पीड दुष देत ॥ बाहर निकसै तौ
सुष हेत ॥ रोग करन क्रम मल षो प्रवीन ॥ जगभग्या गद डी कहि दीन ॥
२० ॥ डरतो कोन हक्ष मसून लै मीच ॥ कीर पत्ते गव डे इसरो त ॥ करन सि
लाइ ॥ करन षजूर ॥ धसै कान मै तौ दुष भर ॥ २१ ॥ व्याकुल होइ देहि
अति पीर ॥ फर फर करत करन मै धीर ॥ चलत फिर दुष अधिका
ई ॥ द ॥ बैठ रहै तौ पीडा मंद ॥ २२ ॥ तो नर मूत्त गर मकर घाइ ॥ अथवा
तौ षन तैल धस्याइ ॥ कुथ रोगं मभम झो सैन ॥ तौ नर कोइ हो नम्र
बैन ॥ २३ ॥ करन विद्रधी सन लैषो र ॥ लगे सस्त्र वा लकुटी चोट ॥ उठै
विद्रधी रोग सुधी र ॥ लाल पीत रग्र रतन सानी र ॥ २४ ॥ का हू स मै रु
धर कोस्रवा ॥ दाघ धम निकसै दुष पावा ॥ जो कल लगावै करै न देर ॥
करन विद्रधी होइ न फेर ॥ २५ ॥ करन पाक पै लक सो जान ॥ सोथ
कलेद षवे दुष षान ॥ करन विषै जो जल पड जाइ ॥ तो इस दोनौ

रोगउठाइ॥२६॥जाकेसर्वेवहुतसीराध॥फनकर्नभावेकविसा
ध॥जलधफेनकौडीकीराख॥मुर्दासिंगघडेसुखभाव॥२७॥दो॰॥
कर्नसोथविधचारतखवातपितकफतीन॥चौथारुधरवि
गाडतेसोजानखप्रवीन॥२८॥कर्नशूलशरसविधलखोलहूपि
तकफवात॥मरुकेउपजेकर्नमेसर्वजितवधिरपीडात॥२९॥शूर
वुदश्रुतकोसातविधलहूपितकफवाइ॥मांसमेदनाडीतजोइ
हवैहतादुखदाइ॥३०॥नितनिजकहेप्रकासमेइनकेलछननेहे
त॥सुश्रुतमतजग्रठवीसरेकर्नरोगदुखदेत॥३१॥चर्कमुनिमति
कहतइमकर्नरोगविधिचार॥वातपित्तकफसंनितेभिनभिं
नचितधार॥३२॥छपै॥रोगवातश्रुतनादपीडाठिगसोजल
खावे॥पतनलासर्वेजुनीरवधिरश्रवपितसुनावे॥सोजुलालदु
जहाघजेमलखउद्भचिरनीका॥सर्वेराधदुर्गंधनीरछविंगगागि

रीका ॥ कफकेंदुष्यिरसोजसितसहनेनमेहग्रबाज ॥ मेदपीड्गु
रवृिकनघनइसविधसुनिदविराज ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ सर्वरूपत्रिक
दोषमेअधिकदोषदुषस्नाव ॥ ततुचिकित्सावेदककरिचरकमुनी
इहभाव ॥ ३४ ॥ छंद पै ॥ करननुपालकेरोगवेदग्रवरूपवतावे ॥ बाल
कतनमरदुमोसकोनकेषैचवठावे ॥ कछुकविदारनहोतसोज
वहुतिभरम्यावै ॥ स्थ्मग्ररुननतिसरंगबुसकपीड़ाग्र्यरावै ॥ पव
नहेतमाधवकहैपरकेटवइकजान ॥ ओरतंत्रमतिकहतइमपै
तककयभीमान ॥ ३५ ॥ भारोमषनधरैकानघरषनकीजै ॥ गुरपां
दाविनमाततताडनाकंपेकेर ॥ रुधरपित्तकेहेततासलषवैदसधी
र ॥ ग्रपवाकेबललहूकोतामैप्रलोथान ॥ दोगनामउतपाततिस
लगेजोकसषहान ॥ ३६ ॥ कर्नवठावनहेतिपासिकोषेचतजोरे ॥
पवनकोपतामवेसंगकफकोजकजोरे ॥ उठेसोजाविनपीठनाम

२४

नि॰
१५४

उनमेयकज्ञानो ॥ कंठुलोवे तासहेतु ककवानपछानो ॥ अथवाकु
स्तीगरनरीघोंसैलागेकांन ॥ सज्जनाजब्युतिटोमजिमाविनदुब
मेयकज्ञान ॥ ३७ ॥ दो॰ ॥ कर्नछेककेकर्नहीवेधेमलोनजाइ ॥ भुर्क
हाघपीजअधिकपाकेसोजचढाइ ॥ ३८ ॥ दुबववरधनजाकोकहे
जोबहिविगरेभर ॥ तोनहोवत्तामैमिलेसोअसाध्यदुबतूर ॥ ३९ ॥
निंमपगनवनीनगवअग्निसिधळनवाइ ॥ घटीघटीमेलाइवे
तुर्तहूरदुबजाइ ॥ ४० ॥ छपै ॥ जघरककीक्रिमकोपकर्णकीपाल
समावे ॥ सरघपजेमअश्कारसर्वेकुनसीदुबधावे ॥ भुर्कहाघव
हुपीडरैनदिनचैननहोवे ॥ विसर्पजोगजिसनामलागकैलत
दुबसोवे ॥ माखनमिरचसंधरघसिअब्रलावेवैद ॥ अथवाजो
कलगाइमरतोदुबहोवेकैद ॥ ४१ ॥ दो॰ ॥ कर्नपालमैजोटिकै
बुसकवानदुतस्याम ॥ कर्नपालनिरमेसअ्रतिप्रलेहोजिसना

म॥६२॥आठवीसनतजकांनकेआठकर्नकीपाल॥इहछतीगननती
करेजोवैदकवाचाल॥६३॥इतिश्रीजतीनिदाने॥रत्न॥प्रकासेक
र्नरोगगद॥८॥कर्नपालरोग॥८॥सर्वकर्नरोगविनिर्णयं॥१॥
अथनासकारोगनिदान॥चौपै॥अबगिनतीनाकीसुनलेइ॥चौ
तीरोगनासकाइह॥प्रिथमअपींसपूतकनास॥नासापाकतीस
रोभास॥१॥नाकपंमनासारुधराह॥छवथुभ्रंसदीपतप्रतिनाह॥
प्रतिश्राबीनासाकासोष॥प्रतीसापपंचोविधिघोष॥२॥अरबुदना
सासात्तप्रकार॥चारोअर्शसोजलबचार॥रुधरपितगनचारप्रका
र॥नाकरोगयैंतीहुबधार॥३॥दोहा॥ऐकवैदग्रैथसेकहेरुधरयाध
हुबऐक॥अंगगजतीनेदोलिषेनेगेलषीविवेक॥४॥चौपै॥मिथ्याहा
रविहारीरीत॥दिनसोवेसीतलजलपीत॥दहीबीरभोजनबहुकां
म॥अथघवाविनभोगेवहुनाम॥५॥रितिउलटेपानीपलटाइ॥राती

नि॰
२९५

सोवेसुषउघाराइ॥ इत्यादिकवहुहेतपछान॥ नाकरोगकीउतप
तजान॥६॥ प्रथमेपीनसलछनदेष॥ नासाधुसकसडेधमेस॥ वा
तकफीमिलदृकीसास॥ गंधस्वादजोकीनहिंभास॥७॥ भारीसिरहो
कैनहिंग्रात॥ हीकेनीरचलैसबगात॥ वातकफीमिलपीनसकी
न॥ भातिसुषाइजोमलदानचीन॥८॥ रुधरपितवलगमदिगताल
दग्धहोइठहरैसमकाल॥ कछुकवानतामैमिलिजाइ॥ बहुदुर्गंध
नासीभाइ॥९॥ तनासकानीमहिरोग॥ नासापाकसुनोकविलो
ग॥ दुषैपितनकछुरुधुरसंग॥ नासाविषैफिरमनोढंग॥१०॥ नासा
पाकैसवैकिलेद॥ सडैनाकसुनिकवीसुवेद॥ नासापाकमुखकभीजा
न॥ हुंजरजोविधिकरोवषान॥११॥ सेरलिलाटमैलागैचोट॥ दोष
दग्धहोवैवहुषोट॥ रुधरसाथचलहैतिसनास॥ लदानदेनोरोग
समास॥१२॥ भ्रगुटीहेठमरमकीसंग॥ नहांदोषदुषनवातामें॥ कय

सो मिलि कै करै जलन ॥ दीक प्राद्ध होवै सिर धुन ॥३॥ सुन समान दि-
का विन रोग ॥ तीषन दर्व करै प्रयोग ॥ सर्प देस तन कटु कम्ब लार ॥ सु-
त्रादि सुषमन सवार ॥४॥ कटुक चिंत मोक रेवो चार ॥ ग्रपवा नासा
भो त्रिगधार ॥ इत्यादिक बहुतै विधि रीत ॥ सूगे तनु कती कै लाघिमो
त ॥५॥ भ्रिष नासका जाकी होइ ॥ उरध पित्त चढै कांविलोइ ॥ दग्ध हो
इ कफ पवि कटु तेम ॥ लवन स्वाद भाषै कवि राम ॥६॥ नासा सदै भाफ
निकसै तात ॥ भ्रम रोग भाषै कवि तात ॥ सुद्ध तिकै मति दीपत नाम ॥ वीह
दा नासि कसै सुख धोम ॥७॥ नासा रोकै कफ अरु बात ॥ प्रतीनाह रुज
इस विधि भात ॥ विदर्तं त्रमतिरे से जान ॥ कफ अरु बाइ मिले इक ठा
न ॥८॥ घ्राण वंधु मै तिष्ठत बाइ ॥ रोकै मारग सास सन ग्राइ ॥ व्रिलक्षिन
नासं दे षो भार ॥ प्रतीनाह रुज देन स्वार ॥ दोर न काला गे जाकी ना
सा ॥ मग जस्रे कमप घले तास ॥ सघन [illegible] न पत्तला सित सर्वा ॥ नासा

नि॰
१८६

सार्वलखोइसभाव॥२०॥घ्राणहोकवलगमवकुजोइ॥ वायुतनुपावैसो
षतसोइ॥ग्रथउरषडषलेवेसास॥नासकसोसकहैकविभास॥२१॥
दो॥प्रतीसाइकेअकहतग्रवदोविधिताहिनिदान॥सदजोजनकपता
नइकक्रमसोजनकइयान॥२२॥सदयेजनकपतानतिसततका
लरतजहोइक्रमसोवादैदोषजवक्रमसोजनकोस्रोइ॥२३॥यवना
नीमतकहतइमनजलाताकोनाम॥सरवरोगकोमानतइहसर्व
उषनकोधाम॥२४॥पंचभेदहिंदोकहतवातपित्तकफत्रीन॥चौथा
जानोसंनतैपंचमरुधरप्रवीन॥२५॥सदयोजनमप्रतस्वइकोप्र
थमेसुनोनिदान॥फिरपातेतितिहुंकहेक्रमसोजनकसुजान॥२६॥
दोहा॥धर्मवेगकरैअतिभोजनभाषतजोअतिकोपथरै॥सोसततपै
जिनकार्नकैगतिकैउलटैनाहिनिंदमरै॥नीदधरैदिनकेजलपो
वतसोतलनीरसकोरततै॥वाइतनुषाररमैअतिमैथुनवुंदनगे

रतनैननरै ॥२७॥ दो ॥ इनकार्नेसैदोषमिलिसिरमोवाढैवाइ ॥ प्र
तीस्याइतनमोकरैसमभैवैदविनलाइ ॥२८॥ क्रमसेजननजला
सुनोरोगोनरप्रतिहोइ ॥ हितग्रनहिलभेषजउलटपितग्रपथक
विगोतनर ॥ सवैया ॥ दोषवढैपवनादिकहीसिरमोग्रतिसेकरकोप
उठावै ॥ मिनसमिनवढैग्रथवामलमेललहसमएककरावै ॥ प
थग्रपथग्रनेककरैकफवातसूपितदुषैसिरलावै ॥ सोक्रमसे
जनहैप्रतस्याइइसोविधिभेदनुवेदजुवेदसुनावै ॥३०॥ पूर्वरूप
सुनोतिसकोग्रतिसैसिरफूनहैतननटुटै ॥ ग्रावतहीकसुरेमउठा
वतउैरउपदवहाइनटुटै ॥ सोतनसर्वचलैतिसकैफिरहोतपु
डोपुडपीडनकूदै ॥ गोथनसेकभषैतवमानवलनलगैतवपीड
नसुदै ॥३१॥ दो ॥ सिरभपैम्हरनष्टरुचिपतलासावपतान ॥ वार
वारघूकफककाचानजलामान ॥३२॥ सोकफहोवैसंघनेजल

नि॰
१८७

मोडुवैरीनत॥सुधिहोतनसुरबर्न॥जिसपाकैइसविधिमीत॥३३॥चौ॥
पात्तीकनजलासुनिइसभाँख नासासौचौपत्तलाग्राव॥गलतालु
सकैजुगहोठ॥सयांनुभैपुडपुडीकोठ॥३४॥संसनाकबकैसुरघा
त॥स्पामबरनपीडाबहुगात॥पूर्ववायुबढावैतास॥होरनपीजै
हिमजलरास॥३५॥पैत्तकपीला ग्राबैस्राव॥नासासदैउस्नताभ
व॥पांडुरंगततनडुर्वलतहोइ॥त्रिषाक्षमनासामैजोइ॥३६॥कफक
तपांडुस्वेतजुरंग॥स्वेतरूपतननइसकेढग नैनहूटमैसेजा
होइ॥भपकेतननासिरभारीहोइ॥३७॥तालूकंठसीसस्रमहोठ॥बु
रषहोइपीडास्रतिगोर॥त्रिकुटागोलीगुडसोषाइ॥प्रत्तीस्पाइ
कफकोमिटजाइ॥३८॥प्रत्तीस्पाइजोबाढैवार॥मिरैजोसपिरक
रैविकार॥कान्चापाकग्राकसरूप॥त्रिकविंमनत्रिकमलकविभ
प॥३९॥सोनजलाबहुनाडुषदेइ॥तौनरसासडहेसालेइ॥सो

ग्रस्याध्यमाधवकहिदेत॥ तौधनवीजैकरसुभषेत॥४०॥ लहूकेप
नजलाहैजास॥ लहूचलैनासाधीत्तास॥ पित्तसमानलत्तनाता
स॥ सर्दभेषजैकरबुधिवान॥४१॥ अथसूनवैदकुष्टप्रतस्याह॥ सं
नियानकेसोनहिजाइ॥ पंचभेदमोत्विरजोरहै॥ नजलादुष्टता
साकाविकहै॥४२॥ लत्तनकवहूचलैकिलेद॥ नासाकुसककहूर
हमेद॥ कवहूंनासमूपरेजाइ॥ कवहोनासघलासोथाइ॥४३॥ क
देसासमैहैदुर्गंध॥ कदेगंधाविननासापंध॥ नजलाकष्टकहैवहु
स्विध॥ चौनैचोवमषैजेस्विध॥४४॥ मिटत्तननजलासंभेषजसंग॥
रहैवहुत्तत्विरदुषकोठंग॥ सोअसध्यजानेकविराइ॥ तानपुनकै
जैसुषथाइ॥४५॥ त्विरलैविगडैनजलारोग॥ तौक्रमउपजैकफसं
योग॥ स्वेत्तचिकनत्तासुषमरूप॥ सोसदेगकरहैदुषकूप॥४६॥
दो॥ नजलाजित्तजितपडत्तहैतित्ततित्ततनकीहान॥ भिंनभिंनम

त्रि०
१४८

गरजनकवीवजुरवैदइतग्रान ॥४७॥ दो० ॥ पडेकंानछत्रजेठाहोइ
रसाछत्रगंगानरजोइ ॥ पडेनैनछत्रनैनविनास ॥ रहनदेघउपजै
सवनास ॥४८॥ पडेजुवाछ्रसोजाठेह ॥ अगिमासेछत्रअगिमसुमंद
क्रातीछत्रककउपजैसास ॥ पडेहिहेहिलदिकीभास ॥४९॥ जोव
हिपडेखमनछत्रजोग ॥ रघाहिकउपजेतोरोग ॥ पडेकेसछत्रहोवै
सेत ॥ बलीपलतवृटाइतहेत ॥५०॥ पडेचर्नेछत्रकरकेकोप ॥ पी
लपांउआहिकदुबअप ॥ परैंजेघछत्रटुरानजाइ ॥ बहुआलसउ
पजैकबिभाइ ॥५१॥ गइनकेहेपठेमोंह ॥ उतरेनजलाभरदुषा
हि ॥ इत्यादिकवहुथानकजान ॥ जितजितउतरेतितनतितहांन ॥
५२॥ दो० ॥ गेहंहीकेमततरमकहे अत्रीस्पाइअधिकार ॥ जनानीभी
कहतहै इसविधवीहविस्तार ॥५३॥ अत्रीस्पाइपीनसजुगमभे
हसैकदुघहोइ ॥ अल्पहोषपीनसकहे वढैसनजलाहोइ ॥५४॥

दो० ॥ नासा अर्बुद सात प्रकार । वात पित्त कफ संनिउ चार । ल
हु मास मेद गात्तिमी त । अर्बुद लछन जिम अरह रीत ॥ ५५ ॥ नासा
सोज चार विधि देखि । वात पित्त कफ त्रिक मल येख । तैसे चार रोग श्री
विकार । वात पित्त कफ सेन सधार ॥ ५६ ॥ जघर पैत चारो रोग गणे तेत ॥
वात कफ पै न कफ कफ त्रिक कहे त ॥ लछन निज्ञा निजु कहे निदान । नासा
मै जैसी विधि मान ॥ ५७ ॥ दो० ॥ नव साद्र समन्नाविडी कहे फल उ
त्तम दूस । सभ्भर जन सम्रग्नि समन नजलाव नसमफ स ॥ ५८ ॥ इ
ति श्री ज्ञतीनिदाने ॥ २३ ॥ प्रकासे नासका रोग ॥ ३४ ॥ अथ पद ॥ ३५ ॥
मेह विनिश्चयः ॥ २ ॥ अथ पने ग रोगाधिकार निदान । अथ पथ्य
मने व सरूप कफ पने ॥ दो० ॥ निज अंग्र गछके उन्द सम अंग्र गल जुग
लकु साद ॥ चार तर फ अंग्र गल जुग्म कही नैनन मर जाद ॥ १ ॥ पलकै
विपनी से तत्ता क्रि हमत्रि छरह चार ॥ मंडल कही पत नैनन को अ

रमधाविवहार॥२॥पंचपित्तमैपित्तजोग्रालोचककतिसनाम॥सत
वसेसोनैनमोदेषनवाकोकाम॥३॥पंचमजनसैंइहमधोमसहरहा
लग्रनुहार॥सिधतेजनतिसप्ररहे पटलचारनिरधार॥४॥वहिर
पटलजलतेजकोदुतीपित्तग्रधार॥मेहाश्रितत्रितीयोरहेग्रस्थ
चतुरथविचार॥५॥चारपटलकीथलतानवकीतुचासमान॥र
सजलतधरग्रधारलषिजेजद्विष्ठसुभगपान॥६॥सततरग्रठहुव
नैनकेवर्कमुनिमतग्रैन॥वटसतत्रहुवनैनमोसुभ्रतदिवकेबैन॥
७॥चौ०॥वर्कवैनग्रठसततररोग॥तिसकोगनतीरसविधिहो
ग॥वारांरोगनजरकेजान॥होरहेइग्रागेतकमान॥८॥स्यामभा
गमैगिनहैचार॥स्वेतभागमैग्यारांधार॥एकबीसपलकैमध
जान॥विपलीविषैहोइहुवमान॥९॥संधिविषैनवजानोरीति॥
सर्वनेत्रगगतिसतेमीत॥ग्रवसुग्रनिमनिसनिकविलोग॥गिने

रमघटसगरोग॥२९॥वातपित्तकेदस दसज्ञान॥रोगगज्ञोदस
कफग्रिनमान॥रघर संगबोडसगिनवेलेत॥संनिपातपचीदुब
देत॥२१॥इसीजुक्रमसुअतिमतिठान॥आगेतनकदुबदोविधिआन
कुनदनकोंमेकहोनिदान॥चतुरवैदसुनितीजैकान॥२२॥कवि
त्त॥धपसैंगमैजलताहूमैप्रवेसकरेहरनेविलोकेअतिहेपत
अकासको॥सोवतनहिवसनिसजागतनिवेवेधमअवतप्रसी
नाअतिदोवेसीसघासको॥भ्रमतअंधेरीवीचरोकतवमनरनी
ववमनकतेंअतिवेबेरविभासके॥नमनचर्नअतिघपमैफिर
तमकठविसदविलोकेअतिबाइपतमासके॥२३॥भोजनकुल
पमाबवेठमकपतआदितैलकीतलाईधंमनवंअनबांनते॥
रोकतसवेगवाततविटमततैननजलवीर्जतकावेचौधवतअज्ञा
नते॥अमलजवीकअतितआरनालपीवतजोरदनअतीवसोक

कोपमदपानते॥ भोजनभुसकअतिमैथुनसोखीनदेहिहिनजोम
रतनारिपजघनहोनते॥१८॥ होवतकलेसनितसीसचोटलगेजो
केजितकीउलटताईसबमकोपेबत्ता॥ बावतमरचलालनैनको
विहालकरेचोपटरमावेद्विगफारफारदेखता॥ गेहजोविनाऽवो
अतिकलीसोलिपाऽऽवित्तताहुमेनिवासकरेचित्रवित्रविनरे
खता॥ विषकोप्रऽोगजलअधिकानिहारेनैनरोगकोनिहानकावि
गगजतीलेषत्ता॥५॥ दो०॥ सर्वनेत्रगतिरोगकोनामसनाऽभा
स॥ भिन्नभिन्नप्रथमेकहनलछनउपजेतास॥१॥ चौ०॥ अभि
संदकदुषचारोजान॥ तैसेजुगअधमेथकमान॥ नैनपाकसो
जेजुतसेक॥ हूजासोजेविनाविवेक॥२॥ हतिअधिमेथकउत
टीवात॥ सुसकनैनपाकेकविताात॥ अनवातफिररोगपकाव॥
अमलघुषितअैसीविधमान॥३॥ सिरापाततबोऽसरहरीत॥

सिराहर्षे सन्नतरै सुनमीत ॥ वात पित्त कफ रुधिर रक्त संग ॥ चार ग्रभि
स्यंदक इस विधि घिटंग ॥ २२ ॥ दो० ॥ जगभाषक इस रोग प्रतिसंप्राषदु
षतीजान ॥ विन येषन डषबहुबधै सर्व रोगकी षान ॥ २० ॥ चौ० ॥ स्त्रवी
त्रभै षंमद्रिगदेष ॥ रोम हर्ष घर षनाकीर देष ॥ सिरा तनपत ग्रसितै
नकरोग ॥ सुलनकभाव नै नैद्रुषघोर ॥ २ ॥ जगतग्रावै द्रिगसीतलरं
द ॥ वात ग्रभीस्यंदकराषै मंदू ॥ हलोज लसो भेवलगाइ ॥ सोती वेर
प्रात दुष जाइ ॥ २२ ॥ ग्रथ पैन कफग्रभिस्यंदकभेद ॥ दाघपाक लो वै दुष
षेद ॥ सीतनल लै वकछु होइ ग्रश्रसंग ॥ निकसै धूम गर्मजल ग्रासु ॥ २३ ॥
पीलै दे गसहै द्रिगभयस ॥ ग्रंधकार बैठे सुष वनासा ॥ कफ पर हलदे जल
सो लाइ ॥ फूल पट कडीलो दुषजाइ ॥ २४ ॥ कफग्रभिस्यंदकरो से जान
भयोनै नैन सो कापकिरग्रान ॥ गरमसंग लोवै कछु चैन ॥ घुरकठोन
लीपल सोत्तैन ॥ २५ ॥ चलै ग्रावहिम पिदललमोन ॥ पीड़ा है नदिन

त्रि॰
१५१

दुखहान॥ हलदहकी मलिवाखसलाइ॥ गंगयत्तेमिर्चाँघीदाइ॥ २६॥ ल
हुको पनैनैसूमिसँद॥ लोहजनैन लाजनल विंद॥ ग्रधिकलाल रोग
समहोत॥ पैतकल्लजनयुत्तकविरोगन॥ २७॥ लिवासोपथ्यमलौकैप
न॥ हलदीरसवनसोपतत्त्यान॥ फूलफटकरैधाकौठान॥ करैके
टलोसवदुखहान॥ २८॥ दो॰॥ विनमेषजनरजोरहै सोमर्ष लखिवी
र॥ वटैग्रधिकग्रमिसँदत्तैग्रधि मंपथकवहुपीर॥ २९॥ सवैया॥ नैन
नकोग्रधि मंपथ भयोतवलनन तासप्रकासकहै॥ मीटत्तनैनदुधा
डत्तपीडत्तभरवटैदुखजोसमभरै॥ रोगकहै ग्रधलोसकलौनचके
डत्तरेवनभखमहै॥ वातक पैतक कौरधरोग्रभिमंपथकविंजनचा
रधरै॥ ३०॥ फेरकुपथ्यकरै विनमेषजसालदिनेकलनैनाविनासै॥
वातवलीग्रभिमंपथविषैजिसदोदिनमेकदुनैननमसै॥ कोपम
योरुधरैग्रधिमंपथकग्रेथकरैद्विगपंचदिनासै॥ जोग्रधिमंपर्के

भयो चित्त को चित न देर फुटै ऽ षचं छपना सै ॥ ३१ ॥ दो ॥ लाल्ल दंग पो ग
अधिक सो जफुल जल नास ॥ घस्म विषै सचीचु भै नैन ग्रा मल भास
॥ ३२ ॥ मे दवे दना बुर कला षिजल निकसै आने द ॥ बर्न भलो लषनै
न को पाके मत्त कवि छंद ॥ ३३ ॥ ग्रा हु पे गैभरग ऽ जल पावै लघ रुष
नैन ॥ मे षज इह्यघ मंघ को धन पति दिषकै वैन ॥ ३४ ॥ चौ ॥ बुर्के
ले प अ्रल्ल बहुग्रावा ॥ गुलर फल जिम पकै सत्ताव ॥ उत्पत्त हि पाके
द्रिग सो ज ॥ नैन पाक से जै नु तषो ज ॥ ३५ ॥ सो य विना सबल दानता
स ॥ नैन पाक सो जै बिन भास ॥ लो दस पै दमुर्द संग ॥ छ्रित का सीला
गे दुख भंग ॥ ३६ ॥ बिन भेषजवा तक ग्रष्ठि मे घ ॥ स है निदं नरद्रिग इश
मे घ ॥ वटै पीऽ ग्राति जान ग्रसाध्य ॥ हत्त ग्रष्ठि मं पकषो रै व्याध ॥ २
७ ॥ वार वार फुरकै भून न ॥ पवन करै पी ग्रग्रंधि कै न ॥ अथवा पीड़
क तुन हि होत ॥ वात्त वि परयै सो का विगोत्त ॥ ३७ ॥ कूले जाके रषै

होइ॥ सुद्देगंनीद्रेसेलीलाइ॥ बोलेमिटैहोतसुचैन॥ सुकैपाकैसोहतनै
नाद्रे॥ सैया॥ जानरकैसिरकोनहन्दूयलजोरपुटै पुटहोवतपीर॥
केवलघातसुकोपकरै सुघघामिलकैपित्तकेकफनीर॥ सुजुगलो
चनपीरवढै सुघघवायकलोचनमैसबवीर॥ अंनसुवातमहादुख
दायकमेषजतनरकदेसतधीर॥४०॥ चौ॥ सर्वनैनदुतलोहतस्राव॥
लोइनपचत्तपीडबहुभाव॥ दाघसोथअपतिनीरचलेन॥ अमलरोगदि
गअमलघुबंध॥४१॥ बिनपीडावाकेडासंग॥ राजाजिमतताकेरंग॥ वार
वरचुनुरकेमंन॥ सिरैनपानदोगइहजान॥४२॥ बडोसमधनलाल
चकीन॥ वैदपासनहिहोइअधीन॥ सिरापातदुखविनाइलाज॥ विग
डजाइदुखबडोअकाज॥४३॥ चलैनैननैलहुअतिब॥ तपतपीडदुख
पावैजीव॥ नैनदृष्टतवहोवैमंद॥ सिराहर्षभाषैकविचंद॥४४॥ दो॥
वगलगंधत्रिसनैनमोचिपकनीरदुखहेत॥ धुर्कहोतकुयरैअधिक

गंगपतीकहदेत ॥४५॥ इतिश्रीपतीनिदानेना ४॥ प्रकाशेनेनाधि
कारेसर्वेनगति ॥२७॥ रोगवगलगंधी ॥ मोगविनिश्चय ॥१॥
मूष्यकस्पगानिमंडलो ॥ रोगनिदानमाहे ॥ दो ॥ कालैमंडलमो
वसैचारदेगसुनवेद ॥ भिंनभिंनलक्षनकहैकरैनजरकेभेद ॥
१॥ बुलजुतकेलजानइनविनबुलकोलादोइ ॥ पाकानेगने
लोसरेश्रजिकाचैंहोइ ॥२॥ चौ ॥ कंठजाकेउचेजान ॥ मधलेकस
वीजिममांना ॥ चलेउपतिसमोवहुसुष ॥ वर्एजुतकेलकाले
पाना ॥३॥ नजरनिकरनहितांकेजोइ ॥ श्रवैनगाढापतलाहो
इ ॥ विनकेडाफिरहोइनदोइ ॥ सोकेलामेषजसुबहोइ ॥४॥ स्या
मभागमेकोलापेष ॥ कतवानेनजलकरैविशेष ॥ संघचंदडत
कौलसरूप ॥ धमरंगजाकेकविभूप ॥५॥ पंडोपरज्ञेमपतलाजा
ना ॥ गगनजेमानेमेलग्रहमान ॥ श्रुवर्एकेलताकानाम ॥ स

नि॰
१५३

षसाधककहंगंगाकंम ॥६॥ जोकोलावडुड्यांहोइ ॥ वादलजिमपु
रवटलाजोइ ॥ फिरलैप्रहैरिकानपाइ ॥ कह्यसाध्यभाषैकविराइ
॥७॥ वटैनसवैघरेननोर ॥ जैसातैसाजानोधीर ॥ गंगायतंभैदे
वासोइ ॥ ताकोदाहलगैनकोइ ॥८॥ मधविषैक्षिसतीरनजान ॥ प
लग्राष्ठितंष्ठिरएकमकान ॥ सव्यसिरालसैतहवीचा ॥ नैनवंदक
रहैदुषनैचा ॥९॥ दोनुचभीतरलोहनदेंग ॥ निमवलिमघवाढै
इसढंग ॥ फिरकरग्रपनेवलकोपाइ ॥ सोग्रसाध्यभाषैकविराइ ॥
१०॥ नैनसंदग्धावैवहुगर्भ ॥ सवमपिडकाहूनेमर्म ॥ मेगेजिमको
लासंरान ॥ सोग्रसाध्यभाषैकविमान ॥११॥ एकग्रचार्यकोमतएम
कोलातीनरकैपरमेम ॥ ताकोदाहलगैनकोइ ॥ मातालकतबोसि
धनहोइ ॥१॥ दो॥ माषीहेममंगाइकै माषेसैघसिलाइ ॥ ग्रथवा
सोरायटकरीसैंधवकेलाजाइ ॥१३॥ दुषनीग्रावैग्रांषजिसतमे

ध्या दारू लार ॥ तौ उपजै ति है नैन मे सो क्षिरा ति रक्त श्याम ॥ १८ ॥ नैन अव

मुन पाक व्है वे की रीति ॥ सेत तु तर फै है मुत्र मैं तत ॥ अस ति भाग मै कौ पै

दोष ॥ अंगेष प कउ उपजै व हु अंष ॥ १५ ॥ एक दोष को हो वै सिध्य हूं दजवा

है व हुतै सिध ॥ या का तौ है मल को मान ॥ सो अस्त्र ध्या माधव मत ठान

१६ ॥ जो नर ति मि ष्या व्है वै वि लार ॥ नैन रोग मै व धै विकार ॥ तीन दोष वा

व हु को कोप ॥ अ पला के व ल वादी उप ॥ १७ ॥ कृस्न भाग गहि न जरस

मीप ॥ वक री रोग न जिम दाहि दोष ॥ पीडा हो वै लोहू तरंग ॥ पित्त ल

अंग लोहू न अंग ॥ १८ ॥ अजका रोग तास कै नाम ॥ न जर दिन सै उप

जै स्याम ॥ किस किस हूं प्रति वट लो जाइ ॥ स्याम से तदो भाग फ डाइ ॥

१९ ॥ अ थि क व टै दृग का हर वेष ॥ पाणी जिम ल मकै सु विष ॥ हम नै दे

वा अ पने नैन ॥ दस मस सो कटै तौ चैन ॥ २० ॥ एक वैद मत तरऐ से जान ॥

वर्द रोग या हि को नाम मान ॥ अजा नैन सम जा के नैन ॥ फटै स्याम ता

नि॰ १५८

करै अग्र चैन ॥२१॥ इति श्री जती निदाने २३ प्रकाशो कलमा गगति ॥ रोगविनिश्चय: २४ अथ पटलरोगगलनिदान ॥दो॥ सबके भीत
र पटल जो तिस मे उतरै दोष ॥ पुतली को तादनक दै नजर वेद
अतिरोष ॥१॥ पहलै तौ दीसै कछ्र वठैन दीसै च ॥ नैनन साला जि
म बलै न नजर गंध कवि सं चु ॥२॥ एक अचार्य कहत इम जल उत
रै प्रतिस्या इ ॥ पुतली उपर से दबै नजर वेद कारि वा इ ॥३॥ सो बतपी
त कफ लावर नुध मस र ठे तो जान ॥ इन पंचो मे वेदन्र पसे त वर्न
सुषदान ॥४॥ तीन वरष वा पांच मे पुष ला हो वै रोग ॥ मेषज हो न
हो जी एनै नुव नाव न जो गा ॥५॥ कोउ न गंध मस ल तै को दे षै क
कुइंद ॥ कहै वैद इहड्डु षडु षन्नाम मो तौ अग्र विंद ॥६॥ तिस कै उ
पर पटल जो ता मै दोष वढा इ ॥ रोग नजर द्विह व लुल खो विंज
न सुन कविराइ ॥७॥ दोहा ॥ तो द्रिग मै भ्रम ज्यो उपजै कच जाल

विल्लैकनतउंडनमाषी ॥ मेंडलारूपधुजाकरगरैतनकुंडलहूंसमका
तमतनाषी ॥ मेघफुहारसलषैघनवादरहूपग्रनेकसकैतनकेभाषी ॥
हूरसमीपसमीपकिहूरलषैभ्रमजोविनग्यानतमसाषी ॥ ८ ॥ दो ॥
धमरसौदैसैजगतकरकैजतनग्रनेक ॥ सबोहोकनदेषहैमेष
जकरोवबेक ॥ ८ ॥ त्रिलोपरलगतदोषकोग्याकनग्रवस्तुनिलेह ॥
ऊपरदेषेहेठनाहियुक्रदिषाइएह ॥ १० ॥ चौ ॥ जोकछुहोवेमोटारू
प ॥ घनकरतादतलषैस्थूलरूप ॥ नरकोदेषैवुतमलीन ॥ नैनकरुएना
सानैहीन ॥ १ ॥ जिमजिमवढैदोषदुषदाइ ॥ तिमतिमनजरमकैके
विगाइ ॥ निकटवस्तुदेषेजोहेठ ॥ ऊपरनजरहूरगतिठेठ ॥ २ ॥ जोपा
सेपरदोषटिकाइ ॥ वामेदतानजिहिदिषाइ ॥ नजरकैदताहूदिसा
इ ॥ पडोवस्तुदेषैनाहिकाइ ॥ ३ ॥ चारोतरफपुतलिकैदोष ॥ देषनकुं
डलसेकुलघोष ॥ जौमलपूतलिऊपरसंच ॥ महांद्रवयकेदेषैरंच ॥ ४ ॥ १८

नि॰
१५५

तिर्हांमलमलपुतलीपरहोइ॥ इकबस्तुकोदेषैदोइ॥ जोबहितेबप
हैदोष्यान॥ एकबस्तकोअैविधिमान॥ ७५॥ जेवकुमलमुजिविगडे
टेक॥ एकबस्तकोलषेअनेक॥ नजरकैरभ्रमरोगपछान॥ त्रि
फलासेवोदिनजुसो॥ १८॥ मान॥ ७६॥ दोप॥ सबतेउप्रपटल
जोताभैहोबटिकाइ॥ तिमररोगसोकहतकबिनाघबरिबइ
सभाइ॥ ७७॥ दो॰॥ नजरचौतरफीरोकीजाइ॥ लिंगनासभावे
कीआइ॥ अैसारोगनुगतकेनैन॥ ऊठाजगमानेसुषचैन॥ ७८॥
तमकरयुक्तिनैननलबिमंद॥ सजैताहेबिनुरोचंद॥ निरमल
मंहलषेजिहतेज॥ अग्निजालजिमलषेअमेजु॥ ७९॥ अबर
बस्तकछुमंदहिषाइ॥ किसहंप्रतिकछुनजरनआइ॥ के
चितकहेनीलकारोग॥ कहेकाचकाकोकोलोग॥ ८०॥ इतिश्री
जतीनितनेणरत्नप्रकासेपटलगति॥ ५॥ रोगविधिनिरूपणः॥

३॥ अथ यनजनगतिरद्रोगमाह॥ चौ०॥ अबसुननजरविषेष
टरोग॥ तैसेनजरवागषटजोग॥ तैसेलिंगनासषटजान॥ इह
अषाढसरेरोगपछान॥१॥ नजरविसेषैइसविधमेंन॥ वातपित्त
कफचौथासेनि॥ पंचमरक्तधरीजानविकार॥ परमलीनषट
अैसेधार॥२॥ वातनजरदुषअैसेलिंग॥ भ्रमतपहरयदेषेविं
ग॥ मलनअरननआभाकछुहोत॥ छेकोछेकलषेकविगोत॥३॥
पैतकसोसउजैबदजोत॥ बिजुलीघनुबजुपावकजोति॥ सबरं
गदेषेनि[illegible]मघोर॥ अथवादेषेनाचतमोर॥४॥ कफमलकोपे
जाकेनैन॥ स्वेतचिकनपेषेसबअैन॥ जलडुबतजगदेषेसैल॥ अ
थवादेषेजालेछैल॥५॥ लहुकोपदेषेसबलाल॥ नमसरूपअथवा
हरताल॥ हरेरंगदेषेवास्याम॥ जुगतदिषावेगंगानाम॥६॥ संनि
पातकाजानेकोप॥ जलडुबतजगदेषेउप॥ चित्ररूपदेषेसबरंग॥

रेकवसुदेषेवक्रुढग॥७॥ग्रगलरूपग्रथवाग्रेरूप॥हीनपदारथ
अधिकसरूप॥अधिकवस्तकोदेषेहीन॥नरकेअगलषेकछुबी
न॥८॥अथवादेषेचांदनरूप॥अैमललछनइहकाविभव॥
मोतीषरपरमधाममेमीर॥उत्तपाइघसमेटेपीर॥९॥पित्ततेउ
वाटैत्रिसनैन॥रूधरदुषावतकरेकुचैन॥तोउपजैनैनोमैरो
ग॥परमेलीनभाषेकविगोत॥१०॥ताकेविंजनभाषोअैन॥दिसा
पीतदेसरूजैगैन॥देषेउडतटिटालेभर॥पादपतेतुलषेकविनू
र॥११॥अवसननतुरसागवटेम॥माधवरिषीकहेविधिजेम॥
पवनरागनैनदुतिजान॥रंगमजीठीइहअहनान॥१२॥मलनैदुत
जानोपीत॥कफकोरंगस्वेतलविमीत॥रूधरकोपाजिसहोवेराग
लहुरंगलषिनैनाविहाग॥१३॥रंगबचित्रदेषदुतिनैन॥त्रिकमल
रागरसीविधवैन॥नीलमंडलाछैमितिआान॥रंगमजीठनतुर

मैठान ॥१४॥ नजरहोइ थूलसोहोइ ॥ परिमलीन फिरताकोजोइ ॥
जोकहांचमलहोवेषीन ॥ तोकछुदरसनग्रभूग्रधीन ॥१५॥ ग्रवल
नालिंगनामघट जाम ॥ नैनमंडलाहूजोनाम ॥ नैनवीचमंडलसाहो
इ ॥ मंडलरागकहेकविलोइ ॥१६॥ वाहीमंडलहोवेजास ॥ ग्ररुन
मजोठीजहिद्रगास ॥ बोलतमिटनकरकउठाइ ॥ फिरैनैनमोव
दुदुषहार ॥१७॥ वैतकमंडलनीलापीत ॥ कांसीसमज्राभासितमी
त ॥ कफमंडलविंजनलषिएम ॥ सघनहोइफिरचिकनातेम ॥१८॥
संषकुंदचंद्रमारंग ॥ चंचलसेतकौलदलढंग ॥ मलेनैनमंड
लवढजाइ ॥ जलकीवूंदजेमकफपाइ ॥१९॥ रुधरकोपमंडलदु
तलाल ॥ कौलपत्रजिमरंगप्रवाल ॥ संनिपातमंडललषिएम ॥
रंगवचित्रकहेकवितेम ॥२०॥ मंडलहोइसुभावकजास ॥ नजर
मंदफिरतीलषितास ॥ जिमजिममलवाढेतिमहोय ॥ मेघजमि

दैसहजवारोग॥२१॥ इतिश्री० रत्नरोग० विनिश्चयः॥ अथपु
नःनत्ररगत्तमाहः॥ चौ०॥ पैत्तकहगधद्रिष्टइकजान॥ कफसे
हगधहूसरीमांन॥ धंमहसतीजागनलेह॥ हरस्वजानिचौथा
विधिइह॥१॥ नकुलांधकंपचमलखिमीत॥ गंभीरीषटुश्रेसी
रीत॥ अवरहोइपुनभाखोंरोग॥ संनिमित्तकअनमित्तकजोग॥
२॥ हुइपित्तजुहोवैनैन॥ पीत्तवर्नसबदीसैगैन॥ पीलारंगनैनका
जान॥ सकलपदारथपीलेमान॥३॥ पित्तविदग्धद्रिष्टरसना
म॥ जुक्तिदिषावैरंगनारंगम॥ पनरहैहीकाहूजामेह॥ सहिभीसम
जवैहतजिबेह॥४॥ अधिकववढैत्तोपीलीदेह॥ पांडुरोगनहिजा
नोइह॥ कटुकतैलजलजाजहैन॥ ग्योरोगहमदेषानैन॥५॥
अथयंत्र॥ ॐह्रींश्रीनमः॥ देरर॥ ग्रुनेकांसीकेकटोरेमोतेल
कटुसंगपानीपाइकरहरेघासकीबूटीसोंलगावैसातदिनरो

गामिटै ॥ भषे प्रतिग्रंन हान दे षेसही ॥ दो० ॥ मुसक कफ परसंगा
रकै उलीके रोग पैनैन ॥ दग्ध पित्त सु षसातदिन वुध वैदक वैन
दृ ॥ चौ० ॥ जो वहि त्रिती पटल घस जावे ॥ दिवस विषेक छु नन्तर
न श्रावे ॥ रात्त समे वहु सीत विसेषे ॥ घटै पित्त तो समक छु देषे ॥
१ ॥ जिस दिन मैं पन वर रवैसी रा ॥ लगै नैन को सीत समीर ॥ तो भी
पित्त हीन कछु देषे ॥ दिवसो धाक विरस को लेषे ॥ २ ॥ कफ सौं दग्ध
द्रिष्टि जिसहोई ॥ ताके लछन रस विधि जोई ॥ संग नैन पुन होत स
वेद ॥ स्वेत रंग दे षे सुन वैद ॥ ३ ॥ जो वहि घसे पटल गनतीजे ॥ राती
द्रिष्टि तासकी छीजे ॥ दिन को सजै रस मच ढाई ॥ वढै पित्त वलमध ग २८
ट जाई ॥ ४ ॥ राती अंध या दिने सु जाव ॥ रोग अंध राता कहि उगभा
ष ॥ अब वरग्रंथ मति त्रै से मानो ॥ अंध राता सत मे द वषानो ॥ ५ ॥
जात उलाहा विप्र फकीर ॥ नाम मतं पंचो लषि वीर ॥ दोमाधव प

त्रि०
१५८

हिलेकहिहैनै।सातभेदखैसेगनलीनै॥२॥दो०॥जातिनामभो
जनभूखेषाचेभंगफकीर।तेधनहीजेमनकीप्रभजीमेटेपी
र॥३॥गोवरकारसज्ञानकेचपलावीजघसाइ।तौनखि
सदैनैनमोकफगंधसुनाजाइ॥४॥सवै०॥सोककरैचित
मोडरपावनताषचडेअतिबेचलधारे।हेबतभूतपिसाचनि
कोसिरपीडभईतपभूवजुमारे॥भोजनसाकभखैनिसवासुर
खावतगंधनविनाघ्रनसारे॥पावकसेकनजोअतिहीकिरिंग
धकजोकिरघ्रमनिहारे॥५॥दो०॥इनकानसोंद्रिष्टहतताइ॥
सकलपहारखधपहिचाइ।धमनैनहेबेजगआम।धमस्टद
रसीइसकोनाम॥६॥जाकीनजरतुछसीहोइ।हरस्वपहारख
दिनकोलोइ।करैकछुअतिनीजलगाइ।तोताकोलघुरूपदि
खाइ॥७॥तारेरूपचांदनागेन॥फुरकततहेखेसोनरनैन॥नैनरं

गनेउलजिउजान॥ जैमलकोइहरोगपछान॥१८॥ जोवहिग्रछ
रवाचैरीत॥ निकटकरेग्रतिदेषमीत॥ चित्रलषदिनकोसोदेष
नकुलोंधकरइहरोगविसेष॥१९॥ अधिकसाससतेउपजेरोग॥ न
जरविरूपीतोनरहेग॥ जांकीद्रिष्टसंकोचनहोइ॥ अंतरधसेस
नोकविगोत॥२०॥ अयवासहजसुभावेद्रिष्ट॥ अंतरधसेसुनोक
विईष्ट॥ अधिकपीडद्रिगहोवेकैह॥ रोगगंभीरीकहतकविवेद॥
२१॥ अवसुनहेअगंतकरोग॥ सनिमितकअनमितकजोग॥ सनि
मितकजोसिरसंताप॥ जिसतैउपजैसुनिकविवाप॥२२॥ अनिमित
कअवसुनो[illegible]दान॥ देषतउर्गवडेदेवान॥ दिषगंधरक्षकोहरसन
होइ॥ अनिसर्जेवहुहैवेलोइ॥२३॥ अपवावरफदेसकसमीर॥ दे
षेधपचटाकानीर॥ अनमितकसोहैलिंगनास॥ नजरनआवेकछु
प्रकास॥२४॥ म्रिगजिमनरकेनैनविसाल॥ रतवाविडुर्जेजिमद्रिगला

ल॥ विमलद्रिष्टहीसैदरदेपा॥ नउरनन्नावत्तकक्कुसमीप॥२५॥ द्रि
ष्टरोगगनतीमैबाचे॥ भेदतीसकाबिबैदउचावै॥ जैपुरकोनरम
लिंमंगावे॥ घरोनैनपित्तरोगघटावे॥२६॥ द्रिष्टरोगजिस्नरकैदे
वे॥ होइअबरककुदे भेओवे॥ अनुभोनैनसलाकापावे॥ गंगजती
निजरूपदिषावे॥२७॥ इति श्रीजतीनिदानेरत्नप्रकासेद्रिष्टरोग
भेद३० विनिर्णयः॥ अथसकलभागगतरोग॥१॥ निदानमा
ह:॥ चौ०॥ प्रथमगनेप्रसतनारकरेष्क॥ सकलरोगदृजासबवेक॥
कतजतीनचौथाअधमास॥ सनायुबरमपंचमगनरास॥१॥ सक
जअरजुनपिष्ठकअग्राठ॥ सिराजालपिडकांदसगाठ॥ ग्रंथविलास
बारमानाम॥ सकलभागगनसिबदुघधाम॥२॥ पसरजाइबिसी
नेजान॥ सपसामलालसित्तमान॥ रोगप्रसतारकजाकानाम॥ क
हत्तनषनसर्वजनश्रोम॥३॥ सकलभागमैउपजैस्वेत॥ कोमलबढै

सत्ताबीहत॥सुकलरोगहृसरोजान॥पुहिभीभेदनखुनपछान॥
६॥कमलपत्रजिमहेवेरंग॥स्वेतभागमैपलउछरंग॥कोमल
छतजरोगकोनाम भेदनखुनतीसरोतंम॥७॥गोलासाम्निहुप
क्तिजिमजैम॥बहुलहोइसोककुहैतेम॥अधिमासकरहज्ञानोरोग॥
दैव्याभेदनखनसुजोग॥८॥थिरसापसरेसकोदेख॥मांसरकठ
तामघवेख॥सनापुवरसिगनेरहपंच॥भेदनखनकहेकविसं
च॥९॥सुकलभागमैविंदुपछान॥स्पामस्वेतग्रैसेग्रहनान॥म
ज्याजैमरंगजिसदेख॥सिपीजिमसुक्तकरसलेख॥१०॥सुकलभा
गमैरोकोबुद॥ससेरुयरजिमलालीडुंद॥अरजनरोगनामनि
सज्ञान॥रोगगत्रतीप्रभरेकपछान॥११॥सुकलभागकोपतकफ
वास॥उपजैमांसविद्धजिमआइ॥मैलेहूपनजिमतिहहिद्रिषु॥वि
ष्ठकरोगकहतकविरष्ट॥१२॥सुकलभागमैजालेजैम॥सिरजाला

लउरसतनकविलेम॥ संतनकवहुवढतीजाइ॥ जालकरोगकहत्तइस
भाइ॥२२॥ सुकलभगसितपिडकाहोइ॥ ऊपरसिराचुनरधीसोइ॥
कसकसयामताहीसेताह॥ पितकारोगइसोविधिथ्याह॥२४॥ कौसी
ढिमसितग्याभाहोइ॥ अथवाकमलसरूपीजोइ॥ सुकभागमेंसी
दुतिभासु॥ रोगनामसोवैदवलापु॥२५॥ इतिश्रीनलीनिदाने॥२३॥
प्रकारोसुकगलभागगगति॥ ॥ निदानः॥ अथ संधिगति॥ टोरो
गनिदानमाहः॥१ चौ॥ पिपनीपलकैकीइकसंधि॥ पलकैसुकल
हूसरीयेकध॥ सुकलकृस्नगातितीजीजान॥ कृस्नदिष्टगतचौथीमा
न॥१॥ संधपंचमीचौथवकनीन॥ तटोग्रपांगमकोकविलीन॥ संधवं
धनैनोकैवीच॥ इसकरवोलत्तनराखैमीच॥२॥ इनसंधनमैउपजैरो
ग॥ नवप्रकारभाषैकविलोग॥ नामनलछनइसवैग्यान॥ मिनमि
नसनचतुरसुजान॥३॥ प्रथमरोगपूयालसजान॥ उपनाहकउ

बहुजामान ॥ संधस्याबदुख कारप्रकार ॥ सत्तमेदेगप्रवरणोधार ॥ ८ ॥
श्लेजीमेरोगस्याठवाएग जंत्रग्रेपनेमासरबभंग ॥ स्रवसुनलदन
तंकविसेइ ॥ केठकरेजगमूत्राहोइ ॥ ध ॥ पकेसोजसंधनिमेचाम
चलैराधसरइजिमचोभ ॥ ह्याललसकूलेपरहोइ ॥ नहिदरकाककहै
कविलोइ ॥ ६ ॥ नजरसंधिमेनेकीग्रंथ ॥ स्रवपाकतसुसबसजिमपं
थ ॥ उपजैवंदुपीइनहोइ ॥ उपनाहकदुखइसविधिजोइ ॥ ७ ॥ स्रप
चावैदकहैइसभांत ॥ संधनिविषैसोजउपजात ॥ ऊपरणिडकरबस
बसरूप ॥ इकउपनाहकइलकविभूप ॥ ८ ॥ दो ॥ चारमेदहैस्रावकेभि
नभिनसुनवेद ॥ दोषधसैजवसंधिमैचलैनीरछिगकेद ॥ ९ ॥ स्रपने
स्रपनेहतकेजेनरकमैकुपथ ॥ तेसेलदुनकरियुकतिसुनोवेदर
सग्रंथ ॥ १० ॥ नैनस्रावमाधवकहैसंधनिमैदुखदूव ॥ नेत्रनाडिकेवि
नकहैकोकविकहैनसरवा ॥ १ ॥ चौ ॥ चलैराधसंधिनिमैसोजा ॥ पकैवहु

वि॰
१६१

तसोत्रि कमल खोज ॥ खेत संघनो पितल जेम ॥ चलै स्राव कफ कोलख
तेम ॥ १२ ॥ लहू को प संध तेमै होइ ॥ चलै रक्त ताना साजो इ ॥ कधरस
ध स्राव पू वाल षि स्राव ॥ स्राव वा चलै लहु बहु भाव ॥ १३ ॥ संधि निविषै
धसै जो पित ॥ पीलै रंग चलै जल मित ॥ चलै गर्भ वड बल दो जेम ॥ मि
लै पैन पीडा खट तेम ॥ १४ ॥ सुनो घर्व नीत्त वेरंग ॥ दाघ पाक लघता
उ दंग ॥ पिडका उपजै पिस फिस जाइ ॥ संध निवि षै वै दइस भाइ ॥
१५ ॥ स्राव सुन स्रल जीत नो निदान ॥ क्रम सुकल संध नि ढि गमान
रोग पर बनी जेम पदान ॥ सत्त वरषी छि तन घहु सख दान ॥ १६ ॥ पिपनी
पलकै संधि गि नेत ॥ तिस मो उपजै सख मजेत ॥ स्राव वा पलकै सुक
लडु सोट ॥ तिस मो उपजै सख मकी र ॥ १७ ॥ सुकल पीत काले वहु रंग
वं डु बूरे वडु तडु षटे ग ॥ जो स्रे दर को जावै सो इ ॥ विगडै नेत्र डुष होइ
॥ १८ ॥ नो की नी कि पुन होत ॥ विरस्थि र नैन कर के का विगोत ॥ पिपनी

कीजइउत्रबसैजाइ॥ एकभेदयहत्रोमावाइ॥ ८॥ इतिश्रीयतीनिदाने
२३ प्रकाशोष्वरसंधिगामि॥ ८॥ रोगविनिश्चयः॥ ५॥ अथज्वरतम
गति॥ ५१॥ रोगनिदानमाह॥ दो॥ रोगज्वरतमाकेकहेएकबीस
इषधोम॥ भगवाजतीनिदानमैंभिंनभिनसुननाम॥ १॥ ठतस्रगी
नेकुंभकायोपकषर्तमरेत्त॥ असिवरतमांसकलमटअंग्र
ननामकहेम॥ २॥ वहलवरतमांवंधनवकलिअवरतमांज्ञान
पलकैकदूदमसमवगणकिलेदवरतमामान॥ ३॥ क्विनकिलेद
वरतमगनेषोरवातहतदेस॥ वरतमअरवुदसोलमासत
रोलखोनिमेष॥ ४॥ सोनतअसंग्रराव्यावरतमलगनउगनो
स॥ विसवरतमाउपिकुंचनोंगनतीयहयकवंस॥ ५॥ दो॥ पल
कैभीतरपिडकाटंग॥ अंग्रतरमुषलामैकैरंग॥ मिलमिलकैफिर
होवैरेग॥ मोटेसीज्ञानेडषयेग॥ ६॥ अथविकवटैजोलम्लीनैन

नि॰
१६२

मुषस्त्रिरावहु करैग्र चैन ॥ अथ बाहर भीहै मुषजोइ रुधरको पसे
उपजै सोइ ॥ ७ ॥ बुरक सो जा फिर हो वै पीर ॥ नामु तसे गो त्ताका वी
र ॥ संपूल तडी की भाषा नाम ॥ लहु लरल इस को मुष धाम ॥ ८ ॥ मोठ
ज सतन मंगाइ वै सो रै संग फुलाइ ॥ ग्रंजन के जत्त नैन मो रुध
र को पमिर जाइ ॥ ९ ॥ चौ कुंभी कै फल बीज समान ॥ पलकै षंत
र पिडका ठान ॥ भेदै ग्रवै नैन परभार ॥ ग्रैमलको दुषकुंभीकार
१० ॥ वहु पिडका स्वर सो जिमरंग ॥ ग्रवै पीड के दुगुर ग्रंग ॥ पलकै
को पत्त पित्त सु वाइ ॥ नाम पोथकी सो कहि ग्रोइ ॥ ११ ॥ षदरै मो वा
ही पिडका स्याक ॥ पिडका तिस पर होत ग्रनेक ॥ पलकै भीतर रउप
पटै रैत ॥ वरत मसूर करा सो दुषकेत ॥ १२ ॥ बीजंग्रारै रजे म
उठाइ ॥ सधरै पलकै को मल थाइ ॥ मद पीड स्त्रि पहै तवनैन
ग्ररसिवरत्नमा वहु दुषदेन ॥ १३ ॥ पलकैग्रंतर उठै ग्रंहूर ॥ तंवा

खडुलग्नाकडंभूल ॥ सुकलग्नरसिहैइसकानाम ॥ सस्त्रकर्मइसको
सुषथंम ॥ १४ ॥ पलकैउपरपिडकाहोत ॥ दाघलोदत्ताबैसमसोत ॥
सुक्ष्मकोमलपीडामंद ॥ अंजननामताखकौह्रद ॥ ५ ॥ पलकैफूलन
चारोपास ॥ पिडकाहोइसवरनोभास ॥ थिरटिकरहैकोपपित्तेवा
इ ॥ वहलवरत्तमासोकहिवाइ ॥ १६ ॥ केडुसुखमसुइचोभ ॥ पलकै
उपरसोजाबोभ ॥ गेनीमिलैनमीटैनैनैं पलकैवंधनवडोरोग्रचै
न ॥ १७ ॥ अल्पलोदकोमलताठान ॥ तांम्रंगदोपलकसमान ॥ अ
कसमानरुधरीलेहोत ॥ कालिम्ववरतमासोकविगोत ॥ १८ ॥ जोपल
कैमैपित्तसमेत ॥ दग्धलोकूहोवैमिलहेत ॥ तौकलेदजुतपलका
होइ ॥ पलकैपंककहैकावितोइ ॥ १९ ॥ अंदरबाहरपलकैरोत ॥ स्या
मरंगसोजेविनपोर ॥ पित्तापुत्रमहिजानोरोग ॥ स्यामवरतमासो
कविलोग ॥ २० ॥ बाहरसोजापीडाविहीन ॥ मिलमिलत्विपकैनैनग्र

धौन ॥ कहतवपाक पलकैवहुपाक ॥ प्रकलिंनवरतमासकैनझाकु
२१ ॥ जाकीपलकैधौनअधौन ॥ वारवारमिलजावैपोत ॥ अवरया
कसीपलकैजान ॥ अकलिंनवरतमासोकविमान ॥ २२ ॥ छुटैसंधि
पलकैइहहेत ॥ दोनोगनीमिलैकरैअचेत ॥ विनाचेष्टाइसवि
धहोत ॥ रोगवातहतकहिकविगोत ॥ २३ ॥ पलकैभीतरउपजैग्रं
थ ॥ पीडविनाजानेइसपंथ ॥ पलकैअरवुदलहूविकार ॥ अधो
भागलमकै[illegible]लगुधार ॥ २४ ॥ सिरानमेवधसेजोवाइ ॥ दोनोपल
कैरहैटिकाइ ॥ उघरतमीटतकछुनहोइ ॥ रोगनिमेषलिषनहिजो
इ ॥ २५ ॥ पलकैभीतरअंकुरएक ॥ लोहतकेमलवटैवटैववेक ॥ औ
जैसोताकोहेदनकीन ॥ त्योंत्योंवाढैजानप्रवीन ॥ २६ ॥ लहूसंगउप
जैइहरोग ॥ अंगतअरसिकहैकविलोग ॥ करनततलैजोकालगका
इ ॥ हेमसलाकानैनसुहाइ ॥ २७ ॥ विनापाककरडेअरसलन ॥ उठैग्रंथ

पलकै कै मल ॥ थुरक होइ पित्तल सौ जान ॥ लगन वरन तमा वेर ष्रमा
न ॥ २ ॥ ये त्रै मल पलकै मध विवेक ॥ सो जाकर है देको देक ॥ चलै नीर
ता सौं विषजे म ॥ त्रिष पलकै जानो कवि एम ॥ २ ३ ॥ वात पित्त कफ ती
नो देस ॥ पलकै गनी मै कर रोस ॥ दोनो मिल मर जावै वाल ॥ तै नवं
द होवै क्रमलाला ॥ ३ ॥ देषन सक तिमि रावै सोइ ॥ कंच रोग नाम
नी सहोइ ॥ ताको भेषज करो सिताव ॥ गंगय तोय के रल गैव दाव
३१ ॥ दो पलसी सा पात कराइ ॥ चपला तामै [illegible] गनी पाइ ॥ षापर मो
ती घसो मम सिर ॥ हेमसलाका मेटै पीर ॥ ३२ ॥ याही रोग इक वी सव
षान ॥ पलके भीतर रक है सु जान ॥ अव पल माके दोनो रोग ॥ सुनो
वैद त्हिन त्याग के सोग ॥ ३३ ॥ पल मा के [illegible] पर एक ही जान ॥ पलमा सं
तहू सरे मान ॥ इनके लक्षन भिन सरूप ॥ गंगय तो भुनवै द भूप
प ॥ ३४ ॥ वात कोप पिपिनी मै होइ ॥ धसै नैन कै भीतर सोइ ॥ जौ उप

रैजौमीटैनैन॥ लगैगोलकरैंग्रचैन॥३५॥ नैनभागजोकालासेत
विपटैविपनीकरडुषहेत॥ पदमकोपकविताकोजान॥ जगभा
षापडुवालग्रषान॥३६॥ एकवैदमतिभाषैएम॥ जिमनीमूलउ
टैकाचैतेम॥ सोग्रंतरकोवढताजाइ॥ हेतभागमोचुभकउठाइ॥
३७॥ जौपलकैनरषरषनकीन॥ चलैनीरडुवनैनग्रधीन॥ सु
वनेसोकवदेहन कोल॥ रोगमिटैग्रैसे पडुवाल॥३८॥ पषसमा
नकेलतनमीत॥ माधवकहैसुनोतिसरीत॥ पलकैभीतरवटै
तीत॥ जिमनीमूलउषारैनितु॥३९॥ विपनीकेकचउषरैजाइ॥ कं
डुहोतदाघजुतभाइ॥ पषमसंतहै ताकानाम॥ षोराकाइकहैक
विग्राम॥४०॥ दो॥ ग्रहरणविष्टाम्र निकैकीजैताकीवाट॥ कडुक
तैलसेदीपमैकाजलकरिडुसघाट॥४१॥ सागरयेनमिला इकै
ग्रंजननैनेकीन॥ लतीरेमकेवचनए पदमसेतडुषहीन॥

४२॥पुनः॥दो०॥ साबरकलीफलघसिमाखनकासीघाल॥सा
मरंगलेपनकरेपलकैसबदुखटाल॥४३॥पुनः॥दो०॥ साजमवि
दसपिपलीगैफलमज्यामेल॥धात्रीरसमेंजुनहरेबडोहोतदु
खरेल॥४४॥रुधमाग्रानकैधारकाघसोमनमीराजोग॥गंगजती
करजुक्तिनितनाहनउपजतरोग॥४५॥पुनः॥दो०॥ग्रंथबाजिक
लेनीरसोंप्रातकालछिरगधोय॥मेघजलिबीगरीबकोवगलगंथ
नहीहोय॥४६॥पुनः॥दो०॥सागूफेनमेंगाइकेफूलफटकरीमे
ल॥नींबूरसघसपाईयेसबैनैनदुखठेल॥४७॥पुनः॥दो०॥गेरीर
सबलत्र्यांबलेअमलीपातअफीम॥लालीपीडानैनकीग्रथमत
लेपहकीम॥४८॥पुनः॥दो०॥ प्रभातसमैजलसीतसौंनितजो
धोवेनैन॥हानदोहतगरीबकीगंगजतीसुखचैन॥४९॥पुनः॥
दो०॥माखनमिश्रीमेलकैजोनरखावेप्रात॥गंगजतीताकेसत

नि॰

१६५

सषीनैननअरुगात॥५०॥पुनः॥दो०॥मुंडीअरुमोजुगतसोंगोलीनि
कसपचास॥गंगजतीनितनेवर्षसुषीनैनबहुमास॥५१॥पुनः
कालग्यानमतयथा॥दो०॥जठरअग्नितनमोप्रगटिवाढ्यौ
ताकीचार॥त्रिषानींदनविकामरुचिचौथालेतग्रहार॥५२॥
धातुषीनततनअंग्ननाविनजलविनलोहूहान॥मैथुनाचवरोगहे
गनींदविनाहुबषांन॥५३॥इहभेवजुमतन्याइसोंचतुरकरेसब
हेतु॥कालग्यानमतन्योकहेअधिकअधिकदुषदेत॥५४॥इति
श्रीजतिनिहारे॥२३॥प्रकासेसऊपसेनेत्ररोगाधिकार॥द
अथतिरवोगनिदानमाहः॥सवैया॥रोकतवेगकरेमदपीवत
मछनमांसभषेवटमाषी॥भोजनरूषभषेनिसजागतसोवत
हैदिनहूषतत्राषी॥व्यामकरेबलछीनभयोजनरोगकिसी
श्रतिमैंथनभाषे॥भरचलैपनहीविनमार्गचोटलगेसिरमैंदु

गधं॥२॥दोहा॥क्रिम लगावे दुष जनमंजनंजंग कवि देत॥ग्रथवावी
रषटाइदे सिरदुषेरसहेत॥२॥जाकेमारी उद्भवताके सिरमो
पीर॥विषवैनग्रैसे कहे गगनुत्ती मनधीर॥३॥सैव॥माधववै
दकहे मुनिको विहरोग गिनेसिरके विधिग्रैसो॥वातकपितक
फोहंतहं दजग्गैमतसमोंतधिरी क्रिमितैसी॥सर्जु वातग्रथोसिरसं
षकवातग्रनंतमनूगन देसी॥गंगन्नती कविदेषजिके विनसीस
विषेतनुहोवतकैसी॥४॥हेत विनासिरपीर उठे जेसवातवठेक
फपित्तघटावे॥रैनविषेदुषहोत महाग्रति सो दिनमैककुंमद
लषावे॥नैनतपाइपुटीपुट दूषतसेलपडे भुसकौसिरनावे॥गं
गन्नती सिरवधनिनैसवरोग नग्यानचहामजसावै॥५॥पैतक
पावकजौंसडहै दुषहोत लगावतजेमंग्रगारी॥घ्राणसडेग्रुति
धंनिकसैवहुनैनसडे दिनको दुषभारी॥संषविषेनसजौं फडकै

जिमपिंजरमैखगलेततउडारी॥ त्यातनमेसुखहोतससीलखिचे
दनलेपकरैदुखहानी॥६॥ कोपमरोकफकोजिसकैसिरसोऊ
वटैछिगकूटनमाही॥ आकउजानपुटीपुटमैसिरसीतलता
दुखमंदलखाई॥ पीडवटैमुखसोजुचढैसवघूमरहेमुखवो
लतनाही॥ गोजलजीवकपत्तमहोबधलेपकरेदुखहूरमिटा
ही॥७॥ दो॰॥ कृतजसीतहूघातमनिवीर॥ जघरवसासिरकफो
समीर॥ जाकैसिरइहहोवैहीन॥ सोकार्नसनवैदप्रवीन॥८॥ सि
रमोजाकेलागेचोट॥ अथवासस्त्रलगेतनउट॥ अथवानाइन
सरलाई॥ लहुचलेबहुनिरबलपाई॥ ९॥ अथवामैथुनकरै
अतीव॥ अथवाभोजनबुसकसहीव॥ इत्यादिकजोहेतअनेक॥
जासोंघालीसीसविवेक॥२॥ छैप्रविरतासिरऊपजैपीर तपैग्र
धिकदुखसहेसरीर॥ मर्धवैदजआवेकोइ॥ स्वेदनिकढिकरा

वेसोइ॥ ११॥ धूम्रपान विधि है नस बार॥ करे विरेचन लहु निकार
इनसों पीउ जाद्यै घोर॥ सिर पटके बहु करहै सोर॥ १२॥ इसका भेद
हू सन्नाज्ञान॥ घार सीस की कहे जहां न॥ पांचे सात ते दिन दस बार॥ पं
द्रावीसो पचीसार॥ १३॥ इन दिन पीछे उपजे पीर॥ कुलपडे वरछी ग्रि
मधीर॥ षांनपान सुधम लै सैन॥ एक पहर बाचार कचैन॥ १४॥ व
है अधिक दिन एक हु तीन॥ फेर स्वस्थ होवे कवि पीन॥ भेव जंता को
शुद्ध दिवाइ॥ बढै तरो सिर ते दुष जाइ॥ १५॥ दो० ॥ चडे घार त्रिस
दिन अधिक स्याम होइ मुष भेस॥ ताको हारू न हिलगे कीजे पुनह मे
स॥ १६॥ एक वैद्य अैसे कहे सिर मो होवे जेनु॥ जो लौ वहु निकसे नही
तो लो होइ न सैन॥ १७॥ होलछनजां मे मिले देह जासिर की पीर॥ सद
ग्रंमे भेष जु करे तौ सुष होइ सरीर॥ १८॥ सिर मो को पत्त है बागि कउ
ठे पीउ बहु जो म॥ औ लछन ताम्रे सहाधर्म भेषजी पोस॥ १९॥ लहु को

नि०
१६१

पजांकेबढैसुबिंगंगवकुपीर॥बिंजनपिनसमानलषिहाथसहे
नहिबीर॥२०॥सैषा॥जानरकेसिरमोबिगरैकफपीनसबाकि
घोजीवघसावे॥भोजनकीटकरेसिरकोअतिपीडवघेसिरसल
चुभावे॥कोउतसीसुसिरेसिरकूटतनाकविषेक्रिमरूपदिषावे॥
नीरचलेदुषहानिबढैबिनचातुरवैदसकैनमिटावै॥२१॥सइवा
तप्रकासककरेकबिंगंगजुतित्तिसहेनवजावे॥ग्रीष्मकीदिनसारद
मौकेनुबीचबसंततसमेबलपावे॥नारिमजैप्रकीगमसोंफिरभो
जनरूषमषैहिमतावै॥हारविहारकरेनजथाविधिगैमलसइ
वातउठावे॥२२॥कुपै॥उदेहिवाकरसमेपीरासिरमंदरिषावे॥
जिमजिमरविकोतेजपीडतिमतिमबलपावे॥अर्धसीसवासक
लनैनभ्रिकुटीफटकाई॥पडेकुहाडीसीसजीवकोकछुनसुहाई॥
बांनपांननहिहोइककुसिषरदुपैरीछेत्र॥फिरराविउतरेहेठको

घटेपीरजसवंत॥२३॥ स्वैया॥ भवरितेजमिटेरविकोजवरंचकमा
तनहीसिरपीरा॥मानसवस्तभरोमनचिंततराजसहीवरहेहित
वीरा॥केचितवैरकहेदुतीपाविधिराजिदुखेलखचंदसमीरा॥
वातहरीसुखचाइकभेखजहैकिसहूंप्रजिसीतलनीरा॥२४॥दो०॥
किसहूंमोहनचिकनसुखखंडकडाहेहूय॥साध्यरोगइहजानक
विकिसकिसहोतअसुध॥२५॥जीनहोखकीपीडरहगेगजतीकह
हेत॥जाडाहीजैमंत्रपडपीडमिटेरसहेत॥२६॥कुंडै॥ग्रंनतवात
सानियुक्तिजीनमलसिरमोहूसै॥पीडाउपजेघोरतायत्रिभाग
लससे॥नैनभवाकेवीचपीरसंधिनिवहुहोवे॥कंपनगंडसुहेस
पीडग्रतिथिरसीजोवे॥ग्रंनंतवाततिसकोकहेजोवेदककविगो
त॥हनुस्थंभहनुग्रहिकरेहरैनैनकीजोति॥२७॥दो०॥जाकैसिर
मैउपजैगैमलकेसवरोग॥जंगजतीघीजैकरेसोनरग्रातमजो

मोताव॥गहरयोकेदुषउत्तरेश्राप॥तीनदिवसलौदयोजास॥
धर्मराजपुरकरेनिवास॥५०॥माधवविषमतश्रैसेश्रान॥ती
नदिवसलौवचेश्रमांन॥तोभेषजजिसदेवैदं॥गंगगजती
जससहाग्रकैदं॥५१॥सिरकेसवदुषनासनहेत॥नस्यलेपये
कोकहिहेत॥जुगवंदनसाग्रकीऊग॥कटफलरसघनीसास
मभाग॥५२॥दो॰॥जलमोघससिरलेपकरसजेवात्तमिटाइ॥
त्रिपुटमिलनसवारसुभगंगगजजीसुषयाइ॥५३॥गंगगजती
जिमजगतभ्रमविहानेदभ्रमसेक॥सिरदुषभ्रमतमग्रधर
वितिमयहिलेपविवेक॥५४॥इतिश्रीजतीविहानेजयोविंस
तस्थानेसिररोगाधिकारः॥अथस्वेतहागफुलवैहरीनि
हान॥दो॰॥मांसदूधदधमांसजुतदहीदूधमिलघात॥वरन
विषेजोपलभवेयौलोहोवेगात॥१॥वसदरंगनुचहोतहैस

जैसह योनजाइ॥ अथवा पूर्वकर्म तैसे वेत्त कुष्ठ उपजाइ॥ २॥ लाल
खेन हुत्ति कीट ज्रिम जाके सकल सरीर॥ कुलवै हरी तं ताको कहे जो
वैद्दकमत्त धीर॥ ३॥ कुष्ठ मै का विकहत तस बस्त्र पर वैद्दमजिं ग्रन॥
लहू पित्त कफ तीन मिल उपजे दुष हल जंन॥ ४॥ कुष्ठ साध्य रह
जान ल्है क ठन भेषज्रौ सिध॥ रोग घटै जो देह मै गेग गज्र त्ती वहु सिध
५॥ इति श्री रत्न स्थले कुष्ठाधिकारः॥ अथ वी ला निदान माहः॥
दो०॥ घटी रात्त रहि त्ती ल वे भोजन करे विरुध॥ न ज्र रल गे ज्र न द्दु
ष्ट की वी ला हो इ प्र सिध॥ १॥ पीड होत्त घुं नी वि खे मा न स लो टत रो
म॥ पकठ कटी किर लीजनी भृ प्रत्त ड फे जे म॥ २॥ पे हर रो कु वा चा
र मै अथवा दिन रक होइ॥ रहे हि वस जो त्ती न लो सो दुष सो ला
होइ॥ ३॥ त्तात्त काल दुष हरन को भेषज होत न हात्त॥ गंगगज्र त्ती ज
ठ सुबहनै नो हे बी ग्राप॥ ४॥ मेज्र यथा॥ वी ला च डि ग्रां जे ड

नि०
१३०

कुडीमांसलपावडजेडस्लोहेकीघैवडीसारकावाणवीलावठकी
ताहैरानगुरकीशक्तिहमारीभक्तिईस्वरमहादेवकीवाचाफुरे
वाचोटलेतोभिश्रेगलेकंमसोईजोसचासांईकरेह्रींनमः॥अ
थविध॥धागेचारलेकेवेर॥७॥इकरकउग्रपडेचारोंअंगुठे
वंधनकरे॥फेरउठकेजंडवावेरीजलेजाइकेधागेबोलकेगे
रेपगा॥३॥वा॥५॥बावेपीछेमुडकेदेखेनहीवीलाहोरसलभीजा
वे॥सवासेरचूरीगरीवमखेकोंदेवे॥शुभमस्तु॥अथफिरंगग
ठीआनिकानमाह॥१०॥आतसहोवैजासकोरसकपूरपिरवा
इ॥पारदथोथासंखीआकाचाचीकनाभाइ॥१॥इनपरसीतलजल
पीवैगमथ्यावाकरइसनान॥सीतलभोजनपथ्यविनरोगफिरंगमि
टान॥२॥धसेजाइफिरसेधमैउठैसंधिसवपीर॥गरमहोइतनस्याम
तावादगंठीआवेर॥३॥चेततनताकोस्वलहैअरसेदनवधुधार॥

रुधरनिकस्रनमीकहतगंगयतीहितकारन॥६॥ इतिश्रीजतीनि
दानेर॥२॥ प्रकाशोवादगंगयतीपूरन॥ अथवीरयरोगमाह॥
दो॥ बालग्रवस्थाकैविषैजोससकरैअयास॥ हस्तकर्मसोहोत
हैसववीरजकोनाश॥१॥ नाडीसिथलवलहीनतिसभागसमेइ
वजाइ॥ संगततस्खनहिहोततायिरस्ततापूततनतृष्णाइ॥२॥ अथरोग
वीरयुविषैवाततपित्तकफतीन॥ हूंदजवैलुश्रिसंननैसातमल
बोप्रवीन॥३॥ रोगग्रष्ठमाहोततहैपरनारीकेसंग॥ धरकावैठैउ
रविषै॥ स्तुरततनचेलेश्रंग॥४॥ यंत्रमंत्रसोहोतहैदेहनपुंसकजा
स॥ तांकेभेषजतीवनैदोजैमेत्रनिकास॥५॥ इतिश्रीश्रीश्रीश्रीश्री
पंडितपूजसहर्तेरामनतशिष्यकविमंगारामयतीविरचितेज
तीनिदानेकरनरोग॥१॥७॥ कर्नपालरोग॥८॥ सर्वनासकारोग॥
३॥९॥४॥ नेत्ररोगमूल॥१०॥ भेदहोरभीइनकेसरवकहेसिर

नि॰
१७१

रोग॥२४॥ नेदइनके होरभी लिखे कुलवह रोगवीलाको रोगनि
दान याद रोग गेठिया हरषत रोगा॥१॥ साध्य असाध्य लछै उप
स्नानिदान त्रयोविंशत्तमः प्रकाशः॥२३॥ अथ चतुर्विंशत
प्रकाशलोरोम अैसे शत्त षट त्रिक मति निसम्पष्टु तत्रसित विये
ता॥ प्रभव बुगिरहि मरविगिरतु देवी रभगवंत॥१॥ तापनमुनिम
निम्न गमकातक सितदसभास॥ सुरसरिदसरघ हतक वीचार
वीसके दास॥२॥ नारि पुरषके रोग सब छुगाइ कहे गैवीस॥ मिब रो
ग अबनारके सुनो छुगाइ दुजवीस॥३॥ अथ नादै प्रदर रोग निदा
न॥ दोहा॥ मनोहर॥ भोजन विरुध पेट गिरत कैवाई गंनवावत
अतीव अफिरवार वार षान तै॥ मैथुन करावै अतिभोजन बुसकजा
कै लंघन अतीव नरीवे सरकी षान तै॥ लागै तन चोट सोक चिंत
मोह मे ससि सभारको उठावै दिन सेन मदपान तै॥ कारन प्रदर

रोगसंदरीभ्रकोकरैनित्तगंगयत्तोसपीकौनसदाहै सहानतै ॥६॥ दो॥
भरजोवनमैभावनीतांकोपत्तमरजाइ ॥ अथ हिनिससेवैमालकौतो
भीप्रदरकराइ ॥ अथ ॥ वातपित्तकफसंननतैप्रदररोगगनचार ॥ सर्वप्र
दरमैहोतहैकफकौकवाथअधिकार ॥ ६ ॥ मनमधुमंदरसोचलैन
धरनीअरपरवाह ॥ तनतृटैपीरंउठैप्रदरकहैकविवाह ॥ ७ ॥ वातप्र
दरथोडाचलैबुसककेनकत्तपीर ॥ धोवनजैसोमासकोअंगलेम
लखिधी ॥ ८ ॥ पैत्तकपीलासमलागरमलहुजिसमर ॥ दग्धपि
त्तडुतलीलमाचलैनिरंतरभूर ॥ ९ ॥ कफप्रदरकफपांडुताचिकना
पिदलजैम ॥ अथ वातंडुलनीरसमचलैलहुकविएम ॥ १० ॥ तीनदो
बजामैमिलैमधुहृत्तहलदीअंग ॥ मूर्द्दसमत्तिहमुसकलाखिमज्जा
ज्जिमहुतमंग ॥ ११ ॥ सोअसाध्यमधवकहैजोवैदकमतईस ॥ भेष
जत्तासनहीजोमएमजोईसकिरीस ॥ १२ ॥ चलैनिरंतरस्रावअति

त्रिषा दाघ जुर संग ॥ लहू हीन दुर्बल भइ रज पुरदामाग्रे ग ॥ १३ ॥ चै
पा ॥ कामन देह न भीति ष्टि हन मसां जिषि डीक चिसी ससुहं द ॥ अं
ग सु भीच मकै दुति सो जिम तारएकै ग एसे स्रानंदकंद ॥ नैन कुमा
द नि मो दभरे विगसै मुष कोल षि उजल चंद ॥ गेगय तीर वि होन
उदै प्रदरी दुष तौ सबला गत मंद ॥ १४ ॥ दो ॥ पिव लतवा हन मीग
नीरु मपी सै से इ ॥ अंजा द्ध सो ककी ए हे मा से सुष हो इ ॥ १५ ॥
छपै ॥ प्रदर रोग वडु बलै लहू पभा नहि जावै ॥ दुरबल होवै गा
त पील माकछु न सुहावै ॥ त्रिषा मर्दा दाघ मोह देहि भ्रम होवै ॥
तन मलीन वेक वाद कहै मुष नै न न जोवै ॥ तिस तें उपजै सकल
दुष वात रोग दुष पीर ॥ चतुर नारि सेवें न हि सीतल नीर समीर
॥ १६ ॥ अथ प्रदिर रष्ष रज्यान माह ॥ दो ॥ मास एक बीते जबै दिन प्रावै
तन नारि ॥ ताके रोग न जानीए सो दुष मेटन हार ॥ १७ ॥ नहि पि

तलननहिदाघदुखनिर्मलजलहूनिहार॥ नहिपोडानहिवेगवडु
तोनदिवसलोसार॥१८॥ पांचदिवसमाधवकहैकेपंडतमनसा
त॥ ताकेमधुधपवानदितुअधिककहैदुखगात॥१९॥ सकलहू
रसलाखसमदिनकोलहूनिहार॥ रेचकपावैजलविषैअरुरंग
नहिधार॥२०॥ एकवैदऐसेकहैचीजवहुटीरंग॥ चिकनहोतपिद
लननहिमधुसुगंधसोहिअंग॥२१॥ नहिसीतलकछुउसनहैजो
वहिलगैडफूल॥ रंगचढैनहिजासकोसोदिनुतनसुखमूल॥२२॥
कहिप्रदराप्रदरकीलगेवहुकेरंग॥ जावहिपावैजलविषैहोइवि
वरनकुरंग॥२३॥ इतिश्रीयतीप्रकाशेअ४॥ नारीरोगप्रदररोग॥
धाभेदविनिश्चय॥१॥ अथयोनरोगवरन॥ निदानमाहि दो॥ वीसरो
गकहियोनिमैहिंदीकेमतिमाहि॥ सिलेमोनलखमानमिलधर
नरोगवरस्माह॥१॥ गंगयतीकविकहतसवप्रगटकरीमतिदोइ॥

हंसैसरहैनवैदवितसतनप्रभह्मयाहोइ॥२॥चौपा॥प्रथमवैदहिंहीवह
देत॥योनिरोगवीसोगनलेत॥पंचवातनकेपांचोपित॥पांचोकफ
केजानोमित्त॥३॥पांचोजानोसंनविकार॥रोसेगननीवीसोधार॥
अवमैइनकाकहुसरूप॥प्रथमनिदानसनोकविभूप॥४॥औषो
वांकोम्रावैयूल॥सेष्याताश्वकरैदुषमूल॥प्रतिवकुसेवैसीत
लनीर॥अथवोमैथुनभजैसमीर॥५॥इनकारननितहोवैदष॥
अथवादुषचलावैमुष॥किसदेवकीहोवेद्रिष॥अथवारूंधनेम
लैइष॥६॥सतीउतसौकनुकुलदेवी॥इनभूलनगंतकरेवी॥जिसन
रकौहैरोगकिनेगी॥अथवारोगसजास्कुसेगी॥७॥जाकोवीरजसेवै
नीर॥तिसकोउपजैसरवविकार॥एषमउदावृतनामैरोग॥सनो
वैदतजमनकासोग॥८॥भगमोम्रावैचिकनीजग॥अवकहुवाकछु
होवैलाग॥वडोजोगदिनम्रावैतास॥रोगयतीनिजम्रात्मभास॥९॥

दृजो वंध्या है दूषम सूल ॥ कहीन ग्रावै ताको मूल ॥ विपलु तकै गती
सरे जान ॥ सदा पीर भगभीतर मान ॥१०॥ यदि पलता कौ पाइ खता
स ॥ मैथुन इछा रहै न जास ॥ पंचम यो नवा तूला जान ॥ तिसु केल
दान सुनग्र नुमान ॥११॥ सूचीचुभै सूल नित होइ ॥ यो निविषै ग्र
कडै वाजो इ ॥ योन कर कसा ताकी देषि ॥ कहो कहा फुर कैका विले
ष ॥१॥ सो ॥ प्रथम वात दुषचार तिन मो इह सवल वतान ॥ पंडतवे
द निहार पंचदोगगन वातके ॥१२॥ चौ ॥ [illegible] लोहन तषद होवै जास
दा घष्म धिक दितम्रावै तास ॥ इत्तीवात नेभु इवडसे ग ॥ वीरजर
ज व्हो है भगश्रेग ॥१४॥ जो तीसंसु नीरित कैकाल ॥ सो भक रै इखजा
न मै वाल ॥ पुत्रा दीन चौपील षसाइ ॥ रहर है कै भग उदर गिराइ ॥
॥१५॥ एक वैद मतति स्रैसेवै न ॥ तिरै दूत धीजन मै चैन ॥ माधव को
मत्तल हूचला इ ॥ सुता हतबुसर सगीर जाइ ॥१६॥ पंचम भगस्रात्ति

नि॰
१७८

पितलज्ञान॥ अधिकदाघपाकीसीमान॥ बढैदोषबहुचडहैताप॥
रितकैसमैकरैविरलाप॥१९॥ सो॥ प्रथमपितडुषचारत्तिनमो
इहसभलदन॥ पंडतवैदनिहारपंचरोगगनपैतकी॥२०॥ चौ
अत्यानंदप्रथमदुषघोष॥ मैपुनुषिनषिनचाहैतोष॥ दूजीभ
गकरनीदुषमार॥ योनिविषैउपजैअंकूर॥१॥ ते॥ कोलकरनका
जेमअका॥ लहुपितपलग्रथानिहार॥ गंगयत्तोत्तिसुकरैउ
पाइ॥ लहुओककैदैनिकलाइ॥२१॥ जितीचरनलतनईग॥ भो
गसमैभगदेखैलिंग॥ तौभगतैजलबुंदचलाइ॥ ऐसेचरनारो
गकहाइ॥२२॥ अतिचरनाचौथीमनवै॥ पुनपुनमैपुनकरैउमे
द॥ मसतघोरकासंजैजेम॥ अतिचरनाभगदेषोएम २२ कपला
योनिपंचमीप्रीत॥ पितलजिमत्तेवकनीवहुसीत तोमैलैवैपु
रुकअतीव॥ तौपतिसुसकैचहैसदीव॥२३॥ सो॥ प्रथमककेडुष

वारतिनमोभेद्रहलवान॥ पंडतवैदनिहारपंचवरोगइहकथाग्र
थकार॥२६॥ चौ॥ सेनपातकेपंचोरोग॥ सुनोवैदचितलाकेसोग
प्रथमरोगषंडाइकजान॥ मेमेरहतकामनीजान॥२५॥ कदैनक
रहैरितिनुग्रसनान॥ मैथुनसमैकठनभगठान॥ संदरवाहररति
कसैतिग॥ लगैकरकसारेतीसुग॥२६॥ स्रैसेमाधवकोमतजा
न॥ मुखवैथनंतरकोलेवान॥ षंडाकेवृधाकाहिदीन॥ तीनभेद
गनवैदप्रवीन॥२७॥ जन्मकेजनचीजानेअरुक॥ काकंकेजनीकृजी
टेक॥ मतवनसातीजोतिनदेह॥ इनकेविजनहनुसुनिलेह॥२८॥
जन्मकोजनेदेप्रकार॥ इकषंडाइकवंध्यानारि॥ षंडाकेपुनदो
भेद॥ इकरोगनइकभोगनवैद॥२९॥ षंडरोगनसोजोवियोगन॥
रेचकमेमेरितविनहोत॥ भोगनषंडाकुवरमनेक॥ सोषावस्त
कायोनिलाबिठोका॥३०॥ भोगनमैसबउपजेअर॥ गंगायतीवहुस्त

इन्दर ॥ भाग विना कित गै सो नाहि ॥ लौ एहि विना चक्र फिरै तार ॥२१॥
बंधन लदन कुच ससव मल ॥ फल विन ता को आवै फूल ॥ दूजी जा
नो बंधा काका ॥ एक रतन जन मइ विपाक ॥२२॥ मत बहुत तो जोइ
हसरत ॥ जनन जनहारी केन्या हूत ॥ अब भेद ता को थिर जान ॥ अ
ठराता जाग इस विधि मान ॥२३॥ इक ग्रह राता दिन का जान ॥
आठ [illegible] बुसि लोकर है हान ॥ दूजा अष्ट राता गन मास ग्रह म
तो ने करै विना पा ॥२४॥ तीजा मैं सो वरस गन लाइ ॥ चौथा गर भोग
रभ गिरा इ ॥ रोग पंच मास जैसे रत ॥ जो वै का की मर है रत ॥२५॥ तै
से तठा वाम उर जान ॥ जो वै हत सकां की हान ॥ रोग सात मान
र को हूत ॥ वाल वध रै मरै प्रसूत ॥२६॥ रोग अष्ट वा विष्मा गि
नाइ ॥ लोकी मति कक लिखी न जाइ ॥ इर्वे रूप की ने जिन वडु पा
प ॥ तिस को उपजै इह संताप ॥२७॥ जन्म वो जनी ख गदा इ ॥ औ

रनकोदास्तसुखमांऽ॥ दूजारोगग्रंऽनेजान॥ करैभोगबहुनर
बलवान॥३८॥ तौलनरनीकोदेकविलाय॥ त्रिषनजेमलमकैकहा
भाय॥ तीजारोगविब्रतामान॥ मलयोनिचौऽगिब्रुतिजान॥३९॥
कैथाडुषसचौमुषठान॥ योनिदेकमसतनप्रमान॥ रोगपंचमाति
मलायोनि॥ सवलतनकोजानोकेन॥४०॥ सो॥ ग्रसाध्यमाधवक
हदत॥ स्तनउपजैमेसेहेत॥ दानपुनतीरथव्रतनेम॥ रोगयु
नौलौउपजैषेम॥४१॥ सो॥ प्रथमकहेदुषचारतामोभीसभलदि
न॥ येदिनकरेविचारपंचरोगगनसेनको॥४२॥ दो॥ एकनारदि
सलषीगगयतौनिजनैन॥ संदरकुचनालेरजिमफूलनदिषि
कसैन॥४३॥ पंचरोगजोसंनकेइनकेहीजैदार॥ माधवदिषिके
सेहैऔरनकेउपचार॥४४॥ बीसरोगयहयोनिमैमाधववैदकि
दान॥ षटप्रकारदुषधरनकोग्रबभावैलकमान॥४५॥ चौ॥ एप

नि॰
१२६

मधरनमै उपजै कास॥ दूजो धरनकु दैजलस्राव॥ तीजा रोग धरन
उलटाइ॥ चौथे मासधरन परस्राइ॥४६॥ धरन पंचमी रोकै फूल
तहीं अनतनाया डुखमल॥ सूजो वैदइसक प्रकार॥ इनसो गरभन
धरै नारि॥४७॥ दोहा॥ वातधसै तिसधरन मोसी तलता हि सुभा
व॥ जौ पुरखारनु कदि तजै सिरमो पीडल खाइ॥४८॥ दूजो वहु जल
धरन मै भोगसमै सुतिनारि॥ वीरज बाहर केदालै पसुली उपजै
पीर॥४९॥ त्रिजो धरन उलटीपरै लके इलप्र हिनानन॥ भोग करै
उतरै पुर्व पीरत्वि है डुखमान॥५०॥ चौथा डुखरो सेलखो वटै धरन
वैमास॥ भोगसमै कै दैलखै कुटिसा पलडुख तास॥५१॥ रोग पंच
मा धरनके हेत फूलकेभ्रास॥ विना फूल कतफल लजे भोगे वर
खपुवास॥५२॥ वटी धरन डुखभतके मेदमेदगत फूल॥ स्यामला
लपकाता दिडतक देमवरनी ताल॥५३॥ पंचरोग जो धरनके तिन

कोमेबतुधार॥छ ठोविबेहुबभतकोमंगजेगहितकार॥५४॥सै
षा॥मेबनहेषमिटेभगकोजिमचानुरबैहकरेविधिसोइ॥सेम
उदेसगनेसमहेसजिनेसधरोहिहेओइ॥तानकरोअभिमान
विनाचितेहेहसतोहजसाधविलोइ॥होरजपोहुगौविधिसोग
रसेवसहासतसंतनहोइ॥५५॥दो॥ईस्वरलिंगीनुषमलेअपवा
विषयकुमार॥वितुमेजनगुडसोभषेगंगजतीसबकार॥५६॥इति
श्री॥२४॥प्रकासेजोनिरोगमतिहिंदी॥२०॥मलस्रौरवहुज
मेदजनानोमतिरोग॥६॥भिनभिनविनिश्च॥:॥२॥अथजो
निकंदरोगनिदानमाह:॥दो॥सुनोवैदचितसमझिकरजो
निकंदअरुनान॥होतोफउसांकैबिबेछेलेकैसंठान॥१॥सर्वलो
कजुगमेकहेटणतजेसोधंन॥चाररोगतामेबसेवातपित्तकफ
संनि॥२॥माधवरिषअेसेकहेनघररराधसमरेग॥काटिलसुफ

लकैबीजसमजोनिकंदरसतढंग॥३॥पवनकोपताभेयसेतऊथाफू
टततपीर॥४॥बढैपित्तजोतासमैहाघरागजुरधीर॥५॥कफविकारति
लफूलसमतांकोरंगनिहार॥कंडुहोवेमिछ्ततरमैथुनचाहैनारि॥
५॥जोनहोवजामेमिलेलछनसर्बपछान॥संनिपातकोजानकेजो
निकंदहुबखान॥६॥चारशेगमाधवकहेरूपादिकसबहेत॥ढुंढ
जभीतौहोत्तहैगंगनतीकहिदेत॥७॥इतिश्री॥२४॥प्रकासेजोनि
कंदविनिश्चयः॥३॥अथ गर्भदोष॥दोहा॥वमनप्युकफ्युकीसा
दतनुरोमराजनचहीन॥वनमुखस्यामगिलानताखिनअटोपअ
धीन॥१॥कुखभारमुखपीरसमाप्रगटगर्भकोलिंग॥जिसनारीकी
कुखमैहोतगिलानउतिंग॥२॥चढेअफाराजासकेहेखिगर्भकोरु
ध॥नाजोदृतिसजानलैवैदविसारदमध॥३॥चौ०॥लगेचोटवि
तमैकुंधरे॥पानअस्ननारीबहुचरे॥उसबारबहुमैथुनसेवे॥

मा गेग मन भार सिर लेवे ॥ ५ ॥ असवारी ते जो तीय धरे ॥ ऊचा वोते
बहु रत करे ॥ बार ग्रजीने अति बहु धावे ॥ लगें अचानक आवे ॥ ५ ॥
वमन विरेचन उष्ण मसावे ॥ गर्भ पात इह हेत लषावे ॥ चले गर्भ
लोहू के रूप ॥ सत संग ज्ञानी कवि भव ॥ ६ ॥ दुती गिती चौ मास लगा
त ॥ गर्भ स्राव भाषे कवि भाइ ॥ पंच मास ते छठे सुज्ञान ॥ गर्भ पात
संग्या कवि ठान ॥ ७ ॥ लगे चोट विष्या तन सैन ॥ पीड निग्या हि हेतइ
बहै न ॥ इन सों काचा गर्भ डिगाइ ॥ जिम तर को फल पौन गिराइ ॥ ८ ॥
अथवा कुलटा जो है नारि ॥ गर्भ पात की भेव तु कार ॥ गेरे गर्भ पारी
का चोग ॥ लगे वैद को पाप अघोर ॥ ८ ॥ हे ॥ गर्भ पात के समे मो मि
थ्या हार विहार ॥ मजै नारि तो तन विषे बाढै भर विकार ॥ १ ॥ कुलटा
बालक प्रति हने तो तन पाप लगाइ ॥ पाप संग दुख ऊपजै दुख मर
नरके जाइ ॥ ११ ॥ सात मास लो गर्भ मै बालक परन होइ ॥ जो नारी तो

नि॰
१२८

कोउनेनेतोजीवेसबसोइ॥२॥ इतिगर्भवात॥ अथमूढगर्भ॥ दो॰॥
निउनिहानकोपेपवनकरेगर्भकोमूढ॥ सूलजोनिउठराहिमे
मूत्रसंगविटगूढ॥१॥ विगुनवाइसैकुटिलहोइसंष्यावहुतप्रका
र॥ जोनिद्वारआइटिकेमाधवअष्टविचार॥२॥ चौ॰॥ ऐकसीसशो
रोकेआइ॥ ऐकजठरसोंहीरेवताइ॥ कुवडेज्रिमशेकेत्तनलोइ॥
ऐकहेहप्रवरतनहोइ॥३॥ केचित्तऐकभुजासोंफसे॥ केचित्तहैभ
जसोंआधसे॥ केचितनितरकीगतिकोंपाइ॥ कोउलटामुषग्रीवा
धाइ॥४॥ केचितपासेसोंप्रवृत्त॥ जोनद्वाररोकेकविमित्त॥ पहिम
तमाधवकोहिएआन॥ सुश्रुतिअवरआठविधमान॥५॥ दो॰॥
औरतंत्रमतिइमकहेचारभेदगनमीत॥ तैसेउत्तौनिहानमेभा
षासंकृतीत॥६॥ संकीलकप्रतिषूरउगवीजपरघउगनचार॥
भिंनभिंनउसमंवतहिउजैसेहिएमेधार॥७॥ जोप्रथमैभुजचर्न

सौंसिरसौंसंगीहोइ॥ कीलेजिमभगद्वारमैकीलकजानोसोइ॥८॥
हलपैरजाकेप्रथमकोपाकेसंजोग॥जोनिद्वारहीसेप्रगटप्रतिषु
रसौंकाविलोग॥९॥जोभिसिसोसिरसंगहीआवेभगकेद्वार॥वीज
कावत्तासोंकहेजोवेदकमतधार॥१०॥जोनिविषेअस्थितहोवैवज्र
जेमजोजीव॥प्रघनामहैतासकोभाषेवैदसदीव॥११॥कासाहिकद्
भजासमैहोतउपद्रवभार॥मूडगर्भताकोहनेगंगजतीनिजतनू
र॥१२॥ इतिमूडगर्भ॥ अथउद्रविलकनमाह॥ दो०॥ जोकाजिक
रवोनहीसोकाजेजिनकीन॥ अथवामानसदुषलगेरोवेपिटही
न॥१२॥ अथवावोहतीतापनापीडजउपजेरोग॥ ऊंचेतेगिरउद्र
मैमरेवालवहुभोग॥१३॥ जेहनारीकोअंगहीमसिराछिद्रतक
जाइ॥ लजानासेउद्रथैनीलीनसालबाइ॥१४॥ मरेवालतोउद्र
मैजिसकेलछनइह॥ स्वाससविषेदुर्गंधतापोडनीलमाइह॥१५॥

अंगसमनतचहीनतादुर्वलदेहीहोइ॥उदनकुरकेतासकोअंगसेलछ
नजोइ॥१६॥ इलुहम्रिन॥ अथमकलमाहा॥ दो०॥ जोनिछूकछोटा
होवेलगेकुषसोंवाल॥लहूपौनकीआपदेसलरहेसवकाल॥१७॥
सर्वेन्नपघरउनतासतेपंडवर्नतनहोइ॥ठहरजाइहैमासतैफिरचाले
कविलोइ॥१८॥दुषपहकसोजीवहैउपजतहैदुषदेन॥जोलगवहिज
मैनहीतोलगहोइनचैन॥१९॥औघकहीहैतासकीहादसवर्षप्रमा
न॥फिरमारेसोमातकोमाधवकोमतजान॥२०॥ चौ०॥ अवसुनिहे
हधनंतरिवानि॥गर्भधरेवहुसीजलवान॥कुलटानारिदुषवहुर
मे॥अतिमैथुननितजागतजमे॥२१॥तवपौनवहुकोपकराइ॥जो
निद्वारसंकोचनथाइ॥फिरअंतरकोघसहैवाइ॥गर्भसेमोपीड
उठाइ॥२२॥रकेछेकगर्भसेतनो॥तोनारीदुषपावैघनो॥जोनिसं
वर्नरोगतिसनाम॥ छैडकहतजगभाषाग्राम॥२३॥जोवहिहोत

कवेप्रसूत्त॥ चलेरुधिरबहुनिरबलहूत॥ फिरिहै सौसमरुत्रासै ताम
उठे सूलमकलज्जिहनाम॥२४॥ दो०॥ सूलकुक्षिबहुजुरत्रिषाचले
लहूनिरधार॥ स्वासकासहिचकीहोवेसोजमभगनीनार॥२५॥ इ
तिमेकलरोग॥ अथचिकित्सउन्माहः॥ दो०॥ गर्भधरेजबकाम
नीकरेनरोतेकांम॥ भावमिश्रजैसेकहीतैसेगिनोजुनाम॥२६॥ चौ०॥
रुदनबेठेनबमलेनवटना॥ नेत्रांजनलेपनिबहुअटना॥ अति
अस्नानदिवसबौहसैन॥ ऊंचासबदहसनबहुबैन॥२७॥ बेच
लभ्रमिवनतपुरवाई॥ इहसबकार्नहीरेवताई॥ इनकोसेवेम
हैनारी॥ तोबालकतनहोइविकारी॥२८॥ रुदनकरेतिसविक्षि
ततैन॥ नबठेठनतबहीनकुचैन॥ वटनामलेबालतनकुष्टी॥
अस्नानलेदुखिसमुसहा अगुष्टी॥२९॥ दिवससैनबालकबौहसो
वे॥ अतिधावेचंचलसिसहोवे॥ ऊचेसवनेबधरसिसजानो॥

नि॰
१८०

बालप्रलापीभरखबानो॥३१॥हसेभरत्ताकीकुनमात॥उष्ठंहत
रसानिकसात॥भमिषननसोषलत्तिपढानो॥उनमत्तीघुरबा
घुजुजानो॥३२॥रहेपषषाबेहितकारी॥त्तोबालकत्तनसुषी
बिचारी॥३३॥श्रवसुनरितकेसमेबिचार॥करहेमिथ्याहार
बिहार॥३३॥उलटबाइनधरीमिलिश्रंग॥कुबडाकानाबंजांध
ग॥बामनवधराहोसिरलंग॥विकृतरूपवालत्तनभंग॥३४॥
श्रघवाजनमैभतश्रनूप॥रहत्तश्रंगकक्कुजनेसतूप॥श्रथवा
जनमेहंत्तसमेत्त॥सबकुलषावेपुरवजरेत॥३५॥बनचरवि
कुश्रासापजनावे॥कूबमोंडवाइसनकुलावे॥इत्यादिकजोरू
पश्रनेक॥विग्नवाइकेलषोवबेक॥३६॥बाजाकोपितमात्ता
रोगी॥सोइबबालकत्तनप्रतिजोगी॥जन्मरोगप्रापतिलगेनहा
ह॥गंगजुतीनिजुत्तपाविचारू॥३७॥दो॰॥हंतनपुंनकीजेप्रबल

साधहि जगनपजु ॥ हौलतन नहितोरं मभजिग्र भमेटै तननउ
जा ॥ ३९ ॥ भरलहू तन न जासके वा नाला घुलटाइ ॥ सोतिप वहुकं
म्याजु नैपतन न उपजे काइ ॥ ३६ ॥ तांको भेषजु हीजीपै होनो मास
वताइ ॥ सतन रहिन वा मास त्रिक त्रै दिन करे उपाइ ॥ ४० ॥ भंग
बीजु निगलाई पै मासा मासा रोजु ॥ केना बीसउ न होत है सा तमा
सलौ षाजु ॥ ४१ ॥ गर्भ विषै जिस नारि को छर्दि अलकुरहोइ ॥ भे
षजु तिस त्रिदुसमन न करती षनकरे न सोइ ॥ ४२ ॥ इति सुत्र वृकि
तविनि सूपः ॥ अथ प्रसूत रोग माह ॥ चौ ॥ १ ॥ होइ प्रसूत तजु नै
तन वाल ॥ सिथल सर्व देह होत तिहि काल ॥ षावे दुग्ध विजघ ग्रहे
२ ॥ सीत न लपौ न भजे जलधार ॥ ४२ ॥ मिथ्या ताहि करे उपचर्न ॥
होइ कलेस कि सूका मर्न ॥ विश्वास न अति भोजन षावे ॥ रोग प्र
सूत इसौ विध आवे ॥ ४३ ॥ अंग मर्द ज्वर थवात न कंपे ॥ त्रिषा तात १

तनुगुरवहुजेपे॥सोजनमललागेअतिसार॥जाघमर्ठोआदिनि
हार॥५४॥होतअफारावलषेवांहो॥जनतेतेलीमषमिठाहो॥
विगडवातकफओमरलावे॥सूतरोगनारीदुषपावे॥५५॥
दो०॥सूतरोगजिसनारकोकष्टसाध्यसोजान॥षीनमांसब
लअग्निहुतिसोजमघरनिवास॥५६॥मरउपद्रवजासमैच
लेलहूप्रवाह॥सकानुरबलषीनजिसतजोवैदलषताह॥५७॥
विगुनवाइनिजहेतसोफूलनष्टकरिदेत॥मिलेपिजनतहि
पीरअतिचितआवेकविकेत॥५८॥जनमसमेजिसनारकोसी
तलहोइसभाइ॥ठहरठहरवालकजनेअटिकरोगकहि
वाइ॥५९॥इतिप्रसूतरोग॥अथस्तनरोगमाह॥दो०॥
जोवनव्रिपतनभमिकोपाइकरेगजिहोर॥उरमैहेगढर
चतहैसंदनुगकठोर॥५०॥कंम्पावालातनविवेकुचरम

नीकसंभोग। धमनीकेमुखजनकरहेयातेहोइनरोग॥५१॥गर्भ
धरेजबनारिबाहिअथवाहोतप्रसूति॥धमनीमुखसहजेभले
तेकुचमैदुषहूत॥५२॥दुग्धसहतवाविनदुग्धबढेदोषकु
चठाम॥मासलहूकोदुष्टकरिपचरोगदुषधाम॥५३॥वातपि
तकफसंनिते आगंतकसठनाम॥बाहिरविद्रधीजिमउठैवा
तपीरदुतस्याम॥५४॥सडेपित्तसोलालदुतकफसोंचिकनक
ठोर॥मेदपीडतनुरेणसमचिरपाकेतजिसोर॥५५॥सर्वल
छनाजासमैसंनिपातकोजान॥होइनकेवललहूतेकुचकोदु
षदहमान॥५६॥आगंतुकदुषहेतनहलगेचोटलकुहाटि॥
अथवाउपजेसलतेथनदुषसहमरजाट॥५७॥गर्भपातजिस
नारिकेकुचमैरोगउठाइ॥सोअसाध्यदुषकहतकबिवीरे
सोंमिटजाइ॥५८॥जोबाहिजावेबिगडअस्त्रिक्रिमकीउतपति

नि०

१८२

होइ॥ राधपरै अंन्नतरघसै सो अस्रसाध्यकविलोइ॥५८॥ कुच्चमैदु
बजोउपजैप्रथमेकरोउपाइ॥ वाटवांधीजारकोफूटैमल
मलाइ॥६०॥ मंडनपलइकअग्रानीवेजिगुनातैलमिठास॥ अ
ग्निसिधकरवाईऐमलमसभवर्णनास॥६१॥ इति स्तनरोग॥
अथ दुग्धरोगमाह॥ दो०॥ पुष्टतहोइअन्नरसधातकेजोसा
र॥ बस्तनसैकुचमैमधुरदुग्धनामसुविचार॥६२॥ गुरविदगधमे
जनमवैबाइपुरातनअन्न॥ इनसोदुष्टतदुग्धतियसातभेदसवि
मेन॥६३॥ प्रथकदुदवैदोषामिलडंअधविगडैइहसेन॥ ताको
पीवैबालतनरोगअनेककरेह॥६४॥ अथपतानवाषितासकी
प्रथमैवातसरूप॥ स्वादकसैलपीलालमैडुवमिलैकविभूप
॥६४॥ पैतकपीलीराजिकाजलमैहोइलषाव॥ अमलसल्लना
कटुकताचषैतेइहभाव॥६५॥ कफकैडषतचिकनअतिजल

मैषाईजोइ ॥ पिदालजिमनीचैटकैगुरवीमीठाहोइ ॥ ६६ ॥ जुगल
तैनहुंदनकहतमैलदननात्रिकसाल ॥ जौतिषउपजैडुग्धमैपित
नजौवैबाल ॥ ६७ ॥ सुष्टडुग्धमीठासुषदजानमोएकसहरूप ॥ पां
डुवरनडुतिग्रैरवलिज्ञतौलिदानसुन्दरूप ॥ ६८ ॥ इतिश्रीचतुर्विं
शतिकस्वपबालरोगनिदानमाहः ॥ दो ॥ तौनमेदलषबालकेडग
धकरैइकपौन ॥ हूजाषाबैग्रंनकैतौजाउभयमकान ॥ १ ॥ सुषग्रं
नग्रन्थडुगधसोमिसतनुहोवैपुष ॥ डुग्धग्रंनडुषतनभषैतैवाल
कतनपुष ॥ २ ॥ चौ ॥ वातडुषसिसपीवैडूध ॥ सतनकानविटसरैमत
ष ॥ वाततरोगउपजैसुरमंग ॥ स्वामवनेत्रषाकिसंग्रन ॥ ३ ॥ पानवि
कारपीवैवाल ॥ पितरोगउपजैतनकाल ॥ तनपरस्वेदत्रिषामल
भिंन ॥ उमसंग्रगसवपितकलिंन ॥ ४ ॥ कफडुषसिसपीवैदीर ॥ लाल
श्रवैजीदवहभीर ॥ कफरोगसोजामुषबैन ॥ जडरस्माडाकैवहपै

नि॰
१२३

न॥४॥ दुंदमदुष्टपिवैपैवाल॥ हुंदनरोगउठैतनसाल॥कष्टसाध
सोरोगपदान॥बनुरवैदथरदेषोध्यान॥६॥सीतपानकेदुष्टतसी
र॥पीवैवालकविकलसरीर॥ मछपीरसवेबहुवाल॥ मैलतनपु
तबावैकाल॥७॥ग्रवसुनलेहकुकूनकरै॥ तौरदोषसोउपजैमै
न॥पलकैभीतरशुरकउठाव॥बारबारजलनैनेश्राव॥८॥तिशुकि
सुमसतनासांनैन॥जगलहापमोमलैरुचैन॥ग्रुरकप्रमादहै
नहिसो३॥पलकैभीतरनसकतिनहोइ॥९॥कहतकुरकरैताको
लोग॥तहूभरैपलकैयोग॥मिश्रीसोबहिदेतनिकाय॥गेगयहतो
सुषपावैवाल॥१०॥ अथपदरगरभकसुनोबिदान॥ मातगर्भनीदू
धपिलान॥तिसतेउपजैइहरुग्गातेक॥वमपतेदाक्षिसनतरेंदू॥११॥
म्रत्रिसादभ्रमलसोग्ररोचि॥वटैउदरकफकोसोसाच॥दूर्वदिग
ग्राहिडीतिसनाम॥पाचनदीपनहैसुषधाम॥१२॥तालमेंसमे

काफिकरकोप॥तालूवंटउपजैदुषउप॥ताहिपरोभ्याइहकृविम
प॥सिरमैतालूदेषोकूप॥११॥पत्तलासरैत्रिषाउदुजीर॥मैनकं
ठमुषग्रीवाघीर॥तालूपकैनपकेवैदीय॥कहसेगफीवैककथीर
१८॥स्त्रुघविसरपदुषकरेप्रकाश॥करैवालकेप्रानविनाश॥क
मलजैमकछुलाल्लसुपैद॥सिषरतालूमधउपजैवैद॥२५॥तीन
दोसमिलिकरैकुलेश॥स्रवाउपजैसंषप्रवेस॥उत्तरसंषतै
हृदकोम्राइ॥चलैहृदैसोगुदकोधाइ॥२६॥चलैगुदासोवस्तम
कान॥हृदैगेडमालधुरठान॥स्त्रम्रतमत्तगातेउलटीचाल॥म
लपदमडुषसंगीकाल॥२७॥कफदूषेमैमनेजुरोग॥श्रम्नजमलक
स्माहिस्तनयोग॥श्रौरजुरादिककहेनिदान॥सोदुषसववालक
तनमान॥२८॥दो॥जिस्तनारीकैतनुविषैगरमीलहुविकार॥ति
सवालकप्रतिहोतहैवुरनासोदुषभार॥२९॥ताकालेनिकसैतनवि

वैनीलाजर्दसरीर॥ पाकतफूटैथिरउठैरोवैवालग्रधीर॥२०॥ चंदनलाल मंगाइकैतपततवैकेसंग॥ जलसोलेपलगाईएवरनामीदुषभंग २१॥ मुषपाकैजिसवालकोथलजिमजीभसमेत॥ दुगधयानसोकरतनहिवहुरोवैडषचेत॥२२॥ ताक्रूवायप्रसिधजगमेरोगनामपहिचान॥ एलाकथचोनीसदैमुर्दासंगदुषहान॥२३॥ दो॥ अथचंदरेकासुकोनिदान॥ त्रैदिनमैसिसुकोतनुहांन॥ जिसकीमात्तावहुदुषपाइ॥ वडेकचालग्रनेचवाइ॥२४॥ इत्यादिकग्ररहेतग्रनेक॥ इनसोवटैकलेजाटेक॥ तोसिसकासामुदुहेतलालेत॥ थानपानककहोतनचेत॥२५॥ दो॥ गोरोचनकोग्रनिकैरलीइकानिकलाइ॥ ग्रथवाडाकीदसतदेरोगडभामिटजाइ॥२६॥ दं तनिकालैवालजवतौभीदुषउठजाइ॥ वासोजुरग्रतिसारकौसहजेकरेउपाइ॥२७॥ इतिश्रीवालरोगविनिश्चयः॥ ग्रथवालग्रहनिदानमाह॥ दो॥ जिसवालकप्रतिग्रहग्रहैलदतनसुनोसमान॥ गंग

जति प्रगट करै माधव को मत्त ठान ॥२७॥ सवैया ॥ लछन बाल समान
करै छिन चौंक उठै छिन आसन रोवै ॥ जो नष दंतनि सै तन दाइ निमा
तन विदारक की चित जो वै ॥ उपदेश तदंत किरोड तन हू जत जिंभतम्र
नि चलो वै ॥ दंतनि होठनि को पीर ककाटन ये ननि रैन रोग रत सो
वै ॥२८॥ वा मुष ते कत बोल सकै नहि जागत है निस भ्रंग सुजावै ॥ मिं
न खरी विरमन तन लखै तन मनि लहू सम सौध जु आवै ॥ भोजन पान
करै न जथा विधि जो सब ही ग्रह चिंनु जनावै ॥ तौ तिस मात पिता अ
न वोरत साधनि [illegible] को दिज देव पुजावै ॥२९॥ दोहा ॥ अब सुनि भिंन भिंन
ग्रह रूप ॥ एक नैन तन [illegible] ॥ कर कंपत पीसै दंत ॥ आधी द्रि
ष्ट वंक्र मुष संत ॥३०॥ लहू गंध पिर का चौथी र ॥ अत्यंत रुदन नहि पीवै दी
र ॥ सकंद ग्रस्त सो बालक जान ॥ शिव पूजन सो लखो कल्यान ॥३१॥ सं
ग्यान छकै न मुष षीन ॥ संभाल है जु रुदन अति भव ॥ लहू राध की आवै

गंध॥ सकंद त्रिगोइहलदानधंध॥२२॥ ग्रसे साकनीइहम्रहनान॥ सिघल
श्रृंगचय चक्रितमान॥ मोन गंधतनलषो प्रस्वेद॥ हो इव तुरषीव्रणव
षेद॥२३॥ फोडे सम्रमरसरीर॥ दाघपाक सिसकै बत पीय॥ मांसदधीम
दराबलदेत॥ चौराहे दीपक सषहेत॥२४॥ ग्रसे रवतीव्रणवकुदेह॥ पं
कगंधरुधरीसवे रोह॥ मेदवरचजुर२३पजै दाह॥ बीरषंडदीजै सषला
ह॥२५॥ ग्रसे प्रतनाजुरम्रतिसार॥ तिर्दोदेषतत्रिषाम्रपार॥ रदनाविष
नचितनैंदनसाइ॥ सो बालकगोदानकराइ॥२६॥ म्रधिप्रतनन लदन
जुरकाषा॥ वमनगंधरोवेइकमास॥ नर्दत्रिषा चहिपीवे दूध॥ म्रतीम्सा
रुताणेकविसरुध॥२७॥ सीतप्रतना ग्रसे जुबाल॥ कासषीनतनमा
वै डाल॥ नेत्ररोगकंपतदुगंधि॥ म्रतीसारधनदीजै गंध॥२८॥ मुषमंड
तग्रहलागैजास॥ प्रसंनरंगमुषसुंदरभास॥ मन गंधतनषावेमर
संत्रितनसडगोहवज्वर॥२९॥ नैगमेयग्राहिपीसैदंत॥ उपरदेषेमर्हा

वात॥ कुर्कत्ततनकाचागंधाय॥ सोषकंठमुषदानकराइ॥४०॥ दो॥ मा
धववैमत्तमैप्रगटइसविधिलषोनिदान॥ गंगयत्तोकविकैहतप्रवका
सिराजमतग्रान॥४१॥ प्रनमोनिजमातापितासतगुरसरतरांम॥ का
सिराजजैसोलिषीतैसभाषोनाम॥४२॥ बालकहूदमावरषलगमास
मासगनतलेत॥ वरषवरष उपजैयुक्त गंगयत्तोकहदेन॥४३॥ चौ॥ प्रथ
ममासषासीस्नुरकाक॥ तनगंधावैनजरविपाक॥ दोषहतनेमधुग
डदीपा॥ लालफूलपलदतनसीप॥४४॥ मासहूसदैसीतसरे॥ मु
षसूकैताकीतनपीर॥ दोषकुरकटादेकीषीर॥ लडूतेनायफलमुनि
षीर॥४५॥ नीमपत्रदीपकथरधूप॥ पिंनीअसमकसंभेनप॥ संध्याके
पूर्वदिगजाइ॥ धरआवैवालकसुखपाइ॥४६॥ त्रितीमासमतैंप्रति
लाल॥ वहुनिदातनुगंधविताल॥ केपैसोवैकरैनतोस॥ लषोगोमन
तिदवीदोष॥४७॥ बिचडीचावलदूधमंगाइ॥ पूर्वदिसनडपहरिजाइ॥

नि॰
१८६

भूमंडलधरजोरैताप्य॥ममोगोमतीकहिमुषसाधा॥४८॥चौपैविम
लादेवीदोस॥कंपैरोबैरूषारोस॥तबैकुमारोभोजनदेइ॥गंगजती
सुषपूजासेइ॥४९॥मासपंचमेविकिसतनसोष॥दूधनपीवैरोवैरो
ष॥दुषकुरकुरादेवीमान॥संठकाकोदतनदिसठान॥५०॥चावल
आमकषहूडैसान॥फूलपातफलमीठाभान॥चौपद्यधरिमं
डलवोनवीय॥गंगयतीसुषबालसरीय॥५१॥छठेकंपत्तादेवीगृ
सा॥चटैसीतजुरपवेमआस॥मासदुधवकुलेत्तिलभाइ॥वदलाजै
बालकसुषपाइ॥५२॥सातमेहिमजुरहूरतदेह॥सासंसीतलादे
वीराह॥भावगनेककरैमदमास॥दूधवांकुलावलसुबतास॥५३॥
सैया॥आठममासप्रवेसकरैजवमोहतिकंपात्तिपूरतिदेहो॥नीर
वलैमुषसूकतरोवतराजनिदेविकिलतनरहो॥भोजनकंजकु
मारनिकोवलघेवरलापसिमांडजलेहो॥बालतवैसुषपावतहै

कविगंगयतीभजरंमसनेही॥५८॥ चौ॥ नौमैज्वरसोवैतनगंध॥ हूयत
जैबमकोरनबंध॥ बलदैखिचडीचावलमास॥ मदधारासबहोवैता
स॥ ५५॥ दसमैग्रसैसीतलावाल॥ बहुरोवैवपुकरैविहाल॥ तेडलम
दपलतिलबडमाष॥ कुशलहोतचौराहैराख॥ यह सैया॥ मार्हइका
दसकेपतरोवतसोषमुखीजु राषसदेवी॥ मांससूरतिलखीरधरैगु
डउतरकीदिशाथपधुखेइ॥ द्वादशमासविषैपलसकतरोवतकेपत
सीतलदेवी॥ भातदहीवकुलातिलवोडतगंगयतीसुख पावतते
वी॥ ५७॥ दो॥ मासमासगनतैभयोबालकबरसप्रमान॥ स्यागेसुनसू
वसूदनावरसवरसविधिदान॥ ५८॥ चौ॥ प्रथमवर्सरोवैरुचिहीन॥ नै
नमीटदाषैतनछीन॥ दोषसूदनामधुगुडभात॥ कनकघुंघनीदेहसब
सात॥ ५९॥ दूजैबरसलहूअतिसार॥ चिरसोमतैजुरकोभार॥ देषरोद
नीदेवीमान॥ दीधेचावलगुडकरिदान॥ ६०॥ बरषतीसरैहिमाजुमाउ॥

त्रि°
१८७

ग्राषनबोलततकंपतनमाउ॥मेदकुतासनधनहातेष॥पर्वदिगतं
ध्याकेपोष॥६२॥षिचडीमदरामासकुलच॥वकुलेहीवापठेस
ष॥राषकुनालीमांइकठाइ॥गेगजतीसुषबालकष्याइ॥६२॥चौ
चोक्षिसजनकुरप्रत्वेद॥सासवंचलादेवीमेद॥फलतलाडु विच
डीदधमास॥वकुलोसिषरहयैहरेराष॥६३॥मनोहरछंद॥पं
चमेवर्षमुषसकतसरीरक्षिसबारबारमतपेटसलसहूग्रा
वहै॥नलनीनिहारहेषजितलवटमाषपेषदधिमधुषीरत्रिक
पंथमैधनावहै॥छठेजुवरसबालबारवारहसेचालभावनलग
तदेवीजाततनालषावहै॥षीरदधमांससातघ्रतकेतलावेपूडेद
कुनधराइगेगजतीजौंवतावहै॥६४॥सातमेवर्षेदधभावनल
गतनीदग्रावतपसीनातावहोषदेवीग्रंतना॥षोचडीतलाइपू
डेपानमदनैदुधसातराषकैधराइपिंडदेवीचिनयंजना॥ग्राठ

मेवरसलहूसारंग्रगदुटतजोतापतनचडेघोररंगनीलकंज
ना॥होवाविंधवासनीकोषीरभात्तषडदैवाकुलांधराइगंगगज्जती
डुषमेंज्ञना॥६५॥दो०॥रावनिकेमततषोलिषेग्राठदिवसवामास॥
वषेग्राठमैवालकोरावसहैवीग्रास॥६६॥जोब्रह्मानिज्ञहाथसेंभे
षजहैवेग्रान॥तोभीसिसुजीवेनहीलेंरूपत्तिमत्तिठान॥६७॥कवि
त्त॥नवमेवर्सत्तापकंपतग्रत्तीवदेवेकलहकर्त्तरोवदैवीकलहंस
का॥भ्रातदुषदैहीषीरसरसेंकडाहीफूलफलगेंधधपदीपवल
हीज्ञेमंसका॥दसमेवर्शचिडैगावत्तलडतनींदमोज्ञनकर्त्तभरनै
नपीरग्रंसरू॥होवदेविदूतीभ्रातवाकुलेकराइमाषविचडीसुध
पराषचौचपंथतंसका॥६८॥ग्यारमेवर्शहैवीवानलीनिहारस्व
रमेंगत्तापनीदभरपीरकांननैनमै॥भ्रातफलदैहीपडेमदकोत्रि
पंथराषमांसकोमंगाइपोषऊडैचीलगैनमै॥बारमेवर्शभ्रमसे

नि॰
१९८

नन्तापनींद देवीवानलासरूपभानदहुभ्यूलदेनमै॥ षीचु डीधराइल
डुवालकसरीरसुषस्वामुविचारैनिजगंगजत्तीचैनमैं॥ ६९॥ दो॰॥ या
क्रमसोवालकभयोतेरावरषप्रमान॥ जौसिरसोलैवर्षमितत्तौदेवन
सुषदान॥ ७०॥ लक्षतनवैदेहतेवर्षसतादैधाय॥ वीसवर्षकेवालजव
तौभोगेसुषनार॥ ७१॥ जैनेकुलगमवैसनोइहविधिजानोतास॥ तैल
कनहीसहतनधरिवानकमदरामास॥ ७२॥ इकमेंलगइहयहमंत्रपढि
सवग्रहकोसुषदेन॥ पूजाविधिसोंकीजीएलेकपतिकेवैन॥ ७३॥ मं
त्रयथा॥ ॐ किरिकिरिमिलिमिलियजरदेव्यै नमः॥ रावरणायेस्वा
हा॥ अथविधि॥ इकमिटीकीकुनालीलैकदिनिसविधिजिसजिस
देवीकावलकहाहै॥ सर्वसकेसेपावैयेयजिषोजिषपालिषाहै॥ उषेजा
वैजाइकरिरषेयेरइहरजासर्वदोषप्रकरैसेकहिनाहै॥ दोनोपासकुं
डलीकेमिटीकेदोपुतलेवनावै॥ तिसकोकपडेउढावैषडेकरैअर

घ॥३॥ वा॥४॥ वा॥५॥ दीप॥ ३।४।५ धुजा॥ ३।४।५॥ गजेग॥ ३।४।५॥ मुहुर्
॥१॥ वारुण्या॥१॥ वायेसा॥१॥ रूटा॥१॥ खंपंडा करवा॥१॥ तिसपुतलकारै
ग्रागैधदैसुहानीग्रहू॥७॥ पिंनीरासकौ॥७॥ फल॥ ३।४।५॥७॥ दुग्धदुठौश्रा
विचपाइकैरखैसाथैमधुगुलावकापानीफूलचावलधूपतंबौल
तिलककेसरनैवेदयसहहूजयेनुहाथजोडिकैरेसभगतसंपुजनमं
त्रमाला॥१॥ पटकैयेरखीदैमुडनकैनाही॥ घरस्त्रानिकैवेदकौयथा
पाञ्जिदतनाजनरदेवे॥ फेरतुमनग्रघवासाधुकोभोजनवुलावे॥
तोहदीनुठमानभई॥ बालकपूकलानकरनीहै॥ सर्वसंमिदं॥ दे०॥
बालकपृतिरकमासकोरतीभेवजुदेय॥ पाकमसोंवाढवर्शमा
साडढगनेय॥७४॥ इकरकमासावर्षप्रतिसोलेकवध्रमान॥ फिर
बालकनहिजातिपेनरसंग्पातिसमान॥७५॥ वसनेनतुचलाइची
मिश्रीसंगमिलाइ॥ नितचटावेबालकेवालपुष्टवपुथाइ॥७६॥ ६

नि॰
१८९

ति श्रीजतीनिदाने ॥२४॥ प्रकासे बालग्रह रोग विनिरूपणः॥ अथ
विष रोग निदानमाह॥ दो॰॥ स्थावर जंगम भेद करि विष है दो
इ प्रकार॥ कित्तम विष इक तीसरी अधिक सुनो अधिकार॥१॥ स्था
वर विष दस विध गिने मूल पत्र फल फूल॥ तुच पय सार निरजा
स मन धातु के दुष कूल॥२॥ स्थावर विष हि चकी अरुचि दंतन हर्ष
जुर स्वास॥ गल ग्रह मूर्छा फेन वमि अधो भाग बहु भास॥३॥ चौ॰॥
इह समान लछन कहे हीन॥ भिंन भिंन सुन दस ये प्रवीन॥ चिंन मूल
विष मोह प्रलाप॥ वसु बंध तन जाने आप॥४॥ दल विष कंपे जिं
भा स्वास॥ फल विष वृषनि सोज बहु भास॥ अंग न है बउ पजे तन दा
ह॥ मूढ होत तन रवे प्रवाह॥५॥ फूल विषी डकी अघमान॥ मोह सा
स कवि रह अनुमान॥ तुच विनिरस सार विषतीन॥ दन के लछ
न सुनिक विपीन॥६॥ मुष दुर्गंध सीस बहु पीर॥ बह द्यात न रूक

आवेभौर॥ षीरमुषीमुषआवेझाग॥ जौमगुनविटमेदविहाग॥७॥
लषोघातुविषमरुछाहाह॥ सुसकजालपीजाफ्रिदेमांह॥ कंदविषी
गरमौमुषसोष॥ मूर्छाहाथपगुसकजनतराष॥८॥ स्थावरविषकहुव
करेअनेक॥ समापाइजमनगरीटेक॥ अबरमेदविषनवप्रकार
तिनकेनामसुनोनिरधार॥९॥ कालकूटकाकोलकहेइ॥ हलाहली
सौराष्ट्रिकजोइ॥ सुकलकअलाषतप्रदीप॥ दारदवत्सनागनव
दीप॥१०॥ इनकोदेषततेगंधलवाइवामुषपावनहाथलगाइ॥ छा
याइनकीवैठेजोइपसुनरपंछीततछिनहोइ॥११॥ महोम्पानकवि
षइहजान॥ हृदलमलाघलागेकविमांन॥ इनमैरोक[illegible]लदीआमा
इ॥ गंधकआमलसारमिलाइ॥१२॥ सहलपातमलिहैजेआग॥
गेगजतीहाटकवडभाग॥ इनमैएकसंठीआहोइ॥ करेतामवको
सेतविवेक॥१३॥ चारमेदइनमैवछनाग॥ विसदगलावीतैलकरां

नि०

१८०

ग ॥ जुक्क विना देवे प्रलोक ॥ जुक्क जुक्क काटै सब रोग ॥ २४ ॥ जुक्क पथ्य ॥
मिर्चा मिठा तेल लोण्ह्रा चाली पहर घसाइ ॥ बात रोग असी टरे जु गर
ती नितबार ॥ २५ ॥ चौ० ॥ कहे प्रगट विबस्तु नो निदान ॥ बाइ संबी आ
रह अहनान ॥ फिरे आं दरकूट तम बसबास ॥ चले लहूत न नीला आ
व ॥ २६ ॥ सो जु चढै बहु छोडे देह ॥ गंग जती सा चील बलेह ॥ जो नर खा
इ धतूरा आक ॥ भुसकर गं मूब कहे न बाक ॥ २७ ॥ विषि तनाच तदि
न गै चार ॥ जीवे अथवा मरे विचार ॥ बार अफीम अमल चढ जाइ ॥
विन भेषज नर सो मर जाइ ॥ २८ ॥ आक धतूरा जो भषे दुग्ध वेड घृ
त पाइ ॥ नाग फेन विष संषी आटके उवाल पिलाइ ॥ २९ ॥ जो नर
हीरे को भषे सो निश्चे मर जाइ ॥ जासों बोह तेन्हि पमर रहि भेषज ल
गे न काइ ॥ ३० ॥ अर्ध दुग्ध पारा भषे गल गल पडे जु मास ॥ जो लग
बहु निकसे न हों अंतक रेत न नास ॥ ३१ ॥ घृत सितउ हेली सो धिकै ज

लसोंफाकेनित। पारानिकसेमतनमगंग्रगंग्रगसभमित्त॥२२॥चौ०॥
लगेमसस्तुविषजाकेदेह॥जिनकेविंजनदोलेइह॥पकेसतावीजाको
घाउ॥महोम्यानकलोहश्याव॥२३॥स्यामरंगनीलाघतभास॥अघूषि
उकोउवलेमोस॥फूतगंगघवकुहोइकलेह॥चलेजुषमदुषपावेषेद
२४॥त्रिषामकोजुरवकुहाह॥जोभेषजकीलगेनवाह॥कठनभेष
जीताकौजोइ॥विनश्रमकिपासिधनहोइ॥२५॥अथवाजिहतनव
र्ण उपजाइ॥ताभेविषारिपदेतचढाइ॥तोवर्णविक्रितरूपमलीन
लषोसस्तुविषजेमप्रवीन॥२६॥वाजिसनरविषपीतीहोइ॥तिस
केविंजनरसविघजोइ॥प्रथमतरूपमुषष्यावेजाग॥पीलीवमन
मैनदुतराग॥२७॥पडपडसवदसंग्रतिसार॥विटग्रहिघमसमा
नविहार॥गेगजतीहषिविंजनरोह॥हेमवर्कमघुचाटिसषदेह॥
२८॥दो०॥जिसनरनरकेविषदईठुपैठपाणेनाहि॥पापप्रग

त्रि०
१८१

टजगहोतहैं आक्षित्तरहलखित्ताह ॥ २८ ॥ चौ० ॥ खिक्षित्तचेष्टाम
लनविरांम ॥ मनवानीमुखहेवेस्याम ॥ २९ ॥ छत्तउत्तरमलेनदेत ॥
कहतमोहमैयसेंअचेत ॥ ३० ॥ बहुसंकीर्नबोलेबैन ॥ अथवार
हेमरुढजिमदैन ॥ अकसमात्तचित्तहठकेधार ॥ मानसहसहैसो
कअपार ॥ ३१ ॥ डौरमौरद्रिगदेखोतास ॥ खिनाखिनउभालेवस्वा
स ॥ त्रिषवीहिखेअंग्रगुलीसंग ॥ आसनतकंपत्तनैनकुरंग ॥ ३२ ॥ ले
कटकाटकध्यानलगाइ ॥ नखसोंनखछेदनकछुभाइ ॥ चोरअंगाख
सोदेखेफेर ॥ रंगमलीनहोत्तकविहेर ॥ ३३ ॥ नेसकोभागेतजघर
बार ॥ फिरनिकसेपुरकेलघुद्वार ॥ मुडमुडकेफिरदेखतजाइ ॥ पा
पछपाछोछपेनकाइ ॥ ३४ ॥ अथवाचितचिंतावहुहेत ॥ विखहता
तनलेतअचेत ॥ अथवामुषचडबोलेसोइ ॥ दहकाउंदनकीना
जोइ ॥ ३५ ॥ दो० ॥ इकविखमारेतुर्तहीइकाविखलावेरोग ॥ इकवि

बकांपाकोकरेउछबर्नसबजोग॥३६॥हसगुनविषमधदेषी
हैतातेहरहै प्रांन॥कहनग्यानननिरघंटमतिभाषाजुतीनिदान॥
३७॥रूषउष्णतीषनकहनसबग्राम्रअवाप॥गनेविकासी
विसदलघहसमग्रपाकरलाइ॥३८॥चौ०॥रूषसंगततनके
पेवाइ॥करेउष्णपित्तलहूमिलाइ॥जोबनसोमनमोहधसे
त॥मरमबंधतनहाडफुटंत॥३९॥सबजातैसोकरेप्रवेस॥तनअग
अवयसजाइप्रहेस॥ग्यासुग्यासुतनकरेविनास॥अवयारप्र
क्रितिकोकरेउहास॥४०॥करेविकासीधातूहोव॥मलसबएक
मिलावेसोव॥विसदचुवावेधातुमलान॥लाघवभेवजकठनव
षान॥४१॥गुनअम्रपाकदुबपचेहमेस॥तातेविषवहुकरेकलेस॥
रहहसगुनविषस्थावरमान॥सुनहुजबरजसवेत्तसुजान॥४२॥
रहहसगुनमेटेचतुरवैदजजीकेसंग॥तोविषग्रंम्रितहोतहै

सबदुखकरहेभंग॥४३॥स्थावरविषकीचाललखिग्रघोभाग
बहुभार॥जंगमविषजउपरचढेविंजनदहनिरधार॥४४॥स्था
वरविषक्षितमसुनोहालचिकनकरपर॥अथवामधुघृत
मेलसमजोविषहेवेभर॥४५॥वक्रपहारयतैलघृतरोटी
विंजनकाह॥गरमसीतकिरगमेंकरिराहिभीविषममग्नाह॥
४६॥इतिश्रीस्थावरविषविनिश्चयः॥अथजंगमविषमा
हः॥दो०॥विषजंगमसरपादिकहिसोडसविधकविस्तन॥द्रि
ष्टसासललारदनविसहानवगुदमतत॥४७॥मुखसपरसवी
जमलनग्रस्यउंकवित्तरोम॥भेदतीनलषसर्पकेयाहीमे
सबकोम॥४८॥भोगीमंडलिराजिलाकवैजयाकूमरोग॥
वातपित्तकफकोंप्रबलहुंदउदुकसंजोग॥४९॥भोगीयथा॥
जाकेमाथेफणसहभोगीताकोनाम॥सोहैवीसप्रकारकोक

डंक

रेवा तत्तदुषघो मध्य ॥ मंडलायधा ॥ विवधच्चित्र मंडलखत्तनलं
यागत्ति हू मंद ॥ षट प्रकारकौ जातित्तिसकरै पित्तकविंवं द ॥ ५१ ॥ रा
जलयधा ॥ ऊ चौत्रितोम्लौ कजुहि चित्रक चिकनसरीर ॥ राजुल
है प्रकारको करै सकफ दुषधी ॥ ५२ ॥ हुंदजलेलतनजासकेहं
दजसरपपत्तान ॥ करै रोगहुंदजवहोयहिम्रुग्रितिमत्तिमान ॥ ५३ ॥
कौ ॥ भोगीस्याम दुतुहोइ ॥ बात विकारकरै दुषसोइ ॥ मंडलिडंकमी
नमदुसोज ॥ पित्त विकारकरैवहुषोज ॥ ५४ ॥ डंकराजिलापितल
सोज ॥ कोडचिकनौ त्रिरनहुषोज ॥ लह्रविधनालिकसैतास ॥ कफ
विकारतेद्रवहुत्तास ॥ ५५ ॥ हुंदजजाकोलडहैसाप ॥ दोलतनसम
जोबाविनाप ॥ सुनोडंकविषकेगुनमीत ॥ जैसेमाधवभाषीरीत ॥
॥ ५६ ॥ लघुसुसमरुषौविषजान ॥ विसदविकासीतीषनमान ॥ र
सम्रव्यालौ उपरगत देषि ॥ डंकसुविषमैइहगुनपेष ॥ ५७ ॥ स्रवसु

नसरषसम्रसाधसुजान। चलदलसरषरडसेमसान। चतुपथ
संधांवरमीथान॥ भरनोमनाडसैतनहान॥ थदाडसैसेसवासिरम
र्मेसथान॥ गृथवाडसैजीभपरग्यान। रोगगृजीरनावितनगृतीवा
धपकुनासनपीडतजीव॥ बालव्रिधभखाक्लिसखीन॥ मेरकुहर
खावलहीन॥ गरभवतीकोडसैजुसाप॥ ग्रथवादिबगुरदेवश्राप
द॥ मरत्यहोइमाधवकरदेत॥ ग्रथवानरतननहोइग्रचेत॥ वी
रादैकैलखोसरोर॥ लहतनिकसैरचकधीर॥ ८१॥ नसाजदपी
लीसबदेह॥ रोमहर्षबनहिसीतभषेह॥ विषसोमैसोविजनजा
स॥ सोजमनगरकैकरैनिवास॥ ८२॥ रेटामुषजिसउतरेकेस॥
पिरेनाकसुरभंगहमेस॥ डंकसोजतनुकालीलाल॥ फिरननना
तिसकोखावैव्याल॥ ८३॥ चारदंतजिसलगेसडोर॥ चलेलहूउ
परग्रधभोर॥ रुधरसंघनावारीजेम॥ धर्मराजसोतन्कप्रेम॥ ८४॥

दुहेसरपहोवैउनमांत्ते ॥ वेगहीनसूरभंगउनत ॥ पुनअग्निहिवहु
वेदनजास ॥ वैदनभेषजदेवेतास ॥ ६५ ॥ दो ॥ एकजातिइहसरपकी
दुषतविषबढउजाइ ॥ एकसर्पउडकेडसेकुरकटसर्पकहाइ ॥ ६६ ॥
एकजातऐसीसुनोकहतजलेवीतास ॥ जितजितबहिभवग्रफिवै
तिततितनसडहैषास ॥ ६७ ॥ पुनः ॥ दो० ॥ मनसलकुचलेहिंगवच
अजापालहरतास ॥ डकविषेयमिलाईवेविषउतरेततकाल ॥
६८ ॥ सर्पडसैजिसपुर्षकोंमिरचाभरचवाइ ॥ जाजानुतेकराई
देतजहेदरवैवाइ ॥ ६९ ॥ अथदूषीविषनिदाननमाह ॥ चौ० ॥ स्था
वरजंगमविषहैजान ॥ बहुदिवसरहेपुरातनठान ॥ सोदूषीवि
षसंग्याहोइ ॥ वाविषमिलतभेषजीसोइ ॥ ७० ॥ अग्नितपआ
तपवहुवाइ ॥ इनसंसोषतद्रमकहाइ ॥ अर्धदग्धभेषजकवि
जोइ ॥ अथवाकाचीधातूहोइ ॥ ७१ ॥ अथवाविषसोमिलैसमीर ॥

नि॰
१२४

अथवाविषवारिपयोलेनीर॥अथवासहिजेविषगुनहीन॥कहि
दूषीविषसबोप्रवीन॥७२॥वीर्जअल्पनमारेजंत॥रोगलगावे
वर्षपर्जंत॥जोधातूंकोदूषनहार॥सोदूषीविषकहिनिहार॥
७३॥दूषजरेसकालपलअ्रन॥दिनसोवेनिसजागतचैन॥दू
षीविषतनदूषतजास॥मूर्छाभ्रमबहुलगेपिपास॥७४॥भिं
नपुरीषविवरनसरीर॥अंगसूनमुखलखेनधीर॥विक्रित
चेष्टागदगदवान॥वमीपीरचेतनकीहान॥७५॥भिंनभिंनक
हिहेतमकान॥आमासैगतिसुनअ्रहिनान॥वातककोमिलक
रहैसोर॥वातव्याधउपजेदुषघोर॥७६॥पक्कासैगतिपित्तस
मीर॥ठरेरोगबहुविकलसरीर॥उचेहाथकेसरुरजात
प्रविनपवीज्योंविरलात॥७७॥जोदूषीविषकरेप्रवेस॥धा
तूरसादिकमांहिकलेस॥धातुविगाडेसोदुषभार॥जथा

उकतन बहु कै विकार॥ ७८॥ दो॥ जिह दिन बहु पूर्व चलै अस्त्र पवा दुर
दिन होइ॥ दुषी बिषाति सदिना विशेक रै को पडुब सोइ॥ ७९॥ तिसके
लछन प्रगट सु बकहै वैद वरग्यान॥ लगत सीत तनन को पवन प्र
थम रूप दुष षोन॥ ८०॥ चौ॥ निंद्रा गुर तन टूटै होइ॥ संध कुटै तन
सारो जाइ॥ रोम हर्ष जिहूा तन स्याम॥ अंग दलै रस विषकै धाम॥
८१॥ करै अंग्र नमस तीक्ष्ण च हान॥ तन मलीन तिस पचै न धान॥ तन
मैं मंडल चकत्ती दार॥ गढै होत विसाल हूनि हार॥ ८२॥ हाथ पैर सो
जाव हुभार॥ मूर्छा वदर्द लगै अतिसार॥ मांस हीन लाषि इस्म्रह
नान॥ दुषि विषगत मांस पतान॥ ८३॥ सास त्रिषा जुर वढै घोर॥
तूंदी वढै मेद थित सोर॥ हाड मजा वीरज घर थाइ॥ इन मैं धसै वष
वाइ॥ ८४॥ मज्जा मो वहु करै गुनाह॥ वीरज मो वीर्ज गति जाह॥ ऋष
वछन सो उपजै कुष्ठ॥ वहु रोगन को करहै पुष्ट॥ ८५॥ दो॥ जो है विष

नि॰
१२५

केरोगसवतिनकोएर्वबाइ॥ ग्रैसेउत्पनकरत्तहैज्येघनमीड
कमाइ॥८६॥ दुषीविषनत्तकालकीधीर्जवानसरीर॥ रहैपथ्यमे
षजसषसाधककविधीर॥८७॥ वरषएकजिसपरमयोककम्रा
लपाककतलोभ॥ दूषीविषतिसपुरषकोयाप्प्लषेकविसाभ॥
॥८८॥ दुषोविषचिरकालकीधनवलमासविहीन॥ वहुकुपथ्य
धीरजविनासोग्रसाध्यकहिदीन॥८९॥ चौ॥ निजपतिवसिहि
तमर्षनाहि॥ स्वेदजोनिजमलविरवाहि॥ इत्यादिकवहुग्रंग्र
मैल॥ उलरस्मात्रपवातैल॥९०॥ ग्रपवाडुसमनजलकेसेग
ग्रंनसहतविषदेतकुरंग॥ याकोभीदुषीविषमान॥ कहैरोगव
दुस्तनेसुर्जन॥९१॥ कोडुलापत्तसहोतसरीर॥ ग्रग्रमंदवाविक
लग्रधीर॥ मर्मघ्यानहटेग्रधमान॥ ग्रपवाकरपदसोजारान॥
॥९२॥ जठररोगग्रहिनीजैदोस॥ जठ्ठीगुल्मवइजुरसोष॥ हीन

बुद्धिसिंमरत्तकोनास॥ इत्यादिकदुषबहुविधभास॥ ३॥ दो॥ दु
षोविषविधग्रवरसुनिलूतनामदुषदेन॥ तांकीउत्पतिप्रथम
मुनिब्रिधबागभटवैन॥ ४॥ विश्वामित्रनरेसबस्रममैएकवल
वान॥ मुनिवरअरसबवासिष्टकेकेपवठायोआन॥ ५॥ तवमुनि
कैमनततकिविधैप्रगटभयोप्रस्वेद॥ जरजरकैबुंदाजिदेचितमो
बहुधरषेद॥ ६॥ जासैलरणात्रिएविधैपरयोमुनीकेस्वेद॥ लूर
तनामत्ताहैभइसोधवषोडशभेद॥ ७॥ लूतग्रंथाइभेदकोलि
षीतिदानप्रदीप॥ वाततपित्तकफसंनक्रमसातसातकविदीप॥ ८॥
षुसकबहुस्यांमदुत्तिकठनभेवजोतास॥ पैत्तकग्रग्रसमानदुति
लालपीललमाभास॥ ९॥ कफकिग्रलाषीराविकनबहुकिलेदसित
रंग॥ त्रैकदानजुतसंनकीअंतकरैतनुभंग॥ १०॥ एकसाध्यमेलूत
केभेदजुबहुतप्रकार॥ सहस्रसमस्रयतनीतांतेलूतहजार॥ ११॥

पिं:
१९६

अव माध मति प्रगर सुनि सो लोके दो भेद ॥ आठ आठ गन तीकै
कवि जन नत जि मन षेद ॥ १ ॥ ५ ॥ जै मंडल ॥ १ ॥ ओत ॥ २ ॥ कपल ॥ ३ ॥ पी
नक ॥ ४ ॥ मल ॥ ५ ॥ विरद ॥ ६ ॥ मत ॥ ७ ॥ अठ मीक हीक षाईका ॥ ८ ॥ बहु दुष
दाइ कल्लत ॥ १ ॥ ३ ॥ सौ वर्नका ॥ १ ॥ अलिक वर्न ॥ २ ॥ लालिन ॥ ३ ॥ साप
द ॥ ४ ॥ स्याम ॥ ५ ॥ अग्नि मुषी ॥ ६ ॥ काकाड ॥ ७ ॥ मल गुर्ला ॥ ८ ॥ आठ दुष
धाम ॥ १८४ ॥ चौपा ॥ डसै लत जाके तन ठाम ॥ उठै सो जषत मै दुषधा
म ॥ अतीसार जुत दाघ समेत ॥ जै मल रोग उठै डषहेत ॥ १ ॥ ५ ॥ पि
डका उपजै बहु प्रकार ॥ मंडल मुहां सो जमर दुधार ॥ स्याम लाला ॥
सो जा चल जान ॥ डकल्लत सम भविन समान ॥ १ ॥ ६ ॥ अव सुन लत
न कहो विशेस ॥ लतनडंक बहु कालेमेश ॥ कतक स्याम जा लसाये
ष ॥ अग्र दग्ध तन जै सदेष ॥ १ ॥ ७ ॥ पाके निरंतर चलै किलेद ॥ सोज
के थजुरत नव हुषेद ॥ डषीविषकीर ककै डंक ॥ लतनडंकल तन इह

श्रुक॥१०८॥ दो॥ सर्वल्लतइहलत्तनकहिएकठौस्थान॥ ग्रंथवढनवि
तमैंभयोयत्तौनिदानप्रधान॥१०९॥ दुष्टीविषकोऔरकिनहोवैग्रह
कोभ्रत॥ विषलालागरलपलजितगेरनत्तिनहत॥११०॥ जौवहि
मारनडंकततनलेवैनरकेप्रान॥ ग्रथवादाहैभरडवकहोसंदेपव
खान॥१११॥ लल्लपीतसितस्यामदुतिपिडकाजुरवहुसोज॥ हिचकी
हिरग्रहिसासदाहिप्रानंतकदुषघोज॥११२॥ सर्पादिकविषजंत
कीग्रस्त्रपडेमसाहि॥ लगेघर्नेनाजेफिरतसोविषकेजग्माहि॥
११३॥ ग्रनादिकविषव्रितकोकेटालगैसरैर॥ पाचैफूटैदुषककैपाह
नसेकेधीर॥११४॥ जंगमदुष्टीविषप्रगटडसेजासतनस्थान॥
मिनमिनललतनसकलभाखेजतेनिदान॥११५॥ चौ॥ लगेडंकअस्त्रे
ननवहुस्त्राव॥ पांडुलननमेंडलजरभाव॥ दाधग्रहेचकरेमउठंत॥
मसैकीविषपीडकवंत॥११६॥ ग्रवश्रलाधमसा[illegible]विषजान॥

त्रि॰
१२७

मरुछीसोउनसनेनहिकान॥रंगहीनबुरछर्दिकलेद॥लालोलहूच
लेवहुबेद॥१७॥सिरभारोअतिआवेस्वास॥इहअसाध्यमसावि
षभास॥कहीजातमसेकोवीस॥वागभटग्रंथेमुनिईस॥१८॥
दो॰॥इकमसाअरुसालिबाउसेदेहतिसजान॥अथपवामस्ते
मीगनीलगेआठतनहोन॥१९॥चौ॰॥अथक्रिरलेकीविचस
नलेद॥जिसीस्यामनानाहुतिदेह॥विष्टाभेदमोहदुबभीर॥
अथविरछुआविबसनिकविधीर॥२०॥दहतअग्निजिमपीड
भार॥उप्रतनमेहैविषभार॥डंकपछुमैताकोजान॥लालपीत
कालाहुतस्याम॥२१॥अथअसाध्यविछुविषभार॥फिरेघुरा
णरस्वालउजार॥गलेमासतनकोवहुपीर॥तजेप्रानचेतनना
विनधीर॥२२॥रामठलोहसिवावचजान॥घसकेलेपडंक
प्रठान॥अथवाजाजाकीजैवैद॥अरुसेविछुआविसकरकैद॥

२३ । षटमलविषबुरज्ञाकीसंलल । सोजाविसर्पडंकदुषहूल ॥ दो
र भेद षटमलकविजान ॥ ऐकसविषरकलषोसमान ॥ २४ ॥ उ
सेवटिंगनरोमउठार ॥ स्राकउपीउडंगमेथार ॥ उसेपपीला
सोतलडंग ॥ जलहिमसिकतलषेनिजअंग ॥ २५ ॥ उदुउसेसोउ
वहुपीर ॥ पीतवर्नचाहेतननीर ॥ जाकोनीदवहुतनतनआर ॥
लडेसविषमोउकजिसधार ॥ २६ ॥ उसेसविषमकोउजैसदेह ॥
दाघसोकवहुपीउकरेह ॥ लगेसविषजोकैअरसोज ॥ मकोकं
डुपकेदत्तषोज ॥ २७ ॥ उसेगेहकिरलीतनदाह ॥ तोप्रसोसोजा
स्राह । कानवजूरालागेजास । दाघस्वेदपीउावहुतास ॥ २८ ॥ उ
सेमस्तकपीउातनमंद ॥ थोडीसोजअबुरकवहुरंद ॥ सोअसाध्य
कीटकजिमज्ञान ॥ ताकेतनविषलेवेप्रान ॥ २९ ॥ लडेघमोठीसो
जापीउ ॥ इकदिनमैतेत्रैसबधीर ॥ उसेभोरसोजाउषमंद ॥ पी

त्रि०
१९८

र हाथस्याम रूषिवेचंद ॥३०॥ बैठे जास तन मैं जो ल्हौष ॥ लडे मैर
पिडकों बहु होब ॥ कंडु भरषु सकतन भार ॥ कहत दली द्रीसबज़
गत्तास ॥३१॥ लडे मषकाजाकै नैन ॥ बैठे सोज बहु होइ ग्रचैन ॥ सैं
घवलनतू पघ सलार ॥ गंगजत्ती छिनमैसुषपार ॥३२॥ लडेमष
रूामघुकीजात ॥ करेडु मनाहु षबहु गात ॥ सर्वडंकापिडकोमुष
स्याम ॥ हाथमकौ हुदंकि देताम ॥३३॥ चौपहहोपहकेनबंद्रत ॥
पचैपकेविषपीडकरंत ॥ कोडे जिमचालेक चनीर ॥ चडेताप
हुषसहेसरीर ॥३४॥ मछूरपिसलडहै जास ॥ गृत्ती आदि डसे
जिसमास ॥ महांग्रचानकउपज़ेपीर ॥ पिडकोंकंडुहाथग्रधीर ॥
३५॥ इत्यादिकाविषभेदअनेक ॥ कौलोवरनोमोमुषएक ॥ स्याव
रजंगमबहुप्रकार ॥ लषिसंषेपसोपहिअधिकार ॥३६॥ निरवि
षलहनकैसेजान ॥ धातूप्राकितहोबपिरमान ॥ ईद्रीचितम

न्यप्रसेत्र॥ रच्चकर षाप्रो चाहे ग्रंन॥३७॥ दो०॥ विष्ठामनत्तग्र
रामसौंग्रावेत्तनसूबधांम॥ विषैरहरकाविंगगमुनिमग्नि
निरुग्रातमरांम॥३८॥ है प्रकारविषकी प्रथम उत्तपत्तहोई
केम॥ वूघवागमटमैलिषीगंगजत्ती काहित्तेम॥३९॥ समरेएक
सुरग्रसुरमिलसबनैकराविचार॥ सागरकोमथकाढीवे
चौदेरत्तनसुधार॥४०॥ घालमथानोमेरकोबांधजेबगीसेस
मथ्यनलगेसमकालत्तवउठेउग्रगरविसेस॥४१॥ तिसतैउप
ज्योधविइक्वविषहै नामकठोर॥ महांम्यानकरूपतिसनैनग्र
ग्निसमघोर॥४२॥ तिसतैषत्तजगसैंतलविषव्यापत्तउपजो
गास॥ ब्रह्मानिजहुकारसैं नरविषकौउविनास॥४३॥ हैप्रका
रविषत्तासत्तेस्थावरजंगमरूप॥ उत्तपत्तहोईप्रथमसहिक
हत्तेहैकविभूप॥४४॥ रोगनारिकैवालदुषदै विधविषकेरोग॥

कहेध्यारचौवीसमेगंगगजतीसुखभोग॥२५॥ इतिश्रीपंडित
पजसरतनरांमतनसिष्यकविगंगारामजतीविरचितेजती
निहालेवृन्दरोगभेद॥४॥ चितनिर्नयाजोनरोगभेद॥२०॥ ध
नरोगजोनकंदरोग॥४॥ गर्भपातरोग॥१॥ मृढगर्भरोग॥
उदरीमृतरोग॥ मकलरोग॥ चिकित्सउदनिर्नय॥ प्रसूतरो
ग॥ स्तनरोग॥ दुग्धरोग॥ इत्यादिईस्त्रीरोग॥ बालकरोग॥ बा
लकग्रहरोग॥१२॥ तथा॥२४॥ निर्नैउपसहत॥ विषस्थावर
जंगमउतपतीवहुभेदविनिस्त्रपः॥ चतुर्विसतमोप्रकासः॥
२४॥ अथपंचविंसतमः॥ दो०॥ श्रीमुनिसरतनरांममुखवच
नपिरखसमांन॥ वाहिनरहपेत्रमरलघुजिननरकौनेवान॥
१॥ मिश्रध्यायपंचवीसमैकानेरहयेजुसेस॥ अवतांकोप्रगटैं
कर्नैसुनतुंवैदनरेस॥२॥ गणतेप्रवानपप्रधान्यतांवलप्र

पंचमकाल॥ नाडीमूत्रसरीरकछुकविकुलसहानिहाल॥३॥ अ
थ संख्या माह:॥ दो०॥ संख्याग्र है पंछान इम अष्ट मे ज्वरज्ञान॥
अतीसार षट चार विधि ग्रहनी रोग पछान॥४॥ चौ०॥ इस वि
धि सब रोगन कौं गने॥ अब संग्रह रोगन को भने॥ ज्वर अतीसार
संग्रहनी ज्ञान॥ अर्श अजीर्ण विसूचीमान॥५॥ अलस विलंबी
क्रिमि दुष पांड॥ कमलहलीमक पानिक हांड॥ रक्तपित्त जक्ष्मी
उरधीन॥ सोषन सो बकास हिचकीन॥६॥ स्वास भेद सुरकंछ अरु
रोच॥ डाकी त्रिसा मूर्छा सोच॥ पानात्यय परमद गन आहि॥ दाघ
उनमाद भूत उनमाद॥७॥ मृगी रोग वात की व्याध॥ पैत्त कफ
कफ पित्त वडी उपाध॥ वातरक्त उरुस्तंभ सुज्ञान॥ आमवात सूल
दुषमान॥८॥ मूत्रलघ्न नामक कहरोअनाह॥ उदावर्त्ति गोला सर
श्राह॥ हृदै रोग मूत्रकृछ्र कहह॥ मूत्रघात पथरी प्रमेह॥९॥ मधु

नि०
२००

प्रमेहपिडकांदसतास॥मेदउद्रदुषसोजप्रकास॥अंडवृधगंभ्रतर
वृधज्ञान॥गलगंडकगलमालवषान॥१५॥अपचीगंभ्रथकअरवु
दनाम॥श्लीपदविद्रधिवर्णदुषधाम॥अंगतकवर्णिवर्णकीसो
ज॥भग्नअस्थनाडीवर्णबोज॥११॥भगंदरउपदंसजुनक॥कुष्ट
अठारांभाषेकूक॥सीतसुपितउदरदकोठर॥अमलपित्तविस
र्पकविसफोट॥१२॥रोगनारवामाताज्ञोन॥त्रिविधिमधौराकुद्र
प्रमान॥मुषदुषकर्ननासकानैन॥सिरदुषनारीबालकमैन॥१३॥
दो०॥हैप्रकारकीविषकहोजंगमस्थावरग्रान॥सोलाविषकीलू
तगनसंष्याइसविधमान॥१४॥अथविकलपः॥दो०॥वीसअंभ्र
सकफकेकहेवीसअंभ्रसगिनपित्त॥वीसअंभ्रसहैवातकेमदेसाठ
इसरीत॥१५॥फाकर्मसिनकेसाठदिनवीसवीसदिनबांट॥आ
हाविवेककफमधपित्तअंतवात्तप्रधांन॥१६॥ग्रीष्मवर्षासद्दहि

राम
२०

मबलंत्तसिसरकर्मैज्ञान॥पित्तपवनपित्तबात्तकफवात्तभवइ
मसमान॥१७॥मिलेहोषद्विसरोगमैतहांअंसगिनलेइ॥जेभेवउ
करसमजकेमिटेरोगसबदेह॥१८॥अंससंसकीभिंनताऽहो
विकलपछान॥अथप्रधान्यताकहतअवसुनोवैदघरकान॥
१९॥ग्रीषमरित्तजुरपित्तकोबलीज्ञानस्वाधीन॥वात्तरोगअथ
वाइकफपराधीनबलहीन॥२०॥वर्षारित्तराज्ञापवनबात्तरोग
प्रधान॥तहांरोगकफपित्तकोपराधीनबलहान॥२१॥रित्तबसंत
मैराइकफकफदुषबलभरपूर॥बात्तपित्ततहिंगौनलषिप
राधीनकबिनूर॥२२॥निजअप्रधीनपराधीनजोऽहोप्रधान्यपछा
न॥अबवैबलाबलकोअर्थप्रगटदिषावोज्ञान॥२३॥मिलेदोष
गैजुआइजितबलगमपित्तसमीर॥तिसमैबलीपछानकैभेष
जदेहवेधीर॥२४॥अधिकहोइकफवाइजितसंनिकहावेसोइ॥

वढै अधिक पित्त तासमैं सरसामी दुख होइ ॥२५॥ वहु बलगमी
तौ पवन भवे बादु गर्म चिकनास ॥ वढै पित्त कौ अधिक ता चिकन
मिठ हिम रास ॥२६॥ सेक वै दग्नै से कहत चौथा सब रगनं नत ॥
रन चार्यो के संनन मैं के र अधिक नियमंड ॥२७॥ तिसकी मे बज
वै दवर है इस तुपंड तनमान ॥ सही वला वलके अर्थ भाषा जती नि
दान ॥२८॥ अब दिष बलावत काल के प्रगट अर्थ फुरि दे ग्यान ॥ जै
से रित्त के भाग ते तैसे दिन के मांन ॥२९॥ प्रथम भाग कफ के रवि
तं अंत भाग रपवौन ॥ साक मरजनी मैं वली अपवने घर रव गौन ॥
३०॥ इस विधि भोजन भाग तै ग्राह भाग कफ राइ ॥ पचन समे
नपपित है अंत भाग प्रभवाइ ॥३१॥ प्रथम भाग दिन कै नजो अं
जन मैथुन सैन ॥ दोघटिका दिन के रहे भोजन चिक नसु बैन ॥
३२॥ प्रथम भाग दिन के तजो भोजन निंद्रा काम ॥ मध भाग मैं अ

मननवगर्मस्थरनजिस्त्राम॥३३॥ग्रैसेनिसकेप्रथमहलरतिक्री
डास्युबदेत॥मधभागनिद्रामडेग्रंत्रतभागवुभुहेत॥३४॥सवाथे
हरदिनकेचवडेभोजनइद्याथर॥ब्रिजप्रसंनसततवद्गमनवा
मालिटैस्तरस्तर॥३५॥भोजवैदग्रैसेकहतभोजनकरसुषसेन
दिननिंद्राकफकोंकरेभोगकरैतोचैन॥३६॥रसविषवीतेमास
जोइकदिनभषेहरीर॥घृतषिचडीवीवदुग्धलगेनरोगस
रीर॥३७॥लेवीहिततनप्रातउठलघुसिवाग्रनुपान॥दुग्धसह
सेवेपुर्षजोसवदुषकीहान॥३८॥सैंधवमिश्रीसंठसौंपीपलम
धुगुडसंग॥वर्षारितुकर्मग्राहलैग्रनूपानदुषभंग॥३९॥इत्या
दिकवहुकालकेभेदवैदवरजान॥गंगजतीग्रबनाठकीकहत
लछनाजान॥४॥अथनसालछनमाह॥दोहा॥ग्रादिमपित्त
कहीमधहोकफग्रंतमवातमलेगनलीजे॥भेडककाककहि

गनिकीगतिचितनकीचालइमैसमझीजै॥नागजलौकनिवायुच
लेकफहेसकबूतरहोगतिहीजै॥तीतरलावबटेरनिकीगति
संनकीचालघटैतनछीजै॥५१॥दो०॥होननाडिहैथानकीच
पलबुधाकीजानि॥चलैगरमगुरलहूकीभारीत्रिपतपहान॥५२॥
तनपवनकनाडीचलैअंतकालकविभष॥समझिपरीक्षिग्यानाड
कीश्रवसुनमूतसरूप॥५३॥अथमूत्रलक्षनमाह॥दो॥संगमजी
ठोबुरूकदुतिस्यामवातनकेमूत॥रंगकसुंभीपीतदुतिगरमपितकौ
सूत॥५४॥दोम्भकेजलजेम[illegible]डुतिम्हेतचिकनकफजान॥पीतव
रनलवत्तापकेलालपुरातनमान॥५५॥घडीराततरहलौलहोग्रा
दिअंततनधार॥निर्मलकंसीपात्रमैधपराखकनसार॥५६॥कडु
कतेलकीबिंदयकतिसमोदीजैडार॥करप्रकाशततत्त्विनउडैकेमको
वचतनिहार॥५७॥टिकीरहैक्रमसेम्बटैकष्टसाध्यसोदेग॥पडतबिं

दकलकलहुवैत्तिसमानवकोसोग॥४२॥षडंगधनुषग्याकोदुषकौ
लचरमदुषहेत॥नराकारग्रहिपीडलाधिसिरविनलागेप्रेत॥४३॥
सोसाष्यानविलोरकौतामैडारेमस्त॥स्यामकोतपाडुरवरनवानपि
तवकयस्त॥४४॥सवजरेगम्याभालसैनिसमैषाकोसाक॥लसैसेत
दुतितैर्वतिमंदुलीमिश्रीभाषा॥४५॥लसैहेमदुतनोचरकदाल
कटेकेमेल॥स्यामतारताभैलसैमोठमाघतिलतेल॥४६॥इत्या
दिकबहुजुक्तिकदिमेहनपरषपत्तान॥ग्रवसारेरकबहतकहु
भूमताकिग्रहमठान॥४७॥ अथसारोरमाह॥दो॥पंचभूतकेदेहरा
त्तिसमैग्रात्तमदेव॥जौलौंइंद्रानहिमिटैतौलौंलखैनभेव॥४८॥अ
जलतेजसमीरनभनिजनिजयाकोमेल॥छीरनीरज्यौंसेप्रगटसव
जगरचनाखेल॥४९॥पंचभूतदसमागसोपंचोकीजैभिंन॥पंचपं
चइनकेकरेविकिरइसभीतरदिंन॥५०॥गंधसुरसरूपकफरससव

ति॰
२॰५

दपंचक्रमचाल॥ पंचीकर्नविधान इह जिम मर्दी की जाल॥५७॥ चौ॥
कलैसा तसपत्तासै सात॥ धातु तत मलसप तोपधात॥ सात तु चाम
परोषप्रवीन॥ नव सै सनायु संधि ग्रधीन॥५८॥ दो सै दस संधी के
मान॥ हाड तीन सै गन तो जान॥ इक सौ सत तर मरम सथान॥ सिरा
सात सै तन मै ठान॥५९॥ चतुर्दस धमनी रस वाह॥ पेसी पांस सपंच
सत माह॥ नारी कै तनु वीस ग्रधिकाइ॥ पुरष देह दस संधु कलाइ॥
६०॥ नारी कै तन तेरा हो का॥ इह सम मास कहत लषि बोध विवेक तीन दे
षको सुनविसथार॥ धात मल संग्या इस धार॥६१॥ वात रजो गुन
मय तनु सीत॥ सहप्मक्रमी चंचल मीत॥ रहे वर वरसु धी ग्र देह
विगडजाइ इड षदाई एस॥६२॥ पितसतो गुन मय द्रवपीत॥ नील
गर्भ त्रिकना कदु मीत॥ त्रिकतस दार स इह गुन सार॥ हो इ विद
ग्धषराइ धार॥६३॥ वलग मत्तमगुन मयत्रिकनास॥ गुर सित

पिङ्गलसीतमिठास॥ बलक्षिजननमैसंधिअधार॥ हृगधहो
इरसलवननिहार॥ ६४॥ धमनीसिरानसाकोमल॥ मंडलना
भिकमलअनूकूल॥ जबैकृतचित्तउछाहोइ॥ पचेनषा:पोग
कीजोइ॥ ६५॥ जोवकिरछनबामघसाइ॥ मलीनीरतनचैननषा
इ॥ जिनउरधसेतिसीउरभार॥ तनमैउपजेबहुतविकार॥
६६॥ जोवहिधसेहेठगतिठाम॥ लगेहस्तनहिहोनअरोम॥ ध
रनरोगजगभाषाजान॥ रहेठिकानेतोसुषमान॥ ६७॥ प्रान
पवननाभीमधधार॥ बाहरनिकसेनासाद्वार॥ प्रानस्वासग
नतनसोंजोग॥ कहेआयुयहिमुनिजनलोग॥ ६८॥ होइजुह
इ इनकोजोन॥ स्थितुककहेजगतसबतोन॥ मनवचकाःश्रा
नमितसंग॥ ज्ञानमजीवकहावेरंग॥ ६८॥ ऐसेजीवअनाहीमे
स॥ रलोकमैसोगाढहेत॥ चिनछाडेइस्वाअभिमान॥ क्रिस

त्रि०
२०४

विधिप्रगटैनिजपदध्यान॥७०॥दो०॥अमरनहीकोजगतमे सबजगचलनहार॥इतअरुउतजातफिरउलटपुलट विवहार॥७१॥भैघजकोटलगेनही अंतकालकेकाल॥दारु सानाकेउदैइतरोगकटुटाल॥७२॥जीनभेदलषिरोगकेहे षजकर्मजुहेतु॥होषकर्ममिलतोसरोसमऊमेषजीहेत॥७३॥ होषजुहोजेओषधीकर्मजुकीजेहान॥मिश्रविषेहेनोकरेघ र्मसहाकल्यान॥७४॥सवैया॥रोगजिनेजितनेतितनेजनहो तविषेसबहीउपजावे॥औरउपाधअनेकभरीवपकोनस केगनजीमयकावे॥काउकपिंजरचामनमढेगहिचेतनको लषजोनिनलावे॥चाहमिटीजिसकीनिजआतमआतमरू वसहापदपावे॥७५॥दो०॥इहसंषेपनाअर्थलषिसारीरक निजध्यान॥कविकुलकोभाषाप्रथमअवगहनागपुरमा

न ॥७६॥ जन्मरासत जिनवीरकौ तजो भसमग्रहि जोनि ॥ उत्तम
पो ही रासि गिरी ज्ञप चंद ससि तैौन ॥७७॥ उदधि द्विपागर रत्नव विशे
वै रागर रसि वरैन ॥ वस्तपाल कल्यान मुनि मैरव मनिपति जैन ॥
७८॥ श्राचार्ज गिर मेरु सम नेम चंद धर धीर ॥ जिनके सुरतनस
म भए श्रासकरन वर वीर ॥७९॥ तिस प्रभ तैसा खा भई हरखाव
तिसुष नाम ॥ हर्ष चंद मुनिराज गुनकरा मानको धाम ॥८०॥ ह
र्ष चंद मुनिराजकै सिष भर फल फूल ॥ खेम चंद मुनिराज तहि
ग्याता निज गुन मूल ॥८१॥ सिष जुगल जिनकै भए मोहन रिष
मुनि राम ॥ रामचंदकै सिष सुभ संगति मुनि सुष धाम ॥८२॥
सालकोट किर ब्रवलत पते रासि षसमाज ॥ सभी गरु प्रलोक
सुष रहे तीन मुनिराज ॥८३॥ श्रमी चंद सलकोट मै वसे सराग
हि त्याग ॥ हेर मुनि श्राद वसे सुषी ज्ञं भ्रित ससरव डभाग ॥८४॥

ग्यानवानतपतेजधरसीलसिरोमनभप॥श्रीशिवसरस्वतीं
ममुनिग्रहमुनतसंहुरूप॥८५॥सिवजुगलजिनकेभए॥गंग
जनीकविहास॥धनपतशिवलघुभ्रातवररहेसदासुखवास
८६॥तावीवासेकेविबेग्रंथग्रितसरविख्यात॥गुनीधनीतहिज
नवसेदेवतसवहुवजान॥८७॥भपतनिसवुरकोबलीमहा
सिंधकोपत॥ग्याहवजितिरसनामकरकलजुगमैवुरहन्त॥
८८॥ग्रंथग्रितसरवुरमैसुवदपअमउनरमाह॥वीथिहारद
गलानिकीकविकोमनग्याह॥८९॥ग्रंथरच्योपहिजनीनैता
नेजनीनिदान॥गंगजनीकविकोसहारल्योग्यात्माध्यान॥९०॥
संवतविक्रमराजकोग्याठसातवसुऐक॥राघमाससितहूज
कोंसुरगुरवारववेक॥९१॥ग्रंथउदेजिहदिनभयोपरवनजे
मञ्जकास॥देहमभमकेरोगतमसवकोंकरैप्रकास॥९२॥ध्या

रमिथ्यपंचवीसमैंगनंतविकल्पप्रधान॥ कल्पोवलावलका
लकोनसामर्त्तपहचान॥ टेर॥ सारीरककविकुलवगटकल्यो
श्रातमागपान॥ दसहजारसरसततवर्षविविचरोग्रंथग्रंमान॥
टेर॥ अचलअलषगतिपर्मपदसत्तचितब्रह्मसतरूप॥ कहि
वेकोकविगंगमुनिनिश्चैपदनिजरूप॥ टेर॥ इतिश्रीगंगासि
रोमनिगंगासनागौरीमैंश्रीमुनिराजसंगतनिरंजनततसिध्य
श्रीपंडतपृजसकर्तेरामततनसिध्यकविगंगाराजतीविर
चितेजतीनिहानेसंध्याद्दिकपनेपंचविंसततमोप्रकासः॥२५॥
इतिजतिनिहानेसंपूर्णं॥ लेषकंपाठकेशुभंभवेत्॥ हे॥ उ
नीसैअरपंद्रमोकार्त्तिकमासमंगलवार॥ गुरुनेगवहाद्रन
गरमैलिषीग्रंथपार॥ हि॥ सुर्षवितिकीक्रिपातेलिषी
ग्रंथअनमान॥ गोतमरिषकेवंसमैंवन्नारामद्विजहनाम॥ र॥

शि०
२०६

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ लोलंवराजभाषा लिख्यते॥ दोहरा॥ श्री
जिनभववाधाहरै हैं सो समोसरणयुत साज॥ चरण कमल वंदू करे जै
जै श्री जिनराज॥१॥ विघ्न विदारन के नमो विघ्न विदारन होत॥ का
सराज सरदा सिम मस्त्र मित्त गराम सुख जोत॥२॥ गुरनि को वंदन करू
चरन कवल पद कंचन ग्रसि रासि॥ विमल बुध हम कौं करो निज गुह सरन
दोस॥३॥ वैद सजीवन ग्रंथ इह ललित ग्रंथ पद गोप॥ ते भाषा सु
दर रचो के विजन जन मनको प॥४॥ छंद वंध पद कठिन ता जिम कौ
नोहित मति ता॥ प्रगट करै कवि गंगाराम निवहु विधि छंद कवित॥५॥ सवै
या॥ स्यामसरूप सुभाग सदा जनस्यी विचित्र प्रीतको भाजन सारौ॥
गंगापति मजि सके पद को मन वारज सौ रस कौ छवि धारौ॥ गंगान रं
गजरा धरकै हरसी सन मै नष को द्वत भारौ॥ ग्रंथके आदि विधै तन
को कवि मोहन मूरत मंगलकारौ॥६॥ मनोहर छंद॥ संद्रविमल नमग

स्रो०
२०१

गंगकीनुरंगसंगमुकदविराजमानजराजरज्जासको॥ रेडनकीमा
लव्यालसमालमैविसालपाशिधरेमरगछालकटनेमेदेवतासको॥
मदनकदननिधिसदनवदनसितकमलगरलपदधारतसबा
सकै॥ वैलकीसवारेदूरविघ्नविडारैकविगंगजतीसासैतानविघ्न
विनासको॥ ७॥ मनोहर॥ भागमजोशिवकोसवमैजिनसामनके
नाहिमालटरीमै॥ गंगजतेंदलदैलनकोदलपालकहैजनकेस
कटीमै॥ वामसुलै वनपुंजविसैमरणबाहुधरैधनतासरहीमै॥
संडहेमघटीकुचनेंसुनिकावकरैसतरलकघटीमै॥ ८॥ दो॥ सुधासि
तासरसमधतियकुचमधकककपोल॥ गंगयतीसमसमैमधुरकवि
जनवचनअमोल॥ ९॥ दिवासुकर्कीकपातेरेरुपदेगविचार॥ सं
तेपकहैहमकहैवैदसुजीवनसार॥ १०॥ तदनुपिकीयतेग्रंथको
यदिदुर्जनसोक॥ तरुकमयलमजनकमैदीनवसैनहिलोक॥ ११॥

सवैया॥ कामनि के कलकलेल मनोहर जान रहै चित रेचन जागै
प्रेम पयोधर मैं बालहू सुधा रस ता सविशेष न रेचन पागै॥ जान ता के म
प्रिया पूमस सहमै जिम वार रवधून तम्रधु के प्रागै॥ गंगय तो कवि
को चित रंजन ग्रेथरचो सुन कै रति जागै॥ २४॥ तोरकाग दगंजन
को चरकादि मुनी॥ यती भाषत ग्रायु रवेद धुनि॥ तिनकै मति इन
लषकरे॥ ष्वकपोल कवैन सु ठैध रे॥ २५॥ सवैया॥ वैदक ग्रंथन गरै गु
रकै मुष लापविपुष सदा हित कारी॥ श्रौमक्रिया मगपंडित हात
ग्यो जन लोभ करै उपकारी॥ धीजवंत क्रिपालन दोसर है सुचताम
गजोग्य धिकारी॥ इष्ट्रि स लषन वैद वि वैजग सोइ करै रजकी मुष
कारी॥ २६॥ सवैया॥ प्रथम विलोकनि हाना फिर निश्चेकर रोगकों॥
तौ भेष जिसब हान फिर निश्चेकर रोगकों॥ तौ भेष जिसब
हान साध्य है षकरह जिये॥ २७॥ दोहा॥ मरु वैद भेषज जत जो

लो॰
२०८

नरपीडतत्रुयमाध॥ पारदतिज्ञानकलितकोत्सागकचेजिम
साध॥१७॥ पथ्यविधेरोगीरहे भेवज्रसोकितबार॥ इत्याभो
जनकर्तजोतासनभेवजदार॥१७॥ दोहा॥ वैदकरचनागु
णतत्रादिमैंसमेहोवे॥ पाछैतेसुखहोनकहतजगसभकवे॥
जिमविषमैसज्ञोगजिपातनदुखधरे॥ पाछैमिलेसुधार
अधिकमनिसुखकरे॥१८॥ दो॰॥ सेनसंदसबरोगतेअति
सैजुरबलवान॥ ताजेतापहरीक्रियासबपमेकरोबखान॥
१९॥ सवैया॥ कोकलबेनसुनोकटसबमकंजसेकोमलपान
नुमारै॥ आदिविषैजुरकोसुमलंघनदैमतिलंघनचितह
मारै॥ ताब्रपाचनदेहुजुरीप्रतिघान्यजुगेघवनीसुरहारै॥
नाग्रमेलकाथपिवेनरगंगजतीजुरदूरविडारै॥२०॥ छंद॥
जलधरमेलगिलोसघमासिकनागरी॥ वासकबनघर

आनधमोस्निकनागरी॥तिन्कोंबुहसमवेणकिरातनुवंसका॥
वातकफौद्भुरविन्तकमैकमेनासका॥२१॥तोटक॥कलसीघस
नागरिधाबुनिदे॥ध्वगोवद्रमेघभुनिवगिलो॥पिवक्काथक
रीद्रुरवातकटै॥जिमत्तोद्विगदेषतकेंजलटै॥२२॥दो०॥दिगस
तहलमदनुक्नग्रतिसठनसंद्दनवनैन॥सैंघवटुकनाग्रभषैत
वजुरवाततरहैन॥२३॥सवैया॥ईद्दमुवीभ्रिगराज्नकटीलवहि
सनकोगनकौदुचिताई॥जौरतिमैरतिकौरतिरंचकरे[illegible]चक
वातसठनैमनिलाई॥नागवितोमुबवैनसुधासमग्रंथकरे
कुचमैनवनाई॥गंगजुतीजलत्तापहरैसनिसंद्दजोहनवंनकु
भाई॥२४॥अगवणीछंद॥कुंडलीपावडामेघकोग्रानके॥सं
मसेनामिलेनागरीवानके॥पेचमंडकविज्ञासकोनामहै॥दी
र्घपित्तीद्रुरीवानकेकामहै॥२५॥दो०॥लालपीतचवतस्वनन

लो०
२०८

कटुमुखबैनप्रलाप॥ भ्रमतचित्तनुहपीतजीनाहिनहिपीत
जुताप॥२६॥ सैया॥ केवलरेनसकापयकरीअ्रयघोटकरी
नरज्ञासकोहीजे॥ तापसुहघटरेछिनमैजिमजीनकटील
घचित्तछलीजे॥ नागरंवदनभेलभ्योदुकचित्तविचारकहोन
वकीजे॥ औंग्रमपार्शजापकिरेछिनमैग्रघपुंजनिकेपुजछी
जै॥२६॥ दो०॥ हरिहरसंरानमजतडोताकोपितजजात॥ भली
वंडताभेरलीगगजतीसुनबात॥२७॥ जुगमार्घमिहं॥ मनोह
रछंद॥ दबकोमगारेनराजवछपाइकटुरोहनीजीमत
जलपितनुरीहीजीरे॥ दाघगिटसोवभ्रममुखकेप्रलापवैन
पीवतसमाधजिमतेरेवैनजोजीवे॥ कंटकाकिरातरेनवासक
प्रवेंगकटुमाधवीमिलारजलग्रसपित्तछीजीवे॥ त्रिबादाब
मिटैसुनव्रानननसोंप्यारीजिमतेरेकुचदेवगजकुंभहूरकी

जीवे॥२८॥चौपै॥हेतुकहेपित्तकफपछ्रनेक॥कथेपरास्त्रग्रादि
विवेक॥सुधासिवाजलपरपटग्रान॥क्वाथीत्तज्वरकरेनहा
न॥२८॥खैपा॥वालककरेनकफरमहोबाधिपंकजमोथसिता
समधारा॥रैनविषेघरकफपकरेसुनईहमधीबचकेकल
कीरा॥नूतनतापत्रिमापित्तकीवमपित्तज्वरीतनदाघतगीरा॥
गेगज्वतीग्रघवुंज्वविनासतंत्रतसमेजिमगेगसुनीरा॥३०॥
दोधक॥वेहनलालसुधापिचुमंद॥पद्मकधान्यकरेकल
कंद॥पित्तज्वरेकफदाघपिवासी॥वातविनासहुतासकरासी
३१॥कवित्त॥घृतकोमगावसनवेरवासहस्रवेरषवसंगजी
वनकेचात्तरीसोंधोईवे॥अंत्रगकोमलारसवस्थूलतानसाइत
नदाघज्वरमिटेवात्तचित्ततेनधोईवे॥कदलीसौजघसनस
हनितंवतनमिटतउद्वेगज्विमतेरेसंगसोईवे॥प्राननसोंप्यारी

श्लो॰
२१॰

लागत्चित्तकौविकारीजिमकंचनीकेसंगह्नदेहकोवगोइये॥
३२॥दो॰॥मोहहायभ्रमकरेसंदेप॥जिंवपुवालफेनकोले
प॥धनीपुर्षजिमगनकालीन॥सनसंद्रधनहोवेक्षीन॥३३॥
दो॰॥अमलकमलनजन्तुगततवनगंजततभ्रमरसवास॥क
नेकेलनरचतरसुचकहलीवनपितनास॥३४॥मनोहरछं
द॥संद्रसिंगाररतननचंद्रनसमंगअंगमेलघनसारघनचि
तकीहुलाससा॥मोतिनकेहारकंठफूलनसोंगंध्यकुचकेवि
लासभारअंगनमैंआलसा॥चातरीसपिष्ठमिष्ठमधवोले
वैनकांमकीपुवारीनैनकेलनिकीलालसा॥हायकुरमिटैवा
धसकलसरीरहूंकीऐसीछविवंतगललागेभीरवालसा॥
३६॥दो॰॥चंद्रनचरिचितचपलतनकुचमुक्ताफलजाल॥मृ
गधवचनसुविलासनीमिलततापतननटाल॥३७॥कवित्त॥सं

द्रसुवागवागविलमहोत्तहेषफूल नसमार जहाकैसेउरग्गानिरे॥
सजकोंविछ्छइरसुचसुकलह्कूलत्तहाकहलोके इलसंगवारज
पछ्छनीरे॥ कोकलसुकलनाहतंतनालवीनरागकामनीसुरंग
कथ्यानारिसंगठानिरे॥ सीतलसमीरनीरत्तोरहाघमिटेपीरभी
रपरेवीरवीरवीरज्जापज्जानिरे॥३८॥ दो०॥ वीजनवालतमालहल
कामनिकथ्याप्रसंग॥ नितंनाररतिचमनलषामिटेहाघसुवंग्र
ग॥३९॥ दो०॥ कहलीग्रंववकेहववनसघनसाकरीभीर॥ तप्रता
पतनकोमिटेभजतचलतहिमनीर॥४०॥ सवैया॥ प्रीतमभारनितं
वज्नुरेघनवीचवसंचारकरंचनसेक॥ पीनपयोघरजोनसुरेतन
काममहालसकामभरेक॥ गाढनलालससंगकरेत्रिपजेसुषचा
हतहाघटरेक॥ जेगजजोसुहिमासजलहिमलेपकरेरतिकेलवि
वेक॥४१॥ भुजंगछंद॥ मघामाघवीमलम्रीषंडस्यामा॥ लवंगो

लो॰
२११

ननोहाबसंठैसुरामी॥नमालिषसामालतीफूलवाला॥मधुजछ
षरजूरश्रीषंडलाला॥अन्नाजीधनिरंतकमंमेलजेडेसत्ताहूइ
लावंसजेपदमहेडे॥कुटीमेलचूर्नसित्तालेसमाना॥नरीकोज्
हीजेरकेटंकषाना॥गिसेत्तापत्ताकोमष्येसंगपानी॥लगेमषष्या
रीषरीसोबहानी॥करेकामकाप्ताबढैबीजत्ताको॥घटेपित्तलो
हूश्रतिसारज्ञाको॥मवेसीहटावेनसेस्वासकासा॥लषीरंगगते
रोभईउहेमहासा॥जतीजगभाषैसुनोमाचवाला॥कुचेतुंगवेषी
ज्रिमेचिमचाला॥५२॥दो॰॥श्रीषंडादिकचूर्नमैचारेउमनि
काल॥मेलवैदसीतलसुषदअधिकपित्तज्वरटाल॥५३॥सुधावि
पदविभ्रमधरेईदुकलाछविजीत॥चंदनचर्चितहरममैस्वाप
तापहरमीत॥५४॥मनोहर॥प्राननसोंप्यारीसुनपीतपीतका
रोनरत्तापकीकुमारीतनरह्योनविवेकहै॥औषधीअनेकज्

लखिलनमसतावकलअै सीमुखलागैजैसीकौडीनिवहेकहै ॥ वै
दनकैवै दयाजकरैकौनकाजजुरीभैवजवत्ताउसुनई दमुखीसे
कहै ॥ जापकोमिटावैसद्यअंत्रितकौकरैरघ्रहे ठनसमेतपान
तेरोमुखहैकहै ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ धामकहिमजलघ्रानमैपिवतनसकरा
पम ॥ अंतरदाघमिटैसकलदुखदुर्गार्चिनजेम ॥ ५४ ॥ चखनच
लनचितचोरनीवेदनचवंचनगेह ॥ वेदचांदनीचौकमैचपल
चर्तसुखदेह ॥ ५५ ॥ सवैया ॥ पितजुरीप्रत्तिहोनकहारसफाटपीवै
चितचैननअवै ॥ लेपुकरेतनकाछ्यपिवैमघजापनज्ञावतअंत्र
त्रितपावै ॥ कामनिकंमभरीजुवत्तीमुखपानकरेछिनमैदुखजा
वै ॥ लोलंवराजप्रत्तीतकरीनिजगंगजत्तीअहमुनवतावै ॥ ५६ ॥
दोहा ॥ जेतनचाहतमुक्तनपसंतसंगसुविनीत ॥ कामनकपाप्र
संगमजटरतमाधमवज्ञीत ॥ ५७ ॥ पंचमतलपदसुधासमवि

लो०
२१२

ससमानैपाल॥ जलथभरेजलतनसुषीतस्रवातभवटाल॥ ४४॥
जुगमात्रखंडा॥ मनोहर॥ थिंगकेसमानकुचमाधधीनकेसमा
नसिवाकंमिलातरूपकासमीरमेसना॥ प्रीतमसुरंगमंगअं
गअंगकामरसनैननमेजोसअवलेहमधुवेसना॥ स्वासकास
गौविलासज्ञावनहुलासवीचचाटनमुषारविंदरतिकेलकेल
ना॥ जपतामिटातगातअंगनवतानकूरजैनुनकेमतिजैसेसी
लवेबचेलना॥ ४५॥ जुगमार्थ॥ दो०॥ जुगलचोरचपलातनोए
केचालप्रमान॥ जसधनबलगुमहरनकोअदभुतचरतसुजान
५०॥ कवित्त॥ ग्वालनीपहुपषनस्वासरिपमेलवनानागदेसमा
नवेदवीचुठेलडुतका॥ देवदारघाइपीतकाछकोबनाइरनहर
नबलनजिमचितनादिन्तका॥ जुरकोविनासकासस्वासको
केनिकाशतनभषकेपकामारगुनासतप्रसूतका॥ वातजुरजा

नकफपुंजनकेघात्तदलदै तनकोदलैजिमपवपुन्हूतको ॥ ४१ ॥
ञोटक ॥ हमरेचिनहैविसमेसपरै ॥ कटकोफहूकोमुषकोजुहरै ॥
सवयोऽनएकचहैलखूरै ॥ तवनारषनीचितमोदुभरै ॥ ४२ ॥ क
वित्त ॥ हरियावसरोकोचंदनेकीमेलघारावोनवोरलाइफिर
किरगलैकीघाइजू ॥ जोइदेकोउसीरमोषसुंठकोगिलोयवी
वपदमकोगिडाइकेंडकाडेकोकराइजू ॥ चोरभागरहोजाइम
घाकोलेडाइमिश्रसंनकेकिसालेयतोगेगनेगिलाइजू ॥ जिंदे
कीसुधाइकचीनोदैकोहराइदमैतापैकोमिराइवकवादेकोमि
राइजू ॥ ४३ ॥ कवित्त ॥ नागरेकेकोम्पानिकचश्रृंगकेसमानघश्र
तासमानवचासिवारूपमेदना ॥ भारजीसुमरठगंधदारकेसमासं
धकाविलैसमानवपुधंनकेमिलेंदना ॥ कामकोकवचूवनमधको
पवाइतनकोजतप्रसेगदोषतीनतापरेदना ॥ नामकेजपातग्र

लौ
२१३

घपुंजकोटरातननिजैननकेमत्तिजैसेसोलवेतचंदना॥४८॥दो॥
कविजनचितनंजनगोतनपिकमदरोजनबैन॥ज्वरमैमखकरे
क्रियातसुनचंचलनैन॥४५॥सवैया॥कोमलकंठसुवानसुनेनर
चितनचाहतकौनशातती॥अंमृतकेपारसैंधवकेजतमृरेचकजा
ननती॥दाडमकोमुखचाखतजोमृवमखलगैसनविथमती॥श्रम
लवेतसुकंठभखैनरभूखलगेकविगेगजती॥४६॥वातजकेश्रुक
जोमसविखेउरयाघरकेसमभखगती॥केसरलोगेससैंधवतेश्रु
तहिरमिलेवकभनरती॥जातमृरेचकमेदहुतासनिमखल
गेनरखातमृती॥खंजनगंजनगेचनगंजनहुंविननैनलखेद्वि
मगंगजती॥४७॥वातसुनेककरजोरकहूंचितचापलतेतजनार
गती॥बैनसनेहमहेकवितामुखधारसतचितमानवती॥सैधव
तेहवमखकरेमृवचिंचकितातजलपिनहती॥तोतेमृरेचकमेद

हुलासनिभषलगेनरषातगुनी ॥ तोमुषचंदुवनदुषटरेजिमसा
चकहैकविगंगयती ॥ ५९ ॥ कीरदिपुमघवाजग्रेष्यकगुगलतेस
रहैमघती ॥ स्वासदिरुकरतोनलैपावकभनतकेचीवचमधवती
हैमकुलीरधिंगुभवनाकलहोव्रिकीचवहोरहती ॥ जातप्रलाप
कसंनग्रशेदसकाष्यकरेकविगंगजुतती ॥ ६० ॥ वातस्लेष्मवातरज
रोगसतवर्नसल ॥ खेदसैतजिमवीरजपकाटेभवदुषमह ॥ ६१ ॥
मनोहरा ॥ रविरास्नाकिरातरदेववचबातसिंधवारकोमेगाद
हरमकलत्तेसुहिजना ॥ मंजकाजपंतसरउषनमिलंतवीचमाल
तीसपत्तसममेलकसंदेजना ॥ तीनदेवसासधनमारतप्रसं
ततनसीततताविनासबुरकासरोगगेजना ॥ हनुविभजाततत्रघंउ
जनकोघातजपजैननकेमनजैसेमीलवंततंत्रजना ॥ ६० ॥ चतुर
रवदजमकमनोहरछंद ॥ खेपसीकचूरजाहिमानकेनामर

सुरपावरागड्डविरूढ्रामसेनचेतकी॥नापकोनिवारवारदेष
तीनवारदेतहाघसोषदिवासापचितकीअचेतकी॥मांगीधमा
सजटामलतेसमासनुगधावनीसुमेलकाय्याकीजिवेसचेतकी॥
सुनोकविराजसुरकोरुलासमाजछतकामकोभ्रमोदचितहरेरति
चेतकी॥६१॥सवैया॥संनविवेअरकालविवेककुमेदनहीसुनसं
दवांनी॥कालविवेडुवटेकसमेजहसंनविवेडुवहैअधिकानी॥
जोतनवसंप्पकवैहमिलैतनमेवजदेदकरेनजहांनी॥हंसगतीम
गराजकटीनरकोनप्रनापकताहिसमानी॥६२॥सो०॥जोतन
काठीलेतसंनिपातहयमगनतै॥ताकोध्यानहिदेतवदनुको
विहनेहनी॥६३॥सवैया॥देषमहांभ्रिकस्यामभुयंगमदेषतना
मसुनेतनकंपत॥मारचवेटग्रसोजिसकोसुधभलगईमुषवे
ननजंपत॥ताडुवतेनिपवैदकुजावतमोगतजीवसुहैअवि

लेवत ॥ गंगगजनीकाविश्मकहेजगहेमप हार्थकोनसीसंपत ॥ ६४ ॥
तीनहेबभूरसोनमै उपजतसतकेमल ॥ कनपेगतासोकहेकनै
सोपयुडबकूल ॥ ६५ ॥ पंकनछंद ॥ जोकलगाई ॥ ग्रश्रहयाई ॥ रोग
घटाई ॥ सविपिविवाई ॥ ६६ ॥ श्रवणीछंद ॥ रासानागरीमंपयकामेल
कै ॥ वीतहेग्राजटालुगकीठलकै ॥ हेमरंगासमेलेपकोजोकरे ॥
कौलनैनीसुनैसोपुकोसोहरै ॥ ६७ ॥ सो० ॥ गोजलहदंपिसाइवा
रवारतेपनकर्त ॥ कनग्रघमिटजाइवालेपनजलमदनफल ॥ ६८ ॥
दो० ॥ पाशिमलहरेछिनमैनजहाडनकीकफकासननसावै ॥ स्वास
विनासकरेपलमैज्वरजीर्नजातसहासुखपावै ॥ वानसुमलपिवे
कथकैलघुउब्रतेचपलाभुरकावे ॥ माघघसंगमजेगुडकेतपनगा
तपुरातननगंगवतावे ॥ ६९ ॥ दो० ॥ अतचिपोडवतमंदस्वासकास
क्रिमगैन ॥ सुनसारिससुरसारसीगासमनमेबजकोन ॥ ७० ॥ सै०प्रा०

त्रो०
२१५

संद्रचापन्नपीसकरेजुतकेवलद्धिननरुहावनमै। पीवतमान
वहानकरेकफजीनितापघटेतनमै॥ रामप्रलंवहन्योजय्रघवा
रघुनाथकरेरिसुरावनमै॥ राममहादुजजातवलीजिमकात
कवीजहन्योरनमै॥७१॥ तपकछंद॥ पंचमलतलकाथकरे॥
तासर्सोंडपिसउप्रधरे। कंजनैनयततपकपदे॥७२॥ वसंतति
लकाछंद॥ मोघासठोकटकरेनजवासहानै॥ भुपालदेवतरथा
चनिसंठग्रानै॥ छौन्नीमघापुतकरीनरकोसुहै॥ वन्नेत्रिहोव
विवमेतपत्नीनेछीजै॥७३॥ निजगुरमते॥ मनोहरचतरपदजम
क॥ सेसकोमगाइवेघकंटककरातपातवर्लेकरातवीचदुगन
हैकालका॥ सातदिनजातघूववर्लेकरातसठनरेगकोवतातजै
सेनेरेकुवकालका॥ मबकोलगातबातविवमटरातसरद्धिग
नकेपातजातदोगद्धिगकालका॥ सरतवतातजाकेहेवीवह

वातसात्वहैतनकोहलैजैसेकालतपकालका॥७४॥छंद॥वां
साघटेलफलजैसमनिंवहीजै॥स्यामाकछेद्रगुतमाधवीका
घकीजै॥पीवेनरीतपाहकाहकहूरभाजै॥भारीनितंवगतहैवत
नागलाजै॥७५॥सवैया॥सबअंग्रगमहातनकोमलस्वानसनोत
जचावलरी॥अंगवहेद्विगउजरमेसतहीनमधोयकतापसरी॥
तासनिलोहकहेतरकहिकतापरहेनहिमेकघरी॥संद्रनाभंग
भीरलषीतवचितवलेजिमचातुररी॥७६॥दोहा॥ग्रविगलक
हिंगमेमगधवनारसधान॥अंगगजतीसैंवीरगुरकतरकाहकं
हान॥७७॥मंद्राक्रान्ताछंद॥मन्नाभ्रेपनलहणपलावीचघानं
ठिवेजू॥मेघाघ्यानागनसमकरेहौद्रपलीपिवेजू॥वालेइनाभ्या
गतिचपलेतीजकातापभाजे॥जैसेवानीललितलवकेकोकिला
चितलाजै॥७८॥भुयंग॥हवीजीनेकेवीचमेहिंगुकीजै॥कटवी

लो॰
२२८

यकांतापजनसपदीजै॥ जिमैदेषलीलावतीगंगयधारी॥ सदासा
धकेभावकेदेनटारी॥७३॥ दो॥ शरदकालप्राशिमलरहतहूनमस
नमषहहूप॥ मनहमदलजलनसपतेजाननचतुरस्पकमयपार॥ सु
थेजा॥ सीवातरवासानतोवाविसजीवै॥ मधपषंडमेपायाक्रजीष्काष्पयीवै॥
नवैचौथकानापहूरैसिधारै॥ जिमेदासकोरापतीमरडारै॥ ७४॥
सोनजुरत्ना॥ दो॥ रेमहर्षकंपुतसतनहैदुषकछुमुषपीत॥ सातक
भावभयोसबीनहिसातकसीत॥७५॥ कवित्त॥ त्रिकुटाकुटाइसेग
लाहकेरलाइनरसेवनकराइनपसीतकोमिटावनो॥ बातकी
पिलाइहिमचंबलीरमाइमपकेवलउठाइतनपावकसिका
वनो॥ दंभकेदुकूलसमनवीतालिनुलरवपीवतसकेजवोसमू
लसीतजावनो॥ संहनितवजैसेमिरतउहैगदोषदेमतेविहीन
परकामकोमहावनो॥७६॥ हैया॥ यमक॥ भालपराशीकचस्याम

मनोहर वेलि गुथी है विनागाने कारै ॥ काम मदालस जो वन के मद काम विशेष गति चंचल कारै ॥ कुंकम ते मृगनाभि लिपी कुच भषन भूषन पूलन कारै ॥ सुंदरि ठाढि भजे दिन को प्रति जात के टीतप सीतहि के कारै ॥ २९ ॥ वसंततिलका ॥ वासपवाडयववइंद्रग ड स्वेकोद ॥ शुक्लासि कालकचरे जनसुंठके दा ॥ ष्यारे कषाइतप सीत विनासकारी ॥ लागजि मैं सुवन पावक देत जारे ॥ ३० ॥ मनो हर ॥ श्रम ते समान वैन मंमता को स्थान जोग्य सुंदरी ॥ सिवा समा पसि वावीच पाइदै ॥ सघन सपीन कुच पीन को समानु सुच विश्व मैं प्रधान तुहि विस कोर लाइदै ॥ सिहके समान कटि सि घी को मिलाइ कटि वीच मैं रलाइ मधुम गधी पिलाइदै ॥ वि कामि राव मैं रति विकास हवै तेरे माधव न की लोच जैसे सेन को मिराइदै ॥ ३१ ॥ दो ॥ नागर मोघ गडू चिका तद्राध डी स्नान ॥ कल

लो॰
२२७

कबीचवकरमधुकनापीतविषआजुरहान॥८६॥वसंततिलका॥जा
केसमाननहिमेषजमोरकोइ॥केजैककाइथसोनधोइ॥जाकोसं
गुतितिलतैलविलाइप्यारे॥जावैसमीरावैषमीतपजोरभारी॥
८७॥सवैया॥दूरकेरायोषमीतपकोमधुकेगुनजोनरचेतकीयावै॥
दूरकरैविषमीतपकोश्रवमागधदूधकेसंगवधावै॥दूरकरैविष
मीतपकोगुरकागुडसेगुरके [illegible] ॥मेंगयत्तीग्र
जमोदमथैगुडसेगुरकाविषमीतपजावै॥८८॥मनोहर॥संदूसरू
पतननरोचनप्रकासतरोचैचलचपलचषकिंजनसुलजतहै॥माल
तीप्रसूनघनपुंजकेसमानतेरेकेसनकोपाससुचस्यामताबि
भातहै॥सिंहकेसमानपेटवीचमैलपेटतीनचेतकीपटोलकदू
रोहनीमिलातहै॥यहकारलाइघनकाथकेवनाइनरपीवनं
कनाइतनविद्धौरहातहै॥८९॥मनोहर॥कंजनसेहाथनमैकंज

कोप्रमत्तिकहांसुंदिनितंबवात्तसुनेचितलाइकै॥सुधाकेससमान
मेरेवचनप्रमानकरधावनीपरोलनैंबकुरजसुधाइकै॥कोप
कोवनाइमधुवीचमैरलाइघिवजीरनसमेत्ततपाविछमीमिरा
इकै॥कहैकविगंगजत्तीरूठनहीरतीयामैसुनोरूधमत्तीवेदद
वलैप्रत्ताइकै॥२०॥दो॥हारकघरकुचवात्तसुनिमधुस्यामनर
घात्त॥विछमविवात्ताकोकदीकरेनतनमोर्घत्ता॥२१॥वेहुरयवा
वी॥कुनरकत्ततोरक॥सुनहीनकरीकुचहेमघरे॥मधस्यामभ
जेविछमेविकटे॥विषमेदुवत्तासनहेतरत्ती॥सुवसाजसराक
विगंगजत्ती॥२२॥सैया॥चंचलताहिनएकतजीतनसुबम
वात्तसुनोहमरी॥नैनविसालभरेमदलालसुवोलनकोकल
केसमरी॥मेघसुनादकमत्स्यरेसितापटरेविषमीगमरी॥वेच
लकामविलासरतेजिमस्तरडदेतकरेतनमरी॥२३॥मोरक॥विष

शीतपहूरकरेपलमै॥ मधुछावगडुव्विछिवाजलमै॥ करवकाघ
त्रिवेनरत्रातसमै॥ अलकैवलनागिनिवालसमै॥ ८३॥ सनत्वि
तमैजववरोसदै॥ अतीमानुवतीदृगलालकरै॥ जिमत्तेपदमैहम
लोटरहै॥ तिमत्तापहरैकविअंगकहै॥ ८४॥ दृगचंचलमारसभरे
अवूल॥ कवलातनसंदिहैनकला॥ मधुमोषपयुवछिवाविष
मै॥ जिमकामविलासरतेगिषमै॥ ८५॥ सुनकोमलवैनकुकाग्रि
मेत॥ तनकामनिवासअवासरते॥ वचानिषछिवाजनधूपकरै॥
जतसरषपतेहवतापहरे॥ ८६॥ कटुकीघनरेनउसीरमिले॥ ज
लधानसमेकरवकापजलै॥ नरपीतसमागमतापकटै॥ जिमसा
मलषीकचभोरलुटै॥ ८७॥ भुयंगपमछंधावनीसरवाहमनि॥
कडुश्रीफलमोषसौमासमूनि॥ विषादाषवालमधाजीमिलावै॥
कुणंवीजसोमेहवीकोपचावै॥ ८८॥ मलेअंगकोपीतवातापभाजै॥

करै सो षडाकी व डी भषलागै ॥ भजै पीतनासी सपी डामि रावै ॥
ज्ञिमे देषली लावती ज्ञावै ॥ ९९ ॥ सोरठा ॥ पीपलसे वसुमंत्र भजेन
र होम करै त्रिकु मैन पुजावै ॥ देव गुरू द्विज के गन पूजन माध कमा
मसुहेम्र गुनावै ॥ धातिजो मन दान करै विधिता पसमैन सदा ऽ ष
यावै ॥ जे गजनी सभता पामिरै ज्ञिम पाप करै मुषवा हगुरु धिग्रा
वै ॥ १ ॥ चारभाषा ॥ देव गुरू दिज पूजा शिवा ॥ साधुना दान मेवष
ज्ञिन षडस्म पूयसका दि ॥ गुं मस बमै मपै दिक ॥ १०१ ॥ सोरठा ॥ केम
लवैन सक्रो कल्हिकै सम रामकलाकु सलेमत मै ॥ ईदमुषी वलती
वपरेक ट पंडित नारकुकी रत मै ॥ ज्ञापविना नुरवा नन रीलघु
भोजनलै दिनकी श्रुति मै ॥ चारघटी घटका जुगलो दिन की श्र
ति वैद कके मति मै ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ वसु मित जुर रचन करी भेषतू
भामा भास ॥ त्रिपमस गेपूर्नभ. शोकविजनलीलविलास ॥ १०३ ॥

इतिश्रीभाषालोलेंबराजकविचितरंजनक्रितपंडितसुरत
रामततनसिष्यकविगंगारामजतीविरचितेश्रृष्ठजरप्रती
कारप्रियमोविलाससमाप्तं॥२॥हो०॥सजलसंघनघनत्त
नवर्नभगवतजसधरमंत्त॥सकलहर्नश्रवजगतममन
रहरिश्वरिहरिसंत॥१॥जुग्मार्थ॥तोटक॥मघवाजवमोच
किरातगले॥श्रसितसमनागरीजीवनठो॥श्वतीसारजुतं
तपनासकरे॥सुननकुवकुंचरकुंभहरे॥२॥कुंडलीया॥पारी
विलपतीसहिमपदमकधनिशाठेल॥मघवाजवबालानु
धावीनेनागमेल॥वीनेनागमेलधरापतिजामेपावे॥काच
करीमघपाइपीतननरोगमिटावे॥क्रिलासावमहाघश्वरो
चकत्रिसमाभारी॥सर्वजातश्वतीसारतापसुनसंदपारी॥३॥
वनुपिदजमुक्तमनोहरछंद॥पंचमलरकोवनकटुजापब

घनना गरी मल्लू रकुडावीरकवसारसी ॥ करेजलपानवमस्वा
सनकी हानतपककोकेसमेतज्ञानपीरअतिसारसी ॥ पकत
सनारवैह उत्तरसधारहेतकफिकी अधिकवातगुरमुषसार
सी ॥ पितकी वडाई पामैलघुमलपाई पिववारवारपकतकिया
भ्रिगनैतसारसी ॥ ४ ॥ अडिल ॥ सघनहैवततरूपाठाती वनआ
निरे ॥ कंटजविषाविंडंगकलकजलकजलठानिरे ॥ सकलट
ति अतीसारसोच्यतनकीकटै ॥ कुंभजनमजलरासपीतजिम
तपलटै ॥ ५ ॥ इतिज्वरअतीसारप्रतीकार ॥ स्वैया ॥ सेदअग्रगस्त
तोव्रभकेसंगजोनरप्रीतकरैसुमती ॥ वालकश्रीघनधान्याविं
स्वविसंगसोनरप्रीतकरैनरती ॥ जानरकोअतीसारमिटैयोरुज
साचकहैकविंगगजती ॥ वालकमोघनधान्याविस्वसंगसोन
रप्रीतकरैनरती ॥ ६ ॥ दोहा ॥ वितअतीसारोधान्यहरश्रीफलमे

घविचार॥कोपीवनज्ञानैइहाँतैइनाकोविदनारि॥७॥घर्मलु
ष्ये॥दोघक॥श्रीफलईद्रजुमेघमिलावे॥लोधमहोषधिमोच
रसावे॥चूर्नपीवेगुडछाछ्रलाई॥जीनवहुआंती सारमिटाइ॥
८॥कीटसैवे॥भावकहेमलतालतैनेललंतागसहातनको
मलकंजन॥सेवस्तरंगमृष्पीसनचातुरकोविदकीज्ञिमेचित
रंजन॥नागमोचमहाकुसमंअजमोदकरेतनकेरुगगंज
न॥छक्किनिसेअतिसारटरैत्रिमगंगजतीद्विगदेषतवंज
न॥९॥कवित॥सुनैषचवाहेवालवेलपूबालछ्वलतिनसंर
गपदहाथमैविरांती॥मालतीसुमालकुचमधरलसंतजा
लमेषलाजउतिरेनकटीभागसाजती॥चिचलकपोलनमे
कुंडलझलकअलिरघरससलआमअतीसारभाजती॥वा
लकसुविलाविषावारहविडेजलहैतनेवीचकातीकालरूप

ज४

गाजती॥१०॥बाहुकलुपता॥दो०॥अ्रतीसारसमनीसदाचित्रप
वअ्रभिराम॥अग्निरघतनमोकरेराजतस्यामास्याम॥१॥अने
कार्थभिद॥कवित॥जामनैंगिरीचूतफलनागरीकोवालकप
तीसधावेमेलवारवाहकी॥ईद्रजअ्ररिष्टपष्टविकीतेसिला
टसिवाचूर्नवनाग़कूटभलीभालवाहकी॥मुषपैससाकाग्नि
गराजकटीअंसनपैवारगरोकुचनपैभोरद्वनाग़कूटभ
लीभांजवरकी॥जापमिटजातअ्रतीसारजोगवातकहाधारत
चलतगतिगगकेप्रवाहकी॥१२॥त्रिपदजमकतोटक॥लषितै
कुचाकिंदुकलाजमरे॥भ्रमनामदरूपभ्रमोदहरे॥सुनहाउम
केटजकैद्रधरो॥पिवकाप्यकरीरुधराजिसरी॥१३॥तोरहल
वहाउयोलडैजनद्रुतसहिगैन॥तोजनसंगतकीज़िसोअ्रतीसा
रजगवैन॥१४॥अघरपाटदे॥सैया॥तंदुलकेजलसोंघसकेस

२२१ नस्यामकोचीमलहीनसंचंवरन॥नागगतीकटसखंनैसनछंद सितातिसकेमघमंडन॥हाघतिघातनअग्रविहंडनसारमाह चित्तकोअतिभीडन॥षंडनमेकरेसुनतेत्रिमगंगगजतीमनमोह नगंडन॥५॥मनोहर॥वेनीसेसनागसुवजामनीमुहागद्वि गचंचरकुरंगकीरनासुहावती॥चालगजराजत्रिगराजके समानकटकेवुकेसमानग्रीवकोकुलावुलावनी॥सांडलस मेलगडगुटकावनाइघारकुचसलआमअतीसारकोमि टावनी॥कंचनसरीरसमवीजुरीसहास्यानरिविलसकठे

२४ रकुतेरेमनभावनी॥२६॥कवित॥स्वासकोअघिकमीमरुछ मरोरजामेताघञ्चिटसोघसहिचकीजनाईहै॥ताचकोचु मारीवेगअतीसारभारीसोजकासकीत्यारीअरन्हहैघताल घाईहै॥छैसेलछकलठनपछानवैदवुधिमानअंतकालभृसो

तांकेमेषत्रवत्ताईहे ॥ गंगजलपानहलतुलसीकोसंगहानमा
घवगुविंदरामरामकोजपाईहे ॥ १७ ॥ वैत ॥ जवानीष्टिपर
नीवलालैउसीर ॥ घनामेघसंठीविलबीर ॥ पकेक्काथहोय
नसुपाचनवतात ॥ कफरोगग्रहनीसुवलगमचुकात ॥ १८ ॥
श्रीडाछंद ॥ गहेवलजावानवंघुषाहरीडाकरंज्यमिलावे ॥ म
लूरोगनिसंठीपनामूकरेक्काथरोगीव्रत्तेझोपिलावे ॥ कटे
ताषरोलाहुनामीससंग्रेनिवाहीविकारी ॥ झेमेवालवाला
वालीसाघकेचित्तकोदेत्तढारी ॥ १९ ॥ दुवैयाछंद ॥ संठपती
सगदुचौजलधरसमकरकलकरीजै ॥ पीवतग्रहनीमदहु
तासनक्षामवेधसवछीजै ॥ ष्मपवासंठीकलकविषेघत्तसा
घतपीवत्तरोगी ॥ पाठकासग्रहनीतजवटीवेगमिटेसनभो
गी ॥ २० ॥ पाठविषाईदजवाजिक्कामहारसोतानिग्राने ॥ संठीश्री

कलकुंडमाल समकुटी वर्नै ता नो ॥ तंदल जल मैं सहसमिलाइ
फाकत ज्ञान निवारि हि ॥ गंगासागर मय तनि मिटजा वैगुदजा रकत प्र
वाहि ॥ २१ ॥ सवैया ॥ भाग समान कि रातन कड घन ई झज स्रवु मे लि
इ तीके ॥ खोड षाभाग मिलै भर ज्यग भाग सै मे करची चक ती कै ॥
इ दकल मिद्धुर्न देगुड जीवन के संग सारस्प तीको ॥ नाम रहेग्र
घ पुज मिटै जिम गंग जली प्रभ ने म सती कै ॥ २२ ॥ दोहा ॥ पांडु ताप
ग्र हनी गुल मग्रन्थ मे हमि हमिटजात ॥ गर्भलात बधपाहै का
लधूत दैल न तलथान ॥ २३ ॥ चैगपदा ॥ सवैया ॥ नार्लजापरतैन
त्रिकैक टुपाव कमाघ धमल मिलाइ ॥ हियमिसी ग्रज माव चजी
रवदेवावको रजकुरची नाइ ॥ तातन दिसंग पिवै जल सो ग्रथमा
जल को सघ पान कराइ ॥ दूर करै गुदधं कुस्राहन भप्रकरै गुल्मी
मिटजाइ ॥ २४ ॥ पंकत छंद ॥ तेसुन नारी ॥ प्रान प्यारी ॥ साच व

ताइ॥ फूलैं थाइ॥२५॥ छपै॥ जुगमग अम्ब सरल वन षंड बन हिं गज
वाघ न॥ अमल बेत रस लंग केल रसनु गत सुभाय न॥ यात स्वे षग्र
हन्नि ताप गुद ग्रेकुर जावै॥ गंग यती मेलोक मै सुनो काबि न के मोत॥
सेपन या वन भेष जो या सम होर न होत॥२६॥ दोहा कुलक॥ श्रीम
लच्छि न चवक मिला वो॥ नालिकेर नैं कूह वनावो॥ तक्र लंग षाव
नको दीजै॥ दुलनग्रह नीं दूर करै जै॥२७॥ छपै प्रसोतर॥ कहा जल
प्रभ करै कवन रन जीत जनना चोदी कासे होत कवन हिम षाइ वना
वो॥ कवन चमन गल चुने कवन नर हत रमा वो॥ कहा पंथ मे हो
त कवन ग्रह न युद्र मिरावै॥ गुल्म भ्र रसत तमंद को पली हदे ग
नासनैं लो॥ दाल रूगउ तरभबे पाकसमा सो चली॥२८॥ वेसंत
तिलका॥ मोथा उसीर जव इंद्र जव विल पेलि॥ हिरे वेर मोच रस
का पह हरी पचे सो॥ आमा न वे धर धरे ग्रह नीवि कारी॥ श्री षुनि हे

नि॰
२२३

तसुनिकाम नौ नै न सांई ॥२८॥ दो॥ सतीसार ग्रहनी सुरसरहां विवा
हयोग॥ भाममामिउ पदेस कछ गं गजातीसुखभोग॥३॥ इति श्री भा
षालोलं बराजकवि विंतरं जनग्रंथकतन कवि पंडत सुरनतकंमन तत
प्रिष्ट कवि गंगा रंभ मजनतीविरच्यो तं गन्ती माररसंग्रहनीयादि भूतीका
२५ तीउ विलासः २॥ दोहरा॥ रंभ न रंभ पर सरह मक समकमठग
षधु धधु रह मगेस॥ वाम न कल प्रभ जनन मदं गमे गल करन ह
मेस॥१॥ श्रवन सुन कैमल व रन पिक श्वास कास सुधिकाय॥ तवसु
वस्वासि वेसरलटकह रनसक च डख भार॥२॥ छपै॥ लेषनज्वर
पति किसेकौवि न जुरसीन न विवारे॥ रसजुरसी जैवला कव न पिन
तापस ताटे॥ नबज्वर कहानदेत सेन म किश्रा करावे॥ यवनमेष
जीवलावैदानिजकलाकरावै॥ कवन पथ्यभसमकविषेकस श्वास
श्रालिहरग्रसुर॥ गंगजतीउतरसुनोकनासहतदेसलगुर॥३॥ न

राज॥महोवधीसिवासमानवारवाहमेलकै।वनारगोलका
सुमीतईववीचवठेलकै॥धराइकेमुषारविंदकासखासज्ञा
वना॥सुकामनीविलासजिमेघामकोमिटावना॥५॥मोती
दामछंद॥अज्ञावलमत्तसंतमितज्ञान॥विभीतमिलेपल
सेंप्रमान॥सुपक्षकरोलेहछौइमिलाइ॥हरेकफकासवि
लासनसार॥५॥चरचरीमत्त॥आहिकतुलआघअनफा
ननसमानठानगुरनैसुआधीमानधामकोंबानी॥अरुमा
अयंऊनंमेलत्तामैगेज्ञातठेलजलहवसुमेवज्रपलंपचरी
सज्ञानी॥लेहसोवताईइतरैनकलातोहिहितप्रानननसैप्या
रीमित्तमेरेचित्तमानी॥तपकासबईजावेअशीगुलसीमिटा
वेसोथपीनसनसावेअलिकेमननभानी॥६॥हरगीतका॥तत
अमरपदमकअंग्रपसीफलरामवातमेलकै॥कटत्तीनस्त्री

फलग्यानचूर्नकोजीदेसमेमेलकै॥रसनामचिंतामनसुकाम
निम्नाउमघसोंचाटिये॥कफस्वासहिचकीबमनवादीताप
गोलाकाटिये॥७॥ऊबोला॥चापलावासासुठमडिंगीचित्र
गडुचीमेघससी॥कलकमर्वरजसंगपिलावेकिसकोकफ
नहिजातनसी॥८॥त्रिभंगी॥कचस्यामलंबगीतोबनग्रंगं
कलह्मचंगंसमग्यानि॥सबकेसमघरिषेउंसरिपीसवि
चारेगुटिठानं॥बंबूलजटाहैकाथकरावेमुखमैपावेइकगु
टका॥सरकासमिटाईऊठिनयाईश्रवयवनाईवसघटिक॥
टे॥सैवैयाछंद॥कवनरूपकवलानतनवोलोप्रथमवचननि
रसब्दविचार॥कवनसंबोधनगिरीसब्दकहुविनवीउनब
षीकिमसार॥मधुरवचनवहामहितपठजांकिसकोकाथ
सहाहितकार॥गंगाउत्तीप्रतिनागरनागरउजनरनागरइसोसु

धारा॥१०॥बातविनासनककफकरश्वासनउनमीलनवीनसको
ज्ञानद्विगमलहारीप्रभासुहारीक्रिहेरोगउच्चाटनमान॥स
कलज्वरठरत्नज्वसमनश्वासमहरपावकउद्दीपनप्रवान॥स्वास
कासकोकेवलसाधनविभ्रमकुलककलोपप्रधान॥११॥गंजरा
छेद॥स्वरसुनदैनकलिकरकंज॥लषद्विगनीलकंजनरंजन
रंज॥सिंघीकलकमाग्धीठान॥पीवतकासश्वासकज्ञान॥१२॥
मघामाघधीमलभिले॥स्वहनागरीसहत्तमिले॥रसकोचा
टोसुनस्वली॥देषकतूहलकफहाली॥१३॥पाघरी॥कडुतैल
युगतगुडमेलकीन॥ज्ववलगनषालनरजोप्रवीन॥तवलग
नज्ञातकफस्वासभार॥लनस्वधरमधुरपीवुषधार॥१४॥पु
लिश्चाला॥मजिसाठीमधुमरचयुतलिहकर्नरसेवतसन
पारी॥सोनरश्चित्तचिंतात्तजोजिसकासस्वासरुजहैभारी॥१५॥

कूटसवैया॥मीनवतीसिषवैरकलंतकवाहनगुररावनप्रति
गासे॥भासपतीपितभवनकोदिपताअसवारसमीतपिता
से॥ताप्रतजोरनजीतपिनासतवाचकजोमुवपंकजवासे॥
गगजतीकफस्वाससहेत्रिमभार्गनंदनतासविनासे॥१६॥
दो०॥दिगमहमालवपरवचनकवनकरेकफहान॥कोजग
मैप्यारीलगेसर्वजनजुकाजान॥१७॥रोडाछंद॥प्रानननैप्यारी
सनोवचनममहितकारी॥जाजीफलसमलाललोचनाते
अतिभारी॥संठभडिंगीकलकसवासकफहर्नसरूप॥छी
नकटीसुनसाचपवनपिवेज्योहरभप॥१८॥दो०॥त्रैकटु
रजगुडसर्पजुतचाटतलेहीकास॥स्वासनिरेत्तरहर्नैत्रिम
सतहरअथहरनास॥१९॥नराचछंद॥सकूटसिंगवेरष्ठ
वतोइकोछनारकै॥समानमाषमेलनारिहांत्रिपेचटारकै॥

कफंचस्वासकासरोगनासकौनज्ञानहै॥कैसोहरीसनौस
कौरनासकाप्रमानहै॥२०॥कटनराच॥पलोमज्ञापतीस
रुततासनारतानकौ॥सन्नसीसज्ञाससतासवाहनीबतातकौ॥
कषाइकासज्ञीत.पेसमीरसपराजिपे॥सन्नपतोहिदेखभामका
मवामलाज्ञपे॥२१॥तोटक॥अयतालफलेकुचरामकले॥
रुखमाषचटैतनकासटले॥नकहापिकघीकविराजसुखी॥
इहभेषजराजसुखीभेषजराजसुखी॥२२॥कवनपितजुरकौं
हरैकोवनयनज्ञान॥कोवाहेहरिनागरीकवनकफीसवमा
नपरउ॥मोतीदामछंद॥जिकेफलगैकटूपावकग्यान॥गडुच
कुलीरक्रिमीरिपज्ञान॥समंसकरैरजमेलसितान॥भषेउ
ठप्रातकरैकफहान॥२४॥इतिस्वासकासप्रतीकार॥हसम्र
लमंगावैकाप्यकरावैतैलमिलावेतवकारं॥अथनागरग्रा

नेकलसुठानेतैलमिलानैकदियानं॥ रतनकुसटावैवसनसुहावै
हेमसटावैकरिसलं॥ सुनिललितललाटैकमविराटैजिमजल
कारैनदकुलं॥२५॥ अगवलीय॥ रासनकानागकेदुमलेसोमय॥ लै
दसेमलइंद्रजगैसोमय॥ तेलगएऽकेपीजीये॥ आमतेवात
केरोगसेपीजीय॥२६॥ यमका॥ दो॥ आमनकमकलाकरैकामी
चितललेन॥ तिमसुनिकगगरिसुधाजलआमवातहरदेत
२७॥ मनोहर॥ चासकुंमगाइअैनपटमैविधइयेरनागलको
सनआनदेलजेगकीजीए॥ समकपचाइनुदूरहैकसाइअ्रो
पकभनीकेलपुसंगचनैकरेजीय॥ सैंधवपवाइस्सुनिसाके
रलाइनाहिचुटकीकैसंगरैनवैनवीचदीजीयै॥ सधरकोपीरस
वैनैनकेजातपीरकमदिनबोबहवीसितासंगपीजीए॥२८॥
दैया॥ गंगपतीकविरामकलानिधकामनिकेआवनंससुहावो॥

कार्नकौंनसुताजनजोगरख्योइतमैंसुवमोहसुनावो॥दैनकला
सुनसाचवकूत्तिसपलवकेरसघोड़मिलावो॥नैननव्याधिविना
सनकेहितसोंसम्योगनपोरगठावो॥२९॥चवोला॥मार्नपितकदे
कनबडुछोधिलोचनकीरामिटजावै॥नैननमनकामनिसनमधु
युतबहुपलवदलरसपावै॥३०॥सिषाछंद॥कमलचपनासि
ताविसदजलथककचखग्गुभरननहनग्ररजुनको॥सुदिसुदिद
सरघसुतकविकाछियतुजिनकरलगकुचनवतनको॥३१॥मा
लती॥मधहविजतलोजैतौयकलेजोसुपावै॥सुनवचहितकारी
वैनपीरमिरावै॥नगसिसतनलीलालोलनैनैसुनीजै॥नवत
ननिससेवावैपदीतोंभनीजै॥३२॥मोतीदाम॥कनारसगोवर
धजनठान॥करैनिसधंतनीरहान॥जिमेरमनोरत्तिकेलमुधी
न॥हरैवलपोरसुजोप्रवीन॥३३॥भुजंगछंद॥स्यामनींअमनी

लो॰
२२७

कातनी स्यामनी प्रीतनी गोधनी स्यामनी कमनी ॥ त्वं सनसक्र
नी चरसनी ग्रैननी ॥ माघनी माघनी कंजनी नैननी ॥ २० ॥ वनी
सदलपमनश्विबाग्रलंकामचंचलाछंद ॥ वैफलं गडुर्व्विनिवका
सातेकिरावकमीन ॥ कोडकोपचाइकापमाघकेमला इंकीत ॥ काम
लासुपांडरोगनैन मैन होतपी ॥ २ ॥ संतकेसरूपदेवुजा तपाप
जैमधीर ॥ २१ ॥ नेत्ररोगधिकार ॥ भुयंगा ॥ फलंदेवदालेघसीतोइ
लीजै ॥ कटेकामलारोगजो नरयदीजे ॥ सुनोकंजसम फूलनैनै
विसाल ॥ रतीजानसंदेहनावालवाला ॥ २२ ॥ दो ॥ अंजननि सिरस
ताशिवानिसकामलरोगविदंस ॥ जे कतमैमिथ्याफरी संदनु
मरीसंस ॥ २३ ॥ छंद ॥ प्रथमनोगपकुंडले ॥ सपुरमुषदंमंडले ॥ ग
वा सपिग्मास्करगु ॥ निहंतकामलापर ॥ २४ ॥ सपिरमिदं ॥ रोगस
रूपनीछंद ॥ मुरेवदर्जेमंडले ॥ मनोग्यसाजकेंडले ॥ गवासमृतना

२रि निहितकमला पदि ३९ इतिकामलप्रतीकार २॥ निंबके
सुबीजरिपमार तेरसबीजग्यानिंबकेसुपातरसबरिकावनाइए
योनमैरषानरकुवरकाप्रमानन्नादिसलकोमिरानवातसाठमे
बतादए॥ बारनीकेमलसंग गमूजा हवी दूधसंगकामनिपिलाइए
लयोनकोमिटाइए॥ कामनीविलासकामकेलकेहलासबीचवा
२ तोविहीनभोगसुखपाइए॥ ४०॥ सालनीछंद॥ छागीमूजयेवार
नीमलसंठी॥ कीजैलेपे कामकेधामगुंठी॥ जावैपीरसंगसंकुर
सहूनामं॥ होवैसतिकामकेधामरामं॥ ४१॥ शिखरणीछंद॥ विकै
गोपीमूरवासरूपनजबदेवतरलै॥ कडूविसंमेघंतपयमसू
धानागहिरले॥ वरेक्षुन्घपीवैसुनिमरगाद्रीसामकलनै॥ ह
वेद्वंदुगधंसुभकागिसिसुवालनलने॥ ४२॥ द्रमलछंद॥ रमना
सकतारनिसबनतिकनमिलानतिलेमधकापगरे॥ सुनतुंपि

लो॰
२२८

गवं चलमीनन तै बहु भेदजतं प्रदरानधते ॥ विटमुषककेवल
नाहि भये ष्यक्र गलकेजुतलालन कटे ॥ जिमसुंद्रया पविनासन
केहित गंगजतो छिनवी २२टे ॥ ४३ ॥ नराच ॥ गवाषमलगुनका
माधामेदेधराइ दै ॥ सफूलफूलग्रातवारधारजो प्रलाइले ॥ स्रम
रतुकादिनाहि नारछोरनोमुकानवो ॥ सगम्भयालहोतदरप
तवैदराजको ॥ ४४ ॥ फलन ॥ सुजमुल छिवजो रयकलें पिवसुन
समैदषमुलनाहै ॥ जलतंदलमे लसिलाग्र पवाधनक्रापक
रसितमूलनाहै ॥ पिवगर्भनिवर्दमिटै पलमै जिमरंमजैष
गधमलनाहै ॥ रातिनासन पीतकपरदकंभसमकरेनसकोसु
षफलनाहै ॥ ४५ ॥ क्रीडछंद ॥ मेलावै जु गेग्रंव मोष्याधमासागड
वीपतीसं ॥ वलापरपटे वेदनिह्लापापीजै भवे गर्भजीसें ॥ मधुषं
जनिमीनजो ष्वारडारे मगोवालनै नं ॥ ४६ ॥ मंदाक्रांतछंद ॥ मोष्या

भंगीविवसमकरेचूर्नमाषेरलावे॥स्वासंकसिवमनन
तजैवालकेंकामिटावै॥कैनजुक्तविषरसगपाकेवलवा
रलीजे॥नीवासुतंलपत्तहमरीचित्तजैसेकलीजे॥४७॥
भुजंग॥मघामेयभ्रंगीकषा।यजुरीके॥वधीस्वासकासा
तिसारजुरीके॥सिसनासहाजेमहामवकारी॥कटेपाप
ओंरामनरामाधिकारी॥४८॥चरचरी॥सारवामरफूल
लोध्रजुषेदूबीचरलाइके॥काथवालकपीतजोप्रतिसा
ररोगमिटाइके॥मेघसंउलरोघवालकसमंगफूलमहा
नके॥कैनसेगविलेहवापिवक्रापुसारमिटानके॥४९॥सा
लनी॥कसिस्वासंग्रामतेवातसोरी॥नैनपीराकामलाना
रिरोगं॥वालंमाहंधंघाइतीजैविलासी॥गंगरामेकामनी
होतमासं॥५०॥इतिश्रीभाषावालोलंवराजैवैदजीवनकविचि

लो°
२२८

तरेजनग्रंथपंडितसत्तेरामततसिष्यकविगंगारामजती
त्रितविर्चितेकासस्वासग्रामवातनेत्रकामलाईस्त्रीरोगबा
लरोगचिकित्साप्रतिकारत्रितीयोविलासः॥३॥दो॰॥ पस
पतिसलोसंकरेविघपतहत्तनस्वेत॥गंगासससिस्त्रहिरु
बधरेश्रीभवमंगलहेत॥ईस्त्रीवाक्य॥दो॰॥गंगजतीकवि
जनतिलकवचनविलासीभय॥अजोगिन्नग्रावेनहीकछु
पतिग्रवरनितव॥२॥सौरा॥सामनिवातकहोवहमामन
बैतजनासनमेबजकोहै॥रामकलाद्रिगचंचलगोलक
टाछभवेसरतीनतोहै॥बेरजग्रंतकरेसुनसेरमुखीनित
सेवतजोहै॥लोकपनैविसमैचित्तपावतजासविषाद्रिगचं
कज॥३॥कवित॥संझोसतपनारिंदुतनमेरूपवंतनैनन
कीकोरलाललालचित्तमोहनी॥विद्रुमसेहोठचोटकत्ते

हमारे चित्तमे बज्र सुनाऊ ऋवकं बुग्रीवनोहनी ॥ माखनसोंगा
नखेनाकेसमानं दंतमधुकेसमानवैनतीन ऋगडोहनी ॥ ले
हकोवनाइनारिनहीचटाइनमदा नुराजनछूमनतासहूरही
विगोहनी ॥ ८ ॥ इतिवईरोगप्रतिकार ॥ भूजंग ॥ ग्रतीकोमलंकु
नलंपालस्पामा ॥ लसेतेमुखंमालतीफूलरामा ॥ वराकाथमे
गुगलंघोलपीजै ॥ व्रनंरोगकाटैदिनंहानहीजै ॥ ५ ॥ वर्नाधिका
र ॥ महनतावकूरनामनुमरसकरामकलप्रात ॥ सिसरवार
मधुयुक्तपिवगनपतिपलघटज्ञात ॥ ६ ॥ सिषाछंद ॥ हरफलह
रिकटषहरससकवचपिचमतसुरनबपसजलके ॥ कलक
सुकरपिवक्रिमहलहनेरजिमहरमजहरग्रघचलको ॥ ७ ॥
क्रिमाधिकार ॥ हस्वामनिग्रानसनोहमरेवचनईहमुखीवह
रामकलारी ॥ जोमुखपाकमिटावनकेहितमे षजकोनसनोहि

लो०
२३

तकारी॥ गैफलवेवपकपातघमामगडाछि निसादृगोथनका
री॥ काथकरीमधुवीचठवेकर्कैमुखपकजसारी॥८॥ मखप
काधिकार॥ सैया॥ गैफलवासपटोलसुधाकचवेरजुाकिरातक
निवजट॥ रेनसमानकरेजलकोमधुवीचपिवेनरकाथजुट॥
श्मलपित्तघटेछिनमैसुनरामकलाकचसघमयट॥ गंगग
जत्तीजिमचित्तचलेतविवारवधुद्धिगगोलछट॥८॥ अमल
पित्ताधिकारः॥ भुजंग॥ ग्रतीसुदयोहारमंदारहामा॥ लसेवंकु
वेम्रतरालेभिरामा॥ सिवाकाथचूर्नेहरिद्राजुतंचा॥ पिवेमा
वम्रिमंग्रंव्रमेहाहतंचा॥१०॥ हो०॥ सुधासरसमधुयुक्तपिव
सकलमेहहरजमेह॥ गंगजत्तीसवकैमतसुनमुखसाईंवर
॥११॥ मेहाधिकार॥ दतविलंवतछंद॥ कुसलकमकलारतिके
सने॥ कुचकरोरघराघरमेलने॥ जंलसुधानवतैलमिलाइ

कै ॥ पित्तवातज्वररक्तमिटाइकै ॥ २२ ॥ अडिल ॥ अन्नन यद्दका
रालगेपकाअग्निनिरे ॥ त्रघरवातहरतैकलुकत्तैलरवठानिरे ॥
पवनसत्त्रमुषसेरगडुचीनीरको ॥ रवकतैलयुत्तपीतज्वर
क्तसमीरको ॥ २३ ॥ इतिवातरक्ताधिकार ॥ भुजंग ॥ अग्रतानीर
सोनोमधीरीघलीजै ॥ ससैंधकटुङ्गेसमंचूर्नकीजे ॥ अरिष्ट
रसोनाविसूचीमिटाई ॥ सुनोकामनीभोगमैचातुराई ॥ २४ ॥
इतिविसूचकाधिकार ॥ स्वैया ॥ केंजनलाजनगोघृतटामधु
यद्दसमानमिलेमधुरामा ॥ आम्रत्रिबाहरऐकामुखधोत
हौ ॥ छुतहोतअरामा ॥ लाजलवंगइलाचपलाघनकोलहरी
गजकेअरामा ॥ कैडमितासमजित्रकेहरगेगगजतीसुनसं
द्रामा ॥ २५ ॥ इतिवमनाधिकार ॥ कवित्त ॥ रंभाकेसरूपरूपचा
तरीकेपुंजबैनसंउद्रसुकेसकरवाजैफिरावनी ॥ भषनसेगा

तबीचमखनविमखमानदाघत्तनभ्योमेरेलघुनामिटावनी॥
कहलीकेहलसंगगवारजैसंगगजलसेजलविछाइतनचहल
लिपावनी॥मोत्तनकेहारसजञोऽससिंगारत्तनपंडित्तप्रवी
नजत्तीगंगकोरमावनी॥२६॥दो॰॥ चंदनघसघनसारघसंघ
हनीसंग॥चतुरनारसंगजकरेचर्तदाघतनचंग॥२७॥इतिद
गाधिकार॥चामरछंद॥पर्दहचीरगीधमंडकसिलानको॥
तीषनेहिराततबीचमेलिरधिज्ञानको॥जीनलेपकीनहरीपा
मरेगछिज्ञीवे॥पावपुज्ञनासहोत्तरामजावकीज्ञीवे॥२८॥इति
घाजपंमाधिकारः॥मनोहर॥रोहनीभिलावेत्तिलगुडकोरला
इनरमोदकवनाइषात्तववासीरजात्तरी॥पाडकुरकासला
सकुषको॥चिनासहोत्तसंढ्रीसवैनजिमेकोष्कलालजात्तरी॥
सैंधवसमममगिरवालकसमैनपरज्ञाउकोमिलाइमधुले

पातरी॥ पाहक बिनास होत कंजन से पाद जेम चित्त को चलावै कै
लना शिदे बपातरी॥ २८॥ इति रसमाई प्रतीकारः॥ जमक॥ साई
को चेहमुबदे बहुतिमेह होत बे चल सनैन भ्रिगमीन खलिवा
रिये॥ कोकिलाल जात कंठमाल रोग नास होत मेबजीग्रनुपम
नमान तज धारिये॥ मेजकामलान गुड चित्रकक सीसरविसह
डकेहू घउछ लेपको सवारिये॥ कचन उगमजमलकों उठाद
चित्त सुद्दे समीर वेगमे घको निवारिये॥ २०॥ मेघूकालिंगकण
ठाव बाकटजीन तरू मधु गोजलसंगा॥ काथपिवे गलरोगघ
टेजिम पापकटे नर न्हावत गंगा॥ ते जववजीज ववधार रसोंजन
माघ घपाठ निसासु रंग्रगा॥ माष ठलरार करे वटकामुखधा
रत्त रोग हरे गलचेगा॥ २१॥ इति कंठमालहजीरप्रतीकारः॥
कवित॥ पीपली मर्च वच चित्रक कचूर जीरतुंब्र चवक भजे

लो॰
२३२

षारतीनलनमा॥ ग्रंथकविडिंगनागरीषिप्रावाजमोदकंवदीसयो
सकरतिंतडीसकूनासा॥ ष्ठामलसवेताविकोचर्नेसकीनहंत
गुदजमयकारविरवंदसलसनमा॥ बूधमयलीन्हपांडष्ठामव
ममंडपाथचौगुलमाहृदयचंदमुष्ठीहनमा॥२२॥ सैया॥ प्रानप्रि
याहितवातकहेवदकमानिकोतहितेमरगनैनै॥ पावकतेजक
रेवदभेषजध्यानधरैसुनकेकलवैनै॥ समयकमेसुनतीपति
कौसुनकामकलाकिनकेवलषैनै॥ मूद्दकषंडमिलेलवनोत
रतीबनजीरकनिंवुरसैनै॥२३॥ कामप्रियाग्राजमाश्रिकुरादि
गजीरजीरकसेधविहिंगवै॥ भवकरैगुलमोश्शकेनरषावतमो
जनस्वादवकवै॥ सोचलैसेधवजीरकदेकटुतीनविजोरविहिंगह
कृत्रिवै॥ तितडचित्रजवानमषेनरमयरपाचकमुष्ठिवै॥२४॥ षेत
मेकेमदगंजनतेद्रिगपालललजैगजराजकलोन॥ नागदिमाधधीरे

प्रजपानकसैंधवपंचसमभागकमैना॥ पंचदससमभागशिवाभि
दगंगजतीकनतचर्नधौना॥ स्नामहहेगुलमीनगपाचकमेजनम
जनवातसुकैना॥२८॥ इतरामगनिकनाधिका॥ मनोहर॥ गंडन
कीदेषदुतकेजननलजानपानपातकासुहानभालस्यामसुनसुं
दरी॥ माघधयुवानीक्रिवासेयतेनिसनीभुजकपकोपिलाइवेल
दर्नमेलुंदरी॥ अंनरगिनासभ्रिनभ्रिद्धनहोतजनीगंगजुनकी
नाकुतरामकलमेंदरी॥ कारतेदिहोनमीनकमकेसमानवीचप
जाकीकसासजेमडषकोनिकुंदरी॥२८॥ अंनरविद्रधव्रनप्रलीका
र:॥ सवैया॥ घुंघरलेककरेवलयपरानेवरजाजरहारगले॥ वेसर
नाकवनीमतलोभुनकुंडलतेमलभालगले॥ चंदनवेलसलैकु
वहैयलज्यौहदलातनखेदहलै॥ सुजेनकापकरेरससाधतपी
तहकीहिदपीरदलै॥२९॥ हिदवारोगधिकार॥ मनोहर॥ चंचलच

पलचित्तचोरनीचलततचालचखकीचटकचारुचांदनीसरीर
की॥कामकीकलानिकलकामनीकलपतरदेखतअनूपरूप
कौनधरेधीरकी॥पादपसुगंधपलवकलानिभातिमूलभ्रम
जप्रधानबुरकामदेववरकी॥लुचाकेचवानदतचापलमिहा
नअंगनाभकोनपानसुनमेखजगमीरकी॥२८॥इतदंतरोगा
धिकार॥सवैया॥तैलगतोहनवैघगनेवरगावतगीतवजावत
तंत्री॥रोमकलाउतरैनकलाविधिकामकलाश्रुतिसेगुनवं
ती॥वैनसुनेकफस्वासहरेपितसोनतरोगकटेजनसंती॥रा
खसिवाकरकाघविवैनरवीचसितामधुतासमिलेसतो॥२९॥क
वित॥जालमभुमारग्रेननैननकोदेखककविगंगजनीधीऊर
हेकाजुरानपावरी॥कुंजरपालपालमेघनकोकौनवालर
तिमैनवीननारिकौनपदचावरी॥संदसंवोघननिसवद

कोसतलपकौनभेषजतसकौनपित्तसोनत्तमिटावरी॥ वंहलनस
गेघवेंदचोंहनीचमकतनखेतग्रभिसारनारउतरवत्ताव
ती॥२१॥ वहिरलापकउतरसिंघानतामवांसा॥ सवैरा॥ उम
केउलकेंदुतगेडनघैदलहेमकपोलसमेतलसे॥ मदलाउस
वैनकलेचित्तफूलउरेमुषनैकहसै॥ सिवाविम्बकनामधुवंड
लिहीचवटवागुडनागविमेलनसै॥ हिचकीहरकैहरकेपदसेव
तरामकलाप्रिमपापनसै॥२२॥ इतिरक्तपित्ताधिकारः॥ हिच
कीप्रतीकारः॥ सवैया॥ टंकहरीकरकाथदुरालभमाषमिला
इपिवेनरक्रोइ॥ सांतकरैभ्रमतेपित्तसोंनत्तरामजपेतिमही
लषलेइ॥ हारगलेमुक्ताफलचंदनलेपदुकूलसचीतनसो
इ॥ विसजगोरसनाजलकोपिवकामकलाभ्रमदूरवगोइ॥२३॥
इतिभ्रमाधिकारः॥ तोटक॥ कलमांकरतुमुनरामकले॥ क

लो॰
२३६

लहंसखिरागतिहसगहे॥ वहवैद्यमनेमहरावभरे॥ महरानहका
रकसोकहहे॥३३॥ मोकाधिकार॥ सैया॥ ठाकुरसंसतनमेहिग
केपहपावनकोजलकंजनसेवे॥ नाग्रदारभलातासिवाइसम
लगडुविहटसिटलेवे॥ काथपिवेउतस्यमनसेग्रथवापस
मनविग्रगलवेतुरहेवे॥ गंगजत्तीभगकामकलाजलहीनल
मीजिमा चितचलेवे॥३४॥ इतिउत्तसंयमप्रतिकार॥ कवित्त॥
उमरूवज्राइपदचेवलचलाइधुनछैलगीतगाइतनवोड
सखिंगागारकै॥ गोवत्ससिवासिलानमेहकुसकासञ्ञानवास
कसम्याकपीतपाथरविडारकै॥ द्रावडीपवानमेहमाघघीसि
लानजीतचूर्नफकाइकैलवारईवसारकै॥ तेडलकेवारसेग
मत्राक्रिकहोत्तमेंग। चिनकोचलातनारनैनवानमारकै॥३५॥
मनोहर॥ ठककेमुबारविंदनैननकेतीरधीरकोधर्नकैन

वेडितत्तहंतानमै ॥ माघघीपवधानाभेदयष्ठकाइरंडग्नुटरन
काविस्फटपुरकाघक्कितपानमै ॥ सिलाजीतपाइपीत्तपथरी
मिटाइरेतमत्रक्किछ्राहिरजमतबंधहानमै ॥ दात्तरबगो
खरूस्वनंततनराभेदमेलवेत्तकीसमाननारकाघवीचतान
मै ॥ ३६ ॥ इतिमत्रक्किछरेतपथरीमत्रघानप्रतीकार ॥ से
घ ॥ लुगानमसरहयोमुवदैवतचंदनलालम्मगोघप्रवाली
स्नावरकुठपसंगमसरवुषेवटकादुधघाली ॥ द्ररकरेमुव
कंगससाघत्तदुधमसरखजेसमडाली ॥ लेपकयेनगचंदमु
बीसुनछात्तमिटेमुबसंदलाली ॥ ३७ ॥ तुसुनरामकलाफल
इगदलेपकरेमुबजोनवडावे ॥ लोधचाघनलेपलगावत
जोवनकीपिडकांमिटजावे ॥ सीसवुनीकरसोनतमोहनवा
नितलकीबलमेजललावे ॥ वासिरलेपकरेविटकूकडगंगज

लो०
२३५

तीमुखकीछबिपावे॥३८॥ इतिसिररोगप्रतीकार॥ कवित्त॥ षंभनभुजानअलीलचकलचकजात नारिकुचनिकेभार नीकेभारसे॥दाइसेनबिसचकसुदेवतनागरीकोमसली रसेनाविंबसोफनेलहारसै॥पारकोनपाइअैसीसेथकोमि टाइअषमागधीकिरातनषाबिकीअसुरारसे॥नागरीक हकघनपंचकोललछमनजर्नेसमेतरजलेपनेजवारसे॥ ३९॥ नोगदुगंसोफप्रतीकार॥ मनेहर॥ दामनीदमकमा लबीनरीचमकजैसेभेवजीअनूपसुनरबकजटावरी॥स जैकेपातपीतहवीसंगलेपकीतनापनकिसानपीरवारका नपवरी॥नागरीपटोलपाठखादनपबाउकुंठकोजिकेनले पकीनसीसरोगजावरी॥भ्रुतकेसमत्लमलनेविनासहो तरामकलाचितजेमकछसैनेनबावरी॥४०॥ इतिसिररो

गकर्नरोगप्रतीकार॥तोटक॥धरेजीबननेहबिसेतुर
सी॥रसमेलत्रिगाकलमकरसी॥अनिलातनरोगकटैस
बला॥अथजेमघटेजपरामकला॥६१॥इतिलघुत्रिगाक
कवित॥चूर्नकषाइगुटचाटनीघृतानतैलमेबजीअने
कऔरग्रंथमैविचारहै॥पासमेनआनीरोगवातकीकहे
नीभीतग्रंथकीवधानी॥नाद्दिचितवीचधारहै॥कामनीक
लोलकामकेलकीकलानिकलसंघुद्दीप्रबीनतनषोडसत्रिग
रहै॥कुचनकोसेकमनप्रीतमविवेकउरमज्ञाकीकसीसतै
गवातरोगटालहै॥६२॥इतिवातप्रतिकार॥सवैया॥अत्रि
नकेजबीचबसिताधरपीवतजोनरप्रातसमे॥रोगकटैलघु
तापित्तकोतिमहीरसनाकरपानहमे॥बामुखपानकरेअथ
रंसुनिरामकलापितजातगमे॥देषनितंबइकूलविनाति

ल्लो॰
२३६

मकंा मचहेनर मोगरमै॥४३॥ इतिपितनाधिकार॥दो॰॥ हि
नाकलाकसुप्रानपिवमधुहुतुकयश्वदलोय॥गुनग्रवैतिय
यासकोइमतनवमंधूगोय॥४४॥स्रोरय॥इदमुखोकचस्याम
घहमुतपकजकेसमूनैनुद्विसेष॥सोनततटोग्रमिरमविर
जातिलगकचीउदरोजिकरेष॥रंमकलमविभेगगिषेमुष
मकयहैहमकेमविलेष॥गेगयतोकयकुंजामिरावूनतैसम
मेषजिग्रारनदेष॥४५॥इतककाधुकार॥षेव्रुनमेदक्रिमा
मलपीतप्रमेहलकूजुतवानामिरावै॥जानविसचगिषातन
दाघसुपानविपादवेवासिरजावै॥कंठसुमालकुतासनिमंदरि
दैरजावेिद्धधदंतविसरावै॥पीतलकूहिचकीभ्रमसोकउरूथंभ
मचलकलोपघरावै॥४६॥दो॥जोवनपिडकाचमुषग्रहसेषु गर
तकेग॥वातपितकयकनाडिहितगेगजलोकतमोग॥४७॥इतोम

भाषालोकंषिराजकविवितरंजनग्रंथकृतहजसुतरंमनन
विध्यगंगारंभयतीविरचतेदपरोगप्रतीकारचतुर्थोविलासः
समाप्तं ॥ ॥ अथगत्ताचनैकोग्रधरविलोह ॥ सैया ॥ श्रीजुतसागर
हैगुरहैगुनकोचेननैकनधार्तेनागगतीके ॥ चातुरतालषके
तिनकीजुगचातुरकोरलजैविततीको ॥ दानद्यादिकजोगग्रुन
थिकजानससाम्रुषकारहितीको ॥ गेगजतीचितध्यानरटैनि
तश्रीदिषसरतसाधजतीके ॥ १ ॥ दो ॥ विहंतवचनविलसहि
तगेगजतीसुषधाम ॥ करयुतकरएकतहमैस्यामकलारति
काम ॥ २ ॥ सुनिकविजनपंडितसुताकामकलाकलरैन ॥ सेस
घकतमहमाकररतरेमकलारतिचैन ॥ ३ ॥ अथपामेवजरनीका
रवकहुगेगजतीदितमीता ॥ प्रथममसुनोहितकामनीमनमघजा
गनरीत ॥ ४ ॥ सैया ॥ पानभषैगुलकंदवचित्रसफूलवहारल

लो॰
२३७

बैगलपावै॥ पीमदरांमदकारकेरैपलभोजनमिष्ठसदानरुखावै॥
कौंतप्रियाहितवैनविलासकगौनधुनीरतवैनवजावै॥ अंग
जतीसभकामसैकाएनपुहकर्कतनकामजगावै॥ ५॥ दोहा॥ भालपर
घटकामकीलरकचलतीचाल॥ वहुरतन्नकरभेषजीसनविक
वचनरसाल॥ ६॥ सवैया॥ फरकैजिमवारविनफषहैरलिकेला
सविलासविषैमुसदैनी॥ फदरैविचशृगकेद्रिगज्येभुजमीनल
सैजमनाजलकैनी॥ मधुकंप्रितकैसमवछमिलैनरसवनजोक
रपीवतपैनी॥ मदकेहरुधरकेनवधातियकेवलवंतनरीवड
वीजभदैनी॥ ७॥ मनोहर॥ वेसरलटकप्राणमोरनीविराजमा
नभालमैहिसालमननामनीदमकवर॥ वलगंमधानेकंटतीन
कष्टिवानचरमाधकेमिलाइद्दूतसेवनकसानन॥ हथतानहो
ततनवीजैग्रपारजोतग्रदितसजावभवग्रलकेसताग्रमर॥ विक

ही विलोकलोकलाषनकोहदेसोकचितकेचलानभवधनसक
रापसर॥८॥भुजंगप्रयात॥भौषडमरकटीचुंचरचरवै॥सरकरारु
गधुसमिश्रुतैपरकै॥सेवतेवारधकेमाननीजनरा॥माननीमान
कोदेदनेकितरु॥९॥तोटक॥मधुयष्टकनासततपादसिता॥नित
हूधसेमतनभेषप्रकिता॥घलवंतनकदेकचुस्याममुदा॥भ्रातिवीरजे
भ्रायुवठेप्रमुदा॥१०॥कुंडली॥रोमकलस्रनवचनहितनवरति
हैलभ्ररोम॥समकमुसकलासीसुसकलपटततोगविरोम॥ल
पटतभोगविरोममभोगकरमेषजस्रनवरा॥श्रीरसितकरयुक्तवि
लस्किमभेषसलावरा॥सतप्रमानलियरमेम्रजहमभसीसकाम॥
देषकलहलकामहमेकिमसाधतरोम॥११॥लाषकरोरकरोकु
रवानलक्षीतवनाजकलातनकी॥वरविदारनकेदवहूनविदा
नेकेरसभावनीकी॥सोदष्टितिसंगमेलकरैनरकीजतजौनितम

वनकौ॥ गंगजलीवलवंतसदारमनतेनिसभोगादिगावनकौ॥
१२॥ दो॥ मधुजुतपयाग्निनभषतनसँकर्ष प्रमान॥ कंदविदारीवृ
षदलिनकीज्ञेवरवलवान॥ १२॥ छपै॥ कोभोजननिसिंमारकवन
रुजदसतविडारे॥ कवनबोरतजहरेकवनपरउत्तमसारे॥ क
वनधातवपुकरेपापघनकिमनरचरन॥ कोपरकटिहरिधरे
कवनमनवंछतहरे॥ कवनलुलकेगुलिनचगकवनधातुव
लपुष्टहम॥ गंगजलीमेषमुवदहवीपसिलापपीलषव॥ १८॥
कंद॥ सुभगवीजवलपुष्टविवरधनधातुकौ॥ अनेकरसायन
कथग्रंथसुषगानकौ॥ गंगजलीहवीपसितादुगधपिवलकरै॥ या
समभेषजनहोरनभाषीनरवरे॥ १५॥ दो॥ विसजरालासकरपुगक
गलेइसतग्यान॥ रुमीमस्तकसिलासमदुग्धसुकरमान॥ १६॥
सैया॥ हारगलेमुक्तापलकोउरकंचुकिवंदकसेकसकै॥ जोवनमे

मदमसनतफिरैद्रिग छैलविसालभरेरसकै॥ भालविसालससी
मुतपंकजछिनदतानन ज्योंलसकै॥ गंगजनीकरजोरवहैसुन
रेमकलोलखिलहसकै॥ ७॥ गंगजनीकविराजपतीघनकुमनि
चितकलोलविलासी॥ जोरकरेकरवानकहोसुनीरपतिजोहमु
रेमूवनासी॥ मीनविनाजलज्योंतरसैत्योंरेमकलानुवरूपपि
वासी॥ कानकहोकुचपैकरकोंधरजोरनहाघहमेप्रभदासी॥ ८॥
दो॥ चटकलरकतववकराजे मघटकनचितमुटकाइ॥ मटकमट
ककरतिवटविषैसुनचितविरघटिकाइ॥ १॥ कविभषनदूषने
विनासकलकलाघनरास॥ मचितततवपदकेजमैकहुपतिव
चनविलास॥ २॥ पवनदीपशिषगजकरनदिजलधुजघट
गैन॥ पारदकरपदवालसमचंचलद्रिगसुनवैन॥ ३॥ इतिरस
महमा॥ चमततचारसकारलघुलघकलसफुरतसमाव॥ रसवि

लो॰
२३८

नकामनिकातजिमकुलत्रियहोतगुनाब॥२२॥सकुपदार्थ
जगतमैविरचरमरेगुनेक॥विनरसकछुसोभतनहीसुवि
कबिराजविवेक॥२३॥कविविचितरंजनग्रंथरेकविचितरंज
नहोत॥रसहितरंसमगकथतहमसुनिकामनकविगोत॥
२४॥सैया॥पाईगंधकरैडसिवारविमिछकनाकुचलेफ
लदंती॥मेलसमानकरेरजसबमबलेविबेहिनयतेकेती॥
बलभ्रमानभुजमितवारसग्राम्हकवानुलसीदलबंती॥भो
जनमृगसुखभखेतपजातनबोनपुरातनसंती॥२५॥दो॥वि
खतापहरनामरसविखतापहरसेत॥विखतपछिनरहित
नहिविखतापहरिदेत॥२६॥सैया॥टंकणगंधकसलाविंब
तवपाईषापरतालसमावे॥एकघटीसुरवीरसमेरससीत
रिपुत्रिपुराविविनावे॥गंजभ्रमानसिनासितजीरकरामक

लारसजोनरखावे ॥ तापइकाहिकआदिमिटे जिमगंगगजत्ती
अघवीरमिटावे ॥ २१ ॥ पुनः ॥ हिंगलमाघधितीबनटंकनगंध
धतुरसमेगलसंभे ॥ जामभुजाविजिआरसमैरससक्कनाम
भेषाकनकंभे ॥ पावकतेजकरोतपकोहरआहनमलअतीस
रवैभे ॥ गंगगजत्तीदुर्गाचनमैजिमदैत्तदलैवलसुंभनिसुंभे ॥ २८ ॥
कवित्त ॥ पाईगगगनलोहसुलकोसमानआनहिंगुनप्रमानभा
गगंधकरलाइकै ॥ सवहीरलाइलोहभांजनमोपाइवैदकोलका
ठसंगआग्निदुपावकपचाइकै ॥ गोकुलपाइभुवकदलीविकाइद
लरसकोघराइदतंरभापातकूरकै ॥ रोगनकेकामंपचअंग्नि
तसुनअर्धआहनजहमअत्तिसारतपजाइकै ॥ २९ ॥ दो० ॥ गंद
जपांडगुलरजनिशाअमलपित्तकतुमेह ॥ वातिकसैधवतीरसि
तअनुपानसुवकंद ॥ ३० ॥ सैषा ॥ कानकुमंदनिविड्मसेजुग

लो०
२५०

लोठसुधारससैंवेनसुनोरी॥ हिंगवचागरलेंतुवनागरितीयन
जीरकचित्रगतिनोरी॥ मारकवकेरसमैंग्रुटकाचनुकानिमितं
करमयघनोरी॥ सूलविनासकवातमिटैंक्रिमगउहेनिसंग्र
घहनोरी॥३१॥ सकवीजसमानवलीतिनकेमधयतेवीजर
लावे॥ घतीतेलविषेकरसंम्यकनामविलासनिवल्लभ पावे॥
वल्लभजनसिताउजपोषनमेहमिटैवलवीवरदावे॥ संडस्लो
चनकेमहकोनरचूरककरैकविगंगवतावे॥३२॥ दो०॥ चतुर

चि०

वचन नधारगुवरामकलासनहेतु॥ कस्त्रितकस्त्रितरोग
मैमुख्यमूखकहिहेत॥३३॥ सवैया॥ सूलविषेघतहियमवेम
धुमापथीताप्युरातनको॥ वातरसोनभषेघतकेजुतसा
साविषेमधुजपुषनको॥ सीतविषेमरचाजुतपानसुमेह
सितात्रिफलावनको॥ देवप्रिकेमधुग्राहपिवेयनरेनभ

खेतपनौतनको ॥३४॥ ग्राहनमस्तगरेकनकंवमिलाज्ञभखेकुटना
ग्रतिसारी ॥ पावकलेतगुहाकरमैवचवुधिधिखैहिगग्राउप्रसि
तारी ॥ सोनतपितविखेरखलैक्रिमरोगविडंगइतेसखकारी ॥
गंगजतीवृलीग्रामुपारसपारसजापन्नपेनितरामकलारी ॥
३५ ॥ दो० ॥ रसविलासनीवहभाग्नैसोजाकोनाम ॥ ग्रथपवाताके
ज्ञानाइहग्रनूपानसुखधाम ॥३६॥ ग्रथवाचूनंजोवनेनाराऽव
ज्ञिसनाम ॥ ताकेभीग्रनूपानइहकहतसुगंगाराम ॥३७॥ नैल
नराऽनकोभज्ञेसोनरजानरकेतनवातविलासे ॥ चूर्ननराइन
कोभजेसोनरकेरुज्ञहैउदरासं ॥ देवनराऽणकोभजेसोनरजो
नरभीतमऽवोभवफासे ॥ मीतननराऽनकेसममेसुज्ञगंगंगजती
कविकोकहितासे ॥ ३८ ॥ दो० ॥ कोगिऽतजकोपापहरकवनस
हासुखधाम ॥ कविजनकवनसुनामरतजतीसुगंगाराम ॥ ३९ ॥

छै॰ ॥ कवनरमांपतिनामकवनहिनकर्त्तसमाज ॥ कहिहनिमि
तहंघमथ्थोकवनपरवैठतराजा ॥ जनकसुताकहिहरीकव
नवसुकर्त्तनारिनर ॥ कहादेवपतिकवेकवनतनभवनलग
वर ॥ कहाजंतजगमैचहतगंगगजतीगुरनामको ॥ प्रथमवरन
उत्तरसुवरहरिमिगरसवसुवके ॥ ५० ॥ दो॰ ॥ लोलंवभाषाकह
तजोवैहरिसुजीवननाम ॥ कविचितरंजनग्रंथनितकविजनको
सुषधाम ॥ ५१ ॥ रत्नकलाकविप्रथमकौरामकलाहमकीन ॥ का
मकलाकविसकलविधिगंगगजतीसुवलीन ॥ ५२ ॥ रामकला
निजवुधहितगंगगजतीकहदेत ॥ काविजनलीलाकर्त्तनितअव
रकहुनाहिहेत ॥ ५३ ॥ चौ॰ ॥ सर्वदेसमैउत्तमदेस ॥ पंचवनहीज
तपरतमेस ॥ मधुभागमैमांझादेस ॥ सांतईततकोनाहीकलेस ॥
॥ ५४ ॥ तासदेसमैगुरकीनगरी ॥ सुषीवसेतहरईतसगगरी ॥ रा

मदासपुरउत्तमठांम॥नग्रसुधासरअंम्रर्तनाम॥५५॥कवित्त॥
बांकीसीअटारीजहांतुंगछटाभारीकिधोंसचेमैंसुढारीविधु
सारीविचित्रकरतै॥चौपटांजारमघलाबनाविपारहेतवावपुरा
नवेहरकुहानकरतै॥संतसतपभेषहेबेनरगुरुकोसुदैनमे
षपापीजनमरतै॥कहेकविगंगयारामसंपत्तकोधामकामदेवेतो
करोरत्तौनजावेसुधासरतै॥५६॥सवैया॥ जातसुमघनडावनड
ड़ोघनकुंहनतेमानिज्ञोतहिपैरवि॥नेत्रसुजातअंम्रितगवडैधुन
गावतगीतवविचित्ररचैकवि॥श्रीसुखपुगकहिगमिलेचितावि
छतारियफलेजनकोनवि॥संदमेहन्नूहरमेद्रमोषरसुकंदफेर
कटेभव॥५७॥चौपै॥जापुरकेनपसंदरूप॥रनजितजसिंघना
मनरभूप॥चारकुंटमेंजाकीआन॥हैगेरथपाइकवहुमान
दईवपत्रमरहनहेसा॥उत्तरसेवाकरेनरेस॥धनधान्यादिककी

सम्रपार॥ राजधाम अग्रं सुजितपुरसार॥५४॥ जापुरवसे नगौरी गह
महावीरवभतताके पढ॥ जती राज रिषसंगतपदज॥ तेजप्रतापप्र
उससिद्धज॥५६॥ तपीगुनैतनमदिढमतिसती॥ राजमानमअग्र
सेकरजती॥ ताकेसिष्यजुगलछविधाम॥ सततरामरूलज्ञारा
म॥५५॥ राजवैदउजलमतिबरी॥ तेजप्रतापसहधनवरी॥ सा
धसिरोमन श्रीसुखधाम॥ श्रीगुरवैदविवेकअभिरांम॥५६॥ सत
रामपदकंजनिवास॥ गंगराजती कविहासनहास॥ हितकरभा
षा रचीसुपंथ॥ कविजनचितहरबनलषग्रंथ॥५७॥ विक्रम
दितसंवतनगिनोनैनहीपवसुचंद॥ चैत्रसुदीजियचंचमीभृ
गदिनतहाआनंद॥५८॥ जौलौं रविससितारकगिरमंडजल
रास॥ तोलौ पुस्तकभुवविषे कविजनलीलविलास॥५९॥ इ
तिश्रीभाषालोलेवराजकविविरचितरंजनग्रंथष्किंतपंडि

तसतेरामतनतसिश्रगंगारामजतीविर्चितेधातशब्दादिप्रती कारपंचमोविलास॥५॥दो०॥उनीसेत्रयपदमोमघ्रमासभो मवार॥गुरुतेगवहादुनगरमैलिष्योग्रंथअपार॥१॥दो०॥सार स्वतीकीकृपातेलिष्योग्रंथअनमान॥गोतमरिषकेवंसमेंव्र ह्मारामजिहनाम॥२॥अथहरडरूपजातगुणवर्ननं॥दो०॥वि जैआरोहनपूतनाअंम्रितचेतनीजान॥अभयाजीवंतीकहीहरड सातविधमान॥१॥चौ०॥हलघोडागुठलीवडहोइ॥हरडपूतना कहीयेसोइ॥गुठलीथोडीवकलविसेष॥सोअंम्रितजाहरडकोंवे ष॥रेषांतीनचेतकीहोइ॥पंचरेषकोंअभिमासोइ॥पीतवर्नजी वंतीकही॥हरडसातजैसेविधलही॥२॥अथगुनवर्ननं॥चौ०॥ विजयाकोगुनसुनोसुजान॥सर्वरोगहंतीवहिमान॥हरडरोहि णीपरहिविगुणधरे॥घांसीघईकोंनताहरे॥हरडपूतनाकोगुन

लो॰
२४३

इह॥लेपकोरसबपावेदेह॥अंम्रितहरडसोचनीकरै॥जातेउदररो
गकोंहरे॥हरडचेतकीकेगुनकहे॥सकलेरोगदेहकेदहे॥अभिया
हरडमाहगुनइह॥नेत्ररोगजातेनहरहे॥उदररोगअरदुषमता
हि॥जीवंतीसमकरजीवादि॥समतेउतमविजियाजान॥जांतेसर्व
रोगकीहान॥३॥चौ॰॥हरडषानकीविधअबकहो॥जांतेपरहउ
पकारहिलहो॥जेठअसाडमेगुडसोंषाइ॥स्रावणभादोलुनमिलाइ
असकातकषंडसोंचबे॥म्रिगसिरपोषषंडसोंभषे॥माघफाल
गनपीपलसंग॥मधुवैशाषसहितसोंअंग॥४॥सो॰॥छैरुतवा
रामासजोसेवेविधसोंहरड॥ताकेरोगविनासकहोंनामअबवरो
चाके॥५॥दो॰॥सूलप्रमेहसकलेहरेस्वासकासअतिसार॥म
गकछअरकिठलघुपरीरोगविडार॥६॥हरडविवर्जित॥दो॰॥
तिषाहहकंडुनिबलनवनुरगर्भननार॥इनकोहरडनहीजो

वेग्रवररोगहितकार ॥७॥ दो० ॥ वंदतदेवग्रदेवसवचर्नकम
लरजसेव ॥ ग्रमीडीठवरग्राहिसरनमोधवंतरदेव ॥८॥ दो० ॥ स
कलद्रवकोग्यानजिहग्रौषधेसग्रवतार ॥ द्रबभैषीरानुगतको
रोगनिवारनहार ॥९॥ चौ० ॥ सकलवैदजननविनेसुनीजै ॥ साव
साधहोक्रिपाकरीजै ॥ द्रवग्यानजिहतेसभजानो ॥ भाषाग्रंथषरि
षेटविषानो ॥१०॥ इतिहरउगुणज्ञाननामसंपूर्न ॥१॥२॥ मेत्रा ॥
ॐग्रचलावीरवणवंडीरहेषेचरभचरमंडीकोतोडेसिंघन
मे[illegible]टवाघनवाड ॥ घेउतेग्रावेस्रीगोरषराइक्रुरोहोमंत्रर
ष्वरोवाचाफुरे ॥१॥ कोडलो फीमकौहिग्रावेजाइफलरकहेसा
कुंमलोइरउकीग्रहोइहेसेपीसकेगोलीग्राकरेजितनीकग्र
कीमषावेउतनेनीकगोलीषावे ॥१॥ दूसरे कोडणग्रफीमकी
जडकनेरसवैदकीरगडनामानिंदसंदलकीकरेतिनवैसाभ

लो०
२४४

रखावचीपीसकेकौईदमाईसवंदिवारद्रिमपनेवेरीकेचौ
वीसदमनेपेअ्रततालीद्रिमकुटकांणकैगोलीपेसाभ
रकीकुरे॥जोकोईग्रहमीरेकद्रिमगग्रफीमघाजाहोवे॥तोनद्रि
मरसगोलीकोभुलावे॥१॥होर॥सापकरनेग्रफीमकीजोबीच
घाणकेग्रहीहै॥लेवेफीमजोवीचपाणीकेमले॥फेरदुधचार
सेरगोकावीचफीमकेमलावे॥फेरवीचउसकेबहांमरोगत
पाउपावे॥जोसुबहोवेकेरकेसरभरमलावेडवेवीचपावे॥१॥
चौपैदेकौ॥घडेकोगिरीग्रांकरैगिरीग्रांकरेजूसेकीग्रांवीं
चपाणीकेपीसे॥कोलेवाबगोलीग्रांकरै॥देकगोलीसापर
तीदेपाणीकेनावे॥१॥ इतिश्रीशुभमस्त॥मस्तुशुभमस्त॥
संवत॥१८७५॥महीनामार्गिशिर॥भोमवासरे॥तिथीदसम्मा
लिषतंवेदाराम॥तयायघनेआरामसिंघ॥शुभं॥श्रीरामजी॥

𑆱𑆩𑆳𑆥𑇀𑆠𑆂𑇅 𑆯𑆶𑆦𑆁𑇅